Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Che

BHUGOL 1942 G.K.V.

in. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113727

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

Stock Verification-2004

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ॥=)

माघ-फाल्गुन, सं० १९९८

सम्पादकः- रामनारायण मिश्र बी.ए.

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 10.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आवश्यक निवेदन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय. ग्राहक महाशयजो,

आप 'भूगोल' के गत कई वर्षों से ग्राहक हैं। भूगोल में आप के जानकारी के लिये कई बार इस बात की सूचना समय समय पर दी जाती रही है कि 'देश दर्शन' भौगोलिक विषय का दूसरा मासिक पत्र हमारे यहाँ से गत मार्च १९३९ से प्रकाशित किया जा रहा है। यह सीरीज़ भूगोल से प्रेम रखने वालों के लिये ही प्रकाशित हो रही है। एक देश का एक अंक में सचित्र वर्णन निजी यात्रा के आधार पर रहता है। यह करीब २०० भागों में समाप्त होगा। यदि आप इन अंकों को संगृहीत करने में विलम्ब करेंगे तो भौगोलिक ज्ञान प्राप्त करने से वञ्चित रह जायेंगे। फिर ऐसा सुअवसर नहीं मिलेगा। देश-दर्शन के अब तक लङ्का, ईराक, पेलेस्टाइन, बरमा, पोलैण्ड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेनमार्क, हालैंड, रूस, थाई देश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस लारेन, काश्मीर, जापान, ग्वालियर, स्वीडन, मलय देश, फिलीपाइन और तीर्थ-दर्शन इतने अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं।

आप जानते हैं कि युद्ध के अवसर पर एक भूगोल ही ऐसा पत्र है जो कि सारी बातों की जानकारी के लिये इसे पढ़ना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। लड़ाई के कारण प्रत्येक वस्तुओं का मूल्य अधिक हो गया है। इस समय आप की सहायता की आवश्यकता है। यदि आप 'देश-दर्शन' के ग्राहक बन कर तथा अपने मित्रों को ग्राहक बना कर भूगोल की सहायता की तो भविष्य में इस संस्था द्वारा भौगोलिक विषय का सुन्दर साहित्य देखने को मिलेगा। प्रत्येक महीने में एक अङ्क प्रकाशित होता है। एक अंक का मूल्य ।=) और वार्षिक मूल्य ४) है। किन्तु आप भूगोल के ग्राहक हैं अतः आप से रियायती मूल्य केवल मनीआर्डर द्वारा ३॥) रु० लिया जायगा। वी० पी० मंगाने में चार आने डाक व्यय अधिक लग जाता है।

जनवरी ४२ में देश-दर्शन ग्रन्थमाला का 'तीर्थ-दर्शन' अंक प्रकाशित हुआ है। इस अंक में भारतवर्ष के लगभग ३०० तीर्थों का समावेश है। इनमें कई ऐसे तीर्थ स्थान हैं जहां का नाम आपने सुना तक न होगा। देश-दर्शन के प्रत्येक अंक संग्रहणीय हैं। तीर्थों को देखने के लिये एक साथ मैं नकशा दिया गया है। आप से हमारा पुनः अनुरोध है कि ३॥) भेज कर ग्राहक बनने की कृपा करें।

भवदीय कृपाकांक्षी
मैनेजर

विषय-सूची

जनवरी १९४२

विषय	पृष्ठ
१—अमरीका की प्रशान्त महासागरीय सीमा	१
२—पूर्वी द्वीपसमूह	५
३—प्रशान्त महासागरीय सामुद्रिक जहाजी अड्डे	८
४—जापान का धुरी राष्ट्रों के साथ होने का चुनाव	१०
५—प्रशान्त महासागरीय शक्तियों में परिवर्तन	१४
६—डच द्वीप समूहों के साथ जापानी व्यापार	१५
७—पूर्व की ओर त्रिराष्ट्रीय संहर्ष ...	१७
८—प्रशान्त महासागर के हवाई मार्ग ...	२१
९—प्रशान्त महासागर के बन्दरगाह ...	२५

फरवरी १९४२

विषय	पृष्ठ
१—रूसी-जर्मन युद्ध (अपूर्ण) ...	१
२—तकला माकन और गोबी के रेगिस्तान ...	४
३—नवीन पश्चिमी युद्ध-क्षेत्र ...	६
४—उत्तरी पश्चिमी अफ्रीका, विची सरकार और धुरी राष्ट्र	८
५—चन्द्रमा में चीनी आदमी ...	१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113727
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113727

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] माघ, सं० १९९८, जनवरी, १९४२ ई० [अङ्क ९

अमरीका की प्रशान्त महासागरीय सीमा

बर्तमान युद्ध के आरम्भ हो जाने के समय से ही अमरीका ने अपनी रक्षा के लिये प्रबंध करना आरम्भ कर दिया है। सुदूर पूर्व में युद्ध के बादल घुमड़ने के कारण उसे अपनी प्रशान्त महासागरीय सीमा नियत करना भी आवश्यक सा हो गया है।

प्रशान्त महासागर संसार के ५ बड़े महा सागरों में है। पूर्व से पश्चिम तक प्रशान्त महासागर की लम्बाई १० हज़ार मील और उत्तर से दक्षिण तक उसकी चौड़ाई लगभग ७ हज़ार मील है। प्रशान्त महासागर का क्षेत्रफल लगभग ६ करोड़ ८० लाख वर्ग मील है। जो कि संसार के जल भाग का लगभग आधा है। इसकी उत्तरी सीमा में रूस और संयुक्त राष्ट्र की भूमि के मध्य ६० मील से कम फासला है। प्रशान्त महासागर के तीन ओर कनैडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड (ब्रिटिश डोमीनियन) स्थित हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ग्यारह अमरीकन प्रजातंत्र राष्ट्र भी प्रशान्त महासागर के बग़ल में स्थित हैं। प्रशान्त महासागर में जापान के ४०७२ द्वीप समूह, चीन, फिलीपाइन द्वीप समूह, डच पूर्वी द्वीप समूह आदि भी स्थित हैं। प्रशान्त महासागर में संसार के कई एक व्यापारिक मार्ग हैं जिनसे संसार के लगभग सभी राष्ट्रों को लाभ पहुँचता है। अमरीका को प्रशान्त महासागर से बहुत बड़ा लाभ पहुँचता है इसी कारण संयुक्त राष्ट्र अमरीका को अपनी प्रशान्त महासागरीय नीति निर्धारित करनी आवश्यक हो जाती है।

अमरीका की नीति दो बातों पर निर्धारित है। (१) वह संसार के राष्ट्रों को स्वतंत्र देखना चाहता है (२) संसार के प्रत्येक भाग में वह अपने नागरिकों को रक्षा करना चाहता है और अपने व्यापार को सब कहीं समान अधिकार के साथ चलाना चाहता है। १८९९ ई० में जान दे ने कहा था कि चीन में सभी राष्ट्र समान रूप से व्यापार करने के अधिकारी हैं। फिर अमरीका के सामने १९२१-२२ ई० की वाशिंगटन संधियां, चार राष्ट्रों की संधि आदि को भी रक्खे हुये है। वह जापान द्वारा चीन में अधिकार किये हुये स्थानों को भी स्वीकृत नहीं करना चाहता है।

अपनी नीति तथा अपनी सीमा की रक्षा करने के लिये प्रत्येक राष्ट्र को राजनैतिक, सैनिक और जल सैनिक अड्डे बनाने पड़ते हैं। प्रत्येक राष्ट्र को चार पाँच भिन्न भिन्न सीमायें बनाने का अधिकार है जिनमें भौगोलिक, सैनिक, आर्थिक (व्यापारिक), राजनैतिक और मानसिक आदि सीमाएँ हैं। अमरीका इन्हीं सीमाओं को अपने ध्यान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते हुये अपनी रक्षा करना चाहता है। वास्तव में यदि सभी राष्ट्र अपनी उपरोक्त सीमाओं की रक्षा करें और उन्हें पार न करें तो शायद युद्ध का प्रश्न उत्पन्न ही न हो।

अब यदि हम प्रशान्त महासागर की ओर दृष्टि डालें तो हमें पता चलेगा कि अमरीका को प्रशान्त महासागर से बहुत बड़ा लाभ है।

१—भूमि सम्बन्धी समस्या—हवाई द्वीपसमूह, फिलीपाइन, ग्वाम, मिडवे और समोन आदि स्थानों पर संयुक्त राष्ट्र का अधिकार है। फिर अभी हाल में ब्रिटेन के साथ होकर उसने कैंटन, एंडरबरी द्वीप समूह और फोनिक्स द्वीपों की रक्षा का भार भी उठाया है।

२—राष्ट्रीय प्रश्न—लगभग ७००० अमरीकन चीन में, ८००० जापान में, कुछ फिलीपाइन में ६२५ डच द्वीप समूह में, ५२५ स्ट्रेट सेटेलमेंट में हैं। यदि संयुक्त राष्ट्र अपने व्यापारियों और धर्म प्रचारकों को विदेशों में जाने की आज्ञा प्रदान करता है तो यह उसका कर्तव्य है कि वह उनके जीवन और सम्पत्ति की रक्षा करे।

३—धन सम्बंधी समस्या—अमरीका ने दूसरे देशों में अपना धन भिन्न भिन्न कार्यों के लिये लगा रक्खा है। उसका चीन में लगभग सत्तासी करोड़ ५० लाख, जापान में एक अरब २२ करोड़ ५० लाख और पूर्वी द्वीपसमूहों में २ अरब ६२ करोड़ ५० लाख रुपया लगा हुआ है।

४—व्यापारिक समस्या—१९३८ ई० में अमरीका ने चीन को १२ करोड़ २५ लाख का सामान निर्यात किया और वहाँ से १६ करोड़ ४५ लाख रु० का सामान आयात किया। जापान को ८४ करोड़ रु० का सामान निर्यात किया गया और वहाँ से रेशमी और सूती सामान आदि ४४ करोड़ ३८ लाख ७० हज़ार रुपये का आयात किया गया। अमरीका से जापान को मशीनें, लोहा और पिट्रौल गया था। इस प्रकार अमरीका ने जापान को चीन में ४ वर्ष तक युद्ध चलाने में सहायता दिया। संयुक्त राष्ट्र से फिलीपाईन को ३० करोड़ १० लाख का सामान भेजा गया और वहां से ३२ करोड़ ९० लाख का सामान मंगाया गया था।

५—हवाई समस्या—हवाई मार्गों के बनाने से व्यापारिक तथा सैनिक लाभ संसार को होता है। संयुक्त-राष्ट्र ने प्रशान्त महासागर पार पैनअमरीकन हवाई मार्ग बनाये हैं जिनके अड्डे होनोलूलू-मिडवे-ग्वाम-वेक द्वीप और मनिल्ला में हैं। यह अड्डे बड़े उपयोगी हैं।

६—संस्कृति सम्बन्धी समस्या—संयुक्त राष्ट्र ने अमरीका में स्कूल, कालेज अस्पताल तथा दूसरी सामाजिक संस्थाएं स्थापित करके संसार की संस्कृति तथा अपनी प्रतिमा को उन्नतिशील बनाया है।

७—राजनैतिक समस्या—आधुनिक संसार के देश एक दूसरे से इस प्रकार जकड़े हुये हैं कि यदि संसार के किसी कोण में कोई विशेष घटना उत्पन्न होती है तो उसका प्रभाव दूसरे कोण के देशों पर पड़ता है। जैसे योरुप में हालैंड तथा फ्रान्स में जो घटनायें घटीं उनका भारी प्रभाव पूर्वी द्वीपसमूह तथा इण्डोचीन पर पड़ा है। अमरीका का सम्बंध सुदूरपूर्व और प्रशान्त महासागरीय देशों से बहुत बड़ा है इस लिये उसे अपना गौरव तथा प्रभुत्व संसार में रखने के लिये आवश्यक है कि वह प्रशान्त महासागरीय देशों की रक्षा करे।

ऊपर जिन बातों का वर्णन किया गया है उन्हीं की रक्षा संयुक्त राष्ट्र अमरीका को करनी है। अब प्रश्न यह उठता है कि संयुक्त राष्ट्र अपनी नीत की रक्षा करने के लिये कहां तक तयार है। आज योरुप में जर्मनी की विजय के कारण अमरीका को प्रशान्त तथा अटलांटिक दोनों सागरों में शत्रुओं का सामना करना है। प्रशान्त महासागर में जापान उसका शत्रु है और अटलांटिक सागर में जर्मनी है।

अमरीका के निवासी जापानी आक्रमण की सम्भावना तो अवश्य करते थे परन्तु उन्हें यह आशा कदापि न थी कि जापान इतनी शीघ्रता के साथ कई स्थानों पर एकाएक धावा बोल देंगे। इसी कारण अमरीका अपनी तयारी जापानी आक्रमण का सामना करने के लिये भलीभांति नहीं कर सका।

शंघाई में अमरीका के ११०० जलसैनिक थे जो समय पर अन्तर्राष्ट्रीय स्थान की रक्षा में दूसरे राष्ट्रों का साथ देते रहे हैं। ४ अमरीकन गनबोट यांगसी क्षेत्र में और एक कैंटन के समीप था। अमरीका का एशियाई जहाजी बेड़ा शंघाई अथवा मनिल्ला में रहता है। जहाज़ी बेड़े में १० हज़ार टन का एक क्रूशियर जहाज, ७ हज़ार टन का एक पुराना क्रूशियर जहाज, लगभग १२ पुराने विध्वंसकारक जहाज़, १२ पनडुब्बियां और कुछ सहायक जहाज़ हैं। सुदूर पूर्व में अमरीका का कोई बड़ा लड़ाका जहाज़ अथवा विमान संचालक जहाज़ नहीं है। अमरीका पहले जापानी अप्रसन्नता बचाने के लिये हवाई में भी जहाज़ी बेड़ा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखता था परन्तु अब पर्लहार्बर में अमरीकन समुद्री बेड़ा है।

फिलीपाइन द्वीपसमूह में अमरीका की सेना बहुत कम है। इसका मुख्य कारण यह है कि यह जापानी समुद्र में है। १९४६ ई० में अमरीका स्वयम् उसे स्वतंत्र बनाना चाहता था फिर वह अमरीका से बहुत दूर है। पर्लहार्बर की दूरी वहां से ५ हज़ार मील है। फिलीपाइन में अस्त्र-शस्त्र तयार करने के कारखाने भी नहीं हैं। वहां कोई जहाज़ी अड्डा ऐसा नहीं है जहां से भीषण आक्रमण किया जा सके। हां मनिल्ला की खाड़ी में काफी मज़बूत क़िलेबन्दी है और इसी कारण मनिल्ला ने काफी समय तक जापानी आक्रमण का सामना भी किया। कवाइट, मनिल्ला आदि में कोई ऐसे जहाज़ी घाट नहीं हैं जहां बड़े टूटे जहाज़ खड़े हो सकें या उनकी मरम्मत हो सकें। लूज़न के उत्तर की ओर प्रोटास रीफ में जापानियों का अधिकार था और उन्होंने वहां रेडियो स्टेशन बना रक्खा था। सचमुच ही संयुक्त-राष्ट्र ने फिलीपाइन की रक्षा के लिये कोई तयारी नहीं की-थी क्योंकि तयारी में बहुत बड़े व्यय की आवश्यकता थी।

इस प्रकार अमरीका की रक्षक लाइन मध्यवर्ती प्रशान्त महासागर में है जहां पर कि उसकी जलसेना है।

अमरीका और जापान की जलसेना की तुलना

अमरीका

नाम जहाज़	संख्या	टनों में भार
१–बैटिलशिप (बड़े लड़ाका जहाज़)	१५	४,६४,३००
२–विमान ले जाने वाले जहाज़ (एअर क्रैफ्टकैरियर)	५	१,२०,१००
३–हैवी क्रूशियर (भारी लड़ाका जहाज़)	१८	१,७५,२००
४–लाइट क्रूशियर (छोटे " ")	१९	१,५७,७७५
५–डिस्ट्राएर (विध्वंसकारक जहाज़)	१८२	२,३६,०७०
६-सबमरीन (पनडुब्बी जहाज़)	६३	७१,१७५

जापान

नाम जहाज़	संख्या	टनों में भार
१–बैटिलशिप (बड़े लड़ाका जहाज़)	९	२,७२,०७०
२–विमान ले जाने वाले जहाज़ (एअर क्रैफ्टकैरियर)	६	८८,४७०
३–हैवी क्रूशियर (भारी लड़ाका जहाज़)	१२	१,०७,८००
४–लाइट क्रूशियर (छोटे " ")	१५	९७,५५५
५–डिस्ट्राएर (विध्वंसकारक जहाज़)	८४	१,१३,४७६
६–सबमरीन (पनडुब्बी जहाज़)	३५	५२,४३२

इस संख्या में पुराने ढंग के जहाज़ भी सम्मिलित हैं जो आज युद्ध में उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकते हैं।

१९४० ई० में अमरीका ने ८ नये बैटिलशिप (लगभग (३ लाख टन) दो विमान ले जाने वाले जहाज़ (३४,७०० टन) ६ छोटे लड़ाका जहाज़ (४४ हज़ार टन), एक बड़ा सुरंग छोड़ने वाला जहाज़, ३१ विध्वंसकारक जहाज़ (४९,९८० टन) और १५ पनडुब्बी जहाज़ों (२०८२० टन) के बनाने की योजना की गई थी। जापानी योजना का पता नहीं है क्योंकि वह अपने जहाज़ी भेद को बहुत समय से छिपाये हुये है और विदेशियों को बतलाना नहीं चाहता है।

अमरीका ने अपनी योजना के अनुसार ६ लड़ाका जहाज़ (प्रत्येक ३५ हज़ार टन) और २ लड़ाका जहाज़ ४५ हज़ार टन के बना रहा है। इतने बड़े जहाज़ अमरीका के पास पहले न थे। वह १९४१ ई० में इनसे भी बड़े जहाज़ तयार करने की बातें भी सोच रहा था। यह जहाज़ शायद अब तक बन चुके होंगे।

अमरीका और जापान दोनों की जलसेना अच्छी तगड़ी है इसलिये उनकी जलसेना में समुद्री युद्ध होने की बहुत कम सम्भावना है जब तक कि उनको सेनाएं एक दूसरे की सीमा को पार न कर जावें।

शायद जापान फिलीपाइन और पूर्वी द्वीप समूहों की विजय करके प्रशान्त महासागर में अमरीकन व्यापार को बन्द करना चाहता हो। इन द्वीपों के चले जाने से अमरीका को रबर, टीन, कुनैन और नारियल के गोले न प्राप्त हो सकेंगे। रबर संयुक्त राष्ट्र तयार कर सकता है या दक्षिणी अमरीका से उपज बढ़ा कर प्राप्त कर सकता है। टीन अमरीका को बोलीविया से प्राप्त हो सकती है। पनामा पर जापानी आक्रमण की कम सम्भावना है क्योंकि पनामा जापान से बहुत दूर है। पनामा पर जापानी आक्रमण जभी सम्भव हो सकता है जब कि वह पनामा के समीपवर्ती देशों में अपनी पञ्चम सेना तयार करके उसकी सहायता ले सके।

अमरीका के पास ऐसी पनडुब्बी जहाज़ें हैं जो अमरीकन अड्डों से चल कर जापान समुद्रों तक पहुँच सकते हैं और फिर लौट कर जा सकते हैं। इस प्रकार अमरीका जापान को पूर्वी द्वीप समूह का तेल लेने से उसे रोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। हवाई से भी अमरीका जापानी जहाज़ों पर आक्रमण करके उसे व्यापारिक हानि पहुँचा सकता है।

जापान के मैंडेटेड द्वीप समूह पहले जर्मनी के हाथ में थे। १९१९ ई० के पश्चात् वह जापान के अधिकार में आये हैं। यह दक्षिणी-पश्चिमी प्रशान्त महासागर में हैं। इनके चार मुख्य झुंड हैं। (१) पालौस (२) मैरियानास (३) कैरौलाइन्स (४) मार्शल्स। कुल मिला कर १४०० द्वीप हैं परन्तु उनका क्षेत्रफल ८२९ बर्गमील है। इनमें से कुछ तो बहुत छोटे हैं और केवल प्रवाल की चट्टानें हैं। उनमें से कुछ ही सैनिक दृष्टि से उपयोगी हैं। ट्रूक में एक सुन्दर बन्दरगाह है और उसकी अच्छी क़िलेबन्दी है। सैपान द्वीप में जापानी हवाई तथा समुद्री अड्डा है। यह द्वीप ग्वाम के उत्तर है। जापान ने याकोहामा से सैपान और पालौस तक हवाई मार्ग बनाया है। जापान ने कई वर्षों से विदेशियों को इन द्वीपों के भ्रमण से रोक रक्खा है इस कारण द्वीपों का अधिक हाल नहीं मालूम है। इन द्वीपों का आक्रमण करना सरल कार्य नहीं है। जापान और अमरीका के युद्ध का फल यह होगा कि अमरीका जापान का घेरा डालने में सफल हो सकता है परन्तु जापान नहीं हो सकता। यदि जापान फिलीपाइन द्वीप समूहों की विजय करके रुक जाता है और अमरीका उसे पुनह लेने के लिये बढ़ता है तो फिर अमरीका को जापान के साथ कई वर्षों तक युद्ध करना पड़ेगा।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका अलास्का, हवाई और पनामा तीनों स्थानों को सैनिक रूप से मज़बूत बना रहा है। इस त्रिभुज के मज़बूत बन जाने से किसी भी शत्रु को प्रशान्त महासागर के इस भाग में प्रवेश करना कठिन हो जावेगा। इस त्रिभुज के मिडवे और वेक द्वीप दूसरे अड्डे हैं जो हवाई के सामने हैं। हवाई के दक्षिण की ओर जान्स्टन, पामीरा और कैंटन द्वीप हैं जो हवाई और पनामा के मध्य समुद्र की रक्षा में सहायक होंगे।

अलास्का को मज़बूत करने के लिये संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने २,९९,२५,००० रुपये की मंज़ूरी की है। अलास्का में डच हार्बर पर समुद्री अड्डा, सित्का पर समुद्री तथा हवाई अड्डा, कोडियाक द्वीप में समुद्री तथा हवाई अड्डा बनाया जावेगा। कोडियाक अलास्का की जलसेना का प्रधान केन्द्र होगा।

हवाई द्वीपसमूह में ओहू द्वीप में अमरीका ने बड़ी मज़बूत क़िलेबन्दी कर रक्खी है। यहां का मुख्य बन्दरगाह पर्ल हार्बर है। अब तक पर्ल हार्बर की तयारी में २ अरब ४५ करोड़ रु० लगाया है। यह अमरीका का पनामा के सिवा दूसरा बड़ा सैनिक स्थान है। पर्ल हार्बर में एक पनडुब्बी जहाज़ों का अड्डा, एक ड्राईडाक, समुद्री जंगी जहाज़ों के ठहरने का स्थान, कोयला लकड़ी और अस्त्र-शस्त्र रखने का स्थान, एक बड़ा समुद्री स्टेशन (जिसमें समस्त अमरीका का जहाज़ी बेड़ा समा सकता है), एक हवाई अड्डा, एक सैनिक गढ़ और ५० दिन के लिये सैनिक भोजन का सामान आदि रहता है। उसी के समीप दूसरे हवाई मैदान हैं। कैन्योहे में और ओहू में हवाई स्टेशन बनाने के लिये २ करोड़ ३ लाख रुपया अभी हाल में ही दिया गया है।

हवाई द्वीप समूह के १३१५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर मिडवे द्वीप, २३ १५ मील पश्चिम की ओर वेक द्वीप है। यह द्वीप अमरीका की रक्षक योजना में सम्मिलित हैं। मिडवे और वेक द्वीपों में पैन अमरीकन हवाई मार्गों के हवाई स्टेशन हैं। मिडवे में सैनिक अड्डों के लिये लगभग एक करोड़ ८८ लाख और वेक द्वीप के लिये लगभग १ करोड़ ४० लाख रुपया दिया गया है।

जान्स्टन, पामीरा, कैंटन और रोज़ द्वीपों में भी हवाई अड्डे बनाये गये हैं। जान्स्टन द्वीप वेन द्वीप से २००० मील दक्षिण-पूर्व पामीरा द्वीप की दशा सुधारने के लिये ३८ लाख ५० हज़ार रुपया दिया गया है। पहले यह होनोलूलू के एक अमरीकन नागरिक के अधिकार में था अब अमरीका की सरकार ने ले लिया है। इसमें ५२ छोटे छोटे द्वीप तथा एक बड़ी उथली पर्वतीय झील है जिसे हवाई मैदान बनाया जा सकेगा।

पनामा नहर जापान से ८ हज़ार मील की दूरी पर है। इससे उस पर जापानी आक्रमण की सम्भावना कम है। अभी हाल ही में अमरीका के सेनेट ने पनामा नहर में एक तीसरे बड़े लाकों की डोर तयार करने के लिये ३ अरब ९९ करोड़ रुपया दिया है। यह लाकों की डोर बर्तमान लाकों की डोर से अलग बनेगी और इसमें ११० फुट से बड़े बीम वाले जहाज़ जा सकेंगे।

ग्वाम द्वीप का क्षेत्रफल २५० बर्गमील और जनसंख्या २१,००० है। वहां के निवासी यामोरोस हैं। ग्वाम द्वीप १८० मेरीडियन के बाहर स्थित है। यह होनोलूलू से ३३०० मील पश्चिम, मैनिला से १५०० मील पूर्व और याकोहामा से १३५० मील की दूरी पर है। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वान जापान से अमरीका की अपेक्षा अधिक समीप है। यह जापान के मेण्डेटेड द्वीपों से घिरा है और सैपान का जापानी अड्डा ग्वाम से केवल १०० मील की दूरी पर है। १८६६ ई० से ग्वाम की देख भाल अमरीकन जल सेना के हाथ में है। इस समय ग्वाम में केवल ४०० जापानी जल सैनिक हैं। कुछ अमरीकन राजनीतिज्ञ ग्वान को प्रशान्त महासागर का जिब्राल्टर बनाना चाहते हैं और कुछ लोग तो उसपर कदापि धन लगाने के लिये तयार नहीं हैं। यदि ग्वाम को एक प्रथम श्रेणी का जहाजी तथा हवाई अड्डा अमरीका को बनाना है तो उसे कम से कम डेढ़ अरब रूपया लगाना होगा।

अमरीका अलास्का, हवाई और पानामा को मिलाकर एक मज़बूत रक्षक त्रिभुज बनाना चाहता है। अमरीका के पास जैसी बड़ी जल सेना है उसको ध्यान में रखते हुये कहा जा सकता है कि अकेले जापान अमरीका को पराजित नहीं कर सकता है। हां यह बात अवश्य ही सत्य है कि उसे जर्मनी के कारण अटलांटिक सागर में बड़ी कठिनाई हो रही है। यदि जर्मनी और जापान दोनों ही अमरीका पर धावा करते हैं और सिंगापुर भी ब्रिटिश अधिकार से निकल जाता है तो फिर ऐसी दशा में अमरीका को अपनी सीमावर्तीय नीति बदलनी होगी। युद्ध के समय सिंगापुर का जहाज़ी अड्डा अमरीका के लिये उतना ही उपयोगी है जितना कि पर्ल हार्बर। बिना सिंगापुर के अड्डे का सहारा लिये अमरीका जापानी सागरों में प्रवेश नहीं कर सकता है।

यदि अटलांटिक सागर में ब्रिटिश जलसेना नष्ट कर दी जाती है तो फिर अमरीका को अपनी जलसेना संसार में सब से बड़ी करनी होगी।

जब से जापान ने प्रशान्त महासागरीय युद्ध आरम्भ किया है तब से ब्रिटिश तथा अमरीकन क्षेत्र में बड़ी घबड़ाहट उत्पन्न हो गई है। जापान को आक्रमण में बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। फिलीपाइन पर प्रायः उसका अधिकार सा हो चुका है। ग्वाम, मिडवे, हवाई और वेक द्वीपों पर जापान ने आक्रमण करके अमरीका को बड़ी हानि पहुँचाई है। जापानी आक्रमण समस्त पूर्वी द्वीपसमूहों पर हो रहा है। मलय में ब्रिटिश सेना से युद्ध चल रहा है। प्रिंस आफ वेल्स तथा रिपल्स जहाज़ों को बमवर्षा करके जापान डुबाने में सफल हुआ है इसी कारण सिंगापुर की दशा भी शोचनीय हो गई है।

पूर्वी द्वीप समूह

हालैंड पर जर्मन आक्रमण होने तथा वहां से रानी विल्हेल्मिना की सरकार के हट जाने से डच द्वीप समूहों को स्वयम् अपनी रक्षा का भार उठाना पड़ा है। हालैंड के बैंक तथा बड़े सौदागर और जहाजी कम्पनियों के प्रधान केन्द्र बटाविया चले गये हैं। राजनैतिक ध्यान से भी डच द्वीपसमूह डच शक्ति के प्रधान केन्द्र बन रहे हैं। वहां के गवर्नर जनरल जोनरवीर जादा वान स्टोर्कनबर्ग स्टाचौवेर को अधिकार दे दिया गया है कि वह समयानुकूल अपनी इच्छानुसार अपना शासन चला सकता है। अब प्रश्न उठता है कि क्या डच द्वीपसमूह भविष्य में डच साम्राज्य के भाग होकर रह सकेंगे? जैसा कि जापानी आक्रमण से सिद्ध हो रहा है। जापान तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका दोनों ने ही अप्रैल और मई सन् १९४० में संतोष दिलाया था कि वे डचद्वीप समूह में किसी भी दूसरे राष्ट्र की उपस्थिति न देख सकेंगे और कोई भी राष्ट्र उन पर आक्रमण नहीं करेगा।

आर्थिक, सैनिक तथा राजनैतिक दृश्य से डच द्वीप समूहों की स्थिति बड़ी मार्के की है। डचद्वीप समूह का क्षेत्रफल ७ लाख ३४ हजार वर्ग मील है जो जापान की भूमि का पांच गुना है। यह हिन्द महासागर से प्रशान्त महासागर तक फैले हुये हैं। उनकी जन संख्या लगभग ७ करोड़ है। जावा द्वीप जिसका क्षेत्रफल समस्त भूमि का केवल $\frac{1}{15}$ है वहाँ समस्त जनसंख्या का दो तिहाई भाग बसा हुआ है। सुमात्रा के रबर तथा तम्बाकू वाले प्रान्त की जन संख्या अधिक है। डच द्वीपसमूह के अधिकांश निवासी मलय जाति के मुसलमान हैं। वहाँ लगभग १२ लाख चीनी, ढाई लाख योरुपीय, ७ हजार जापानी और फारमूसा निवासी और ७ हजार जर्मन हैं। १६ वर्ष से ऊपर अवस्था के जर्मन निवासी कैद कर लिये गये हैं।

डच द्वीपसमूह में रबर, टीन, पिट्रौल, गन्ना, कहवा चाय, तम्बाकू, खोपरा, नारियल का तेल और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी कृषक तथा खनिज वस्तुओं की उपज होती है।

अभी तक और दूसरे पराधीन राज्यों की भांति डच द्वीपसमूहों की उन्नति की ओर डच सरकार ने बहुत कम ध्यान दिया था परन्तु अब वहां प्रत्येक भांति के रोजगार की ओर ध्यान दिया जा रहा है। भिन्न भिन्न प्रकार के कारखाने खुल रहे हैं।

डच द्वीप समूह का अधिकांश रबर तथा टीन संयुक्त राष्ट्र अमरीका जाता है। रबर के बागीचे और तेल के कारखानों में भी संयुक्त राष्ट्र ने बहुत सा धन लगा रक्खा है। १९३८ ई० में २३ करोड़ २ लाख और १९३९ ई० में ३२ करोड़ ५५ लाख रुपये का सामान अमरीका ने वहाँ से खरीदा था। परन्तु इस के सिवा मलय और योरुप होकर भी बहुत सामान वहाँ का अमरीका जाता है इसलिये यह ठीक ठीक लेखा नहीं लगाया जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र कितनी मात्रा तक डच द्वीपसमूह पर निर्भर करता है। १९३९ ई० में वहाँ १ लाख ७२ हज़ार टन रबर (१ टन = लगभग २८ मन) २१२८० टन टीन की उपज हुई थी। वहाँ कुनैन की उपज भी बहुत है संसार की ९० प्रतिशत कुनैन डचद्वीप समूह में होती है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका वहाँ का बहुत अधिक सामान लेता है फिर आस्ट्रेलिया, इंगलैंड, फ्रांस, आयरलैंड, जर्मनी ापान इत्यादि राष्ट्रों को यहाँ से सामान जाता है। ब्रिटिश साम्राज्य का डच द्वीपों से बहुत बड़ा सम्बन्ध है वहाँ पर ब्रिटेन का बहुत सा धन लगा है उसके बहुत से छोटे छोटे द्वीप सिंगापुर के अड्डे के समीप हैं फिर उत्तरी बोर्नियो पर ब्रिटिश अधिकार है। न्यूगिनी का कुछ भाग आस्ट्रेलिया के अधिकार में है।

१९३८ ई० में जर्मनी ने डच द्वीपों से लगभग ढाई करोड़ गिल्डर (एक सिक्का) का और फ्रांस ने १ करोड़ १२ लाख गिल्डर का सामान खरीदा था।

जापान का सम्बन्ध भी डचद्वीप समूहों से बहुत बड़ा है। वहाँ का सब से अधिक रबर तथा टीन जापान जाता है। जापान वहाँ का पिट्रोल और मिट्टी के तेल का भी बहुत बड़ा खरीदार है। उसने वहां मिट्टी के तेल तथा पिट्रौल के कारखानों में बहुत बड़ा धन लगा रक्खा है। संसार के तेल का १ भाग डच द्वीपों से निकाला जाता है। १९३९ में वहां ६ करोड़ १५ लाख ८० हजार बैरेल तेल निकाला गया था। सब से अधिक तेल बोर्नियो के पूर्वी तट पर निकलता है। सुमात्रा के दक्षिणी भाग के कुवों से निकाले जाने वाले तेल की मात्रा दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। न्यूगिनी में भी ब्रिटिश तथा अमरीकन कम्पनियों ने तेल निकालना आरम्भ कर दिया है। विमानों के लिये गैसोलिन बनाने के लिये भी कारखाने खोल दिये गये हैं।

डच द्वीपों में जापान की बनी हुई वस्तुओं की खपत अधिक है। इंगलैंड तथा दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों की बनी हुई वस्तुएं वहां के निवासियों के लिये अधिक महँगी होती हैं इसी कारण वह जापान की सस्ती वस्तुओं को खरीदना अधिक उपयुक्त समझते हैं।

१९३६ ई० में जापान ने डच द्वीपसमूहों के हाथ ८,५१,०८,००० गिल्डर का सामान बेचा और २,४७,८८,००० गिल्डर का खरीदा। जब हालैंड का पतन हुआ तो जापान ने कहा कि वह डच द्वीपसमूह से पहले की भांति हो कच्चा सामान खरीदेगा इस पर ब्रिटिश सरकार ने जापान को विश्वास दिलाया कि वह डच द्वीपों में जापानी व्यापार पर किसी प्रकार का रोक न लगावेंगे।

जापान की सरकार ने कभी भी डच द्वीपों पर अधिकार जमाने के चिन्ह नहीं प्रकट किये। वह सदैव यही कहता रहा कि वह डच द्वीपसमूहों से अधिक और व्यापारिक सम्बन्ध रखकर समानरूप से उन्नति करना चाहता है। डच द्वीपसमूह की सरकार भी जापान के साथ मैत्री का व्यवहार करती चली आई है। इसी कारण जापान को न्यूगिनी में अपने कुछ कारखानों के स्थापित करने, जहाजी मैदान बनाने और तोपों के लगाने में सफलता प्राप्त हुई है।

योरुप, पूर्वी राष्ट्रों और आस्ट्रेलिया के समुद्री तथा हवाई मार्गों के चौहोर डच द्वीपों की स्थिति बड़े मार्के की है। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और ब्रिटिश साम्राज्य के लिये यह आवश्यक बात है कि डच द्वीप सदैव किसी मित्र के हाथ में रहें। यदि डच द्वीप किसी शत्रु के हाथ में चले जाते हैं तो फिर ब्रिटिश साम्राज्य के लिये सिंगापुर और हांगकांग पर अधिकार रखना कठिन होगा। साम्राज्य के मित्र राष्ट्रों तथा चीन के मध्य व्यापार चलाना कठिन होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक तथा आर्थिक दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र अमरीका और डच द्वीपों का गहरा सम्बन्ध है। संयुक्तराष्ट्र प्रशान्त महासागर में राष्ट्रों की शक्ति समानता के साथ रखना चाहता है। साथ ही साथ वह अपने लिये रबर और टीन के स्थान खुले रखने का इच्छुक है। फिलीपाइन उसके अधिकार में ही था। हवाई मार्ग से बटाविया मनिला से १८०० मील की दूरी पर है। कुछ डच द्वीप बोर्नियो के उत्तर मिंड नाव के लगभग सामने स्थित है। ग्वाम को छोड़ कर फिलीपाइन के लगभग सभी द्वीप जापान के अधिकार में हैं। फारमूसा द्वीप लगभग ५० वर्ष से जापानी अधिकार में है। जापानी लोगों ने हैनान द्वीप की भी किलेबन्दी कर ली है। चीन सागर में जापान ने स्पार्टली द्वीपों पर भी अधिकार कर लिया है।

डच द्वीपों में इतना अधिक तेल निकलता है कि वह समस्त जापान में नहीं खप सकता इसलिये अगर वहाँ जापानी अधिकार हो जावे तो भी वहाँ का पिट्रौल दूसरे राष्ट्रों को भेजा जावेगा। अमरीका के पास रबर की बहुत कमी है। यदि युद्ध के कारण रबर अमरीका को न मिला तो फिर उसे बनावटी रबर तयार करना पड़ेगा। जहाँ तक टीन का सम्बन्ध है संयुक्त राष्ट्र अपनी आवश्यकतानुसार बोलिविया से खरीद सकता है।

डच द्वीपसमूहों की रक्षा का प्रश्न बड़ा ही जटिल है। प्रशान्त महासागर में जहाजी जापानी बेड़े को चुनौती देने वाला कोई भी दूसरा राष्ट्र नहीं है। पूर्व की ओर ब्रिटेन का एक भी बड़ा जहाज नहीं है। उसके पास कुछ क्रूशियर जहाज़ अवश्य हैं। आस्ट्रेलिया के पास ६ और न्यूज़ीलैंड के पास दो क्रूशियर जहाज हैं। केवल अमरीकन जहाज़ी बेड़ा ही जापानी जहाज़ी बेड़े को चुनौती दे सकता है। परन्तु पर्ल हार्बर बटाविया से ७ हजार मील की दूरी पर है। अमरीका के जलसैनिक विशेषज्ञों का कथन है कि जल तथा स्थल अड्डों की अनुपस्थिति में जापानी बेड़े पर आक्रमण करना बड़े खतरे की बात है।

डच द्वीपसमूह जापानी आक्रमण से अपनी रक्षा भली भांति नहीं कर सकते हैं। डच द्वीपों की सेना में ५० हज़ार सैनिक हैं। डच द्वीपों में जहाजी बेड़े में २ क्रूशियर ७ हजार टन के एक ६ हजार टन का, दो छोटे क्रूशियर साढ़े तीन हजार टन के, १२ विध्वंस कारक जहाज १८, पनडुब्बी जहाज़ और दूसरे सहायक जहाज हैं। इसके सिवा एक बेड़ा समुद्री विमानों का भी है। याकोहामा-बोर्नियो की दूरी २४०० मील है।

जापानी आक्रमण होने पर डच द्वीपों के निवासियों की भावना क्या हुई है सब बात ठीक ठीक नहीं कही जा सकती है। वहां राष्ट्रीयता का प्रचार भी खूब है। राष्ट्रीय नेता अपने राष्ट्र का शासन चाहते हैं। चीन और जापान दोनों से उन्हें भय है। अभी हाल ही में समाचार से मालूम हुआ है कि बटाविया डच डोमिनियन से अलग होना चाहता है कुछ भी हो डचद्वीपों की प्रजा की भावना पर ही जापानी सफलता अथवा असफलता निर्धारित है।

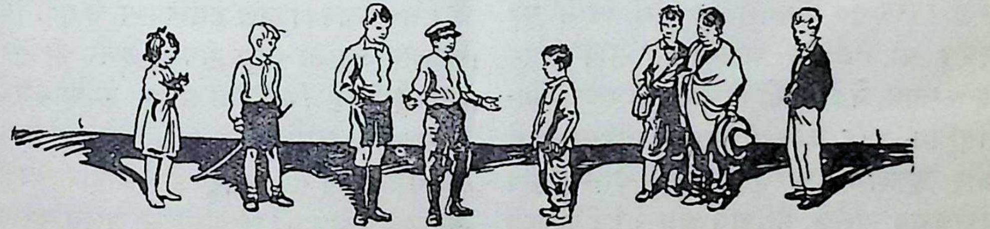

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशान्त महासागरीय सामुद्रिक जहाजी अड्डे

वाशिंगटन सम्मेलन १९२३ ई० के अनुसार प्रशान्त महासागर में अमरीका, इंगलैंड और जापान को ५: ५: ३ के अनुपात में बड़े जहाजों के रखने का अधिकार प्राप्त हुआ था। साथ ही साथ यह बात भी तय पाई थी कि प्रशान्त महासागर के कुछ भागों में वे अपने जहाजी अड्डे न बनावेंगे। नव राष्ट्र संधि में यह बात निश्चय की गई थी कि सभी प्रशान्त महासागरीय राष्ट्रीय चीन के भूमि का आदर करेंगे और अपहरण न करेंगे परन्तु १९३१ ई० में जापान ने संधि की अवहेलना करके मंचूरिया पर अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् जापान के पर राष्ट्र विभाग ने घोषणा की कि जापान के विरुद्ध लड़ाई करने के लिये चीन को यदि कोई राष्ट्र धन देगा तो वह जापान का शत्रु माना जावेगा। २४ दिसम्बर १९३४ ई० को जापान सामुद्रिक संधि से भी अलग हो गया। इसका मुख्य कारण यह था कि जापान के जल सैनिक प्रधान अफसर १९२२ ई० के जहाजी अनुपात को अपना निरादर समझते थे और वह अधिक से अधिक जहाज बनाकर अपने बन्दरगाहों पर रखना चाहते थे।

आधुनिक सामुद्रिक युद्ध में समुद्री अड्डे अत्यन्त आवश्यक तथा उपयोगी हैं। किसी बड़े से बड़े जहाजी बेड़े को यदि कई हजार मील चलकर आक्रमण करना पड़ता है और उसे लौटते समय कोयला पानी या मरम्मत और क्षणिक अवकाश के लिये कोई स्थान बीच में नहीं मिलता तो उसे अवश्य ही नष्ट हो जाना पड़ेगा। सत्य तो यह है कि आधुनिक काल में जहाजों की संख्या अधिक करने की अपेक्षा जहाजी अड्डों का अधिक होना ज्यादा आवश्यक है। इसी कारण १९२२ ई० में वाशिंगटन सम्मेलन में यह बात निश्चय की गई कि अल्यूशियन द्वीप समूह फिलीपाइन, ग्वाम, वेक, समोआ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका, हांगकांग और दक्षिणी सागर द्वीपसमूह में ब्रिटेन और कुरीलेस, फारमूसा, लूचू, वेसिन, द्वीप समूह, करोलाइन मार्शल, मैरिअने और मैंडेट के कुछ द्वीपों में जापान न तो किलेबन्दी करें और न जहाजी अड्डे बनावें। ऐसा करने से उपरोक्त राष्ट्रों को एक दूसरे से किसी प्रकार का न तो भय उत्पन्न होगा और न आपस में लड़ाई की ही सम्भावना होगी।

फिलीपाइन में इस समय ४००० अमरीकन सेना और ६ हजार फिलीपाइन की स्काउट सेना थी। अमरीका के एशियाई जहाजी बेड़े में अगस्टा क्रूशियर १३ विध्वंसकारक जहाज और, १२ सबमरीन जहाज और कुछ सहायक जहाज थे। यह सब मनिला की खाड़ी में कवाइट स्थान पर थे। गर्मी के दिनों में सबमरीन और डिस्ट्राएर (विध्वंस कारक जहाज) उत्तर की ओर चेफू और सिंगटाव के चीनी बन्दरगाहों में चले जाते थे। कवाइट में केवल छोटे जहाज ठहर सकते हैं वहां बड़े जहाजों के ठहरने के लिये उपयुक्त स्थान नहीं हैं।

दक्षिणी प्रशान्त महासागर ब्रिटेन के लिये बड़ा ही उपयोगी है। न्यूज़ीलैंड और आस्ट्रेलिया के मार्ग वहीं पर हैं। दक्षिणी प्रशान्त महासागर में मलय प्रायद्वीप स्थित है जहां संसार का ५५ प्रतिशत रबर, और ३० प्रतिशत टीन की उपज होती है। वहीं पर डच द्वीप समूह स्थित है। डच द्वीप समूह पर आक्रमण होना ब्रिटिश साम्राज्य के ऊपर आक्रमण होना है।

१९३६ ई० में ग्रेट ब्रिटेन ने प्रस्ताव किया कि दूसरी शर्तों के समय को समाप्त होने पर भी जहाजी अड्डे न बनाने वाली शर्त लागू रहे। इसका मुख्य कारण यही था कि उसे अपने ऊपर जापानी आक्रमण का भय था फिर इँगलैंड यह भी चाहता था कि वह सिंगापुर के बन्दरगाह की किलेबन्दी को भली भांति समाप्त कर ले।

सिंगापुर नगर सिंगापुर नामक द्वीप के दक्षिणी तट पर मलय प्रायद्वीप के दक्षिणी कोण पर स्थित है। यह मलक्का जल डमरूमध्य के पूर्वी सिरे पर है। वर्तमान जहाजी अड्डा द्वीप के उत्तर की ओर बनाया गया है। यह किसी भी प्रकार के आक्रमण होने से भली भांति सुरक्षित है। इस अड्डे का सामना जोहोर जलडमरूमध्य की ओर है। जोहोर जलडमरूमध्य मलय प्रायद्वीप को सिंगापुर से अलग करता है। इसी जलडमरूमध्य में युद्ध के समय ब्रिटिश जहाजी बेड़े को ठहरने के लिये स्थान बनाया गया है। यहाँ ४ वर्गमील समुद्र जहाजों के ठहरने के लिये सुरक्षित रक्खा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंगापुर के जहाजी अड्डे में बड़े बड़े तैरते हुये घाट हैं जो छोटे जहाजों द्वारा इधर उधर खींच कर पहुँचाये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त कंक्रीट के पक्के ड्राई डाक (सूखे घाट) हैं जो संसार में तीसरा बड़ा सूख डाक है। इस घाट का बांध २२०० फुट लम्बा है। यह बांध ड्राई डाक से जल डमरू मध्य की ओर निकला हुआ है। ड्राई डाक की लम्बाई १ हजार फुट, चौड़ाई १३० फुट और मोटाई ८० फुट इसमें एक बड़ी पम्प करने वाली कल लगी है जो धरती के भीतर कमरे में है। इस घाट पर क्वीन मैरी अथवा दूसरे जहाज खड़े हो सकते हैं। इसके सिवा और दूसरे फौजी स्थान अड्डे के इधर उधर बने हैं। सिंगापुर के जहाजी अड्डे में ८ क्रूशियर जहाज एक विमान ले जाने वाला जहाज, ९ विध्वंस कारक जहाज, १५ पनडुब्बी जहाज, ५ स्लूप और १६ गनबोट हैं।

सिंगापुर का बन्दरगाह, जली, स्थली और हवाई सेना का अड्डा है। सिंगापुर के जहाजी अड्डे से २ मील की दूरी पर सेलातर गांव में हवाई स्टेशन है। जहाँ ब्रिटिश साम्राज्य के हवाई लाइन तथा राएल डच लाइन के विमान सदैव आते जाते रहते हैं। इस स्टेशन पर साधारण रूप से ६०० हवाई सैनिक तथा अफसर रहते हैं। स्टेशन को रक्षा के लिये विमानों को विध्वंस करने के लिये सभी प्रकार की सैनिक कलें तथा सामान हैं। सिंगापुर में बमबर्षक विमानों के दो स्क्वैडरन (जिनमें टारपीडो बमवर्षक भी हैं) और एक स्क्वैडरन लम्बे बोटों वाले विमानों का है जो समुद्र में भली प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है। इसके सिवा दो और सैनिक हवाई स्टेशन बनाये गये हैं।

सिंगापुर द्वीप के उत्तरी-पूर्वी कोण पर जोहोरे जल डमरू मध्य के पूर्वी द्वार पर चांगी कस्बा है। इस स्थान पर १४०० हवाई सैनिकों के लिये बैरेक बने हैं। यहाँ २० से अधिक विमान-संहारिणी तोपें हैं। सुरंगें, सर्च लाइट तथा दूसरी रक्षक सामग्रियां भी हैं। वहां भारी तोपें उपयुक्त स्थानों पर लगी हैं जो २० मील तक गोले फेंक सकती हैं। सिंगापुर के जली और स्थली हवाई अड्डों के बनने का मुख्य कारण जापानी प्रगति है। यह बात निस्सन्देह कही जा सकती है कि जापानी शक्ति को रोकने के लिये ही सिंगापुर का अड्डा बनाया गया है।

प्रशान्त महासागर में जापान के सिवा और दूसरा कोई भी राष्ट्र नहीं है जो ब्रिटेन को किसी प्रकार की हानि पहुँचा सके। सिंगापुर के सम्बन्ध में जो कुछ लेफ्टिनेंट कमांडर टोटा इशामारू ने "जापान मस्ट फाइट ब्रिटेन" नामक पुस्तक में लिखा है उससे भली प्रकार स्पष्ट है कि सिंगापुर पर जापानी आक्रमण होना अनिवार्य है। सिंगापुर पर अधिकार हो जाने से फिर जापानी समुद्री जहाजी बेड़े को पूर्वी संसार में रोकना असम्भव हो जावेगा।

सिंगापुर फारमूसा से १६२५ मील की दूरी पर, हांशू द्वीप के जापानी ससेबो समुद्री अड्डे से २५२० मील की दूरी पर है। इस प्रकार सिंगापुर के कारण भारत डच पूर्वी द्वीपसमूह आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और योरुपीय व्यापार की रक्षा होती है।

सिंगापुर के बन्दरगाह को किले बन्दी तथा मजबूती करने का एक कारण यह भी था कि १९४६ ई० में फिलीपाइन से अमरीका का अधिकार उठ जाने को था। अमरीकन अधिकार उठ जाने के पश्चात् फिलीपाइन पर जापानी अधिकार होने की सम्भावना थी। इसी कारण सिंगापुर को मज़बूत बनाने की आवश्यकता ब्रिटेन को प्रतीत हुई। ब्रिटेन की कदापि यह भावना न थी कि वह जापानी भूमि पर अपना अधिकार करे वह तो अपनी रक्षा के लिये ही अपनी किलेबन्दी कर रहा था परन्तु जापान को शायद इसी से भय प्राप्त हुआ और उसका भय बढ़ता ही गया जो आज संसार के सामने आक्रमण के रूप में उपस्थित हुआ है।

जापानी आक्रमण जितनी प्रबलता के साथ हुआ है उसकी आशा संसार को कदापि न थी। ब्रिटेन और अमरीका जैसे बड़े राष्ट्रों की भूमि पर एकाएक धावा बोलना और दोनों को एक साथ शत्रु बनाना जापान की शक्ति से परे था परन्तु उसे पश्चिमी युद्ध की सहायता मिली उसका उसने लाभ उठाया और आक्रमण किया। आक्रमण में उसे सिंगापुर में प्रिंस आफ़ वेल्स (संसार विख्यात बड़ा लड़ाका जहाज) तथा रिपल्स नामक ब्रिटिश लड़ाका जहाजों को डुबाने में सफलता प्राप्त हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान का धुरी राष्ट्रों के साथ होने का चुनाव

अब यह बात अधिक स्पष्ट होती जा रही है कि धुरी राष्ट्रों के साथ मिलने का चुनाव जो जापान ने किया है वह उसके प्रति अच्छा नहीं हुआ है। यदि नाज़ी लोगों को योरुप में सफलता प्राप्त होती है तो जापान को आखिरकार जर्मनी की पराधीनता स्वीकार करनी पड़ेगी। यदि जर्मनी की पराजय होगी तो फिर जापान को धुरी राष्ट्रों के विपरीत राष्ट्रों से संधि करनी होगी। उस समय वे राष्ट्र विजयी तथा शक्तिशाली होंगे और मनमानी संधि करेंगे जिसमें जापान को किसी प्रकार का लाभ न होगा। यदि युद्ध अधिक दिनों तक चलता है और जर्मनी के अधिकार में योरुप रहता है, अमरीकन तथा ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े उसका घेरा डाले रखते हैं, साइबेरिया धुरी राष्ट्रों के पंजे से अलग रहता है तो फिर जापान और जर्मनी के मध्य कोई मार्ग खुला न रहेगा और जापान का सूती अथवा रेशमी माल योरुप न जा सकेगा। वह अपने धुरी राष्ट्रों से कच्चा सामान भी प्राप्त नहीं कर सकेगा। यदि किसी प्रकार ट्रांससाइबेरियन रेलवे को धुरी राष्ट्र छीन लेते हैं और उसे चलाते हैं तो फिर सामान ५००० मील के लम्बे मार्ग से भेजने और मंगाने में बहुत अधिक खर्च पड़ेगा। जल मार्ग से स्थल मार्ग का व्यय ९ गुना अधिक पड़ता है। जापान रुई, सूती कपड़ा, कच्चा रेशम, कलें, पुर्जे, टीन के सामान बोतल, मिट्टी के बर्तन और खिलौने आदि योरुप को भेज सकता है परन्तु इनमें से अधिकांश सामान वहाँ तयार होता है (केवल रेशम नहीं होता)। यह सभी सामान नाज़ी जर्मनी में नहीं बिक सकते जब तक कि जापान अपने सामान का मूल्य कम से कम न रक्खे। ऐसी दशा में जापानी व्यापारियों को बहुत कम आमदनी होने की आशा है।

जापानी सैनिक अफसर धुरी राष्ट्रों का साथ देकर यह आशा करते हैं कि जर्मनी के विजयी होने पर वह सुदूरपूर्व तथा एशिया में शक्तिशाली हो जावेगा। यदि जर्मनी को इङ्गलैंड तथा रूस को परास्त करने में सफलता प्राप्त हुई तो फिर वह जापान का एक खतरनाक पड़ोसी बन जायगा और जिस प्रकार उसने रूस के साथ व्यवहार किया है शायद वही व्यवहार वह जापान के साथ भी करे। ऐसी दशा में फिर जापान का कोई साथी न होगा। हिटलर निर्भय रहेगा और वह फिर जापान को परास्त करने में सफल होगा। उस समय वह फिर जापान से ब्रिटिश डच और अमरीकन जहाज़ी अड्डों के बंटवारे की बातचीत करेगा या सभी पर अधिकार जमा लेगा।

जापानी लोगों को साथ ही साथ जर्मनी की जातीयता सम्बन्धी भेद को भी न भूलना चाहिये। आज हिटलर को जापान की सहायता की आवश्यकता है। जिस प्रकार योरुप पर अधिकार जमाते समय जर्मनी रूस की शक्ति को बढ़ाने में सहायक हुआ था और फिर आखिर उसने रूस पर ही धावा बोल दिया उसी प्रकार वह अपना काम निकालने (इङ्गलैंड और रूस को परास्त करने) के लिये जापान को अपना सहकारी बनाकर एशिया तथा प्रशान्त महासागर में शक्तिशाली बनाना चाहता है परन्तु जापानी लोगों को मीन कैम्फ नामक पुस्तक के प्रथम भाग के द्वितीय प्रकरण के उस भाग को न भूलना चाहिये जिसमें राष्ट्र तथा जाति अथवा वर्ण का वर्णन किया गया है।

"यदि हम मानव जाति को संस्कृति के निर्माता, संस्कृति के उन्नतिदाता और संस्कृति के विध्वंसक तीन भागों में बाँटें तो हम देखेंगे कि संस्कृति के निर्माताओं में आर्य लोगों का नाम आवेगा। जापानी लोग संस्कृति को बढ़ाने वाले हैं। यदि आर्य जाति का प्रभाव उन पर पड़ने से रोक दिया जाय तो फिर वह उन्नति न कर सकेंगे।" यह बातें हिटलर ने स्वयं मीन कैम्फ में लिखी हैं। वह कहता है कि "यदि जर्मनी में जातीय एकता होती तो आज जर्मनी समस्त संसार का एक मात्र राज्य होता और संसार का इतिहास कुछ और ही होता। उस समय संसार में जिस शान्ति की स्थापना होती वह उन बड़े सूरमाओं की शक्ति के कारण होती जो संसार में अधिक उच्चतम संस्कृति का प्रचार करते"। अब ऐसी दशा में जापानी लोगों को स्वयम् सोचना चाहिये कि उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान कहाँ है ? और जर्मन विजय के बाद उनका स्थान कहाँ होगा ?

जिस संसार में धुरी राष्ट्रों का प्रभुत्व होगा उसमें जापान का स्थान उच्च होना कठिन है।

इसके विपरीत आज जिस बहादुरी के साथ रूस जर्मनी का सामना कर रहा है, अमरीका जितनी शीघ्रता के साथ युद्ध कर रहा है और इङ्गलैंड जिस बहादुरी तथा दृढ़ता के साथ युद्ध चला रहा है उससे यही प्रतीत होता है कि जर्मन विजय की आशा बहुत कम है। जब धुरी राष्ट्रों की पराजय हो जावेगी तो फिर अन्त में जापान को धुरी राष्ट्रों के विरोधी राष्ट्रों से समझौता करना ही पड़ेगा। परन्तु उस समय जापान शक्तिहीन हो जावेगा। आज अमरीका जापान का सामना करने के लिये तयार है परन्तु फिर भी वह जापान से समझौता करने के लिये तयार है इसलिये जापान को चाहिये कि वह शक्तिशाली होते हुये अमरीका से संधि कर ले। अमरीकन लोग जापान के साथ समझौता करने के इच्छुक हैं।

संयुक्त राष्ट्र अपने सामने दो भाँति के कार्यक्रम बनाये हुये हैं (१) संयुक्त राष्ट्र, ब्रिटेन, चीन, डच पूर्वी द्वीप समूह और रूस का साथ देता हुआ जापान पर ज़ोर तथा दबाव डालना चाहता है। दूसरा कार्यक्रम जापान के लिये शान्तिपूर्वक निकल जाने का द्वार खोलता है। इस मार्ग से जापानी तथा दूसरे प्रशान्त महासागरी राष्ट्रों का भला होगा।

जापान पर दबाव डालने वाले कार्यक्रम के अनुसार चीन को लगातार अधिक से अधिक अमरीकन सहायता पहुँचाई जावेगी जिससे चीन में जापानी सेना कम से कम स्थान में चाल फेर कर सके। दूसरे सिंगापुर, मैनिला और पूर्वी डच द्वीप समूहों की रक्षा को अधिक शक्तिशाली बनाने में भी संयुक्त राष्ट्र इङ्गलैण्ड की सहायता करेगा और साइबेरिया में रूसी सेना को तगड़ी बनाने में भी सहायता प्रदान करेगा। तीसरे वह जापान का चारों ओर से व्यापारिक घेरा डालेगा और दक्षिणी अमरीका तथा और दूसरे राष्ट्रों को भी मना करेगा कि वह जापान के साथ वैसा ही व्यवहार करें और जापानी जहाज़ों को कोयला पानी अपने यहाँ प्रदान न करें।

यदि संयुक्त राष्ट्र इस प्रकार अपनी नीति का प्रचार करेगा तो फिर जापानी जहाज़ों का जापान द्वारा अधिकार किये हुये समुद्रों में भी चलना दुर्लभ हो जायेगा। उसके लड़ाका जहाज़ों तथा विमानों की चाल फेर बन्द हो जावेगी। जापान आर्थिक तथा सैनिक रूप से विदेशी राज्यों पर ही निर्भर करता है। यह बात उसको भौगोलिक स्थिति तथा आर्थिक जीवन के कारण ही स्वयं सिद्ध है।

जापान के द्वीप बड़े घने बसे हैं। वहाँ के निवासी मध्यम श्रेणी का जीवन व्यतीत करने के अभ्यासी हैं। जापानी लोगों के रहन सहन का व्यय दिन प्रति दिन बढ़ भी रहा है। कारखानों की उन्नति तथा आधुनिक व्यवसायों की उन्नति के कारण ही जापानी लोग इस प्रकार के जीवन व्यतीत करने के अभ्यासी हुये हैं। कारखानों, रेलों और सामुद्रिक जहाज़ों की उन्नति के कारण ही जापानी प्रजा और सेना उन्नति कर रही है। स्वयम् जापान में किसी प्रकार का भी कच्चा सामान अधिक मात्रा में नहीं पाया जाता है। यदि जापान का पूर्ण रूप से आर्थिक अथवा व्यापारिक घेरा डाल दिया जाता है तो फिर उसे पिट्रौल, निकेल, सीसा, जस्ता, ऊन, लकड़ी, लुब्दी, लोहा, तांबा, आलमोनियम, पारा, प्लेटोनम, मैग्नेशियम, अभ्रक आदि भिन्न प्रकार के सामानों का मिलना बहुत कठिन हो जावेगा। जापान के कारखाने विदेशी वस्तुओं पर ही निर्भर हैं। कारखानों से लाखों व्यक्तियों की जीविका चलती है। रेशम तथा रुई का सामान जो वहां तयार होता है वह विदेशों को जाता है। जब विदेशों को सामान जाना बन्द हो जावेगा तो फिर उनके रोजगारी लोग भी बेकार हो जावेंगे। इस प्रकार जापान के सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ेगा।

कहा जाता है कि जापान के पास तेज़ तथा दूसरी सैनिक वस्तुओं का अच्छा बड़ा भंडार है और वह उससे अपना काम कई महीने तक चला सकता है। परन्तु फिर भी यदि उसका घेरा डाला जावेगा तो अवश्य ही उस पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। इसी कारण यह बात कहना उचित है कि जापान की स्थिति शक्तिशाली नहीं वरन् निर्बल है।

इनके सिवा और दूसरे प्रकार की न्यूनतायें भी जापान में हैं। मान लीजिये कि जापानी सैनिक अफ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर लड़ाई पर तयार हो जाते हैं और घेरे को सैनिक बल से तोड़ने का प्रयत्न करते हैं तो फिर प्रश्न यह उठता है कि आखिरकार उनका आक्रमण कहाँ होगा। जापान के पास एक बड़ी शक्तिशाली समुद्री सेना और जहाज़ी बेड़ा है पर लड़ाका जहाज़ों को कोयला पानी रखने और मरम्मत के लिये स्थानों की आवश्यकता पड़ती है। इसलिये जापान के जहाज़ अपने समुद्रों को छोड़ कर अधिक दूर की यात्रा नहीं कर सकते। जब तक जापान विदेशों में अपने जहाज़ी अड्डे नहीं बना लेता है वह आक्रमण नहीं कर सकता।

जापान अपने पूर्वी अथवा दक्षिणी सिरों पर धावा मार सकता है परन्तु आक्रमण के साथ ही साथ आर्थिक घेरे का भी सामना करना पड़ेगा और उसे आक्रमण में बहुत व्यय करना पड़ेगा। उसे लड़ाका तथा व्यापारिक जहाजों की हानि उठानी पड़ेगी। जापान को ब्लाकेड के साथ ही साथ विरोधी आक्रमणों के विरुद्ध अपनी लाइनों को भी चालू रखना पड़ेगा।

साइबेरिया में सोवियट सेना है जो योरुपीय रूस के सेना से स्वतन्त्र है। वहाँ पर हवाई शक्ति भी काफी है और साइबेरिया के बन्दरगाहों में ४० से ७० पनडुब्बे जहाज ठहर सकते हैं। जापान के अधिकांश नगर लकड़ी और कागज़ के बने हैं जिनमें सरलता पूर्वक अग्नि लगाई जा सकती है। ब्लाडीवास्टक से टोकियो, याकोहामा और ओसाका आदि नगरों की दूरी केवल ६०० मील है। इस प्रकार ब्लाडीवास्टक से भली भांति जापान के नगरों पर बम वर्षा की जा सकती है। यदि जापान साइबेरिया को जीतना चाहेगा तो उसे बड़ी कठिनाई तथा हानि उठानी पड़ेगी। फिर साइबेरिया जीतने से उसका अधिक काम न चलेगा। साइबेरिया में खनिज सम्पत्ति अवश्य अधिक है परन्तु उस खनिज सम्पत्ति को प्रयोग करने योग्य निकाल कर बनाने में बहुत समय लगेगा।

यदि फ़िलीपाइन को विजय करने में उसे सफलता प्राप्त हो जाती है तो उसे वहाँ से लोहा, रेशे और दूसरी कुछ वस्तुओं की सहायता मिल जावेगी। फ़िलीपाइन से और दक्षिण की ओर डच पूर्वी द्वीपसमूह है जहाँ कच्चा माल बहुत पाया जाता है। इन द्वीपों में रक्षा के लिये काफ़ी विमान तथा समुद्री जहाज हैं। फिर उसकी रक्षा के लिये सिंगापुर की बड़ी जहाज़ी, हवाई तथा स्थली ब्रिटिश सेना है। इस प्रदेश पर जापान उस समय तक आक्रमणकारी नहीं हो सकता जब तक कि वह फिलीपाइन और हाँगकाँग पर अधिकार न जमा ले। यदि जापान को इन द्वीपों अथवा इनके मुख्य स्थानों को जीतने में सफलता भी हो जाती है तो भी जापान का प्रश्न हल न होगा। वहाँ के तेल के कुएँ तथा तेल साफ करने के कारखाने नष्ट कर दिये जावेंगे और उन्हें ठीक करने के लिये जापान को बहुत समय चाहिये।

उपरोक्त दलीलें केवल उस अनुमान पर निर्भर हैं जब कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका और इङ्गलैण्ड के जहाज़ी बेड़े और किसी दूसरे स्थान पर लगे हुये होंगे और जापान का सामना केवल विमानों, छोटे लड़ाके जहाजों, पनडुब्बों और स्थल सेना से होता रहेगा। क्या जापान इस बात को असम्भव समझता है कि जब वह अधिक दक्षिण की ओर बढ़ चुकेगा और फिर अपने जीते हुये स्थानों की रक्षा में व्यस्त होगा उसी समय संयुक्त राष्ट्र अमरीका और इङ्गलैण्ड संयुक्त जहाज़ी बेड़े के साथ मोर्चा लें और उसे भीषण समुद्री पराजय माननी पड़े तब फिर उसका फल क्या होगा।

इसलिये जापानी लोगों को चाहिये कि वह अपनी स्थिति का भली भांति अध्ययन करें और युद्ध में भाग लेने के अतिरिक्त दूसरे ढंग से अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करें। यदि जापान युद्ध में न उतरे तो वह अधिक से अधिक कच्चा सामान विदेशों से ले सकता है और अधिक से अधिक सामान विदेशों को भेज सकता है। यदि वह संयुक्त राष्ट्र अमरीका की बातें स्वीकार कर लेता है तो फिर उसे जापान के बने हुये सामान के बेचने के लिये बहुत बड़ा क्षेत्र होगा।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका चाहता है कि चीन एक स्वतंत्र राज्य हो। चीन को ऐसा बनाने के लिये जापानी सेना को वहां से हराना पड़ेगा, जापान को चीन से अपना राजनैतिक प्रभुत्व नष्ट करके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना पड़ेगा। इसके सिवा जापान को उन जहाज़ी तथा हवाई अड्डों को भी हटाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा जिनके कारण फिलीपाइन, सिंगापुर, डच पूर्वी द्वीप समूह तथा आस्ट्रेलियन जाने वाली लाइनों को भय उत्पन्न हो रहा है।

जापान और संयुक्त राष्ट्र के व्यापारिक अथवा आर्थिक शर्तें प्रायः निम्नांकित होंगी।

चीन के कारखानों को उन्नतिशील बनाना तथा उसकी आर्थिक दशा को उन्नति देना आदि कार्य चीनियों की देख रेख और संरक्षता में किया जावेगा। जापान को विश्वास दिलाया जावेगा कि उससे चीन की उन्नति के लिये अधिक से अधिक सामान खरीदा जावेगा। सुदूर पूर्व में शान्ति स्थापित करने तथा जापान और रूस की शक्ति को समान रखने के लिये संयुक्त राष्ट्र चाहता है कि वह चीन को पूर्ण रूप से शक्तिशाली स्वतंत्र राज्य बना दे। चीन को उन्नतिशील बनाने में जापान उसे अधिक से अधिक अपने यहां का बना हुआ सामान दे सकता है। इस प्रकार वह अपने कारखानों को बढ़ा सकता है और अपनी प्रजा को धनी बना सकता है। चीन के कारखानों को बहुत सी ऐसी वस्तुओं की आवश्यकता होगी जिसे जापान सस्ते मूल्य पर सरलता पूर्वक दे सकेगा और चीनी लोग उन्हें खरीदने पर बाध्य होंगे।

यदि जापान संयुक्त राष्ट्र की शर्तों को स्वीकार कर लेता है तो उसे ब्रिटिश तथा संयुक्त राष्ट्र के उपनिवेशों के सामान बेचने का स्थान मिल जाता है। कम से कम युद्ध काल में जब कि वे युद्ध में व्यस्त रहेंगे जापान उपनिवेशों से अधिक से अधिक लाभ उठा सकेगा। जापान के कारखानों में बहुत सा सस्ता माल तयार हो सकता है और उपनिवेश के निवासी सस्ते माल को ही खरीदेंगे। जापान मुख्यतः एशिया के मित्र देशों को अवश्य सामान पहुँचा सकेगा और यदि इसी बीच उसका सम्बन्ध और दूसरे राष्ट्रों के साथ अच्छा हो गया तो फिर कहना ही क्या ? जापान को संयुक्त राष्ट्र यह भी विश्वास दिला सकता है कि युद्ध के पश्चात् शान्ति के समय भी उसे दूसरे देशों से कच्चा सामान खरीदने में किसी प्रकार की रुकावट न डाली जावेगी।

जापान संयुक्त राष्ट्र तथा दूसरे मित्र राष्ट्रों के साथ व्यापारिक संधियां भी कर सकता है। इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र प्रति वर्ष १०० जापानी निवासियों को अपने यहां रहने के लिये स्थान प्रदान कर सकता है।

यद्यपि दक्षिणी अमरीका के राज्य आयात के सम्बन्ध में अपनी अलग नीति रखते हैं तो भी यदि जापान उनके साथ अपना सम्बन्ध बढ़ा कर उनके साथ अधिक से अधिक व्यापार आरम्भ करता है तो संयुक्त राष्ट्र तथा दूसरे सहकारी राष्ट्र उसे जापान का प्राकृतिक अधिकार स्वीकार करेंगे।

जापान तथा संयुक्त राष्ट्र के समझौता हो जाने पर संयुक्त राष्ट्र तथा दूसरे सहकारी राज्य जापान के तयार कारखानों में तयार की हुई युद्ध-सामग्री भी खरीद सकते हैं। इस प्रकार जापान युद्ध से भी अधिक से अधिक लाभ उठा सकता है और अपने कारखानों को और अधिक उन्नतिशील बना सकता है।

गत रविवार ता० ७ दिसम्बर को प्रातः काल ६ बजे जापान ने संयुक्त राष्ट्र तथा इँगलैंड के ऊपर युद्ध घोषणा कर दी। जापानी सेना ने हांग कांग शंघाई, फिलीपाइन, थाई देश, सिंगापुर, मैंनलिया, आदायो, मलाया आदि स्थानों पर एकाएक आक्रमण कर दिया। उसने इँगलैंड के प्रिंस आफ वेल्स नामक जहाज़ को डुबो दिया। यह जहाज़ ३५ हज़ार टन का था और ब्रिटिश पूर्वी सेना का सबसे बड़ा जहाज़ था। इटली, जापान और जर्मनी में गत १० दिसम्बर को एक नवीन सैनिक संधि हुई है। इस सन्धि के अनुसार तीनों राष्ट्र मिल कर इँगलैंड तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका से अन्तिम समय तक युद्ध करेंगे और बिना एक दूसरे की सलाह के सन्धि न करेंगे। इटली और जर्मनी ने भी अमरीका पर युद्ध घोषणा कर दी है। संयुक्तराष्ट्र भी प्रतिकूल राज्यों पर युद्ध घोषणा करके आखिरकार क्षेत्र में उतर आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशान्त महासागरीय शक्तियों में परिवर्तन

पूर्वी परिस्थिति के सम्बन्ध में लोगों के मत दो प्रकार के थे। कुछ लोगों का कथन था कि वहां पर शान्ति रूप से काम चलना असम्भव है और कुछ राजनीतिज्ञों का विचार था कि प्रशान्त महासागरीय राष्ट्रों की शक्तियों में जो परिवर्तन हुये हैं उनको ध्यान में रखते हुये चतुर राजनीतिज्ञ शान्ति-स्थापना के लिये कोई न कोई मार्ग बिना युद्ध किये हुये ही निकाल लेंगे।

बहुतों का मत था कि पूर्व की ओर जापान को छोड़ कर और कोई शक्तिशाली राष्ट्र नहीं है। सितम्बर सन् १९३१ ई० को जापान ने संधियों को तोड़ कर मंचूरिया पर आक्रमण किया और उसे अच्छी सफलता प्राप्त हुई। जापान की बढ़ती हुई सफलता-पूर्ण शक्ति को देख कर संसार को प्रतीत हो गया कि प्रशान्त महासागरीय परिस्थिति में अन्तर राष्ट्रीय युद्ध के छिड़े बिना किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सकता है।

ऐसी दशा में निराश लोगों का मत था कि इँगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका को अपनी असहायता तथा निर्बलता स्वीकार करके प्रशान्त महासागरीय देशों से अपना अस्तित्व हटा लेना चाहिये था जिससे युद्ध की सम्भावना जाती रहती या उन्हें सान्त्वना नीति ही जापान के प्रति निर्धारित करनी चाहिये थी या फिर उन्हें भी युद्ध के लिये तयार होना चाहिये था। इसी प्रकार की भावनाएँ १९३६ ई० में प्रशान्त महासागर सम्बन्धी इन्स्टीट्यूट में प्रगट की गई थीं।

इस सम्मेलन की बैठक के पश्चात् अमरीका के कुछ पत्रों ने चीन के अमरीकन व्यापारियों को सलाह दी कि वह अपना व्यापार वहां से हटा लें और अमरीका की सरकार अमरीकन जहाजी बेड़े को तोड़ कर उन्हें सहायता प्रदान करे। कुछ अमरीकन पत्रों ने अमरीकन सरकार को सलाह दी कि वह प्रशान्त महासागर में अपनी जल तथा स्थल सेना को मज़बूत बनावे।

सचमुच ही प्रशान्त महासागर में ऐतिहासिक रूप से १९१४ ई० से १९३१ ई० तक जापान का आधिपत्य रहा। १९३१ के पश्चात् ऐसे कारण उपस्थित हो गये हैं जो कि जापान के बराबरी करने वाले राष्ट्रों के मूल कारण बन रहे हैं। इससे यह सोचना आज सर्वथा अनुचित सा है कि पूर्व की ओर जापान का सामना करने वाला कोई राष्ट्र नहीं है।

१९१४ ई० के बाद ग्रेट ब्रिटेन, रूस और फ्रान्स गत महायुद्ध में अपने जीवन रक्षा के लिये लगे थे। उस समय पूर्वी परिस्थिति इँगलैंड के सहकारी जापान के हाथ में थी। उस समय जापान ने प्रशान्त महासागरीय समस्त जर्मन स्थानों तथा कारखानों पर अधिकार जमा लिया था। १९१४–२१ ई० तक पश्चिमी प्रशान्त महासागर पर जापान का शासन रहा। इसी आधार पर १९१५ ई० में जापान ने चीन से २१ शर्तों की मांग की थी। इसी आधार पर १९१९ ई० की संधि में शान्तुंग द्वीप जापान को दिया गया था यद्यपि चीन ने इसका घोर विरोध किया था।

वाशिंगटन की संधि में जापान की स्वीकृति बड़े राष्ट्रों में की गई थी। वह राष्ट्रसंघ के बड़े चार राष्ट्रों में गिना जाने लगा था। १९३१ ई० में जापान ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग करना आरम्भ किया। १९३३ ई० में वह राष्ट्र संघ से अलग हो गया। उसके बाद जापान की वह स्थिति न रह गई जो उसकी १९३१ ई० के पहले थी। १९३१ ई० के पहले प्रशान्त महासागर में सचमुच ही जापान के बराबरी का कोई भी राष्ट्र नहीं था।

सितम्बर १९३१ ई० में जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया उसके बाद शंघाई और उत्तरी चीन पर आक्रमण हुये। इन आक्रमणों से संसार के शुभ कामना के जो भाव जापान के प्रति थे वह जाते रहे। जापानी आक्रमण के कारण न केवल पूर्वी वरन् समस्त संसार की स्थिति शोचनीय हो गई है।

वाशिंगटन संधि के समय सोवियट रूस की गणना प्रशान्त महासागरीय राष्ट्रों में नहीं की गई थी। उसे सम्मेलन में न तो बुलाया गया था और न उसके हस्ताक्षर ही वाशिंगटन संधियों पर हुये। १९३१ ई० के बाद से सोवियट रूस ने प्रशान्त महासागर में अपनी सैनिक शक्ति की वृद्धि की। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग ५ लाख सेना अपने पनडुब्बी तथा विध्वंसकारी जहाज़ों के बेड़े आदि प्रशान्त महासागर में लाकर एकत्रित कर दिये हैं। उसके समुद्र-तट की रक्षा करने वाले जहाजी बेड़े में भी वृद्धि हुई है। रूस ने मङ्गोलिया और साइबेरिया की सीमा पर ७ हजार मील लम्बी नवीन रेलवे लाइन और ३००० मील लम्बी दोहरी रेलवे लाइन बनाई है। साथ ही साथ इन रेलवे लाइनों के पीछे उसने बड़े बड़े कारखाने भी स्थापित कर दिये हैं।

इसके सिवा प्रशान्त महासागर में विदेशी राष्ट्रों ने भी अपने स्थानों की किलेबन्दी कर दी है। अल्यूशियन द्वीपसमूह से लेकर सिंगापुर तक किलेबन्दी कर दी गई है। डच द्वीपसमूहों की रक्षा के लिये भी अच्छा प्रबन्ध कर दिया गया है। ब्रिटिश सरकार ने सिंगापुर को एक बड़ा जल, स्थल तथा हवाई सेना का अड्डा बनाया है। न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया और कनैडा ने भी अपनी जल शक्तियों को संगठित कर मज़बूत बनाया है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका भी फिलीपाइन से अलास्का तक किले बन्दी कर रहा है।

चीन की बढ़ती हुई राष्ट्रीय शक्ति को भी भुलाया नहीं जा सकता है। नानकिंग की राष्ट्रीय सरकार की संरक्षता में चीन की शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ रही है। जब मंचूरिया पर जापान ने आक्रमण किया था तो प्रथम दो वर्षों तक उसके प्रचारक भाषण करते थे कि चीन कोई आधुनिक संगठित राज्य नहीं है इसलिये उसे एक स्वतंत्र राज्य की भांति अधिकार न प्राप्त होने चाहिये। उसके बाद उन्होंने ऐसी बातें कहनी बन्द कर दीं और कहने लगे कि जापानी साम्राज्य चियांग काई शेक की सरकार के साथ साथ समान रूप से नहीं चल सकता। या तो जापानी साम्राज्य उसे अपने आत्म समर्पण कर दे या चियांग काई शेक की सरकार का सत्यानाश कर दे। जापान की बढ़ती हुई सैनिक शक्ति को भी चीन की राष्ट्रीय शक्ति का भय उत्पन्न हो गया।

चीन के व्यापार के द्वार को खुला रखने तथा पूर्व की ओर शान्ति स्थापित रखने के लिये आवश्यक है कि चीन को स्वतंत्र मज़बूत राष्ट्र बनाया जावे। यही शक्तियां प्रशान्त महासागर में जापान की समानता वाले राष्ट्रों की स्थापना के लिये काम कर रही हैं।

आज जापान ने प्रशान्त महासागर में युद्ध छेड़ कर अमरीका तथा इँगलैंड को और भी अधिक परेशान बना दिया है। मित्र राष्ट्रों की परिस्थिति और भी अधिक शोचनीय हो गई है। जापान को सफलता पर सफलता प्राप्त होती जा रही है तो भी यह बात निस्संदेह कही जा सकती है कि यद्यपि जापान प्रशान्त महासागर में सभी राष्ट्रों से अधिक तगड़ा प्रतीत हो रहा है तो भी वह प्रशान्त महासागरीय राष्ट्रों में सबसे अधिक शक्ति तथा प्रभुत्व शाली नहीं है।

डच द्वीपसमूहों के साथ जापानी व्यापार

जितना ही अधिक जापान का राजनैतिक तथा व्यपारिक फैलाव दक्षिण की ओर बढ़ रहा है उतना ही वह डच द्वीपसमूहों के समीप होता जा रहा है। डच द्वीप समूहों की जन-संख्या लगभग ७ करोड़ है। यह द्वीपसमूह बड़े धनी हैं। इन पर हालैंड का अधिकार है जिसका पतन हो चुका है। कहा जाता है कि धुरी राष्ट्रों और जापान के मध्य जो बटवारा हुआ है उसमें यह द्वीपसमूह जापानी प्रभुत्व में दे दिये गये हैं। जापान व्यापारिक ध्यान से इन द्वीपों में भली भांति प्रवेश कर चुका है।

सुमात्रा, बोरन्यू, जावा, डचगिनी, मदूरा और सेलेबेस द्वीप उपज तथा खनिज सम्पत्ति के ध्यान से बड़े धनी हैं। इन द्वीपों में संसार की ९९ प्रतिशत कुनैन, ५० प्रतिशत तम्बाकू, २० प्रतिशत कोपरा और टीन और ११ प्रतिशत पिट्रौल की उत्पत्ति होती है। यह भी अन्दाज़ लगाया गया है कि यह संसार की रबर की मांग की पूर्ति कर सकते हैं। इन द्वीपों से संसार की खपत की १२ प्रतिशत चाय जाती है जो लगभग २२४०००० मन होती है। नारियल और सीसल का तेल, गोंद, चकोतरा, नींबू, लौंग, इलायची, दालचीनी, कालीमिर्च और दूसरे मसाले आदि की उपज वहां खूब होती है। वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ऊन भी संसार के दूसरे देशों को भेजा जाता है।

जापान इन द्वीपों पर प्रायः आर्थिक तथा व्यापारिक रूप से अधिकार करना चाहता है। यद्यपि हालैंड डच द्वीपों पर अपना निरंकुश शासन चला रहा है तो भी वहां के निवासी जापानी शासन के इच्छुक नहीं प्रतीत होते। इसलिये जापानियों को शायद वहां के निवासियों की सहायता न प्राप्त हो सके। हां वहां के निवासी अपनी स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार अवश्य ही स्थापित करना चाहते हैं। जापानी लोग भी उन्हें स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये उत्साह दे रहे हैं। जापान अपना व्यापार डच द्वीपों में अधिक बढ़ा रहा है। जापानी माल की अधिक आयात होने के कारण हालैंड की सरकार को जापानी माल पर रोक लगानी पड़ी थी।

जापानी लोग डच तथा और दूसरे राष्ट्रों की अपेक्षा समस्त सामान तयार करते हैं सामान भेजने में भी उन्हें कम खर्च पड़ता है इसलिये जापानी माल और दूसरे राष्ट्रों की अपेक्षा अधिक सस्ते दाम पर डच द्वीपसमूह के निवासियों को प्राप्त होता है।

"एन" सिक्के का मूल्य घट जाने से भी जापानी व्यापार को प्रोत्साहन मिला है। इस कारण जापानी माल का आयात ३ लाख टन से बढ़कर लगभग ४ लाख टन हो गया है और उसका मूल्य ९३ करोड़ ३० लाख से घट कर ७ करोड़ ८० लाख हो गया है।

जब संसार में व्यापारिक उथल पुथल मच गई थी तो उस समय डच द्वीपों के निर्यात में ६९ प्रतिशत की कमी हो गई थी फिर भी जापानी माल सस्ता होने के कारण डच द्वीपसमूह-निवासी जापान का अधिक से अधिक सामान खरीद रहे थे। इस प्रकार उस समय भी जापान को डच द्वीपों के व्यापार से लाभ होता रहा। जापानी व्यापार का इस काल में डच पार्लियामेन्ट में विरोध हुआ था परन्तु द्वीपों की सरकार ने उत्तर दे दिया था कि जापानी माल सस्ता है और उसे उनकी प्रजा पसंद कर रही है। अतः वे उस पर रोक नहीं लगा सकते। साथ ही द्वीपों की सरकार ने डच पार्लियामेन्ट को यह भी उत्तर दिया कि वह अपने कार्यों के लिये उस नहीं वरन् केवल डच महारानी को ही उत्तरदायी है।

इस नीति से जापानी आयात को और भी अधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

नीचे दी गई तालिका से पता चलता है कि जापानी सामान का आयात पूर्वी द्वीपों से कितना बढ़ा और उससे हालैंड के व्यापार को कितना धक्का पहुँचा।

१९२८ ई० में जापान से पूर्वी द्वीपसमूह को ७३४१८१७७ एन का सामान आया था १९३४ ई० में यह व्यापार बढ़ कर १५८,४५०,५२५ एन का हो गया। १९३४ ई० के पश्चात् भी जापान के व्यापार में और अधिक वृद्धि हुई है। १९३४ ई० में जापानी निर्यात में पूर्वी द्वीपों का चौथा स्थान था।

१९३३ ई० में जापानी व्यापार से द्वीपों की उपनिवेशिक सरकार को भय प्रतीत होने लगा इसलिये उसने द्वीपों के आयात पर सरकारी घोषणा द्वारा रोक लगा दी। १९३४ ई० में चावल, शराब, रुई, सूत, लोहा सूती सामान और सेमेंट के आयात पर रोक लगाई गई। १९३५ ई० में रोक की मात्रा और अधिक बढ़ा दी गई और सभी प्रकार के सूती कपड़े, लोहा तथा फौलाद और उसके बने सामानों तथा कल पुर्जों पर प्रतिबन्ध कर दिया गया। इन प्रतिबन्धों से हालैंड से आने वाले सूती सामान में वृद्धि हुई और जापान से आने वाले सूती सामान में घटती हो गई।

इन प्रतिबन्धों के कारण जापान ने विरोध किया और जापानी सरकार तथा डच द्वीपों की सरकार के मध्य बटाविया में समझौते के लिये बात चीत आरम्भ हुई परन्तु समझौता नहीं हुआ बाद में कुछ समझौता हो गया क्योंकि जापान भी डच द्वीपों का बहुत अधिक सामान खरीदता है। जापान अपने खर्च का लगभग आधा तेल तथा पिट्रौल डच द्वीपों से खरीदता है।

व्यापारिक रोक होते हुये भी जापान डच द्वीप समूहों में अपना अधिक से अधिक व्यापार बढ़ाता जा रहा है। अभी तक जापान ने व्यापारिक तथा आर्थिक रूप से ही डच द्वीपों पर अधिकार जमाने का यत्न किया है अब उसने अपना राजनैतिक फैलाव तथा आक्रमण आरम्भ किया है। डच द्वीपों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रक्षा के लिये कोई खास प्रबन्ध नहीं दिखाई पड़ता है। हालैंड का तो पहले ही पतन हो चुका है। इँगलैंड तथा अमरीका ही उसके सहायक हो सकते हैं। अभी हाल में ही पूर्वी युद्ध की ओर वावेल प्रधान सेनापति बनाये गये हैं। उन्होंने बटाविया को अपना केन्द्र बनाया है। डच द्वीपों पर जापानी आक्रमण आरम्भ हो चुका है। जापान ने स्याम की भूमि होकर नहर बनाने का निश्चय किया है। इस नहर के तयार होने पर सिंगापुर को बीच में छोड़ कर भी जापान हिन्दमहासागर में पहुँच जावेगा। डच द्वीपों की दशा बड़ी शोचनीय हो रही है। यदि अमरीकन तथा ब्रिटिश सहायता उनकी रक्षा को पहुँचती है तो शायद उनकी रक्षा हो सके नहीं तो कुछ ही महीनों में वहां जापान का अधिकार हो जावेगा।

पूर्व की ओर त्रिराष्ट्रीय संहर्ष

वाशिंगटन सम्मेलन के पश्चात् जब एंगलो-जापानी समझौता हुआ तब से संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अपनी नीति इस बात पर निर्धारित रक्खी है कि चीन में इँगलैंड और अमरीका के समान स्वार्थ हैं इसी लिये संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने आशा की थी कि इँगलैंड चीन में उसी के समान अपनी नीति निर्धारित करेगा परन्तु अमरीका की यह आशा बहुधा निराशा में बदल चुकी थी क्योंकि कई बार इँगलैंड ने अमरीका के बिलकुल विरुद्ध अपनी नीति चलाई। जब से वर्तमान युद्ध आरम्भ हुआ है तब से अमरीका का दया-भाव प्राप्त करने के लिये इँगलैंड ने अमरीका के समान ही अपनी नीति चलानी आरम्भ की है।

गत महायुद्ध के पश्चात ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का मत जापानी मित्रता जारी रखने के सम्बन्ध में भिन्न था। ब्रिटिश प्रजा और मुख्यतः डाउनिंग स्ट्रीट जापानी मित्रता जीवित रखने के पक्ष में था। मिस्टर लाएड जार्ज, मि० आर्थर बालफ़र, लार्ड कर्जन, फेयर होम के लार्ड ली आदि नेता भी जापानी मैत्री के पक्ष में थे। १९२१ ई० में जब लन्दन में सम्मेलन हुआ तो भारतवर्ष, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड ने जापान के साथ समझौता तोड़ने के विरुद्ध अपना मत प्रगट किया। संयुक्त राष्ट्र ने जापान के साथ समझौता तोड़ने का निश्चय कर लिया था। यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र के मन्त्री ने इँगलैंड के राजदूत को वाशिंगटन बुलाया और कहा कि यदि इँगलैंड जापान से नाता नहीं तोड़ेगा। तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका की कांग्रेस उसके विरुद्ध एक प्रस्ताव पास करेगी और आयरिश रिपब्लिक को स्वीकार करके अपनी अप्रसन्नता प्रगट करेगी। इंगलैंड तथा जापान ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका को विश्वास दिलाया कि जापान किसी प्रकार भी संयुक्तराष्ट्र अमरीका के विरुद्ध न जावेगा फिर भी अमरीका को संतोष नहीं हुआ।

ब्रिटेन जर्मन भय प्रगट होने पर भी जापान के साथ मैत्री इसलिये रखना चाहता था कि उसे अफ़गानिस्तान भारत और चीन में कम्यूनिस्ट क्रान्ति का नवीन भय उत्पन्न हो गया था। इसी खतरे का सामना करने के अभिप्राय से इँगलैंड जापान के साथ मैत्री रखना चाहता था। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने आखिरकार वाशिंगटन सम्मेलन में जापान के साथ समझौते का विच्छेद कर दिया और उसके स्थान पर चार शक्तियों की प्रशान्त महासागरीय संधि का निर्माण किया।

समझौते के अन्त हो जाने से जापान को प्रसन्नता नहीं हुई। वह इँगलैंड की सहायता पर निर्भर था। चीन में उसे ब्रिटिश सहायता की बड़ी आवश्यकता थी ब्रिटिश सहायता पर ही उसको चीन में अपना राजनैतिक तथा आर्थिक प्रभुत्व बनाये रखना सम्भव था।

समझौता के विच्छेद हो जाने पर भी जापान ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रति अपनी मैत्री नीति ही चालू रक्खी इसका मुख्य कारण यह था कि वह जानता था कि गत महायुद्ध के कारण इँगलैंड की नींव हिल चुकी थी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका संसार का सबसे बड़ा शक्तिशाली राष्ट्र बन चुका था। चीन में ब्रिटिश तथा जापानी हित के संहर्ष होने के कारण उनसे युद्ध उत्पन्न होने का भय था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा भय संयुक्त राष्ट्र अमरीका के साथ कदापि न था।

जापानी सरकार ने वाशिंगटन सम्मेलन का भय अपनी प्रजा से नहीं खोला और अपनी प्रजा को सूचित किया कि सम्मेलन से जितना कुछ लाभ इँगलैंड उठाना चाहता था। उसने उठा लिया है और साथ ही साथ उसने जापान को मँझधार में छोड़ दिया है। इस समाचार के कारण चीन में इँगलैंड के विरोधी और अधिक हो गये। इँगलैंड को चीन जापान तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका किसी की भी सहानुभूति प्राप्त न हुई।

१९२५ ई० के आरम्भ में यह बात भली भांति प्रगट हो गई कि चीन में ब्रिटिश व्यापार तथा हित के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ होने वाला था। १९२६ ई० में चीन के राष्ट्रीय नेता (जिनको रूस से सहायता मिलती थी) अपने पतन हो जाने के कारण यांगटिसी घाटी में जा बसे।

यांगटिसी घाटी पर ब्रिटेन का किसी प्रकार का भी प्रभाव न था। चीन के राष्ट्रीय दल के लोग ब्रिटेन के विरुद्ध भांति भांति के नारे लगाने लगे। चीन के राष्ट्रीय नेताओं का कहना था कि यदि ब्रिटिश साम्राज्यवाद चीन से निकाल दिया जाय तो फिर वहां आनन्द ही आनन्द होगा। इस प्रचार से चीनी प्रजा भभक उठी। ब्रिटिश सरकार ने जापान तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका से सहायता मांगी परन्तु उसे किसी प्रकार की भी सहायता न प्राप्त हुई। सहायता न मिलने पर राष्ट्रीय चीनियों के सामने ब्रिटिश सरकार को हार मान कर पीछे हटना पड़ा।

१८ दिसम्बर १९२६ ई० को वाशिंगटन संधि के हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्रों से ब्रिटिश सरकार ने प्रस्ताव किया कि चीन के राष्ट्रीय दल ने जो कर विदेशी व्यापार पर लगाये हैं वह स्वीकार कर लिये जावें। जनवरी सन् १९२७ ई० को राष्ट्रवादियों ने हांकाओ और क्यू-क्यांग के ब्रिटिश स्थानों पर अधिकार कर लिया और ब्रिटिश अधिकार छीन लिये। मार्च मास में नानकिंग के विदेशी कौंसलेट, दूकानें तथा स्थान लूट लिये गये और बहुत से प्रसिद्ध विदेशी गण मार डाले गये। इतना होने पर भी ब्रिटिश सरकार चीनी सरकार की सहायक बनी ही रही। चीन के ब्रिटिश निवासी तथा इँगलैंड निवासी भी जापान के साथ सम्बन्ध तोड़ने पर पश्चात्ताप करने लगे। अमरीका जब इँगलैंड की चीन को मिलाने वाली नीति को देखा तो उसने भी चीन को मिलाने की ओर कदम उठाया और राष्ट्रीय सरकार के साथ पीपिंग स्थान पर संधि किया और चीनी सरकार को चुङ्गी लगाने की स्वतंत्रता दे दी। ब्रिटिश सरकार चीनी सरकार को इस प्रकार की स्वतंत्रता नहीं देना चाहती थी।

१९३१ ई० में जब जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया तो अमरीकन मन्त्री मि० स्टिम्सन ने राष्ट्र सभा से और इँगलैंड से अनुरोध किया कि जापान के विरुद्ध व्यापारिक तथा आर्थिक रुकावटें उत्पन्न की जावें परन्तु जापान के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार ने कुछ भी न किया। उसका ध्यान था कि मंचूरिया में जापानी अधिकार हो जाने से इङ्गलैंड की अधिक हानि नहीं है इसके विपरीत जापान की मित्रता स्थापित रख कर इङ्गलैण्ड मुख्य चीन प्रदेश में ब्रिटिश हित की अधिक आशा रखता था। जब मंचूरिया पर जापानी अधिकार हो गया तो संयुक्त राष्ट्र ने उसकी ओर बिल्कुल ध्यान न दिया। १९३४ई० में एक ब्रिटिश आर्थिक प्रचार समिति मंचूको गई और उसने मंचूको प्रान्त के अनुकूल एक वक्तव्य निकाला। उसके बाद पूर्वी राष्ट्रों का भ्रमण करने के लिये एक अमरीकन आर्थिक समिति आई जिसने मंचूको की ओर बिल्कुल ध्यान ही न दिया और एक शब्द भी मंचूको के सम्बन्ध में न तो लिखा और न कहा।

१८ अप्रैल सन् १९३४ ई० को जापानी विदेशी दफ्तर से वहाँ के प्रधान फ़िजी अमाऊ ने घोषणा की कि चीन को धन, सामान, अस्त्र-शस्त्र और सैनिक शिक्षक से सहायता देने का अर्थ जापान से विरोध करना है। पूर्व की ओर अशान्ति फैलाना तथा चीन और जापान के बीच विरोध को उत्पन्न करना है।

जापानी विदेशी दफ़्तर की यह घोषणा उन समाचारों के कारण हुई थी जो जापान को अमरीकन तथा ब्रिटिश सहायता चीन को पहुँचाने के सम्बन्ध में प्राप्त थे।

२० अप्रैल को मिस्टर हल ने अपना वक्तव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाला कि अमरीका की सरकार तथा प्रजा के ध्यान से कोई भी दूसरे राष्ट्रों की इच्छा के विरुद्ध अपने विचारों के पालन कराने का अधिकार उस राष्ट्र पर नहीं रखता जहाँ दूसरे राष्ट्रों के भी हित तथा अधिकार समानता के साथ वर्तमान हैं।

१८ मई सन् १९३४ ई० को सर जान साइमन ने कामन्स सभा में कहा कि नव शक्तियों वाली संधि में कोई ऐसी शर्त नहीं है जिसके अनुसार इङ्गलैण्ड चीन की भूमि की रक्षा करने के लिये जिम्मेदार हो। उन्होंने कहा कि यह बात भी सत्य नहीं है कि इंगलैंड ने हमने या किसी ने कभी भी कोई संधि चीन के साथ ऐसी की है जिसमें चीन की भूमि और उसकी स्वतंत्रता की रक्षा (मन्चूरिया सहित) करने का प्रश्न इंगलैंड ने उठाया हो। साथ ही साथ ब्रिटिश विदेश दफ्तर से यह समाचार विदित हुआ कि जब तक चीन और जापान के मध्य कोई राजनैतिक समझौता नहीं हो जाता तब तक चीन की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो सकती। इन बातों से सिद्ध होता है कि ऐङ्गलो-जापानी समझौते के विच्छेद से इंगलैण्ड की नीति जो जापान के प्रति थी। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ।

जुलाई १९३७ ई० में जापान ने चीन पर भी आक्रमण आरम्भ कर दिया तो ब्रिटिश नीति की परख और भी अधिक खरी कसौटी पर की गई। उसके पश्चात् ब्रिटिश गनबोट लेडीबर्ड यांगटिर्सी में डुबा दिया गया और नानकिंग से शंघाई जाते हुये चीन के ब्रिटिश राजदूत की मोटर पर बम गिराये गये। टियंट्सिन में ब्रिटिश कंसेशन का भी जापानियों ने घेरा डाल दिया। इस घेरे का समाचार सुनकर ४ अगस्त १९३९ ई० को मिस्टर चेम्बरलैन ने कामन्स सभा में कहा कि जो कुछ समाचार चीन से प्राप्त हुये हैं उनसे मेरा खून खोलने लगा है।" इन घटनाओं के होते हुये भी इङ्गलैंड जापान के साथ समझौता करने का इच्छुक था।

ब्रूसेल्स सम्मेलन में चीन पर आक्रमण होने वाली घटना के सम्बन्ध में जापान के विरुद्ध एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया। यह प्रस्ताव अमरीकन दूत ने लिखा था परन्तु इसकी जिम्मेदारी जापानियों ने अंगरेजों पर ही रक्खी।

१५ जुलाई सन् १९३९ ई० को टोकियो के ब्रिटिश राजदूत सर राबर्ट क्रेजी ने जापानी पर राष्ट्र मन्त्री हचीरा अरीता से समझौते की बातें आरम्भ कीं।

२४ जुलाई को जापान और इङ्गलैंड के मध्य समस्त चीन के बारे में एक समझौता हुआ जिसमें ब्रिटिश सरकार ने चीन की दशा को समझने का प्रयत्न किया और बृटिश सरकार ने स्वीकार किया कि जब तक चीन में शान्ति स्थापित नहीं हो जाती है तब तक जापानी भूमि, सम्पत्ति और हित की रक्षा के लिये जापानी सेना का वहाँ रहना उचित है। ब्रिटिश सरकार चीन में रहने वाली ब्रिटिश प्रजा तथा अफसरों को सचेत करने का वादा किया कि वह जापानियों का बिरोध न करेंगे।

जब इस समझौते का समाचार इङ्गलैंड पहुँचा तो अमरीकन प्रजा तथा सरकार अचम्भे से चकित हो गई। अमरीका ने भाँति भाँति के प्रश्न ब्रिटिश सरकार से किये। ५ अगस्त सन् १९३९ ई० को कामन्स सभा में मिस्टर चेम्बरलेन ने कहा कि इस समझौते से ब्रिटेन और अमरीका के आपसी सम्बन्ध में किसी प्रकार का अन्तर नहीं उत्पन्न होता है। जब चेम्बरलैन से प्रश्न किया गया कि चीन में ब्रिटिश सरकार अमरीकन सरकार की भांति ही अपनी नीति क्यों नहीं चलाती ? तो मिस्टर चेम्बरलैन ने उत्तर दिया कि "योरुप से अमरीका इङ्गलैण्ड की अपेक्षा अधिक दूर है। इङ्गलैण्ड को योरुपीय स्थिति का ध्यान रखते हुये काम करना है फिर इङ्गलैण्ड को यह बात भी ध्यान में रखनी है कि कहीं जापान धुरी राष्ट्रों के साथ सैनिक समझौता न कर बैठे। यदि वह जर्मनी के साथ सैनिक संधि कर बैठेगा तो फिर। हाँगकाँग और भारतवर्ष की क्या दशा होगी। जब कि जापान पूर्व की ओर से ब्रिटिश प्रभुत्व का सर्वनाश करने को तयार हो जावेगा। यदि जापान इङ्गलैण्ड के विरुद्ध हो जावेगा तो फिर न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी प्रशान्त महासागरीय ब्रिटिश स्थानों पर जापानी जल सेना का आक्रमण होगा।

चीन और जापान के समझौते के विरुद्ध जब संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अपना विरोध प्रकट किया तो १९१६ ई० में रूसो-जापानी समझौता हुआ। १९२४ ई० में जब अमरीका ने इमीगरेशन नियम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाया और जापानियों को अमरीकन भूमि में रहने से रोक उत्पन्न कर दी तो जापान ने सोवियट रूस की स्वीकृति कर ली।

जुलाई १९३९ ई० में ब्रिटेन ने चार चीनी क्रान्तिकारियों को देशी पुलिस के हाथ में सौंप देने का निश्चय किया और टियंट्सिन में अपनी पुलिस को जापानी शासकों से सहमत होने के लिये बाध्य किया। ८० लाख पौंड की चांदी जो राष्ट्रीय बैंक में थी उस का प्रश्न नहीं तय हो सका था। जापानी लोग उस चांदी को पेपिंग की जापान द्वारा बनाई हुई नई चीनी सरकार को दिलाना चाहते थे। जापानी यह भी चाहते थे कि च्यांग काई शेक के सिक्के ब्रिटिश कंसेशन में प्रदेश में न चालू किये जावें। कुछ समय के पश्चात यह बातें भी जापानियों की इच्छानुसार तय कर दी गईं।

२८ मार्च सन् १९४० ई० को ब्रिटिश राजदूत क्रेजी ने जापानी मित्रता के सम्बन्ध में कहा कि "इङ्गलैण्ड और जापान दोनों एक ही दृष्टिकोण से चीन में काम कर रहे हैं। पूर्व की ओर समुद्री शक्ति की दृष्टि से इङ्गलैण्ड और जापान दो ही शक्तिशाली राष्ट्र हैं। दोनों के काम करने के मार्गों में भिन्नता हो सकती है परन्तु राजनीतिज्ञों को अपने ध्येय की ओर बढ़ना असम्भव नहीं है।"

इस समाचार से अमरीका में खलबली मच गई परन्तु लन्दन के राजनीतिज्ञों ने मिस्टर क्रेज़ी के कथन को समझाने का कष्ट किया और कहा कि वह कथन कोई मुख्य राजनैतिक महत्त्व नहीं रखता।

इन समाचारों से बहुत से अमरीकन लोगों का विचार हुआ कि इंगलैण्ड अमरीका को धोखा दे रहा है और वह अमरीका के साथ सहमत होकर काम करने वाले निश्चय के विरुद्ध काम कर रहा है। उनका विश्वास था कि चीन में अमरीका और इंगलैंड के हित समान रूप से थे। निश्चय ही इंगलैण्ड का चीन से बड़ा सम्बन्ध था और वहां उसका बड़ा हित था परन्तु जब चीन के साथ और दूसरे देशों की तुलना की जाती है तो पता चलता है कि इङ्गलैण्ड की स्थिति इतनी जटिल हो जाती है कि एकाएक इङ्गलैंड अपनी समस्त शक्ति पूर्व की ओर जापान का सामना करने में नहीं लगा सकता इसी कारण वह जापान के साथ बराबर मैत्री नीति से काम चलाता रहा।

संयुक्त राष्ट्र का पूर्व की ओर कोई अधिक हित नहीं है। फिलीपाइन द्वीप पर उसका अधिकार अवश्य है। चीन में उसका कुछ धन तथा व्यापार है। पूर्वी द्वीप समूह से उसे रबर तथा टीन मिलता है। फिर भी उसका हित इङ्गलैंड से कम है। संयुक्त राष्ट्र अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाते हुये अपनी समस्त शक्ति पूर्व की ओर लगा सकता है। पर इङ्गलैण्ड के लिये यह बात कदापि सम्भव नहीं है।

इङ्गलैंड समझता था कि जापानी सरकार से मैत्री नीति रखने से ही वह लाभ उठा सकता है परन्तु संयुक्त राष्ट्र की नीति इँगलैंड के विरुद्ध थी। यांगटिसी नदी के व्यापार के सम्बन्ध में ही यदि ध्यान दिया जावे तो वहाँ ६८ हज़ार टन के ब्रिटिश तथा ८४०० टन के अमरीकन और ३५ हज़ार टन के जापानी स्टीमर थे। जब जापान ने इस नदी को बन्द किया तो इङ्गलैण्ड ने विरोध नहीं किया परन्तु अमरीका ने विरोध किया और उसे शीघ्र ही पैनं नामी जहाज़ के डुबाने के बदले ७७४९०२१ रु० और तीन तेल के जहाज़ों के नष्ट करने के बदले में ७७४९०२१ रु० प्राप्त हो गये।

जापान ने अमरीका के अधिकारों का इंगलैंड की अपेक्षा अधिक सम्मान किया है। वह अमरीकन मैत्री का भी अधिक इच्छुक था परन्तु अमरीका की विरोधी नीति देख कर उसे बड़ा असन्तोष होता रहा। इसी कारण उसे भी अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ा है।

अमरीका चीन में प्रत्येक विदेशी राष्ट्र के लिये व्यापारिक रूप से खुला द्वार देखना चाहता था। जापान को यह बात कदापि स्वीकार न थी। वह चाहता था कि यदि पश्चिम की ओर उसे अथवा पूर्वी राष्ट्रों को व्यापार के लिये स्थान नहीं है तो फिर पश्चिमी राष्ट्रों को भी पूर्वी राष्ट्रों तथा सागरों में व्यापार का स्थान न होना चाहिये। फिर भी वह अमरीका के साथ किसी न किसी प्रकार समझौता करना ही चाहता था। अमरीका जापान की नीति से भली भांति परिचित था। इसी कारण अन्तिम समय तक जब जापान समझौता करने पर डटा रहा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113727

भरसक प्रयत्न करता रहा तो भी अमरीका ने उसकी शर्तें स्वीकार न कीं। अन्त में जापान ने युद्ध की ओर पैर उठाये और अचानक अमरीकन तथा ब्रिटिश स्थानों पर प्रबल शक्ति के साथ धावा बोल दिया। आरम्भ में जापान को आक्रमण में अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। इस समय वह प्रशान्त महासागर में सब से अधिक शक्तिशाली राष्ट्र बन गया है। युद्ध की प्रबलता और जापानी सफलता देखते हुए प्रतीत होता है कि शायद समस्त प्रशान्त महासागरीय द्वीप तथा राष्ट्र कुछ समय के लिये जापानी अधिकार में हो जावें पर लम्बी लड़ाई के अन्त में युद्ध का क्या फल होगा यह बतलाना कठिन है।

प्रशान्त महासागर के हवाई मार्ग

प्रशान्त महासागर के आर-पार हवाई मार्ग बनाने में बड़ी सुस्ती की गई। जिन लोगों के हाथ में हवाई मार्ग द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को अधिक घनिष्ट बनाना था वह अमरीका और योरुप के सम्बन्धों की ही चर्चा चलाते रहे। १९२१ ई० में न्यूयार्क और सैन फ्रान्सिस्को के मध्य हवाई लाइन बनाई गई। १९२९ ई० में डच लोगों ने एम्स्टर्डम और डच पूर्वी द्वीपसमूह के मध्य एक हवाई लाइन खोली। ११४५ ई० में प्रशान्त महासागर की १० हज़ार मील लम्बी हवाई लाइनें बराबर चलने लगीं।

अब तक प्रशान्त महासागर का सम्बन्ध अमरीका से केवल सैनिक और जल सेना के रूप में था। गत महायुद्ध के पश्चात् अमरीका में लोग विचार करने लगे कि अमरीका पर प्रशान्त महासागर तथा अटलांटिक के आर्कटिक हवाई मार्ग से आक्रमण हो सकता है। इसी कारण अमरीकन निवासियों का ध्यान आर्कटिक तथा प्रशान्त महासागरीय हवाई मार्ग की ओर आकर्षित हुआ। १९२४ ई० में आर्कटिक हवाई मार्ग से संसार का भ्रमण हुआ। इस सफलता के प्राप्त होने के पश्चात् प्रशान्त महासागर के आर पार उड़ने की सम्भावना प्रतीत होने लगी और विचार किया जाने लगा कि एक उड़ान में ८०० मील तक उड़ना सम्भव है। इस कार्य में अल्यूशियन प्रदेश और जापान के उत्तरी प्रदेश की प्रतिकूल ऋतु बड़ी बाधा डालती थी।

सन् १९२५ ई० में अमरीका की जल सेना के भूतपूर्व कमाण्डर जान रोडगेर चार सैनिकों को लेकर सैनफ्रान्सिस्को से एक समुद्री विमान पर होनोलूलू के लिये उड़ा। लकड़ी तथा तेल के कम हो जाने से उन्हें मार्ग में समुद्र में विमान उतारना पड़ा और वह किसी प्रकार कवाई (Kavai) द्वीप पहुँचे। १०२७ ई० के जून मास में अमरीका के स्थल पर उतरने वाले फौजी हवाई जहाज़ की ओर ध्यान दिया गया और उसमें सफलता प्राप्त हुई।

लैफ्टिनेण्ट मेटलैंड और हेजेन्बेरगेर एक तीन इञ्जिन वाले जहाज में सैनफ्रान्सिस्को से होनोलूलू के सैनिक मैदान की ओर उड़े।

१९२७ ई० के उड़ान से कोई व्यापारिक लाभ न हो सका क्योंकि उस समय विमानों के एञ्जिन इतने मज़बूत न थे कि वह अटलांटिक अथवा प्रशान्त महासागर पार विमानों को ले जा सकें। व्यापारिक हवाओं के कारण इञ्जिन अपने विमानों को अमरीका वापस ले जाने में असमर्थ हो जाते थे। १९२९ ई० में डाक्टर एकेनेर ग्राफ जेपलिन नामक विमान में संसार के चारों ओर उड़ा। वह एक ही उड़ान में टोकियो से लास अञ्जेलीस को उड़ा था।

प्रत्येक प्रशान्त महासागरीय हवाई मार्ग के विमान को हवाई द्वीपसमूह में रुकना पड़ता है। होनोलूलू से सैनफ्रान्सिस्को की दूरी २४०० मील है। हवाई द्वीप के आग्नेय द्वीप पर हिलो हवाई अड्डा है। वहां से सैनफ्रान्सिस्को समीप है परन्तु हिलो से अधिक भारी सामान लेकर समुद्री विमान का उड़ना सम्भव नहीं है। वर्तमान समय में पैन अमरीकन के क्लिपर विमान जिनका भार ८० हज़ार पौंड से अधिक है वह अधिक से अधिक २५ सवारी तथा एक हज़ार पौंड की डाक केलीफोर्निया से लेकर हवाई जा सकते हैं। इससे कम उड़ान में वही विमान अधिक सामान लाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं। इस प्रकार हवाई द्वीपसमूह के द्वीप समुद्री आवागमन के साधन में संसार में अद्वितीय हैं।

उत्तरी अटलांटिक सागर को कनाडा से उड़ कर पार करने के बाद ब्रिटिश द्वीपसमूह में सीधे बिना रुके पहुँचा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका से उड़ कर फ्रान्स या पुर्तगाल पहुँचना सम्भव है। यह उड़ान सीधे अथवा एज़ोर्स होकर हो सकती है। दक्षिणी अटलांटिक सागर पार की उड़ान ब्रेज़ील से अफ्रीका तक होती है परन्तु उत्तरी प्रशान्त महासागर को बिमान द्वारा पार करने में (आर्कटिक हवाई मार्ग छोड़ कर) हवाई द्वीप होकर अवश्य ही जाना पड़ता है। यदि हवाई को छोड़ कर उड़ान की जावे तो वह केवल आर्कटिक मार्ग है। यह मार्ग प्रत्येक ऋतु में भयानक रहता है और कभी कभी तो इसका पार करना असम्भव हो जाता है। कनाडा से रूस उड़ कर जाने वाले विमान संयुक्त राष्ट्र की भूमि को छोड़ कर उड़ सकते हैं परन्तु उन विमानों को एल्यूशियन द्वीपों के दक्षिण अथवा अलास्का के उत्तर होकर उड़ना होगा जो दूरी और ऋतु दोनों के ध्यान से असम्भव है। मेक्सिको के प्रशान्त महासागरीय तट तथा मध्यवर्ती अमरीका से क्लिपर्टन द्वीप को भली भांति विमान द्वारा उड़ा जा सकता है। क्लिपर्टन फ्रान्सीसी अधिकार में है। यह मेक्सिको से ७८० मील की दूरी पर और पनामा नहर से २००० मील पश्चिम की ओर है। क्लिपर्टन और मार्क्विसास द्वीपों के मध्य लगभग २५०० मील की दूरी है।

यदि होनोलूलू को केन्द्र मान कर २३५० मील का अर्ध व्यास मान कर एक बृत्त खींचा जावे तो पूर्व और उत्तर की ओर यह बृत्त किसी भी देश की भूमि होकर न जावेगा। दक्षिण और पश्चिम की ओर इस वृत्त के भीतर बहुत से द्वीप आ जावेंगे। किङ्गमानरीक, जार्विस (मध्य के लगभग ६ द्वीप), समस्त फोनिक्स द्वीप समूह, मार्शल द्वीपसमूह की राताक द्वीपों की कड़ी, वेक द्वीप, हवाई द्वीप के दूसरे द्वीप तथा मिडवे द्वीप आदि सभी वृत्त के भीतर आ जावेंगे।

विमान सम्बन्धी मार्गों के विचार से दक्षिणी और पश्चिमी प्रशान्त महासागर के अगणित द्वीप तीन भागों में विभाजित हो जाते हैं। १—प्रवाल द्वीप जिनमें झीलें अथवा अनूप (लेगून) हैं। इनमें समुद्री विमान उतर तथा उड़ सकते हैं। २—ठोस समतल मैदान वाले द्वीप जिनमें स्थलीय विमान भलीभांति उतर और उड़ सकते हैं। बहुत सी ऐसी चट्टानें हैं जो पहाड़ी हैं जिनकी तटीय चट्टानें समुद्र में निकली हैं और अनूप बहुत छोटे तथा मूंगों से भरे हैं उनमें समुद्री विमानों का उतरना कठिन है। ३—वह बड़े द्वीप जिनमें सचमुच बन्दरगाह बन सकते हैं परन्तु वहाँ समुद्री विमान का उतरना अथवा उड़ना अनोखी बात है। यद्यपि उनमें से कितने द्वीपों में बन्दरगाह हैं परन्तु वे सभी (पर्ल और ओआहू को छोड़ कर) एक ओर को बहुत खुले हैं और समुद्री विमान के उतरने अथवा उड़ने के लिये बहुत छोटे हैं। उनकी दशा और भी अधिक खराब होती यदि वहाँ व्यापारी हवायें न होतीं और वह हवा के रुख की ओर न होते।

सन् १९२८ ई० में सर चार्ल्स किंग्स फोर्ड-स्मिथ केलीफोर्निया से आस्ट्रेलिया को हवाई द्वीपसमूह तथा फिजी द्वीपों पर होकर उड़ा था। इस भाग होकर जाने में हाऊलैंड में विमान उतर सकते हैं। सबसे पहले हाऊलैंड में मिस इअर हार्ट नामक महिला (उड़ाका) उतरी थी।

प्रशान्त महासागर में समुद्री विमानों द्वारा अधिक काम हो सकता है। मध्य प्रशान्त महासागर में पैन अमरीकन क्लिपर के समुद्री विमान परम आवश्यक हैं। मध्यवर्ती प्रशान्त महासागर के हवाई मार्ग में संयुक्त राष्ट्र अमरीका से फिलीपाइन अथवा जापान जाने के लिये मिडवे अथवा वेक द्वीप का प्रयोग करना बहुत जरूरी है। मिडवे द्वीप में स्थलीय विमानों के लिये एक मील लम्बा मैदान बनाना कोई कठिन कार्य नहीं है। वेक द्वीप पर विमानों के लिये मैदान बनाना तेज हवा के झोकों के कारण बेकार है। यदि मिडवे से ग्वाम को उड़ा जावे और मार्ग में वेक द्वीप में न ठहरा जावे तो उनकी दूरी होनोलूलू और सैनफ्रांसिस्को की दूरी से अधिक होगी। इस मार्ग में स्थलीय विमानों द्वारा यात्रा में बड़ी कठिनाई होगी। मिडवे और वेक द्वीप प्रकृति द्वारा समुद्री विमानों के प्रयोग के लिये ही बनाये गये हैं। होनोलूलू से ११०० मील दक्षिण की ओर किंगमैन रीफ है उसके पास ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिसमस द्वीप और ५०० मील आगे फोतिक्स है। इन द्वीपों में समुद्री विमानों के अड्डे बनाये जा सकते हैं।

वर्तमान युद्ध से पहले प्रशान्त महासागर का केवल मध्यवर्ती विमानी मार्ग ही व्यापारिक रूप से प्रयोग होता था। प्रति सप्ताह पैन अमरीकन हवाई मार्गों का समुद्री विमान सैनफ्रांसिस्को से होनोलूलू, मिडवे, वेक, ग्वान, मनीला, मकाओ और हांगकांग को जाता था। अब मनीला तथा हांगकांग का जाना बन्द है। हांगकांग में जापानी आक्रमण के पहले ब्रिटिश और फ्रांसीसी (अब जापानी) सिंगापुर तथा इण्डोचीन जाने वाली लाइन से उनका सम्बन्ध होता है। इण्डोचीन (अब बन्द है) और सिंगापुर से वह डाक योरुपीय लाइनों द्वारा योरुप को जाती है। हांगकांग से चीन के दूसरे भीतरी स्थानों को भी हवाई डाक जाती है।

होनोलूलू से किंगमानरीफ और अमरीकन समोआ होकर न्यूजीलैण्ड को भी हवाई मार्ग जाता है। होनोलूलू से केंटन द्वीप और फ्रांसीसी न्यूकलेडोनिया होकर न्यूजीलैण्ड को हवाई मार्ग बनाने का विचार पैन अमरीकन हवाई मार्गों की ओर से हो रहा था। इस मार्ग के स्थापित हो जाने से आकलैण्ड को सैनफ्रांसिस्को से चार दिन में डाक पहुँच जाया करेगी।

व्यापारिक तथा सरलता के ध्यान से ग्वाम से टोकियो को मार्ग बनाने का विचार लोग कर रहे हैं। इस मार्ग से जाने वाले बिमानों को मैरियन तथा बोनिन द्वीपों में होकर जाना होगा। डच द्वीपसमूह, इण्डोचीन, फिलीपाइन और जापान के मध्य भी हवाई मार्ग चालू हो गये हैं तथा डाक आने जाने लगी है।

अब तक जितने भी मार्ग पैन अमरीकन ने बनाये हैं वह लगभग सभी अमरीकन भूमि होकर ही जाते हैं। इन मार्गों के बनाने का ध्यान अमरीका के विचार में बहुत पहिले से था। इसी लिये अमरीका ने मिडवे द्वीप पर १८६७ ई० में हवाई द्वीपसमूह और ग्वाल पर १८९८ ई० में और वेक द्वीप पर १८९९ ई० में अधिकार किया था। यह अधिकार जलसेना की सहायता से ही किया गया था। हवाई और ग्वाम में अमरीका ने अपने जलसेना और जहाजी अड्डे बनाये परन्तु वेक तथा मिडवे में अमरीकन जहाज कभी कभी जाते थे।

हवाई मार्गों के बनाने में बड़ी कठिनाइयाँ पड़ती हैं। जिस भूमि होकर यह मार्ग जाते हैं उनके मालिकों की रजामन्दी लेनी पड़ती है। हाऊलैण्ड, बेकर, जार्विस, कैंटन और इण्डरबरी द्वीपों की खोज अमरीका की खोज विभाग के सदस्य मिस्टर बाग्स ने की थी। यद्यपि कैंटन को छोड़कर १८७६ ई० के पूर्व ही इनकी खोज अमरीकन लोग कर चुके थे। योरुपीय एटलस में यह द्वीप अमरीकन पालीनेसिया के नाम से दिखाये जाते थे। कुछ समय के पश्चात् ब्रिटिश मानचित्रों में यह द्वीप ब्रिटिश भूमि की तरह दिखाये जाने लगे। इसी कारण जब १९३५ ई० में अमरीका के उपनिवेशों की घोषणा हुई तो ब्रिटिश पत्रों ने बड़ी अप्रसन्नता प्रकट की और ब्रिटिश पार्लियामेंट में प्रश्न पूछे गये। उसके बाद इंगलैण्ड ने बाकेर, जार्विस और हाऊलैण्ड को अमरीकन स्वीकार किया और कैंटन तथा एंडरबरी पर ब्रिटिश और अमरीका दोनों ने मिल कर अधिकार जमाया। हल (कैंटन के समीप) तथा क्रिसमस द्वीपों पर ब्रिटिश अपना अधिकार जमाये हैं। अमरीका का कहना है कि यह द्वीप उसके हैं।

यह एक माननीय तथा आदरणीय बात है कि एक देश की हवाई लाइन दूसरे देश की भूमि में उसकी आज्ञानुसार ही स्थापित की जा सकती है। फिर भी व्यापारिक हवाई मार्ग के लिये पैन अमरीकन हवाई मार्ग को संयुक्तराष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, निकारेगुआ, ग्वाटेमाला और पनामा ने एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र को ले जाने के लिये स्वतंत्र मार्ग दे दिया है।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका कुछ समय में ही बिना किसी राष्ट्र की आज्ञा लिये ही प्रशान्त महासागर के आर-पार फिलीपाइन तक हवाई मार्ग बनाने का विचार कर रहा है। १९४५ ई० में फिलीपाइन को स्वतंत्रता प्रदान करने का निश्चय संयुक्तराष्ट्र कर चुका है परन्तु जापान ने कुछ और ही विचित्र स्थिति उत्पन्न कर दी है। स्वतंत्र होने पर फिर देखा जावेगा कि किस विदेशी सरकार को फिलीपाइन अपने देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हवाई मार्ग चलाने की आज्ञा प्रदान करेगा और किसको रोकेगा।

चीन में हवाई मार्ग स्थापित करने के लिये पैन अमरीकन हवाई मार्गों के कार्यकर्ताओं को कई एक विदेशी सरकारों से बातचीत करनी पड़ी थी। वर्तमान युद्ध के पहले चीनी लोग अपनी भूमि में जापानी हवाई लाइन नहीं स्थापित होने देना चाहते थे। जापान भी किसी दूसरे राष्ट्र को अपने से पहले चीन में प्रवेश नहीं होने देना चाहता था। इसलिये चीन के विदेशी अधिकार वाले बन्दरगार ही थे जहाँ हवाई लाइन बनाई जा सकती थी। इसलिये नाकाओ और हांगकांग के लिये पैन-अमरीकन को ब्रिटिश तथा पुर्तगाली सरकार से अलग अलग बातचीत करनी पड़ी।

१९३८ ई० में न्यूज़ीलैण्ड के पैन अमरीकन हवाई मार्ग के निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ। इस कार्य के आरम्भ होने से लन्दन में कुछ असन्तुष्टता अवश्य हुई तो भी न्यूज़ीलैण्ड सन्तुष्ट था और वहाँ की सरकार ब्रिटेन की सरकार के लिये अपना अहित स्वीकार करने के लिये तयार नहीं है।

पूर्वी प्रशान्त महासागर में ब्रिटिश सरकार जो कुछ करना चाहती है वह अभी भेद की बात है और उसे संसार नहीं जानता है परन्तु कैन्टन और एंडरबरी द्वीपों से जो सम्बन्ध ब्रिटेन का है और ब्रिटिश सरकार जो कुछ वहाँ कर रही थी उससे यही पता चलता है कि प्रशान्त महासागर के आर पार हवाई लाइनों को ब्रिटिश सरकार केवल अमरीकन लोगों के हाथ में नहीं देखना चाहती। ऐसी दशा में ब्रिटिश सरकार यदि स्वयं अपनी हवाई लाइन बनाना चाहेगी तो उसे होनोलूलू में अवश्य प्रवेश करना होगा। परन्तु संयुक्त राष्ट्र अमरीका होनोलूलू ऐसे सैनिक स्थान में विदेशियों को प्रवेश करने की आज्ञा न देगा। संयुक्त राष्ट्र द्वारा होनोलूलू में रोक होने पर मार्कवैसस क्लिपर्ट होकर मार्ग बनाना होगा या तो फिर क्रिस्मस द्वीप से बिना रुके हुये विमान ४ हजार मील चलकर सैनडीगो पहुँचे। इन दोनों मार्गों को स्थापित करके भी ब्रिटिश कम्पनियाँ पैन अमरीकन मार्गों का सामना न कर सकेंगी।

ब्रिटिश की अपेक्षा फ्रान्सीसी लोगों ने अपनी भूमि में हवाई लाइन बनाने की अधिक सुविधा प्राप्त की है। फ्रान्सीसी लाइन को क्लिपर्टन तथा न्यूगिनी को प्रशान्त महासागर आर पार लाइन बनाने में प्रयोग करना होगा। ऐसी हवाई लाइन विषुवत रेखा के दक्षिण अधिक उपयोगी सिद्ध होगी परन्तु ऐसी लाइन के बनाने का विचार फ्रांसीसी सरकार का अब तक नहीं है। फ्रान्सीसी सरकार का इण्डो-चीन से फ्रान्सीसी पोलीनीशिया और अमरीकन तट पर हवाई मार्ग बनाने का विचार नहीं है।

योरुपीय राष्ट्रों में डच राष्ट्र ही ऐसा राष्ट्र था जो शुद्ध व्यापारिक दृष्टि से हवाई मार्ग प्रशान्त महासागर में स्थापित करना चाहता था। डच लोगों ने अपनी बड़ी लाइन एम्स्टर्डम से बोर्नियो को बनाई। कई वर्षों की लिखा पढ़ी तथा परिश्रम के पश्चात् डच लोगों ने आस्ट्रेलिया को भी एक हवाई लाइन बना ली थी। डच लोग फिलीपाइन को भी अपनी हवाई लाइन में मिलाने के इच्छुक थे परन्तु अभी तक वह १५० पूर्वी देशान्तर के आगे नहीं बढ़े हैं।

जापान अन्तर्राष्ट्रीय हवाई मार्ग सम्बन्धी कनवेन्शन का सदस्य था। उसने अब तक हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्रों में से किसी से भी समझौता नहीं किया। जापानी लाइनें जापान द्वारा अधिकार किये प्रान्तों तथा प्रदेशों में चल रही हैं। जापानियों की हवाई लाइन जापान से चीन और मंचूको को जाती है। दूसरी लाइन फारमूसा से कोरिया और फिर पेपिंग को जाती है। जापानी लोग फिलीपाइन में भी घुसना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने फिलीपाइन पर आक्रमण भी किया है। जापानी लोगों ने अपनी हवाई लाइनों को कितनी उन्नति दी है इसका ठीक ठीक अभी तक किसी राष्ट्र को पता नहीं है। कहा जाता है कि जापानी लोगों ने सैपान में भी हवाई अड्डा बनाया है। यह द्वीप ग्वाम से १२० मील उत्तर की ओर है। जापानी लोगों ने अपने मैण्डेट द्वारा अधिकृत द्वीपों के मध्य भी हवाई लाइनें स्थापित कर ली हैं।

जापान अपनी हवाई लाइनों को उन्नति देने तथा प्रशान्त महासागर के छोटे छोटे द्वीपों में अड्डे बनाने के कारण प्रशान्त महासागर के कई स्थानों पर एकाएक आक्रमण करके सफल हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान ने अपने आक्रमण के कारण प्रशान्त महासागर का तख्ता ही उलट दिया। उसने ग्वाम, फिलीपाइन (अधिकांश प्रदेश पर), इन्डोचीन, डच द्वीप समूह के कुछ द्वीपों, थाईलैंड, मलय आदि पर अधिकार कर लिया है। इस प्रकार जापान को अपने हवाई मार्गों के स्थापित करने में और भी सुविधा प्राप्त हो गई है। इस लेख के अध्ययन के साथ ही साथ हमें यह भी ध्यान रखना चाहिये कि प्रशान्त महासागर के मार्गों में कितने ऐसे हैं जो अब बन्द हो गये हैं और कितने ही नये हवाई मार्ग स्थापित हो रहे हैं।

प्रशान्त महासागर के बन्दरगाह

अकापुल्को—मैक्सिको में प्रशान्त महासागरीय तट पर है। ज० सं० लगभग ५ हज़ार। रुई, रेशम, ऊन, मदिरा, स्पिरिट और दूसरी साधारण वस्तुओं का आयात (आना) होता है। चमड़ा, रुई और फल निर्यात (बाहर भेजे जाते) होते हैं। इसके बाद समुद्र की गहराई ३४ फुट से १३६ फुट है। अकापुल्को के दक्षिण की ओर सरकारी प्रकाश घर है जिसकी ऊँचाई ३५० फुट है। प्रकाश घर का स्वेत चमकीला प्रकाश १५ मील तक जाता है।

अकारो—न्यूज़ीलैंड में (द० अ० ४३.५१, दे० पू० १७२.५६) है। शासक अकारो बरा कौंसिल है। यह ८ मील लम्बा सुन्दर भीतरी बन्दरगाह है। जहाजों को ठहरने के लिये अच्छा स्थान है। सबसे कम गहराई १८ फुट है।

अलबेनी—पश्चिमी आस्ट्रेलिया का सुन्दर बन्दरगाह है। (द० अ० ३५° पू० दे० ११७.४५) जन-संख्या लगभग ४ हज़ार। लकड़ी, चन्दन, ऊन, चमड़ा, घोड़े, भेड़, मछली, फल, गोंद, गेहूँ, तेल, जैतून आदि सामान निर्यात होता है। यहां पर ३ से १० टन तक बोझ उठाने वाली क्रेनें हैं। बन्दरगाह के किनारे तक रेलवे सड़क बनी है।

अम्बाइना—मलक्का द्वीपसमूह (डच पूर्वी द्वीप समूह) में है। जन-संख्या लगभग १० हजार लोग, जायफल और जावित्री का व्यापार होता है। इस बन्दरगाह पर जहाजों के ठहरने के लिये काफी गहरे घाट हैं।

अमाय—चीन में है यह बन्दरगाह एक संकरी खाड़ी द्वारा फूकेन से अलग है। ज० सं० १ लाख ५० हजार है। व्यापार रुई, दियासलाई, भोजन-सामग्री, मछली, सेम, आटा, मिट्टी का तेल, चावल, गेहूँ, चाय, चीनी, कागज़, तम्बाकू, घास के बने कपड़े और फिटकिरी का होता है।

अपोला—(अपोलू द्वीप, समोन ग्रूप) न्यूज़ीलैंड में है। व्यापार की साधारण वस्तुएँ लकड़ी, कोको, कोपरा तथा दूसरी वस्तुएँ हैं। जहाज़ों के ठहरने के लिये गहरे घाट बने हैं। जिले में बड़े से बड़े जहाज़ ठहर सकते हैं। यहां तूफ़ान का भय रहता है।

आस्टोरिया—ओरेगोन, (संयुक्त राष्ट्र अमरीका) में है। कोलम्बिया और विलियम मेटे के बन्दरगाहों को इसी बन्दरगाह होकर जहाज जाते हैं। सभी जहाज़ों को आस्टोरिया में प्रवेश करते समय अपना नाम लिखाना पड़ता है। यह प्रशान्त महासागर पर राज्य का केवल एक मात्र स्वच्छ पानी का बन्दरगाह है। यह समुद्र से १४ मील की दूरी पर कोलम्बिया नदी के तट पर स्थित है। ज० सं० ३० हज़ार है। कोयला, जाल बनाने के लिये बटा हुआ सन, आटा, गेहूँ, सेब, सूखे फल, साल्मन मछली, लकड़ी के पतले तख्ते और काठ कवाड़ आदि का व्यापार होता है। कोलम्बिया नदी के मुहाने से ३ मील की दूरी पर एक प्रकाश करने वाला जहाज़ है जिसका प्रकाश १२ मील तक जाता है। सभी ऋतुओं में यहां जहाज़ों के ठहरने की सुगमता है। प्रवेश स्थान पर पानी की गहराई ४१ से ४३ फुट तक है प्रवेश स्थान की चौड़ाई ५ मील तथा सबसे अधिक गहराई आध मील है। इस बन्दरगाह पर १५ टन से ४० टन तक बोझ उठाने वाली (क्रेन) कलें लगी हैं।

आकलैंड—न्यूज़ीलैंड में है जन-संख्या १ लाख ५३ हज़ार। कारखानों का बना सामान, तेल, जहाज़ तथा लोहे के बने सामान, सोना, लकड़ी, गोंद, सन, ऊन, तेल, चमड़ा, रस्सी, जमा मांस, मछली, फल, मक्खन, मलाई और पनीर आदि आयात हैं। यह बन्दरगाह न्यूज़ीलैंड के उत्तरी द्वीप के पूर्वी तट की हौराकी खाड़ी के दक्षिणी तट पर है। छोटे २ द्वीपों के कारण तूफानों से बन्दरगाह की रक्षा होती है। नगर के समीप जहाज़ों के ठहरने के लिये १७ हज़ार फुट लम्बे घाट और नगर के बाहरी भाग में ४२५० फुट लम्बे घाट हैं। सामान उठाने रखने का काम बिजली के कलों से होता है। वहां पर छोटी तथा बड़ी सभी प्रकार की क्रेन हैं। ८० टन को एक तैरती हुई क्रेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। बड़े घाटों में रेलवे पटरियां बिछी हैं जिनका सम्बन्ध सरकारी रेलवे सड़क से है। गोदामों के समीप ही कारख़ाने बने हैं। सामान ढोने के लिये छोटे जहाज़ तथा स्टीमर हैं। रेल के छकड़ों से जहाज़ों में सीधे कोयला भरने का प्रबन्ध है।

इचांग—चीन के हुपेम प्रान्त में है। यह नगर यांगटिसी नदी पर हङ्काव से ३७० मील की दूरी पर स्थित है। कमोज के कपड़े, ड्रिल, सूती कपड़ा, बटन, रंग और चीनी आदि सामान विदेश से मँगाया जाता है। यहां से विदेश को बहुत कम सामान जाता है।

इलोइलो—फिलीपाइन में है। सूती कपड़ा, मलमल, पिट्रौल, चावल आदि सामान बाहर से आता है। चीनी, कोपड़ा और लकड़ी विदेश जाती है।

इन्वपकार्जिल—न्यू ज़ीलैण्ड में है। जन संख्या १० हज़ार है। लकड़ी और साधारण व्यापार का सामान बाहर से आता है और उसी का व्यापार होता है।

इक्वीकब—चिली में है। जनसंख्या ४५ हज़ार है। कोयला, कारखानों का बना सामान, काठकबाड़, कल-पुर्जे, आदि सामान विदेश से आते हैं। सोडा, शोरा, आयोडीन चांदी और तांबा बाहर भेजा जाता है।

इक्वीटास—पीरू में है और अमेज़न नदी के तट पर मनाओस से १२५० मील की दूरी पर और अमेज़न के मुहाने से २१०० मील की दूरी पर स्थित है। ज० सं० १२ हज़ार है। प्रत्येक भांति की भोजन-सामग्री तथा कारख़ाने का सामान बाहर से आता है और रबर, गटा पारचा, कहवा, तुन, देवदार, कपास, तरकारी, चमड़ा, सुपारी, नारियल, कड़ी लकड़ी, कपास के बिनौले और सामान विदेशों को भेजा जाता है।

एरीका—चिली में है। ज० सं० ५ हज़ार। साधारण व्यापारी सामान बोलीविया को परिवर्तनार्थ जाता है। ऊन, रुई, नमक, गंधक, खनिज पदार्थ और जैतून का व्यापार होता है। समुद्र की गहराई ६० से १०० फुट तक है। यह चिली का सबसे उत्तरी बन्दरगाह है।

एएटीफेगस्टा—चिली में है। ज० सं० लगभग ४५ हज़ार है। कोयला, कलें, बोलिविया जाने वाले प्रत्येक भांति के सामान, टीन, सोडा, चांदी, तांबा, आंजन आदि का व्यापार होता है। बड़े ज्वार के समय पानी की गहराई ६० फुट से २४० फुट तक हो जाती है। समुद्र का तल ककरीला पथरीला है इसी कारण डूबे घाटों को मजबूत बांधना पड़ता है। इस बन्दरगाह पर सामान उतारने के लिये घाट नहीं है। इसी कारण सामान उतारने वाले जहाजों द्वारा सामान उतारा जाता है।

एस्क्वीमाल्ट—ब्रिटिश कोलम्बिया में है। बेंकूवर द्वीप के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। बन्दरगाह पर जहाज़ सुगमता के साथ पहुँच सकते हैं।

ओमारू—न्यूज़ीलैंड में है। ज० सं० ६ हज़ार है। प्रत्येक भांति के कारखाने की बनी सामग्री, कोयला और लकड़ी विदेश से आती है। ऊन, जमा मांस और नाज बाहर भेजा जाता है।

ओशेन द्वीपसमूह—गिलबर्ट द्वीपसमूह, पोलीनेशिया में ज० सं० १२३० है। प्रत्येक भांति का सामान बाहर से आता है। फोस्फेट वस्तु बाहर भेजी जाती है।

ओहेल लेह—सुमात्रा द्वीप में है। समस्त ज़िले की जन-संख्या ५ लाख है। रुई का सामान, फुटकर सामान, साबुन और सिगरेट बाहर से आता है। कोपड़ा, लालमिर्च, और ज़मीकन्द बाहर जाती है।

ओसाका—जापान में एक बड़ा बन्दरगाह तथा नगर है। कपास, पटसन, चीनी घास, चमड़ा, सेम, चावल, लोहा फास्फोरस, खाद और कोयला विदेश से आता है। सूती कपड़ा, दियासलाई, चीनी, शीशा, बर्तन, फल, मकान बनाने की लकड़ी आदि सामान बाहर भेजा जाता है। यहां बड़े से बड़े जहाज़ों के ठहरने के लिये सुगम स्थान है।

ओटागो—डूनेडेन बन्दरगाह न्यूज़ीलैंड में है। ज० सं० ७६४५४ है। कोयला, लकड़ी, रेलवे का सामान और कारखाने का बना सामान आदि बाहर से आता है। सोना, ऊन, पटसन, नाज, मक्खन, पनीर, खरगोश का चमड़ा और जमा मांस बाहर भेजा जाता है।

ओतारू—होकैडो द्वीप जापान में है। ज०सं० १ लाख ३ सौ ६१ है। चीनी, कलें और मिट्टी का तेल बाहर से आता है। कोयला, मकान बनाने की लकड़ी, जैतून, नाशपाती, लहसुन, मटर, सेम, आलू और गंधक बाहर भेजी जाती है।

काल्देरा—(चिली) ज० सं० २ हजार। घाटी की जनसंख्या ३० हज़ार। कोयला, लोहा, ईंट, चीनी, कागज़, मशीन, मोमबत्ती आदि का व्यापार होता है। तांबा, सोना, चांदी और चमड़े का निर्यात होता है।

कलेटा ब्वेना—(चिली) ज० सं० लगभग २ हज़ार। पानी की गहराई काफी होने के कारण जहाज़ अच्छी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठहर सकते हैं। यहां बाहर से सामान नहीं आता है। यहां से शोरे के तेज़ाब का नमक बाहर भेजा जाता है।

कलेता कोलोसो—(चिली) यह बन्दरगाह अंतोफगस्ता से ६ मील दक्षिण की ओर है और उसका एक सहायक बन्दरगाह है।

करीज़ल—चिली, ज० सं० २५०० । कोयला, ईंट, खान खोदने की कलें और दूसरा व्यापारी सामान बाहर से आता है। तांबा आदि सामान बाहर भेजा जाता है।

करत्सू—जापान का बन्दरगाह है। जन-संख्या ३० हज़ार है। इस बन्दरगाह पर कोयले का व्यापार होता है। १२ हज़ार टन तक जहाज़ खड़े हो सकते हैं।

कान्स्टीटूशियन—(चिली) ज० सं० ८८८३ है। रोटी बनाने का सामान बाहर भेजा जाता है।

कीलंग—फारमूसा (जापानियों का खुला बन्दरगाह) में है। ज० सं० ५१ हज़ार। रुई के सामान, चावल, सूखी तथा नमकीन मछलियाँ, लोहे के सामान, सेम, खली, मांस, अफीम, कागज़ और रेलवे के सामान यहां बाहर से आते हैं। चाय, चीनी, कपूर का तेल, कोयला, चावल और केला इस बन्दरगाह से निर्यात होते हैं। यह एक बड़ा बन्दरगाह है और यहां के घाटों में ३० हज़ार टन तक के जहाज़ ठहर सकते हैं।

कुचीनोट्स्—जापान का बन्दरगाह है। यहां से कोयला बाहर भेजा जाता है।

कुन्सन—कोरिया में है। क्यूम नदी के मुहाने से १० मील की दूरी पर स्थित है। रुई का सामान, चीनी के बर्तन, लकड़ी, आटा, चीनी, तिनकों के बोरे, दियासलाई आदि सामान बाहर से आते हैं। चावल सेम और गाय का चमड़ा बाहर भेजा जाता है।

कुशीरो—जापान का बन्दरगाह है। यहां लकड़ी का व्यापार होता है।

क्यूक्यांग—चीन में है। जन-संख्या ३६ हज़ार है। पिट्रौल, रुई का सामान और कपड़ा, चीनी, दियासलाई आदि आदि सामान बाहर से आता है। चाय, चावल, तम्बाकू, चीनी के बर्तन और भेड़ के बच्चे विदेश भेजे जाते हैं।

क्यूँग चाव—चीन में है। नगर ३मील भीतर की ओर स्थल पर है। फुटकर सामान, सूती कपड़ा, आटा, दियासलाई और मिट्टी का तेल आदि सामान बाहर से आता है। सुअर, चीनी, पशु, अंडे, चमड़ा, घास का कपड़ा आदि सामान यहां से बाहर भेजा जाता है।

केगलाओ—(पीरू) जन संख्या लगभग ३४ हज़ार। रुई, ऊन और मलमल के कपड़े, रेशम, चमड़े के बने सामान, कुर्सी-मेज़, चीनी मिट्टी के बर्तन, वार्निश, औज़ार, कलें, जहाज़ के सामान और दूसरे भांति भांति के सामान बाहर से आते हैं। तांबा, रुई, बिनौला, बिनौले की खली और चीनी निर्यात की जाती है।

कैंटन—चीन में पर्ल नदी पर है। जन-संख्या लगभग १५ लाख है। सूती और ऊनी कपड़े, चावल, चीनी और मिट्टी का तेल बाहर से आता है। रेशम, चटाइयां और दूसरे देशी सामान बाहर भेजे जाते हैं। यहां पर बड़े से बड़े जहाज़ के ठहरने के लिये घाट बने हुये हैं।

कोबे—जापान का बन्दरगाह है। जन-संख्या लगभग ६लाख है। कारखाने के बने सामान, कोयला, पीरू, चावल और धातु सम्बन्धी वस्तुएँ बाहर से आयात की जाती हैं। चाय, चावल, रुई के कपड़े, चटाइयां, चीनी के बर्तन, तांबा और साधारण वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं।

कोरल—चिली में वल्दीविया का बन्दरगाह है। वल्दीविया बन्दरगाह को देखिये।

कोगेनेल—(चिली) जन संख्या ५४३८ है। साधारण वस्तुएँ बाहर से आती हैं। कोयला, आटा, चमड़ा और भूसी आदि बाहर भेजे जाते हैं।

कोरिंटो—निकारागुआ का बन्दरगाह है। साधारण व्यापारिक सामान, कारखानों का तयार सामान, कहवा, चीनी और कलें आदि बाहर से आते हैं। कहवा कच्चा तथा कमाया चमड़ा, रबर, चीनी, सोना, कड़ी लकड़ी, रंगी लकड़ी और कोको बाहर भेजी जाती है।

कोक्विम्बो—(चिली) जन-संख्या १८२०० है। कोयला, लोहे और पीतल के सामान, शीशे का सामान, सूती कपड़ा, तेल, सीमेंट आदि सामान बाहर भेजा जाता है। लोहा, मैंगनीज़, चांदी, सोना, सीसा, तांबा, जौ, गेहूँ, सूखे फल, शहद, मोम आदि सामान बाहर भेजे जाते हैं।

कोलम्बिया—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में है। इस नदी पर पोर्टलैंण्ड, जोन्स लिन्टन, सेंट हेलेन, गोब्ले, प्रेस्काट, रेनीर, बेस्टपोर्ट, वौना, अस्तारिया आदि बन्दरगाह स्थित हैं। इस नदी के मुहाने से कुछ दूरी पर जहाज ठहरते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोमोक्स—वैंकूवर द्वीपसमूह में है। यूनियन खाड़ी का वर्णन देखिये।

क्राइस्ट चर्च—न्यूज़ीलैंड में है। इस बन्दरगाह का वर्णन लिटेंटन बन्दरगाह में देखिये।

ग्लैडस्टन—(पोर्ट कर्टिस) क्वीन्सलैंड में है। ज० सं० २ हजार है। कोयला और दूसरे खनिज पदार्थ का व्यापार होता है।

ग्रेज़बन्दरगाह—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में है। यहां से लकड़ी बाहर भेजी जाती है।

ग्रेमाउथ—न्यूज़ीलैंड में है। साधारण जीवन सामग्री का सामान बाहर से आता है। कोयला, जला कोयला, ईंट, लकड़ी, ऊन और मोम बाहर भेजे जाते हैं।

ग्रेटाऊन निकारग्वा—साधारण वस्तुओं का व्यापार होता है। कहवा, रबर, सीप, लकड़ी, चीनी और चमड़ा बाहर भेजा जाता है।

ग्वानेय द्वीपसमूह—पीरू से ८ मील की दूरी पर है। यह एक साधारण बन्दरगाह है।

ग्वेक्विल—इक्वेडार में है। ज० सं० लगभग १ लाख है। सूती तथा ऊनी सामान, शराब, स्पिरिट, परचून सामग्री, साबुन, आटा, लोहे के बर्तन तथा लोहे और पीतल का सामान, मलमल, विसात खाने का सामान, स्वयम् चलने वाली कलें, सूखे सामान और कल पुर्जे बाहर से आते हैं। कोको, कहवा, कपास, तिनके के टोप, चीनी, छाल, चमड़ा, बेंत, हाथी दांत का सामान, भारतीय रबर, तम्बाकू आदि सामान बाहर जाता है।

ग्वेमास—मैक्सिको में है। ज० सं० तीन हज़ार पांच सौ है। कच्ची धातु, नारंगियां, गेहूँ और आटा का व्यापार होता है।

चम्पेरीको—ग्वाटेमाला में है। साधारण व्यापार की चीज़ें कहवा, चमड़ा, चीनी, रबर और तुन लकड़ी आदि वस्तुयें विदेश को भेजी जाती हैं।

चनारल—चिली में है। कलें ईंट लोहा और कोयला बाहर से आता है। तांबा और चांदी बाहर भेजा जाता है।

चिल्तेपेक—मेक्सिको का बन्दरगाह है। यहाँ से महोगनी (तुन) की लकड़ी बाहर भेजी जाती है।

चिंक्यांग—कियाँगसू प्रान्त (चीन) में है। यह यांगटिसी नदी पर शङ्घाई से १७३ मील की दूरी पर स्थित है। मटर, सेम, मूँगफली, गेहूँ, फूल, आटा, तेल आदि बाहर भेजा जाता है। देश में प्रयोग होने वाली वस्तुएँ बाहर से मंगाई जाती हैं।

चिन-वांग-टाव—चीन की पिचिली खाड़ी में है। कारखाने के बने सामान का व्यापार होता है। कोयला, खली, ईंट, खपड़े, रुई, चमड़ा और बीज बाहर भेजे जाते हैं। यह नगर चीन के दूसरे बड़े नगरों से रेल द्वारा जुड़ा हुआ है। शीतकाल में समस्त उत्तरी चीन का व्यापार इसी बन्दरगाह से होता है।

चेफू—(चीन) जनसंख्या ५४५४० है। कपास कागज़ चीनी, तम्बाकू, कमीज़ के कपड़े, सूराख करने के औज़ार, चादर, सूती कपड़े, लोहे के बने सामान, कोयला, दियासलाई, सुइयाँ, मिट्टी का तेल, सूत, मनुष्य के बाल और खिड़की के शीशे का व्यापार होता है। घास, भूसा, सेम, सेम की खली, फल, रेशम, लेस, बेलबूटा, मोमबत्ती और बाल के जाल बाहर भेजे जाते हैं।

चेमुलपो—(कोरिया) जनसंख्या ३० हज़ार है। रेलवे का सामान, लकड़ी और साधारण वस्तुयें बाहर से मंगाई जाती हैं। सेम, चावल और चमड़ा निर्यात किया जाता है।

चेरीबान—जावा के उत्तरी तट पर है। ज० सं० २० हज़ार है। साधारण वस्तुयें विदेश से मंगाई जाती हैं और चीनी, आलू, सागौन की लकड़ी, रबर, चाय, अरक और दूसरी देशी वस्तुयें निर्यात की जाती हैं।

जूनिन—चिली में है। यह बन्दरगाह देश के भीतरी खानों से रेलवे लाइनों से मिला हुआ है। शोरा बाहर भेजा जाता है।

ट्सिंगटाव—(चीन) जनसंख्या १ लाख २० हज़ार है। काठ कबाड़, कपास, सूती कपड़ा, लोहा, चीनी और फुटकर सामान बाहर से आता है। कोयला, नमक, तेल, तम्बाकू की पत्ती, अंडा और गाय का मांस बाहर भेजा जाता है।

टाकाव—फारमूसा (जापानी खुला बन्दरगाह) में है। उपजाऊ बनाने वाली सामग्री, खली, गुड़ और लोहे का सामान बाहर से आता है। चीनी, चाय और शराब बाहर भेजी जाती है।

टाकोमा—संयुक्तराष्ट्र अमरीका में प्यूगेट खाड़ी के पूर्व है। जनसंख्या १ लाख २५ हज़ार है। रेशम, चाय, पटसन, रबर, लकड़ी, तेल और लट्ठे आदि सामान का व्यापार होता है। कोयला, गेहूँ, आटा, रुई, लोहा और फौलाद तथा अस्फोटिक पदार्थ की वस्तुयें विदेश से मँगाई जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टालीनवान—मञ्चूरिया, डलनी का बन्दरगाह देखिये।

टाउन विली—क्वीन्सलैण्ड में है। जनसंख्या २९ हज़ार है। यह खान खोदने और चराई का केन्द्र है। चीनी, चमड़ा, मांस, पशु, केला, स्पेना, तांबा और चरबी आदि सामान का व्यापार होता है।

टीनसीन—चीन में है। जनसंख्या लगभग १० लाख है। फुटकर सामान लोहे और पीतल के बर्तन, कलें और रसायन की वस्तुयें विदेश से मँगाई जाती हैं। ऊन, चमड़ा, फर, रुई, अंडा, घास, दरी और सेम आदि बाहर भेजा जाता है।

टोकियो—जापान (राजधानी) के हांडू द्वीप के पूर्वी भाग में है यह नगर टोकियो खाड़ी पर सुमीदा नदी के दोनों ओर स्थित है। पानी के छिछले होने से नगर से पांच मील की दूरी पर जहाज़ों को रुकना पड़ता है। यहां का व्यापार याकोहामा होकर होता है जो १८ मील की दूरी पर है। जनसंख्या लगभग २४ लाख है।

डैरियन—जापान, जनसंख्या ७२२६७ है। आटा, लोहा और फौलाद का सामान, मिट्टी का तेल, सिमेंट, नींबू, फल, साग, तरकारी, तम्बाकू, सूती कपड़े, चीनी आदि सामान बाहर से आता है। सेम, सेम की खली, कोयला, सोयाबीन, सेम का तेल और नाज आदि सामान बाहर जाता है।

ड्यूने—ओटामो बन्दरगाह देखिये।

तलकह्वानो—चिली, जनसंख्या लगभग ४० हज़ार है। साधारण प्रयोग की वस्तुयें बाहर से मँगाई जाती हैं। नाज, पृथक वस्तुएँ, चमड़ा, लकड़ी और ऊन बाहर जाता है। कन्सेसियम खाड़ी पर यही एक बन्दरगाह है इस कारण विदेशी व्यापार इसी बन्दरगाह से होता है।

तलतल—चिली में है। कोयला जलाने का तेल, बोरे, साधारण सामान की वस्तुयें बाहर से आती हैं। शोरे का तेज़ाबी नमक, धातुएँ, तांबा, चमड़ा और आयोडीन बाहर भेजे जाते हैं।

तम्सुई—फारमूसा (जापानी खुला बन्दरगाह) में तम्सुई नदी के तट पर कीलंग से ४० मील की दूरी पर स्थित है। यहां का व्यापार कीलंग चला गया है। अब यहां छोटे जहाज़ खड़े होते हैं।

तजीलतजाप—जावा में है। साधारण व्यापारिक सामान पिट्रौल आदि बाहर जाता है और चीनी, कोयला, शोरा आदि सामान बाहर भेजा जाता है।

ताकू—टियन्टसिन देखिये।

तालीन—रिवाल देखिये।

तिमारू—न्यूज़ीलैंड, जनसंख्या १६ हज़ार है। भिन्न भिन्न सामान, कोयला, लकड़ी बाहर से आती है। जमाया हुआ मांस, ऊन, नाज और दानों से प्राप्त सामान बाहर जाता है।

तोकोपिला—चिली, में है। जनसंख्या ४५०० है। लोहा, फौलाद, कलें, जलाने की लकड़ी, तेल, और कोयला आदि सामान बाहर से आता है। शोरा, तांबा, आयोडीन और चमड़ा बाहर भेजा जाता है।

तौरङ्गा—न्यूज़ीलैंड में है। साधारण प्रयोग की वस्तुएँ बाहर से आती हैं और कहवा, लाल मिर्च, अदरक, चावल, चन्दन और दूसरी प्रकार की वस्तुएँ विदेश भेजी जाती हैं।

तंडजोंग—यह बटाविया से रेल, नहर और सड़क द्वारा मिला हुआ है। यह बटाविया का बन्दरगाह है।

थर्सडे द्वीप—क्वीन्सलैण्ड में है। जनसंख्या १५०० है। मोती मारने का काम होता है।

नगोया—जापान में है। सोयाबीन, कोयला, लकड़ी, सेम की खली, ज़ैतून, नमक, चीनी, कच्चा लोहा आदि सामान बाहर से आता है। चीनी मिट्टी के सामान, मिट्टी के बर्तन, कता हुआ सामान, चाय के संदूकचों के लिये लकड़ी, सूती कपड़ा, दियासलाई, ताले और खिलौने बाहर भेजे जाते हैं।

ननेमो—ब्रिटिश कोलम्बिया में है। ज० सं० १० हज़ार है। भोजन सामग्री और पहिनने के वस्त्र आदि विदेश से आते हैं। कोयला और सालमन मछली बाहर भेजे जाते हैं।

नागासाकी—जापान में है। ज० सं० लगभग ढाई लाख है। चावल, हड्डी, खली, कपास, धातु, कलें, मिट्टी का तेल और साधारण वस्तुएँ बाहर से आती हैं। कोयला, रुई का कपड़ा, सीमेंट, सूखी मछली, गंधक, तांबा, कपूर, चावल, गेहूँ और आटा बाहर भेजा जाता है।

नानकिंग—चीन में है। ज० सं० लगभग ४ लाख है। सूती सामान और कपड़ा, धातु, रेलवे का सामान, सेम का तेल, मिट्टी का तेल और चीनी बाहर से आती है। रेशम, फुटकर सामग्री, सेम, चमड़ा और अंडा, घी, दूध, दही तथा मांस बाहर भेजा जाता है।

नेहेगु खाड़ी—न्यूकले डोनिया में है। चमड़ा तथा विस्फोटक पदार्थ बाहर जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेल्सन—न्यूज़ीलैण्ड में है। ज० सं० १० हज़ार है। साधारण व्यापारिक सामान बाहर से आता है और ऊन, सोना, पटसन, जमाया मांस, फल और नाज बाहर जाता है।

न्यू कासेल—न्यू साउथ वेल्स में है। ज० सं० ७८००० है। कारखाने का बना सामान, लोहे, पीतल, शीशे और मिट्टी के बने सामान बाहर जाते हैं और कोयला, जला कोयला, ताँबा, चर्बी, चमड़ा और देश की दूसरी उपज विदेश भेजी जाती है।

न्यू च्वांवा—चीन में है। जन संख्या ८० हज़ार है। सूती तथा ऊनी सामान, मिट्टी का तेल और दूसरे सामान बिदेश से मंगाये जाते हैं। सेम, सेम का तेल और खली, जंगली रेशम, तम्बाकू, बाजरा, कोयला, फर, दवा और कच्चा लोहा बाहर भेजे जाते हैं।

न्यू वेस्ट मिनिस्टर—ब्रिटिश कालोनी, जन संख्या १७ हज़ार है। साधारण वस्तुयें, टीन की चद्दरें, नमक, सिमेंट और लोहा बाहर जाता है। काठकबाड़ मछली सालमन आदि, फल, खेत की उपज, फर और चमड़ा आदि वस्तुयें बाहर भेजी जाती हैं।

न्यू व्हाटकोम—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में है। जन-संख्या १२ हज़ार है। कोयला, काठकबाड़, सोना, चांदी और तांबा और लोहा बाहर जाते हैं।

निन्गपो—चीन में है। जनसंख्या लगभग ४ लाख है। सूती और ऊनी कपड़ा, चीनी, टीन, रंग का सामान और कोयला बाहर जाता है। चाय, मछली फंसाने तथा समुद्र के दूसरे सामान, चटाई, टोप, दवा, बांस और सेम आदि सामान बाहर से आता है।

नोमिया—न्यू कलेडोनिया का केवल एक मात्र स्वतंत्र बन्दरगाह है। जनसंख्या लगभग १० हज़ार है। फ्रांस से प्रत्येक भांति का सामान यहाँ आता है और निकेल मैंग-नीज़ और दूसरी धातुयें, कहवा, कोपड़ा, मक्का, मांस, मकान बनाने की लकड़ी, फारफोरस, गोंद, चमड़ा, हड्डी आदि विदेश जाता है।

पखोय—चीन में है। जनसंख्या ७० हज़ार है। ऊनी-सूती कपड़ा, मिट्टी का तेल, धातुएँ और चावल विदेश से आता है। चीनी, मछली का सामान, नील, सुअर और चमड़ा बाहर भेजा जाता है।

पपीटे—(सूसायटी द्वीपसमूह) १७°३२ दक्षिणी अक्षांश, १४९°२४ पश्चिमी देशान्तर पर स्थित है। भोजन-सामग्री, सूती कपड़ा, लोहे और पीतल का सामान तथा साधारण सामान विदेश से आता है और उसके स्थान पर खोपरा, सीप, मोती, नारियल, नारियल का तेल आदि सामान बाहर जाता है।

पिसागुआ—चिली में है। जनसंख्या ३ हज़ार। आयात कोयला, पिट्रौल, बोरे, डोर, लोहा, फौलाद, स्पिरिट, लोहे-पीतल और तांबे के सामान आदि। निर्यात–शोरा, आयोडीन आदि।

प्रिंस रूपर्ट—ब्रिटिश कोलम्बिया में है। जनसंख्या ६ हज़ार है। यहाँ से मछली और मकान बनाने की लकड़ी बाहर भेजी जाती है।

पुएटा एरीनीज़—चिली में है। जनसंख्या २५००० है। वस्त्र, साधारण सामान और लोहा बाहर से आता है। ऊन, चमड़ा, ग्रीस, जमा हुआ मांस, भेड़ की खाल, चर्बी आदि भांति भांति की सामग्री बाहर जाती है।

पुएटा अरेनस—कोस्टारीका, ९°५८ उत्तरी अक्षांश ८४°३२ पश्चिमी देशान्तर पर स्थित है। जनसंख्या ५७०० है। स्पिरिट, इङ्गलैंड और फ्रांस के कारखानों का बना सामान आता है। ऊन, देवदारु, नील, चमड़ा और चिड़ियों के पङ्ख बाहर भेजे जाते हैं।

पेटा या पैटा—पीरू में है। जनसंख्या लगभग ३ हज़ार है। साधारण वस्तुयें बाहर से आती हैं और चमड़ा, रुई, बिनौला, खली आदि सामान विदेश भेजा जाता है।

पेक्लोंगन—जावा में है। आयात चावल, बोरे, सेम, चीनी, कारखानों की कलें आदि। निर्यात–चीनी, चाय, कामदार कपड़े, कहवा, रबर, कुनैन आदि।

पैगो पैगो—समोआ में १४°१८ दक्षिणी अक्षांश तथा १७०°४५ पश्चिमी देशान्तर पर स्थित है। साधारण व्या-पार की सामग्री बाहर से आती है। मई से नवम्बर तक खोपरा बाहर भेजा जाता है।

पोर्ट आर्थर—लिआनतुंग के अंतिम कोण पर है। जनसंख्या २८ हज़ार है। चीन ने रूस को दे दिया था परन्तु अब यह जापानी अधिकार में है। यहां से कोयला बाहर जाता है और उसके स्थानपर दूसरे सामान आते हैं।

पोर्ट डार्विन—दक्षिणी आस्ट्रेलिया में है। साधारण सामग्री बाहर से आती है और सोना, चांदी, टीन, तांबा, वोल्फ्राम, चमड़ा, सींग, सीप, अबरक, भेड़, पशु और ऊन बाहर जाता है।

पोर्ट कास्टरीस—सेंट लूसिया को देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोर्ट डेनीसन—क्वीन्सलैंड में बोवेन बन्दरगाह देखिये।

पोर्ट जैक्सन—सिडनी, न्यूसाउथ वेल्स में है। जनसंख्या १० लाख है। कृषि के औज़ार, मदिरा, पशु, बोरे, बाइसिकिल, जूते, सोने के सिक्के, नशीली वस्तुयें, शानदार सामान, मछली, फल, मेंज़, कुर्सी, सोना, जैतून, आटा, टोप, टोपियां, घास, भूसा, कारखाने का बना सामान, लोहा, तार, छड़, आभूषण, कलें, आलू, मिट्टी का तेल, छपाई का कागज़, रेलवे का सामान, चमड़ा, चर्बी, मकान बनाने की लकड़ी, तम्बाकू, ऊन आदि आदि सामग्री बाहर से आती है। ऊन, चर्बी, चमड़ा, सींग, खुर, हड्डी, जूते के चमड़े, सोना, चांदी, तांबा, टीन, सीसी, कोयला, जला कोयला, मक्खन, आटा, मक्का, तार, आभूषण, कलें, खाद, मांस, बछड़े का मांस, तेल, आलू आदि आदि सामान बाहर भेजे जाते हैं।

पोर्ट लिटेल्टन—न्यू ज़ीलैण्ड में है। जनसंख्या ४ हज़ार है। साधारण वस्तुयें बाहर से आती हैं और ऊन, नाज, जमा हुआ मांस आदि विदेश भेजा जाता है।

पोर्ट टाउन सेंड—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में है। जनसंख्या ६२५० है। साधारण काम की वस्तुयें बाहर से आती हैं। काठ कबाड़, कोयला, मछली और नाज बाहर भेजे जाते हैं।

पोर्ट लैंड—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में है। जनसंख्या लगभग ५६ हज़ार है। गेहूँ, मटर, डेरी का सामान, नाशपाती, सेब, आटा, पोर्क और लार्ड मछली तथा मकान बनाने की लकड़ी का व्यापार होता है।

पोर्ट लैण्ड—ओरेगान, सयुक्त राष्ट्र अमरीका, जनसंख्या ३ लाख है। साधारण सामग्री बाहर से आती है। नाज, आटा, लकड़ी, ऊन, खेती की उपज, जीवन सामग्री, मांस, फल, सालमन मछली और साग तरकारी बाहर भेजी जाती है।

प्रोबोलिंगो—जावा में है। स्टोर का सामान, कलें, आदि आयात होती है और चीनी, तम्बाकू, रबर, चाय, कोको, कहवा और सागौन की लकड़ी बाहर भेजे जाते हैं।

प्रोग्रेसो—मेक्सिको में है। साधारण वस्तु आयात होती है। सनपट, चमड़े, लट्ठे आदि बाहर भेजे जाते हैं।

प्वेर्टो वैरियस—ग्वाटेमाला में है। जनसंख्या २५०० है। साधारण सामग्री बाहर से आती है और केला, कहवा और तुन लकड़ी बाहर भेजी जाती है।

प्वेर्टो कोलम्बिया—कोलम्बिया, तम्बाकू, छाल, नील, रबर, कहवा, चमड़ा, सींग, बिनौला, सोना, चांदी आदि निर्यात होता है।

प्वेर्टो मेक्सिको—मेक्सिको में है। पहले कौज़कौलोस कहते थे। जनसंख्या ५ हज़ार है। कपास, मलमल, ऊनी कपड़ा, लोहे और पीतल का सामान, परचून का सामान, औज़ार, कोयला, आटा; मकान बनाने की लकड़ी, मदिरा आदि सामान बाहर जाता है। कड़ी लकड़ी, रंगी लकड़ी, कहवा, चीनी, चमड़ा, तम्बाकू, नील, रबर आदि सामान बाहर भेजा जाता है।

फ़िजी—दक्षिणी अक्षांश १५° से २१° तक और पश्चिमी देशान्तर १७०° से १७१° तक फैला है। जनसंख्या १ लाख १ हज़ार है। लेऊका और सूवा इसके दो प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

बालबोआ—पनामा के लिये बन्दरगाह है। जनसंख्या पनामा नगर की ६२ हज़ार, कनाला प्रान्त के बालबोआ और अंकोन की जन संख्या ८००० है। यह पनामा नहर के शासन में है। प्रत्येक भांति का सामान, कपड़े आदि का व्यापार होता है। बालबोआ बन्दरगाह से किसी प्रकार का भी सामान निर्यात नहीं होता है। किलेबन्दी के कारण, नोस फ़्लेमेंको और पेरीको स्थानों में नहीं ठहरने पाते हैं। जहाज़ पनामा नहर के बाहर ही स्वास्थ्य अफसर के निरीक्षण के लिये ठहरा लिये जाते हैं। बलबोआ के बन्दरगाह पर बड़े से बड़े जहाज़ ठहर सकते हैं। यहाँ पर नये नये घाट बने हैं। जिनमें १ हज़ार फुट लम्बा फौज़ादी घाट है। यहाँ पर दो लाख टन कोयला रखने के लिये स्थान बने हैं। घाटों पर दो लाख बैरेल पिट्रोल और ६० हज़ार बैरेल मिट्टी का तेल रक्खा जा सकता है। यहाँ पर २५० टन की दो तैरने वाली क्रेनें भी हैं। सूखे घाटों की लम्बाई १ हज़ार फुट और चौड़ाई १६ फुट है। मशीनों को बनाने तथा साफ करने में प्रत्येक समय २ हज़ार आदमी लगे रहते हैं। इस बन्दरगाह पर किसी प्रकार का बन्दरगाही कर नहीं लगता है। इस बन्दर गाह का प्रबन्ध संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अफसरों के हाथों में है। ५०० से १०० गैलन पानी का मूल्य ३ शिलिंग लगता है। किराये पर चलने वाले जहाज़ों से २ शिलिंग प्रति फुट के हिसाब से कर लिया जाता है परन्तु जो जहाज़ सवारी या सामान नहीं लादते उतारते हैं उनसे किसी प्रकार का कर नहीं लिया जाता है।

बङ्काक—थाई देश में है। जनसंख्या ८८२८६७५ है। रुई के सामान, लोहे और फौलाद के सामान तथा कलें, चीनी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफीम, रेशमी सामान, पिट्रौल, शराब, स्पिरिट, सूती कपड़े, आभूषण, रसायनिक वस्तुयें, साइकिल, तेल, तम्बाकू, लोहे पीतल आदि की वस्तुयें, छकड़े, मोटरें और उनके पुर्जे आदि का व्यापार होता है। चावल, सागौन, चमड़ा, समुद्री सामान, रेशमी सामान, मसाला, लकड़ी, बैल और कच्चा रेशम आदि सामान निर्यात होता है। किनारे पर पहली नवम्बर से ३० अप्रैल तक गहराई १३॥ फुट से साढ़े पन्द्रह फुट तक और शेष साल भर १३ से १५ फुट तक रहती है। नदी के मध्यवर्ती भाग की औसत गहराई ४६ से ४८ फुट तक रहती है। जो जहाज़ बङ्काक में अपना सामान नहीं लाद सकते हैं वह को-सी-चांग द्वीप में जाकर अपना बोझ लादते हैं। यह २५ मील की दूरी पर स्थित है। यह बन्दरगाह मिनाम चाव फिया बन्दरगाह का एक भाग है जिसकी चौड़ाई ५५० से १८०० फुट तक और गहराई ३६ से ६० फुट तक है। इसके मध्यवर्ती भाग में ६० घाट हैं जिनमें २०० फुट से ३५० फुट तक लम्बे जहाज़ खड़े हो सकते हैं। वहां पर कई सूखे घाट हैं जहां छोटे जहाज़ खड़े हो सकते हैं। वहां पर एक समुद्री सेना का घाट है जहां पर केवल समुद्री सेना के जहाज़ खड़े हो सकते हैं। जल सेना विभाग के पास क्रेनें तथा और दूसरे आवश्यक सामान भी अपने अलग हैं। बङ्काक कम्पनी के पास ३२५ फुट लम्बा और ४० फुट चौड़ा एक सूखा घाट है जिसके ऊपर ११ फुट ६ इञ्च पानी रहता है। कम्पनी ने एक नया सूखा घाट ३६० फुट लम्बा ५० फुट चौड़ा बनाया है जिसके ऊपर १६ फुट पानी रहता है। उनके घाटों पर सामान उठाने वाली बिजली की कलें भी लगी हैं। वहां के चावल के कारखाने और बड़ी दुकानें आदि बन्दरगाह के समीप ही स्थित हैं। बन्दरगाह पर काफी तेल तथा कोयला रक्खा जाता है। बोर्नियो कम्पनी और पूर्वी एशियाई कम्पनी की ओर से छोटे छोटे जहाज़ हैं जो सामान लादने उतारने का काम करते हैं।

जहाज़ों को ठहरने के लिये कुछ किराया देना पड़ता है। बन्दरगाह में जहाज़, स्टीमर आदि पर घूमने के लिये भी किराया लगता है।

बटेविया—दक्षिणी अक्षांश ६°७ और पूर्वी देशान्तर १०६°४८ पर स्थित है। जनसंख्या १८८५५० है। अफीम, पिट्रौल, कोयला, लोहा, फुटकर सामान तथा और भिन्न भिन्न सामानों का व्यापार होता है। चीनी, चावल, क़हवा, मसाला, चमड़ा, चाय आदि का निर्यात होता है। यह बन्दरगाह तञ्जोंग प्रिओक पर ब्रिटिश अफसरों के आधीन है।

बन्दावर्ग—क्वीन्सलैंड में है। जनसंख्या १५ हज़ार है। ईख उगाने वाले प्रदेश का केन्द्र है।

बर्नी—टस्मेनिया में है। साधारण वस्तुओं का व्यापार होता है। खेती से उत्पन्न वस्तुयें और लकड़ी निर्यात होती है। यह उत्तरी टस्मेनिया का मुख्य बन्दरगाह है और बड़े बड़े जहाज़ बन्दरगाह पर ठहर सकते हैं।

ब्लफ हार्बर—न्यूज़ीलैंड में है। यह इनवरकार्जिल से १७ मील की दूरी पर है। न्यूज़ीलैंड के "१८७८ ई० के बन्दरगाह" नियम के अनुसार इस बन्दरगाह का शासन बन्दरगाह के बोर्ड के अधिकार में है। लकड़ी, कोयला और ग्वानो तथा फुटकर सामग्री का व्यापार होता है। ऊन, चमड़ा, सन, जमाया हुआ मांस, चर्बी, लकड़ी, मछली, कच्चा चमड़ा, सीप, मक्खन और चूहों का निर्यात होता है।

बन्दरगाह में प्रवेश करने वाले स्थान से १ मील भीतर की ओर पानी की गहराई २४ से ३० फुट तक है। यहां पर ३७२५ फुट के घाट हैं। बन्दरगाह पर ५ से १० टन तक की क्रेनें लगी हैं। दक्षिणी द्वीप की रेलवे लाइन किनारे तक जाती है और रेल के छकड़ों में सीधे जहाज़ों से सामान उतारा जाता है। बन्दरगाह पर ६ महीने में तीन पेंस प्रति टन कर चुकाना पड़ता है। विदेशी जहाजों को ६ पेंस प्रति टन कर चुकाना पड़ता है। तटों पर चलने वाले जहाज़ों को केवल आधा पेंस प्रति टन कर चुकाना पड़ता है।

ब्रिस्बोन—(क्वीन्सलैण्ड) आस्ट्रेलिया में है। जनसंख्या २ लाख ३० हज़ार है। ऊन, चर्बी, चमड़ा, बना हुआ चमड़ा, जमाया हुआ मांस, भेड़, पशु, घोड़े, बछड़े का मांस, मक्खन, मलाई, सोना, चांदी, तांबा, टीन, फल, चीनी, लकड़ी और कोयले का निर्यात होता है। उत्तरी-पश्चिमी खाड़ी की गहराई ३२ फुट और फ्रीमन खाड़ी की गहराई २४ फुट है। २७ फुट पानी के भीतर डूबने वाले जहाज़ बुलिम्बा स्थान तक जा सकते हैं और २६ फुट डूबने वाले ब्रिस्बोन तक जा सकते हैं। बन्दरगाह का प्रबन्ध बन्दरगाह के मालिक, जहाज़ी बोर्ड के सभापति और जहाज़ी इन्सपेक्टर के हाथ में है।

ब्रूने—बोर्नियो द्वीप में है। जनसंख्या १० हज़ार है। यहां का ... व्यापार सिंगापुर के साथ होता है। रुई के कपड़े, सोने के तार, पीतल के बर्तन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहा, चावल, अफीम, तम्बाकू, नमक, मिट्टी के वर्तन, चीनी, मिट्टी का तेल आदि का व्यापार होता है। कच, सागूदाने का आटा, मोम, चमड़ा, कोयला, रबर के पौदे, सूखी झींगा मछली, गटापार्चा और कत्था निर्यात होता है। भीतर की ओर घाट की गहराई १५ फुट है। यह ब्रिटिश रेज़ीडेण्ट की आधीनता में है।

ब्यूनावेंचुरा—कोलम्बिया में है। जनसंख्या लगभग ३ हज़ार है। साधारण वस्तुओं का ब्यापार होता है। क़हवा, सोना, चीनी, चमड़ा, सींग, प्लेटीनम आदि सामान का निर्यात होता है।

बोवेन—(डेनीसन बन्दरगाह) क्वीन्सलैण्ड में है। जनसंख्या २५०० है। चीनी, कोयला, फल, ऊन, चर्बी, चमड़ा और जमाया हुआ मांस बाहर भेजा जाता है। बन्दरगाह के बोर्ड की ओर से दो घाट बनाये गये हैं जो ६६६ फुट लम्बे और २२ तथा २५ फुट चौड़े हैं। प्रत्येक सामान की चुंगी अलग अलग है।

मक्वी द्वीप समूह—७°५२' दक्षिणी अक्षांश तथा ७१°२८ पश्चिमी देशान्तर पर स्थित है। इसमें दो द्वीप हैं जो उत्तरी तथा दक्षिणी द्वीप कहलाते हैं। यह एक अच्छा बन्दरगाह है।

मकाओ—चीन में पुर्तगालियों की बस्ती है। इस बन्दरगाह पर एक अच्छा प्रकाश घर है।

मकासर सेलेबीज़—डच पूर्वी द्वीपसमूह में है। सूती ऊनी और रेशमी सामान, लोहे और पीतल के बने सामान, लोहा, तम्बाकू, मदिरा और स्पिरिट विदेश से आती है। क़हवा, गोंद, गोलियाँ, डोरी, जाल, मसाला, कछुए की खोपड़ी, तेल, चमड़ा, सींग, हड्डी और खोपरा विदेश भेजा जाता है।

मलक्का—मलक्का द्वीप समूह में है। सूती और ऊनी सामान, लोहे, पीतल और मिट्टी के बने सामान, नमक, चीनी आदि सामान बाहर से आते हैं। पारा, रबर, खोपरा, टैपियोका और सुपारी आदि सामान बाहर भेजा जाता है।

मनिल्ला—लूज़न फिलीपाइन (संयुक्त राष्ट्र अमरीका का अधिकार) में है। जनसंख्या लगभग ३ लाख है। लोहा और फौलाद के बने सामान, सूती सामान, धातु सम्बन्धी तेल, मांस और दूध का बना सामान, स्वयम् चलने वाले इञ्जिन, गाड़ियाँ, टायर, गेहूँ, कहवा, कोयला, चावल और कागज़ बाहर भेजा जाता है। चीनी, नारियल का तेल, खोपरा, सन, पाट, तम्बाकू, गोटा पट्टा, काठकबाड़ आदि सामान विदेश भेजा जाता है।

मजतलाल—मेक्सिको में है। जनसंख्या २० हज़ार है। फुटकर सामान, कलें, मिट्टी, लोहे, तांबे और पीतल के बर्तन, सूखे सामान आदि बाहर से आते हैं। चांदी, ब्राज़ील या लीमा लकड़ी, तम्बाकू, मटर और टमाटर बाहर भेजा जाता है।

माइके—ओमूता (जापान) में है। यहां जहाज़ कोयला पानी के लिये ठहरते हैं। चावल, चीनी, कपास और खाद आदि सामान बाहर से आता है और कोयला, जला कोयला, चारकोल, जस्ता, रसायनिक वस्तुयें आदि विदेश भेजी जाती हैं।

मुरोरन—(होकैडो) जापान में है। जनसंख्या लगभग १० हज़ार है। कच्चा लोहा, रेलवे का सामान, लोहे के डले, निकेल और कलमें बाहर से आती हैं। कोयला, मकान बनाने की लकड़ी और गन्धक आदि बिदेश जाता है।

मेरीबरो—क्वीन्सलैण्ड में मेरी नदी के तट पर है। जनसंख्या १५ हज़ार है। साधारण व्यापारिक सामान, लोहा कलें आदि सामान विदेश से आता है और चीनी, फल, कोयला और लकड़ी आदि सामान बाहर भेजा जाता है।

मेजी लोन्स—चिली में है। कोयला और रेलवे का सामान विदेश से आता है। शोरा, तांबा, टीन और आंजन आदि विदेश भेजा जाता है।

मैके—क्वीन्सलैंड में पाइनियर नदी पर है और जनसंख्या ६ हज़ार है। यह ईख की उपज का केन्द्र है।

मोजी—जापान में है। जनसंख्या ६०,५०० है। कपास, सेम, खली, चीनी, चावल, कोयला, कच्चा लोहा, लोहा और फौलाद के सामान, मटर, गेहूँ, आटा, धातु सम्बन्धी तेल, लुब्दी, रेलवे-सामग्री और कलें बाहर से मंगाई जाती हैं। चीनी, सूती कपड़ा, कोयला, सिमेंट, शीशे का सामान, फुटकर सामान, लोहे और फौलाद का बना सामान, जहाज़ का सामान, धातु सम्बन्धी तेल, शराब, रसायनिक वस्तुयें और कागज़ बाहर भेजा जाता है। यह जापान का सबसे बड़ा जहाज़ों के कोयला पानी लेने का स्थान है।

मोकपो—कोरिया के दक्षिणी पश्चिमी कोण पर स्थित है। रुई का कपड़ा, सूती मिलों का तयार कपड़ा, गेहूँ का आटा, चीनी, लकड़ी और कोयला बाहर से आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपास, चावल और समुद्र की सेवार घास बाहर भेजी जाती है।

याकोहामा—जापान में है। जनसंख्या ४ लाख २३ हज़ार है। सूखे सामान, कलें, भूमि उपजाऊ बनाने की सामग्री, धातु, धातु के बने सामान, चीनी मिट्टी का तेल आदि विदेश से आता है और रेशम, चाय, पटसन, कोयला, तांबा तथा चीनी मिट्टी के सामान बाहर जाते हैं। यह जापान का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। भूचाल से यह नष्ट हो गया था परन्तु फिर उससे भी अधिक अच्छा बना दिया गया है। यहां पर बड़े से बड़े और अधिक से अधिक जहाज़ों के रुकने का स्थान है।

यूनियन बे—(कोमोक्स) वैंकूवर द्वीप, कनाडा में है। जनसंख्या १० हज़ार है। इस बन्दरगाह से मकान बनाने की लकड़ी और कोयला बाहर भेजा जाता है।

यूनसेन—कोरिया में हैं। जनसंख्या २७ हज़ार है। सूती कपड़ा बाहर से आता है और सोयाबीन, चावल, मछली, पशु, चमड़ा आदि बाहर भेजे जाते हैं।

राक हैम्पटन—क्वीन्सलैंड में केपेल खाड़ी पर स्थित है। जनसंख्या लगभग २१ हज़ार है। साधारण व्यापार की वस्तुयें बाहर से आती हैं और ऊन, सोना, तांबा, चमड़ा, चर्बी, मांस, घोड़े और पशु आदि बाहर भेजे जाते हैं।

रायल रोड्स—ज्वान डे फूका जलसंयोजक कनाडा में विक्टोरिया और एस्क्वीमाल्ट बन्दरगाह के ठीक बाहर है। यहां पर जहाज़ों के ठहरने के लिये अच्छा स्थान है। परन्तु शीतकाल में तूफ़ान के कारण यहां जहाज़ नहीं ठहरते हैं।

रेडोंडोबीच—कैलीफोर्निया में है और लास ऐञ्जलीस से १६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। काठकबाड़ और साधारण व्यापार की वस्तुयें बाहर से मंगाई जाती हैं। फल तथा और दूसरी देशी वस्तुयें विदेश भेजी जाती हैं।

लगूना डो टर्मिनस—अब स्यूदाद डेल जर्मन कहलाता है। मेक्सिको में है। जनसंख्या ८२०० है। सूती सामान, दूसरे सामान, शराब, मक्का, कोयला, देवदारु की लकड़ी, फर्श और छत के खपड़े आदि विदेश से आते हैं और लट्ठे, देवदारु, चमड़ा मृगछाला, घड़ियाल का चमड़ा तुन, भारतीय रबर, नारियल, खोपरा और रेलवे का सामान विदेश भेजा जाता है।

ला यूनियन—सन सल्वाडोर में है। जनसंख्या ५ हज़ार है। सूती, ऊनी और रेशमी सामान, शराब, लोहे और पीतल के सामान विदेश से आते हैं। नील, चमड़ा, तम्बाकू, सोना, चांदी, क़हवा, चावल और मक्का आदि बाहर भेजे जाते हैं।

लान्सेस्टन—टस्मेनिया में है। जनसंख्या ३० हज़ार है। कारखाने का बना सामान, चाय, चीनी, मदिरा और कोयला आदि आयात होता है। ऊन, जैतून, मटर, भूसा, सोना, चांदी, टीन, मकान बनाने की लकड़ी, सीसा, तांबा, कड़ी लकड़ी, आलू, फल और छाल विदेशों को भेजे जाते हैं।

लिविंग्स्टन—ग्वाटेमाला में है। जनसंख्या ६ हज़ार है। साधारण व्यापारिक सामान बाहर से मंगाया जाता है और केला, कहवा, चमड़ा, तुन आदि सामान विदेश भेजा जाता है।

लोबोस डे अफ्वेरा द्वीप समूह—पीरू में है। यहाँ से ग्वानो बाहर भेजा जाता है।

लास अंजलीस हार्बर—कैलीफोर्निया में है। जनसंख्या लगभग ६ लाख है। काठकबाड़ और व्यापारिक वस्तुएँ विदेश से मंगाई जाती हैं जलाने की लकड़ी, साफ किया हुआ तेल और फल विदेश को जाता है।

लोटा—चिली का एक बन्दरगाह है।

वकमयत्सू—जापान में मोजी से ११ मील पश्चिम में है। कच्ची धातु, लोहा, कोयला, चावल आदि बाहर से आता है। कोयला और फौलाद बाहर भेजा जाता है।

वाल्डीविया—चिली में है। यहाँ कृषि की कलें, सीमेंट, लोहा, लकड़ी और साधारण दूसरी व्यापारिक वस्तुएँ बाहर से आती हैं। चमड़ा, गेहूँ, चमड़ा बनाने की छाल, ऊन, मकान बनाने की लकड़ी, जूते बनाने का चमड़ा, ह्वेल का तेल, ज़ैतून और जौ आदि सामान निर्यात होते हैं।

वालपरेज़ो—चिली में है। ज० सं० २ लाख २० हज़ार है। कारखानों का बना हुआ सामान, कलें, लोहा, कोयला, काठकबाड़, पिट्रौल आदि विदेश से मँगाये जाते हैं। गेहूँ, आटा, चमड़ा, ऊन और चर्बी विदेश भेजे जाते हैं।

ब्लाडीवास्टक—साइबेरिया के पूर्वी तट पर है। ज० सं० २ लाख है। यह पूर्वी साइबेरिया का प्रधान बन्दरगाह है। यहाँ से साइबेरिया का सामान बाहर जाता है। कारखाने का बना सामान, कलें, कपड़ा, भोजन-सामग्री और रेलवे का सामान बाहर से आता है। सोयाबीन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका तेल, खली, मकान बनाने की लकड़ी और मछली बाहर जाती है।

वाँगानुई—न्यूज़ीलैण्ड में है। साधारण व्यापारिक वस्तुएँ बाहर से आती हैं। जमा मांस, चर्बी, चमड़ा, ऊन, मकान बनाने की लकड़ी और डेरी का सामान बाहर जाता है।

विक्टोरिया—ब्रिटिश कोलम्बिया में है। ज० सं० ५० हज़ार से ऊपर है। लोहा, फौलाद, नमक, टीन की चद्दरें और अन्य प्रकार के साधारण सामान विदेश से आते हैं। सोना, ताँबा, कोयला, चांदी, सीसा, जस्ता काठकबाड़, स्पार, सालमन, सील मछली का चमड़ा, फर और तेल आदि विदेश भेजा जाता है।

विक्टोरिया हार्वर—लाब्वान में (उ० अ० ५°१६ पू० दे० ११५° १५') है। ज० सं० ८४११ है। चावल, कोयला और फुटकर सामान बाहर से आता है और कोयला बाहर जाता है।

वी० है वी०—चीन में है। चीन ने इंगलैण्ड को पट्टे पर दिया है। ज० सं० १५५००० है। सूती सामान और दूसरे सामान, कोयला, मिट्टी का तेल, आटा, चीनी, लकड़ी और नमक बाहर से आता है। मूँगफली और नमकीन मछली बाहर भेजे जाते हैं।

वूहू—चीन में यांगटिसी नदी पर है। ज० सं० १ लाख २० हज़ार है। सूती कपड़े, चीनी और मिट्टी का तेल बाहर से आता है। चावल, गेहूँ, रेशम, चिड़ियों के पंख, सेम आदि बाहर भेजे जाते हैं। यहाँ पर धान उबाल कर चावल तयार करने और आटा पीसने के कारखाने हैं।

वेलिंग्टन—न्यूज़ीलैण्ड में है। ज० सं० १,०७,४२८ है। लकड़ी, कोयला और साधारण प्रयोग की वस्तुएँ आयात होती हैं। साधारण वस्तुएँ, लकड़ी, चर्बी, नाज, मांस, ऊन, खाल, पटसन, मक्खन और पनीर आदि निर्यात किये जाते हैं।

वेस्ट पोर्ट—न्यूज़ीलैण्ड में है। मामूली सामान बाहर से आता है और कोयला यहां से विदेश को जहाज़ों द्वारा भेजा जाता है।

वेंकूवर—ब्रिटिश कोलम्बिया में है। ज० सं० लगभग ढाई लाख है। टीन की चद्दर, वर्तन, लोहा, फौलाद, गुड़, नमक, पटसन आदि सामान विदेश से मंगाया जाते हैं। गेहूँ, काठकबाड़, आटा, मछली, नमकीन मछली, कागज़, लुब्दी, ताज़े फल, सीसा, जस्ता, तांबा और कोयला बाहर भेजा जाता है। यहाँ पर बड़े बड़े जहाज ठहर सकते हैं।

वोन्सन—कोरिया में है। यून सन देखिये।

शंघाई—चीन का बड़ा प्रसिद्ध बन्दरगाह है। जनसंख्या लगभग १७ लाख है। सूती तथा ऊनी कपड़ा, धातुयें, मिट्टी का तेल, चीनी, सिगरेट आदि सामान विदेशों से मंगाया जाता है। चाय, रेशम, रुई, तेल, ऊन, खनिज पदार्थ और चमड़ा बाहर भेजा जाता है। यह वाँगपू नदी का बन्दरगाह है और ९ मील लम्बा है। इस बड़े बन्दरगाह में जहाज़ों को प्रत्येक भांति की सुविधायें प्राप्त हैं। पहले यहां ब्रिटेन का अधिकार था परन्तु अब जापानियों ने अधिकार जमा लिया है।

शिमोनोसेकी—जापान का बन्दरगाह है। जनसंख्या लगभग ८१ हज़ार है। कलें, गेहूँ, सेम, अंडा, गुड़, कपास, लोहा, मिट्टी का तेल और रेलवे का सामान बाहर से आता है। कोयला, सूती कपड़ा, चीनी, सिमेंट और लकड़ी के तख्ते विदेशों को भेजे जाते हैं।

शिमीड्ज़ू—जापान का बन्दरगाह है। जनसंख्या लगभग ९ हज़ार है। खली, नमक, सेम, टीन की चद्दरें आदि सामान बाहर से आता है। चाय, संतरा, मिट्टी का तेल, रेशमी कपड़ा आदि बाहर भेजा जाता है।

सबँग—सुमात्रा द्वीप में है। जहाज़ों के कोयला लेने का स्थान, व्यापारिक सामान के परिवर्तनार्थ बन्दरगाह है। चाय, रबर, लाल मिर्च आदि यहाँ से निर्यात होते हैं।

समरङ्ग—जावा में है। ज० सं० १ लाख १२ हजार है। चावल, फुटकर सामान, लोहे के बर्तन आदि बाहर से आते हैं। चीन, तम्बाकू, कहवा, कोको, चावल, चमड़ा, टैपिओका, कपोक आदि विदेश भेजे जाते हैं।

सरावक—बोर्निओ का बन्दरगाह है। ज० सं० ६ लाख है। कपड़ा, पीतल के बर्तन, नमक, अफीम, तम्बाकू, चावल, शराब, स्पिरिट, चाय, लोहे के बर्तन, सीमेंट, कहाव, आटा, चीनी, कलें और मिट्टी का तेल आदि सामान बाहर से यहाँ आता है। लकड़ी, चिड़ियों के पिंजड़े, मोम, लाल मिर्च, बेंत, कपूर, मछली, सागूदाने का आटा, सोना, गटा पार्चा, मिट्टी का तेल, कच्चा और जलाने का तेल, कोयला, मछली, भारतीय रबर, गरी का तेल और जंगली सामान विदेशों से यहाँ आता है।

ससेबो या ससेहो—जापान में है। यह नागासाकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समीप एक जल सेना तथा स्थल सेना का केन्द्र है। यहाँ पर समुद्री सेना के जहाज़ों के लिये घाट बने हुये हैं।

सालिंजकूज़—मैक्सिको में है। ज० सं० ६५२५ है। युवेट्रो मैक्सिको से सामान आता है। रँगी लकड़ी, क़हवा, सनपाट, चमड़ा आदि सामान बाहर भेजा जाता है।

स्वाटोव—चीन का बन्दरगाह है। जनसंख्या ७० हज़ार है। मिट्टी का तेल, फुटकर सामान, सेम की खली मटर, सेम, नाज आदि सामान बाहर से यहाँ आता है और चीनी, कागज़, चाय, तम्बाकू, घास के कपड़े तथा दूसरे सामान, मिट्टी के बर्तन, फल और चीनी सामान विदेशों को भेजा जाता है।

सियाटल—प्यूगेट खाड़ी, वाशिंगटन संयुक्त राष्ट्र अमरीका में है। जनसंख्या ३ लाख १६ हज़ार है। सोयाबीन का तेल, गरी का तेल, खोपरा, चावल, चावल का आटा, कच्चा रबर, मसाला, पटसन, टीन, मटर, सेम, चाय, तांबा, बोरे, कच्चा रेशम, गोंद, मछली और मछली का बना सामान बाहर से यहां आता है। सालमन मछली, कन्डेस्ट (फटा हुआ दूध) कपास, सूती कपड़ा, फल, लाल मिर्च, चमड़ा, लकड़ी (काठकबाड़) मांस का बना सामान, कलें, टीन के बर्तन, गेहूँ का आटा, लोहा और फौलाद विदेश को भेजा जाता है। यह प्रशान्त महासागर का एक बड़ा ही सुरक्षित बन्दरगाह है। इस बन्दरगाह पर संसार के बड़े से बड़े जहाज़ खड़े हो सकते हैं।

सिंगापुर—स्ट्रेट सेटेलमेंट में है। जनसंख्या लगभग ६ लाख है। आयात साधारण प्रयोग की वस्तुयें हैं। गम्बीर, खोपरा, टीन, रबर, चमड़ा, सागूदाना, टैपीओक, सफेद और काली मिर्च, कछुए की खोपड़ी, सीप, घोंघा, शंख, गटापारचा, कपूर, गोंद, कहवा, जाल बनाने की रस्सी तथा और दूसरी वस्तुयें जो पूर्वी द्वीप समूह में होती हैं यहां से दूसरे देशों को भेजी जाती हैं। यह बन्दरगाह ब्रिटेन के अधिकार में हैं। यहां पर एक बड़ा जहाज़ी अड्डा बनाया गया है। यह जहाज़ी और हवाई अड्डा है। यहाँ पर ब्रिटिश जल तथा स्थल सेना रहती है। यह भारतवर्ष का पूर्वी द्वार है। यहां सदैव भारतीय सेना रहती है। ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्वी देशों की रक्षा के लिये यहीं सेना रहती है। इस बन्दरगाह पर संसार के सभी भागों से जहाज़ आते हैं। यह जहाज़ी मार्गों के चौरास्ते पर स्थित है। बन्दरगाह पर प्रत्येक भांति के बड़े से बड़े जहाज़ खड़े हो सकते हैं।

सूवा—फिजी द्वीप समूह में एक बन्दरगाह है। बन्दरगाह में जहाज़ों के ठहरने के लिये सुगम स्थान है।

सेबू—फिलीपाइन द्वीपसमूह में है। ज० सं० ६० हज़ार है। कोयला और पटसन बाहर भेजा जाता है।

सेताऐन—मैक्सिको में है। यह बन्दरगाह बड़ा भयानक है। सितम्बर से मई तक बन्दरगाह की दशा अच्छी रहती है।

सेंट रोमालिया—केलिफोर्निया की खाड़ी, मैक्सिको में है। ज० सं० लगभग ८ हज़ार है। साधारण व्यापारिक वस्तुएँ बाहर से मँगाई जाती हैं। तांबा बाहर भेजा जाता है।

सेंडेकन—ब्रिटिश उत्तरी बोरनिओ। ज० सं० १२७४१ है। चावल, मिट्टी का तेल, कपड़ा, तम्बाकू, लोहे के बर्तन, शराब, चीनी, तेल और कलें आयात होती हैं। लकड़ी, कांच, रबर, कोयला, तम्बाकू, खोपरा, नमकीन मछली, चिड़ियों के पिंजड़े, सुतली, गोंद तथा जंगल और समुद्र से प्राप्त सामग्री निर्यात की जाती है।

सैगोन—कोचीन, चीन में है। ज० सं० लगभग २ लाख है। मैनचेस्टर का बना सामान, कोयला, शराब, सिगरेट और पीतल तथा लोहे के बर्तन आदि आयात होते हैं। चावल, चमड़ा, लाल मिर्च, रुई, मछली, मक्का, रबर, गटा पार्चा, रेशम, सागौन और गोंद आदि वस्तुएं बाहर भेजी जाती हैं।

सैनजोज़—ग्वाटेमाला में है। ज० सं० ३ हज़ार है। नमकीन मछली, मांस, लकड़ी, चमड़ा और कलें बाहर से मंगाई जाती हैं। चीनी, तम्बाकू, कहवा, फल और सीरा विदेशों को भेजा जाता है।

सैनडीगी—केलीफोर्निया में है। ज० सं० १ लाख है कोयला, फौलादी पटरियां, प्रेस का सामान, सीमेंट, कच्चा लोहा आदि सामान बाहर से आयात होता है। जौ, गेहूँ, ऊन, चमड़ा, शहद, फल, आटा, रुई, कृषि के सामान, कारखानों के कल-पुर्जे, बाईसिकिल, लकड़ी की लुब्दी, साबुन की बुकनी, मांस, मछली और सूखे फल आदि सामान निर्यात किये जाते हैं।

सैनफ्रांसिस्को—संयुक्तराष्ट्र अमरीका के पश्चिमी तट पर है। ज० सं० ६ लाख ३५ हज़ार है। कोयला, चीनी, चावल, कपास और रुई, फल, कहवा, मसाला, काठकबाड़ और सामान तैयार करने के लिये धातुएँ बाहर से मँगाई जाती हैं। सोना, चाँदी, तांबा, लोहा और फौलादी सामान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच्चा तेल, पिट्रौल का बना सामान, ऊन, भोजन के लिये नाज, जौ, गेहूँ, आटा, चमड़ा, चर्बी, सूखे फल, मछली, साग वाले फल, लुब्दी आदि सामान विदेशों से निर्यात होते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका के पश्चिमी तट का सब से बड़ा बन्दरगाह है। यह प्रशान्त महासागर के तट पर है। यहाँ पर बड़े से बड़े जहाज लंगर डाल सकते हैं।

सौरबाया—जावा का बन्दरगाह है। जनसंख्या १ लाख ५० हज़ार है। कनवस, छींट, शीशे के सामान, कपड़ा, कलें, फुटकर सामान, कागज़, लोहा, पिट्रौल, मोमबत्ती, गन्धक आदि आयात होतो हैं। चोनी, चावल, कपोक, कहवा, चमड़ा, तम्बाकू, लकड़ी, चाय, रबर और खोपरा बाहर भेजा जाता है।

हाकोडेट—जापान में है। जनसंख्या १,४०,२७० है। मिट्टी का तेल बाहर से आता है और सेवार घास (कोम्बू) सूखी मछली, कटिल, काड, सालमन, शार्क, फिन आदि मछलियां तथा दूसरे समुद्री सामान और शराब बाहर भेजी जाती है।

हानकौव—चीन में है। जनसंख्या १३ लाख २० हज़ार है। फुटकर सामान, दियासलाई, मिट्टी का तेल, चन्दन, औषधि, कटिल मछली, चीनी, सिमेंट, नील, रंग, सुइयां, कलें और लकड़ी बाहर से आती है। चाय, लकड़ी, तेल, कच्चा रेशम, कपास, तम्बाकू, चर्बी, वार्निश, कोयला, खली, जला कोयला, चारकोल, पटसन, अफीम, चमड़ा, सेम, ऊन, जूट, कच्चा लोहा, भेड़-बकरियां आदि और बहुत से दूसरे सामान बाहर भेजे जाते हैं।

हांगकांग—चीन में ब्रिटेन के अधिकार में है? संसार के बड़े बन्दरगाहों में है। जनसंख्या लगभग ७ लाख है। कोयला, लोहा, गुड़, लोहे और पीतल के सामान, सूती तथा ऊनी सामान, शराब, पिट्रौल, गन्धक और रंगी हुई लकड़ी बाहर से आती है। चाय, चावल, कपूर, रेशम, चीनी, साबुन, सिमेंट और दूसरी चीनी वस्तुयें बाहर भेजी जाती हैं। जापानी आक्रमण ने इसको नष्ट कर दिया है।

हैफोंग—तोंक्विन में सोनक्वा नदी पर हानो का बन्दरगाह है।

होबार्ट—टस्मेनिया में है। जनसंख्या ३५ हज़ार है। कारखानों का बना सामान, औज़ार, कल पुर्जे, चमड़ा, चीनी, गेहूँ, टीन की चद्दरें, कोयला और स्टोर सामग्री बाहर से आती है। ऊन, नाज, लकड़ी, फल, मछली, धातु, नस्ता और दूसरे प्रकार के खनिज पदार्थ बाहर भेजे जाते हैं।

होंयहोव—चीन का बन्दरगाह है।

होनोलूलू—हवाई का एक भाग है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अधिकार में है। जनसंख्या लगभग १ लाख है। लोहे और फौलाद के सामान, रोटी का सामान, सूती सामग्री, मोटरें और कोयला बाहर से यहां आता है और चीनी, कहवा, चमड़ा, चावल, चर्बी, केला और नाशपाती बिदेश भेजे जाते हैं। जापान ने इस पर भी धावा बोल दिया है।

ह्वास्को—चिली में है। मिट्टी का तेल, खेती की कलें और तार बाहर से आता है। तांबा घास और जौ आदि सामग्री विदेश भेजी जाती है।

ह्वानीलो—चिली में कोबीजा से ६ मील की दूरी पर है।

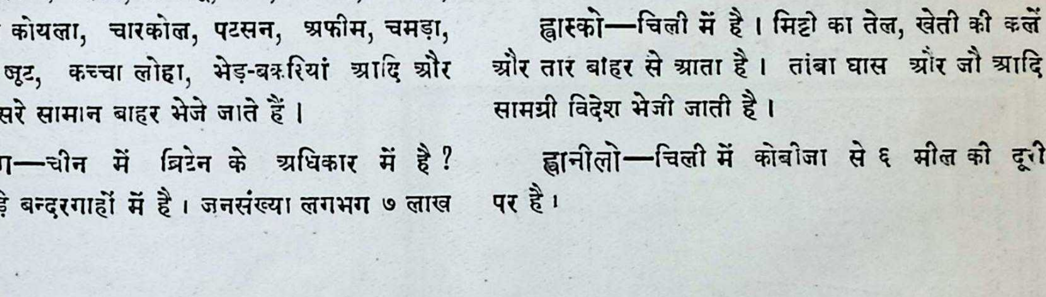

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

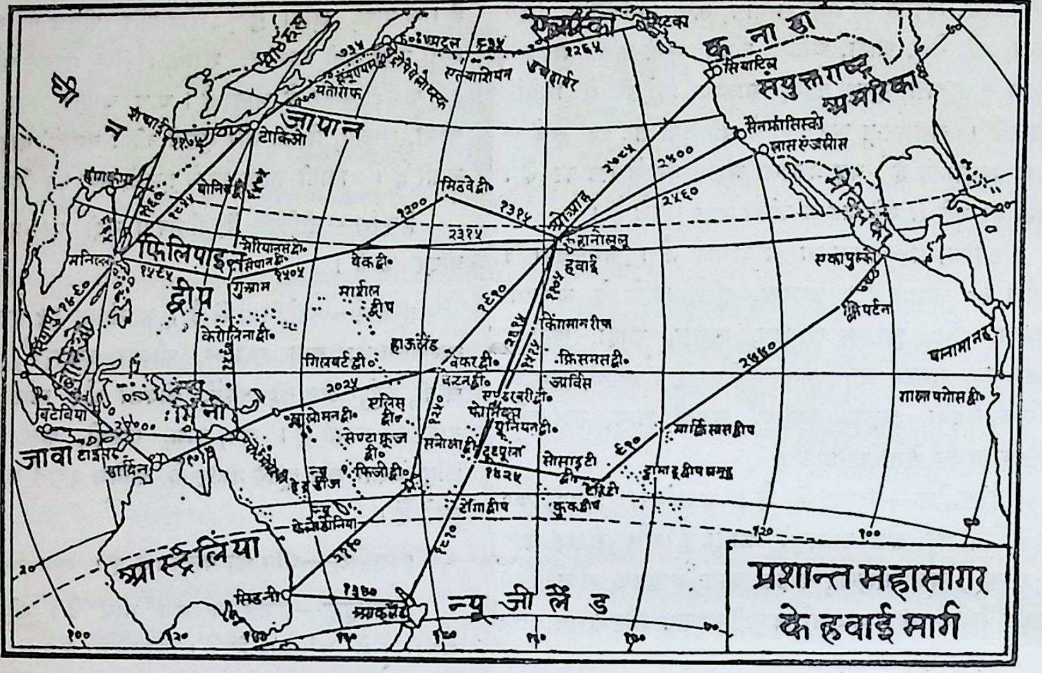

प्रशान्त महासागर के हवाई मार्ग

इंडोचीन और पूर्वी द्वीप समूह की उपज और विदेशी अधिकार

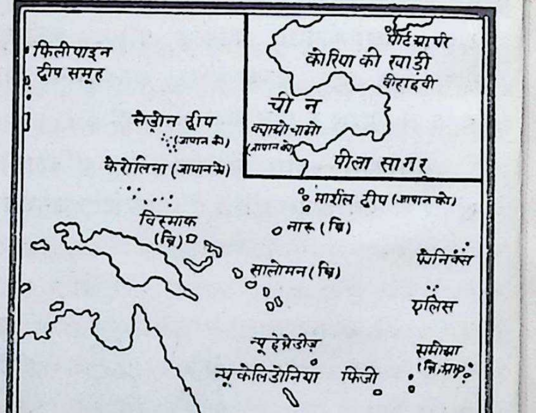

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] फाल्गुन, सं० १९९८, फरवरी, १९४२ ई० [अङ्क १०

रूसी-जर्मन युद्ध

वर्तमान रूसी-जर्मन युद्ध संसार के इतिहास में अपूर्व है। दोनों ओर की सेनायें जितनी लम्बी पंक्ति में इस बार फैली हुई हैं उतनी लम्बी (श्वेत सागर से काला सागर तक प्राय: २००० मील) पंक्ति में पहले कभी दो विरोधी सेनायें एक दूसरे के आमने सामने नहीं डटी थीं। जितनी अधिक संख्या (डेढ़ करोड़ से ऊपर) में सेनायें इस युद्ध क्षेत्र में एकत्रित हुईं उतनी अधिक संख्या में सेनायें पहले कभी एकत्रित नहीं हुई थीं। टैंकों, हवाई जहाजों और मोटर लारियों की संख्या तो अभूत पूर्व है ही दोनों दलों के आदर्श भी इतने स्पष्ट व्यापक और परस्पर विरोधी हैं कि इनमें जो विजयी हुआ उसका प्रभाव संसार के दूसरे देशों पर पड़े बिना नहीं रह सकता। इनमें जो हारा वह काफी समय तक दब जायगा। यह युद्ध उनके जीवन या मरण का निर्णय करेगा। इसी से दोनों देश अपने सर्वस्व की बाजी लगा कर अपना अस्तित्व कायम करने और दूसरे को नष्ट करने में भिड़े हुये हैं।

अब से एक वर्ष पहले किसी को अनुमान न था कि रूस और जर्मनी में ऐसा भीषण युद्ध इतनी शीघ्रता से छिड़ जायगा। जर्मन सैनिक गत (१९१४-१९१८) युद्ध में दो सीमाओं की एक साथ लड़ाई से इतने भयभीत हो गये कि इस बार उन्होंने एक समय में केवल एक सीमा पर युद्ध ठानने का निश्चय कर लिया। म्यूनिक संधि के अवसर पर फ्रान्स और ब्रिटेन ने रूस का जो बहिष्कार और तिरस्कार किया था उसे वहां के राजनीतिज्ञ एकदम नहीं भुला सकते थे। जर्मनी ने अपनी पूर्वी सीमा पर कुछ समय के लिये शान्ति रखने का समय स्वर्ण संयोग समझा। जर्मनी ने अपने चिर शत्रु रूस से इस प्रकार अचानक समझौता कर लिया कि संसार के प्राय: सभी देश स्तब्ध रह गये। कुछ लोग डरने लगे कि इस संधि से जर्मनी को इटली और जापान की मित्रता से हाथ धोना पड़ेगा लेकिन वास्तव में रूसी-जर्मन (क्षणिक) समझौता ब्रिटेन और फ्रान्स की राजनैतिक पराजय का सूचक था। इस समझौते के बाद जर्मनी ने पोलैंड पर हमला किया। जब पोलैंड की पराजय निश्चित हो गई तब रूस ने पूर्वी भाग पर अपना अधिकार जमा लिया। रूस और फिनलैंड के युद्ध में फ्रान्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ब्रिटेन की नीति खुल्लमखुल्ला रूस के विरुद्ध थी जब बसारेविया और बाल्टिक तट के राज्य साम्यवादी रूस के अंग बन गये तब तो लोग रूस को एक साम्राज्यवादी देश कहने लगे। वास्तव में यह सब कुछ रूस ने अपनी स्वाधीनता को स्थिर रखने के लिये किया। इससे वहां के राजनीतिज्ञों की सैनिक कुशलता और दूरदर्शिता प्रगट होती है। यदि जर्मनी का अचानक प्रहार रूस के इस तटस्थ प्रदेश पर न होकर प्रधान रूस पर हुआ होता तो रूस की हालत और भी अधिक शोचनीय हो जाती।

फ्रांस की विजय के बाद जर्मनी प्रायः सारे योरुप का स्वामी बन गया। ब्रिटेन पर जर्मनी का अधिकार तो न हो सका लेकिन फ्लैंडर्स की लड़ाई में ब्रिटेन का इतना फौजी सामान छिन गया कि ब्रिटेन में कुछ समय के लिये जर्मनो पर आक्रमण करने की शक्ति न रह गई। इस प्रकार जर्मनो की पश्चिमी सीमा काफी समय के लिये सुरक्षित रह गई। इस सीमा को सुरक्षित करके जर्मनी के सेना नायकों ने अपना पूरा बल पूर्वी सीमा को सुदृढ़ करने के लिये लगाया। पूर्व की ओर रूस ने आत्म रक्षा के लिये अपने पुराने (खोये हुये) प्रदेश वापिस लिये थे परन्तु रूस के ये कार्य जर्मनी को खटकने लगे। जर्मनी को सबसे अधिक भय रूस की विशाल और सुसंगठित सेना से था। यूक्रेन के अन्नागार और खनिज तथा काकेशस के तैल कूप जर्मनी के लिये कुछ कम आकर्षक न थे। क्षणिक समझौते को रूस ने इस आदर्श ढंग से निभाया कि रूस के राजनीतिज्ञों ने जर्मनी के विरोधी ब्रिटेन से व्यापारिक वार्तालाप भी न किया लेकिन जर्मनी ने रूस के विरुद्ध ब्रिटेन को अपनी ओर फोड़ने के लिये हिटलर के विश्वास पात्र सहयोगी हेस को ब्रिटेन भेजा। यूनान विजय के बाद जब जर्मन सेनायें अपार संख्या में रूसी सीमा के पास एकत्रित होने लगीं तो भी रूस को संधि पर विश्वास था। जिन लोगों ने इन अनावश्यक सेनाओं की ओर रूस का ध्यान आकर्षित किया उन्हें रूस ने उत्तर दिया कि जर्मनी इन सेनाओं को किसो दूसरे कार्य के लिये इकट्ठा करता होगा क्योंकि रूस अपनी संधि की शर्तों का अक्षरशः पालन कर रहा है।

१९४१ के २२ जून को प्रातःकाल सन्देह दूर हो गया। इस दिन जर्मनी ने बिना किसी प्रकार की चेतावनी दिये रूस की प्रायः २००० मील लम्बी सीमा पर एक साथ हवाई हमला कर दिया। जर्मनी को अनुमान था कि इस अचानक और विद्युत युद्ध से रूस पर भी शीघ्र ही जर्मनी का प्रभुत्व स्थापित हो जायगा। इसमें जर्मनी को सफलता न मिली। जर्मनी की वे सेनायें जो अब तक अजेय समझी जाती थीं रूस में अटक गईं। इस युद्ध का पहला धक्का उस प्रदेश (लैटविया, लिथुएनिया, एस्टोनिया, पूर्वी पोलैंड, बुकोविना और बसारेविया) पर पड़ा जिसे रूस ने हाल ही में मिलाया था। इन भागों में स्थित रूसी सेना का बुरा हाल हो गया। लेकिन बाहरी भाग की इस मुठभेड़ से प्रधान रूस में स्थित रूसी सेनाओं के संचालन का पूरा अवसर मिल गया। जिस अचानक आक्रमण से फ्रान्स के दो सप्ताह में पैर उखड़ गये उसी प्रकार के अचानक और उससे कहीं अधिक भीषण (क्योंकि जितनी सेना जर्मनी ने फ्रान्स विजय के लिये भेजी थी उससे कहीं अधिक सेना जर्मनी ने रूस की ओर लगा रक्खी थी। इधर फिनलैंड, इटली, हंगारी और रूमानिया की सेनायें भी जर्मनी का साथ दे रही थीं। ईसाई धर्म की रक्षा के नाम से सैनिक स्वयं सेवक तो और भी कई देशों से रूस पर चढ़ आये थे।) हमले का प्रथम असर रूस को नहीं के बराबर जान पड़ा।

जर्मन आक्रमण विकराल तूफान की तरह एक बार अपने शिखर पर पहुँच कर समाप्त नहीं हो गया। वह विशाल ज्वार भाटा के समान था। पहली लड़ाई की बाढ़ अपनी पूरी शक्ति लगाने और अपना निश्चित काम पूरा करने के बाद कुछ समय के लिये रुकी। इस प्रकार लोगों को भ्रम हो गया कि जर्मन बाढ़ सदा के लिये रुक गई लेकिन शक्ति संचित करने के बाद दूसरी बाढ़ और अधिक तेजी से आई। तीसरी बाढ़ इससे भी अधिक थी। आधुनिक युद्ध अधिक समय तक पूरे बल से लगातार नहीं चल सकता। टैंकों की जटिल मशीनरी को भीषण लड़ाई के बाद मरम्मत करने और सुधारने की आवश्यकता पड़ती है। यन्त्र संचालकों पर इतना ज़ोर पड़ता है कि वे कुछ समय आराम किये बिना सुचारु रूप से मशीनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का 'संचालन नहीं कर सकते। युद्ध सामग्री बड़ी अधिक मात्रा में खर्च होती है। उस युद्ध सामग्री और भोजन सामग्रों को फिर से पर्याप्त मात्रा में संचित होने के लिये समय की आवश्यकता होती है। इसी से रूसी-जर्मन युद्ध कभी उग्र और तीव्र वेग से और कभी शिथिल गति से चला। प्रायः २००० मील लम्बे रूसी युद्ध क्षेत्र के चार उपक्षेत्र थे। उत्तर की ओर ध्रुव प्रदेश के क्षेत्र का प्रधान नगर मरमन्स्क था। बाल्टिक प्रदेश का प्रधान लक्ष्य लेनिनग्रेड था। मध्यवर्ती क्षेत्र का प्रधान नगर मास्को था। दक्षिणी क्षेत्र का प्रधार नगर कीव था। इन चार क्षेत्रों में कभी किसी एक क्षेत्र में युद्ध अधिक उग्र रूप से छिड़ा तो किसी में शिथिल गति से चला। प्रथम जर्मन आक्रमण प्रायः एक महीने (२२ जून से १९ जुलाई) तक होता रहा। इस आक्रमण में जर्मन सेनायें बहुत आगे बढ़ आईं। लेकिन इस समय में उन्होंने अधिकतर उस प्रदेश पर अधिकार जमाया जिसे रूस ने हाल ही में मिलाया था। उत्तरी भाग में प्रसिद्ध प्रीपेट दलदलों के उत्तर में जर्मन सेनायें चिमटे के आकार म दो भिन्न दिशाओं में बढ़ीं। जर्मनी की उत्तरी सेना लिथुएनिया के कौनास नगर में घुस कर राएगा बन्दरगाह की ओर बढ़ी। दक्षिणी सेना ग्रोडनो और विलना के मार्ग से मिन्स्क के प्रसिद्ध रेलवे जङ्क्शन की ओर पहुँची। उत्तरी जर्मन सेना रायगा के आगे बढ़ती हुई लैटविया और एस्टोनिया के बड़े भाग को दबा कर वेलीकाया नदी के समीप पस्कोव और ओस्ट्रोव नगरों में जा ठहरी। जो जर्मन सेना मिन्स्क में पहुँची वह भी और आगे बढ़ी। घमासान लड़ाई में पोलोटस्क और विटेव्स्क नगरों को लेने के बाद यह जर्मन सेना बौब्रुइस्क और मोहिलेव नगरों की ओर बढ़ी।

मध्यवर्ती क्षेत्र में प्रीपेट और स्टर नदियों के पड़ोस में जर्मन सेना कुछ धीमी चाल से बढ़ी। फिर भी वह आगे बढ़ती ही रही। प्रीपेट दलदलों के दक्षिण में जर्मन सेना का तेजी के साथ आगे बढ़ना अधिक महत्व नहीं रखता था लेकिन दूसरी मंजिल की ओर छलांगने के लिये (सैनिक दृष्टि से) इस भाग पर अधिकार कर लेना आवश्यक था। ल्वाओ नगर को लेने में जर्मन सेना को भारी हानि उठानी पड़ी। ल्वाओ नगर लेने के बाद जर्मन सेना ने फिर दूसरा सैनिक चिमटा बनाना आरम्भ किया। जर्मन सेना का बांया पक्ष रेल-मार्ग से आगे बढ़ा और ज़ीटोमीर नगर छीन कर इस सेना ने रूसी रक्षक पंक्ति (डिफेन्स लाइन) में एक पच्चड़ भोंक दी। जर्मन सेना के दाहिने पक्ष ने सर्नौटी नगर पर अधिकार जमा लिया। रूसी सेना इन दो जर्मन पक्षों के बीच अपने आपको घिर जाने से बचाने के लिये पीछे हटना ही उचित समझा। इस प्रकार रूसी सेना प्रूथ नदी की रक्षक पंक्ति को छोड़ कर नीस्टर नदी पर आ डटी इससे बसारबिया का अधिकांश प्रदेश जो रूस ने हाल ही में रूमानिया से वापिस लिया था जर्मनी के हाथ चला गया।

इस एक महीने की लड़ाई में रूस का निजी प्रदेश बहुत कम छिना। इस अवधि में रूसी सेनाओं का संचालन होने लगा और वे अपने अपने नियत स्थानों पर पहुँच गईं। इसी एक महीने की लड़ाई के बाद जर्मन सेनायें विश्राम लेने और पुनः संगठन करने के लिये ठहर गईं। कुछ लोगों को भ्रम हो गया कि जर्मन सेनाओं को इतनी भारी क्षति उठानी पड़ी है कि वे आगे लगातार आक्रमण करने में असमर्थ हो गई हैं। पर बात ऐसी न थी। नये ढंग की जटिल मशीनों की मरम्मत करने और उन्हें तेल आदि देकर फिर से चालू करने के लिये विश्राम की आवश्यकता होती है। सिगनल (संकेत) देने वालों और रसद पहुँचाने वाले लोगों पर भी इस विद्युत युद्ध में ऐसा जोर पड़ता है कि उनके लिये भी विश्राम अनिवार्य हो जाता है। इस विश्राम से किसी प्रकार की सैनिक कमजोरी नहीं सिद्ध होती है। जर्मनी को लड़ाई में जो सफलता मिली उसका मुख्य श्रेय टैंकों और हवाई जहाजों का अनुपम सहयोग है। हवाई जहाज़ पहले इतनी ऊँचाई पर उड़ते कि दिखाई न पड़ते। फिर अचानक डुबकी लगा कर शत्रु सेना पर हमला करने के लिये इतना नीचे उतर आते कि उनकी ऊँचाई ज़मीन से पांच छः सौ गज़ से अधिक न होती। ऊपर से नीचे सीधी रेखा में उतरने के कारण उन पर गोली का निशान कम लगता था और वे शत्रु सेना पर बम्ब छोड़कर और मशीनगन लगा कर उसमें खलबली मचा देते थे। जहां आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली सेना में खलबली मची वहीं वे टैंकों को आगे बढ़ने का संकेत करते थे। इस विकराल लड़ाई में बहुत से हवाई जहाज बिगड़ जाते कुछ नष्ट हो जाते। इस प्रकार उनकी मरम्मत करने और नष्ट हवाई जहाज़ों की जगह नये हवाई जहाज़ों को नियत करने के लिये भी जर्मन सेनाओं को विश्राम की आवश्यकता पड़ती थी। लेकिन जहां बम्ब गिराने वाले जर्मन हवाई जहाज़ों का झुण्ड अधिक संख्या में इकट्ठा होता था वहां वह रूसी सेना में अपार नर संहार करता था। इस काम में जर्मन वायुयान दल का नेता वान रिक थोफन का नाम सचमुच हौआ बन गया था।

तकला माकन और गोबी के रेगिस्तान

यद्यपि तकलामाकन के मरुस्थल में तारिम नदी का प्रवाह है तो भी वहां बहुत कम मानव जाति निवास करती है। तारिम नदी के बेसिन में ईसा से हज़ारों वर्ष पूर्व मङ्गोल सभ्यता का उत्थान हुआ था। वहां पर बड़े बड़े उन्नतिशील नगर बसे थे। वह उस मङ्गोलियन सभ्यता का केन्द्र था जिससे चीनी लोगों की सभ्यता का विकास हुआ। यारकन्द और काशगर नदियां पामीर के ऊंचे पठार से निकल कर पूर्व की ओर पथरीले मैदान में बहती हुई तकलामाकन के रेगिस्तान में पहुँचती हैं। रेगिस्तान में पहुँच कर दोनों नदियों का सङ्गम हो जाता है इसके पश्चात् ये मिलकर एक हो जाती हैं। आगे मरुस्थल में यही मिश्रित नदी तारिम नदी के नाम से प्रसिद्ध है। दक्षिण की ओर से कोतान और केरिया की सहायक नदियां आती हैं। यह नदियां तारीम में गिरती हैं परन्तु साल में केवल ४० दिन तक इनका पानी तारीम नदी में जाता है। साल के शेष दिनों में या तो इन नदियों का पानी रेगिस्तान में समा जाता है या फिर वह उन झीलों में ही रुक जाता है जो इन नदियों के मार्ग में पड़ती हैं। इन नदियों के दक्षिण की ओर बालू की पहाड़ियों के सिवा और कुछ भी नहीं है। तकलामाकन रेगिस्तान में उत्तरी-पूर्वी हवा पूर्ण बेग के साथ चला करती है।

तकलामाकन के उत्तरी-पूर्वी कोण पर एक ऐसा भाग है जहां बालू हर समय हटती अथवा चलती रहती है। चीनी विद्वान इसे सिंगिंग सैंड (गाती हुई बालू) कहते हैं। इस भाग के बालू के कण मिट्टी से साफ रहते हैं और लगभग सभी बराबर रहते हैं। जब यह कण बालू की पहाड़ियों से नीचे की ओर सरकते हैं तो उनसे गाने की सुन्दर ध्वनि उत्पन्न होती है।

मार्को पोलो ने तेरहवीं सदी के मध्य में तकलामाकन रेगिस्तान को पार किया था। उस समय इस रेगिस्तान का नाम चीनी भाषा में लोप था। ऊंट के कारवां को इस मरुस्थल को पार करने में ३० दिन लगे थे। इस रेगिस्तान के सम्बन्ध में ६०० वर्ष पहले जो कुछ मार्को पोलो ने लिखा था वही आज भी सत्य है। इस रेगिस्तान की यात्रा बलुहे मैदान या उजाड़ पर्वतों की होती है। प्रत्येक दिन की यात्रा के अंत में ऐसा स्थान प्राप्त हो जाता है जहां पानी मिल सकता है। इन रुकने वाले स्थानों में से तीन या चार स्थानों का पानी नमकीन तथा तेज है। शेष मरहलों का पानी अच्छा और मीठा है। इस मरु प्रदेश के मार्गों में पशु अथवा पक्षी नहीं मिलते हैं।

मार्को पोलो ने अपने लेख में उन राक्षसों का भी वर्णन किया है जो यात्रियों को मार्ग में बुलाया करते हैं। लोगों का विश्वास था कि इस रेगिस्तान तथा गाते हुये बालू वाले रेगिस्तान में भूत-पिशाच आदि प्राणी रहा करते हैं। वह वायु के अन्दर भांति भांति के नाच गान किया करते हैं। वह ढोल मृदङ्ग और तालियां बजाया करते हैं।

रेगिस्तान के पूर्वी भाग में लोपनार की अद्भुत झील स्थित है। चीनी लोगों का विश्वास है कि उन के ह्वांगहू (पीली नदी) के निकलने का स्थान तारिम नदी है और उसे लोपनार झील ने निगल लिया है। इसके पश्चात् वह पृथ्वी के नीचे नीचे बहती हुई सिंग-सू-लाई। तारों का समुद्र झील में आकर निकली है। सिंगसूलाई झील तिब्बत के उत्तर-पूर्व में है और यहीं से ह्वांगहू नदी निकलती है। २०० साल के प्राचीन योरुपीय नकशों में यह झील तकलामाकन मरुस्थल के उत्तर-पूर्व में दिखाई गई है। उसी स्थान पर एक हजार वर्ष पहले के चीनी मानचित्रकारों ने झील का स्थान बनाया था। किसी भी योरुपीय ने इस झील को कभी नहीं देखा था। मार्को पोलो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने भी इस झील के दक्षिण हो कर यात्रा किया था और उसने इसका कुछ भी हाल अपनी पुस्तक में नहीं लिखा है। १८७७ ई० में प्रउहेवाल्स्की नामक रूसी खोज लगाने वाले ने पता लगाया कि तारीम नदी दक्षिण की ओर कराकोशून झील में जाकर गिरती है।

इसके पश्चात् भौगोलिक विद्वान और खोज लगाने वाले इसके विषय में तर्क वितर्क करते रहे। १९०१ ई० में स्वीडन यात्री डाक्टर स्वेनहेडिन ने इसका पूर्ण रूप से पता लगया। उसने खोज की कि लोपनार की अद्भुत झील सचमुच एक चलने वाली झील है और तारिम नदी १६०० वर्ष तक लगातार अपना मार्ग बदलने के बाद दक्षिण की ओर बहने लगी है। १९२८ ई० में डाक्टर स्वेन हेडिन ने फिर खोज की और बतलाया कि लोपनार की भ्रमण करने वाली झील फिर उत्तर की ओर अपने प्राचीन स्थान को जा रही है।

स्वेनहेडिन का कहना है कि चीन से रोम का प्राचीन रेशम मार्ग फिर से खोला जाय। इस झील का जो पानी लौट रहा है उससे रेगिस्तान की एक पट्टी घास तथा पौदों से हरी हो रही है। वहां पर झाऊ चिनार के वृक्ष घास के ऊपर बढ़ रहे हैं।

स्वेन हेडिन का कहना है कि लोपनार हिमकालीन उस बड़ी झील का बचा हुआ भाग है जो समस्त रेगिस्तान में फैली हुई थी। यह झील ऐसी रही होगी जिसकी तुलना भूमध्य सागर से की जा सकती है। इस बड़ी झील में उत्तर-पश्चिम और दक्षिण के विशाल पर्वतों के हिमानियों से पानी आता रहा होगा। जब बरफ का अंत हो गया तो नदियों एवापोरेशन (गर्मी और हवा से जो भाप बनती है) का सामना नहीं कर सकीं इस लिये उनका पानी सूख गया और बड़ी झील शुष्क हो कर एक बड़ा मरुस्थल बन गई।

तकलामाकन के उत्तर-पूर्व की ओर उससे भी बड़ा गोबी का रेगिस्तान है। चीनी लोग इसे शामो या हानहाई (सुखा समुद्र) कहते हैं। यह एक बड़ा पठार है जिसकी ऊंचाई समुद्र के धरातल से ३सौ फुट है। इस पीले बालू में कहीं कहीं घास मिलती है। गोबी के रेगिस्तान में कहीं कहीं पर प्राचीन झीलों के एक मात्र चिन्ह हैं।

गोबी के रेगिस्तान में कई एक उपजाऊ ओसिस (हरे भरे मैदान) पाए जाते हैं परन्तु वह कठिन शीत ऋतुओं के कारण सहारा के ओसिसों से बिल्कुल भिन्न हैं। इन्हीं स्थानों में वह फिरने वाली खतरनाक जाति रहती थी जिस से किसी समय में समस्त संसार को भयभीत बना दिया था। चँगेजखां और उसकी जाति वाले इसी गोबी के रेगिस्तान के निवासी थे। इसी रेगिस्तान के सीमावर्ती पर्वतों का कुबलई खां निवासी था जिसने चीन की विजय की थी।

जब स्वेनहेडन ने गोबी के रेगिस्तान को पार किया तो उसे वहां प्राचीन सभ्यता की बहुत सी वस्तुएं मिलीं। एक स्थान पर खोज करने वाले लोगों को प्राचीन चीनी राज घराने के सिक्के ७० तांबे और १०० लोहे की वस्तुयें और कुछ तीर के सिरे मिले। उसी के समीप पत्थरकाल के पत्थर के चाकू तथा कुल्हाड़ियां प्राप्त हुईं।

जब गोबी के रेगिस्तान में बालू के तूफान चलते हैं तो वहां के यात्री का जीवन संकटमय हो जाता है। सुन्दर पीली बालू खेमों के कपड़ों को प्रवेश करके भीतर की समस्त सामग्री को पीला बना देती है। पानी भी पीला मोटा शोर्वे की भांति हो जाता है। सहारा की भांति इस रेगिस्तान में ऊंट ही केवल सवारी का काम देता है। गांवों के रेगिस्तान में दो डील वाले उंट घूमा करते हैं। इन्हीं को पकड़ कर सवारी के काम लिये जाते हैं। गोबी के रेगिस्तान में मङ्गोल जाति बिखरी हुई बसी है। गोबी के रेगिस्तान में ऊंट इतना आवश्यक वस्तु है कि उसकी चोरी का अपराध वहां हत्या के अपराध से भी अधिक माना जाता है।

जहां कहीं भी नमकीन खारा पानी तथा चरागाह है वहां बारासिंघे, मृग, खरगोश, फाख्ता आदि पशु तथा पक्षियां रहते हैं। छोटे ओसिसों में ऊँटों का आक्रमण हुआ करता है और जैसे ही वहां छोटे पौदे पृथ्वी के ऊपर आते हैं वैसे ही ऊंट उन्हें चर लेते हैं।

रेगिस्तान के अधिकांश निवासी लकड़ी के ढाँचों पर चमड़े के खीमे बना कर रहते हैं। नदियों तथा सोतों के समीप मठ बने हैं। यह पत्थर अथवा कड़ी बनाई हुई मिट्टी के बने हैं। वहां लामा (बौद्ध साधु) अपने ऊंटों के साथ रहा करते हैं। वे अपनी आवश्यकताओं के लिये घूमने वाले गड़रियों तथा यात्रियों पर निर्भर करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन पश्चिमी युद्ध क्षेत्र

जर्मनी की युद्ध कौशल नीति यह है कि वह दो रण-क्षेत्र नहीं बनाना चाहता है। वह अपनी समस्त शक्ति एक ही स्थान पर पूर्ण रूप से लगाता है। जब वह हालैण्ड, बेल्जियम और फ्रांस को तबाह कर रहा था तो रूस के साथ एक संधि किये हुये था। जब यह तय किया गया कि रूस पर आक्रमण होना चाहिये तो उसने टर्की के साथ एक संधि किया। इस प्रकार उसने जर्मन सेना के दायें पक्ष की रक्षा की और ब्रिटिश सहायता रूस पहुँचने से रोक दिया। रूस और फ्रान्स दोनों देशों के युद्ध में जर्मनी ने अपनी समस्त भूमि तथा हवाई शक्ति लगा दी थी जिससे उसे सफलता प्राप्त हो सके। रूस के युद्ध में यह बात तो और भी सर्वथा सत्य है कि पश्चिम की ओर योरुप में जर्मनी का सामना करने वाला कोई भी नहीं है।

यह बात विचारणीय है कि जर्मनी ने सन् १९४१ ई० में ही क्यों रूस पर आक्रमण किया। यह बात जर्मनी ने विवश होकर ही किया है। जब ब्रिटिश सेना ने डंकिर्क खाली किया और फ्रान्स का पतन हुआ तो जर्मनी ने ब्रिटिश द्वीप समूह पर आक्रमण करने की पूर्ण तयारी किया। उस समय रूस की जर्मनी के साथ संधि तो थी फिर भी अपनी रक्षा और अधिक मजबूत बनाने के लिये जर्मनी ने अपनी पूर्वी सीमा पर १० लाख सेना लगा दी। १९५० ई० के ग्रीष्म काल में लफ्टवाफे (जर्मनी हवाई विभाग) में राएल एअर फोर्स (ब्रिटिश हवाई सेना) से अधिक विमान थे। इँगलैंड के दक्षिणी-पूर्वी तट और लन्दन पर जो आक्रमण हुये वह ब्रिटेन पर आक्रमण होने के चिन्ह मात्र थे। ब्रिटिश हवाई सैनिक अपने संगठन, वीरता और अच्छे विमानों के कारण आक्रमण रोकने में सफल हुये। यद्यपि इङ्गलैंड पर दिन रात बराबर आक्रमण होते रहे तो भी जर्मन लोग समय के भीतर आक्रमण करने के लिये सेना तथा सामान का संगठन न कर सके। ब्रिटिश विमान शत्रु के चैनल पर के बन्दरगाहों पर लगातार आक्रमण करते रहे और साथ ही साथ जर्मन सेना का संगठन भी न हुआ। इसी कारण इङ्गलैंड पर आक्रमण रुक गया।

उसके बाद शीतकाल में भी जर्मनी अपनी तयारी करता रहा। उसने ब्रिटेन के युद्ध को बिजय करने की बात नहीं छोड़ी और अपनी सेना को जहाजों पर चढ़ने उतरने आदि की शिक्षा देता रहा। उसने अपने हवाई अड्डों को बढ़ाया, आक्रमणकारी जहाजों की संख्या बढ़ाई, नये हवाई स्टेशन बनाये और अधिक से अधिक सेना पश्चिम की ओर भेजता रहा। बसंत काल में जर्मनी ने ब्रिटेन पर आक्रमण करने का पुनः प्रयत्न किया परन्तु ब्रिटिश हवाई शक्ति बढ़ जाने, उसका आक्रमण होने तथा रायल नैवी (जल सेना) की समस्त सागर पर अच्छी चौकीदारी के कारण जर्मनी को फिर अपनी योजना बदलनी पड़ी।

एक एक करके जर्मनी का उत्तर

उपरोक्त बातों को ध्यान देते हुये जर्मनी बाल्कन की ओर रूस पर आक्रमण करने को पहले झुका। जिससे बाल्कन की ओर भी अपनी रक्षा का प्रबन्ध ठीक कर ले। उसके बाद २२ जून को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया। तीन महीने तक जर्मनी ने अपनी समस्त जर्मन शक्ति के साथ रूस में युद्ध किया और सोवियट सेना ने डट कर उसका सामना किया। रूसी सेना को परास्त करके जर्मनी वहां की खनिज सम्पत्ति, कारखानों और काकेशिया प्रदेश के तेल के कुओं पर अधिकार प्राप्त करने का इच्छुक था। रूस की सामग्री से अपना भंडार बढ़ा कर वह पुनः पश्चिम की ओर घूमने का विचार कर रहा है। रूस पर विजय प्राप्त कर लेने पर ही जर्मनी अपनी समस्त शक्ति के साथ ब्रिटिश द्वीप समूह पर आक्रमण करने में सफल होगा। यही जर्मनी की योजना है। इसके लिये ब्रिटेन का उत्तर क्या है।

यह बात साफ है कि आज ब्रिटेन तथा जर्मनी के युद्ध के बीच में रूस है। रूस की दशा सितम्बर १९४१ में बड़ी शोचनीय थी। अमरीकन सहायता से सम्भव है कि कुछ समय में इङ्गलैंड जर्मनी को परास्त करने में सफल हो परन्तु यदि रूस का पतन हो जाता है तो फिर ब्रिटिश विजय होनी कठिन है। रूस, ब्रिटिश साम्राज्य और अमरीका मिलकर नाज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरुप को परास्त कर सकते हैं। परन्तु यदि रूस पर नाज़ी अधिकार होता है तो फिर नाज़ी योरुप को परास्त करना ब्रिटेन और अमरीका के लिये बहुत ही कठिन है। यह बात भी ध्यान देने की है कि रूस के पतन का स्वीडन, टर्की, स्पेन और विची फ्रान्स पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। जापान पर तो इसका बड़ा भारी प्रभाव होगा। इसीलिये रूस को ब्रिटिश सहायता की बड़ी आवश्यकता है।

जर्मनी दो सीमाओं पर युद्ध नहीं लड़ना चाहता इसलिये ब्रिटेन को चाहिये कि वह शीघ्रातिशीघ्र दो सीमाओं पर युद्ध जारी कर दें। एक विचार से दो सीमायें वर्तमान हैं और वह पूर्वी तथा हवाई सीमायें हैं।

सितम्बर १९४१ ई० में ब्रिटिश तथा रूसी विमानों ने बर्लिन पर धावा मारा था। योरुप के जर्मन अधिकृत देशों पर ब्रिटिश विमान बम्ब वर्षा करते रहे।

योरुप के आक्रमणकारी अड्डों, जहाज़ी अड्डों, तटीय आने जाने वाले जहाज़ों, हवाई मैदानों और अड्डों, रेलवे तथा दूसरे आने जाने वाले मार्गों पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण करके जर्मनी को अधिक से अधिक हानि पहुँचाई है।

कील, ब्रीमेन, हैम्बर्ग, चेरबर्ग, ब्रेस्ट तथा और भी बहुत से दूसरे बन्दरगाहों पर ब्रिटिश विमानों का आक्रमण रात और दिन में हुआ। इन आक्रमणों के कारण शत्रु के संगठन, सामग्री, सेना, जहाज़ों, विमानों, मार्गों और कारखानों को बड़ी हानि हुई। साथ ही साथ जनता पर भी काफी प्रभाव पड़ा।

राटर्डम, फ्लशिंग, ऐंटवर्प, ज़ीबर्ग, आस्टेंड, डंकिर्क, कैलै, बोलोन, ले हार्वे, डीपे, सेंट मालो और बहुत से दूसरे छोटे छोटे योरुपीय बन्दरगाहों पर ब्रिटेन पर आक्रमण करने के लिये सामान एकत्रित किया जा रहा था, सामग्री तयार की जा रही थी तथा सेना का संगठन हो रहा था जिससे आक्रमण के दिन एकाएक भीषण आक्रमण हो जावे परन्तु ब्रिटिश विमानों की बम वर्षा के कारण उनका काम पूरा नहीं हो सका। इस प्रकार इङ्गलैंड ने रूस की सहायता किया। क्या इससे और अधिक सहायता रूस की ब्रिटेन नहीं कर सकता है जिससे संसार का हित हो।

जब कि जर्मनी अपनी समस्त शक्ति के साथ पूर्व की ओर बहादुर रूसी सेना के साथ भिड़ा है तो योरुप पर ब्रिटिश आक्रमण होना बहुत सम्भव तथा लाभदायक है यदि युद्ध-नीति की कला कौशल द्वारा यह बात सम्भव हो सके।

अटलांटिक का युद्ध, लिबिया से जर्मन सेना को निकाल बाहर करना, ईरान में युद्ध का जारी करना या उस पर अधिकार करना, (यह हो चुका है) या इटली पर आक्रमण करना आदि सभी बातें विचारने योग्य हैं। इन सभी बातों को कसौटी में कस कर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। यदि यह बात युद्ध कौशल नीति के अनुसार ठीक मान ली जाय तो फिर योरुप पर आक्रमण करना इङ्गलैंड के लिये सर्वथा लाभदायक है।

इङ्गलैंड योरुप पर हालैंड, डेनमार्क और ब्रिटेनी (फ्रान्स का उत्तरी पश्चिमी तटीय प्रान्त) पर हो सकता है। डेनमार्क पर आक्रमण होने से बाल्टिक सागर ब्रिटिश जहाज़ों के लिये खुल जावेगा। नार्वे जर्मनी से अलग हो जावेगा और इस प्रकार उत्तर की ओर जर्मनी के लिये रण स्थल तयार हो जावेगा। परन्तु बाल्टिक सागर तथा नार्वे में अच्छे जहाज़ी अड्डे नहीं हैं और नार्वे इङ्गलैंड से दूर है। नार्वें की अपेक्षा हालैंड समीप है इसलिये वहाँ सामान, भोजन-सामग्री तथा सेना शीघ्रातिशीघ्र पहुँच सकती हैं। हालैंड में (राटर्डम, फ्लशिंग) आदि अच्छे बन्दरगाह हैं। स्चिपोल, वाल्हेविन, इल्थोवेन आदि सुन्दर हवाई अड्डे हैं और सुन्दर जल मार्ग हैं जिनसे जहाजों द्वारा सेना उतारी जा सकती है। डच लोग बहादुर तथा विश्वसनीय नागरिक हैं। संगठन करने पर उनकी सहायता प्राप्त हो सकती है। एक बार जहाँ ब्रिटिश सेना हालैंड की भूमि पर उतर गई उसका बड़ा भारी प्रभाव पड़ेगा। जर्मनी की समस्त पश्चिमी तटीय जहाज़ी मार्ग में गड़बड़ी पड़ जावेगी। वहां से रूह्र प्रान्त पर आक्रमण होना सम्भव हो जावेगा। फ्रान्स जाने वाली राइन प्रान्त की रेलवे लाइनों तथा पुलों का विध्वंश करना सम्भव हो जावेगा। हालैण्ड पर अधिकार हो जाने से वहाँ के हवाई अड्डे शत्रु के हाथ से निकल जावेंगे और फिर शत्रु इङ्गलैंड पर रात के समय बम वर्षा नहीं कर सकेगा और न पश्चिमी जहाज़ी तथा हवाई अड्डों को सामान ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचा सकेगा। हालैण्ड पर सेना उतारने के बाद ब्रेस्ट के प्रदेश पर आक्रमण सरलता पूर्वक हो सकता है।

इस प्रकार के आक्रमण करने के लिये विमानों तथा तोपखाने आदि का अधिक से अधिक सामान एकत्रित करना जरूरी है। टैंक तथा विमान तो संख्या में अधिक होने चाहिये। काफी संख्या में जल सेना के जहाज़ भी होने चाहिये जिससे वह ई-बोटों का भी सामना कर सकें। प्रतिकूल हवाई आक्रमण का भी सामना करना होगा। योरुप के पश्चिम उत्तरी सागर पर ब्रिटिश जहाज़ों का पूरा अधिकार है। पश्चिमी योरुप में राएल हवाई सेना के विमानों की धाक जमी है। इङ्गलैंड में सैनिक, टैंक, और तोपों की काफी संख्या है। सैनिक सामग्री, मशीन, तोपें, सेना आदि ले जाने के लिये जहाज़ों की बड़ी आवश्यकता होगी ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि डंकिर्क को खाली करते समय हुई थी। सभी बातों का होना सम्भव है। असम्भव की बात नहीं है। केवल साहस और फैसले की आवश्यकता है।

रूस की सहायता करना तो इङ्गलैंड के लिये निस्संदेह आवश्यक है। यदि ब्रिटेन योरुप पर आक्रमण नहीं करता तो फिर उसे ईरान के मार्ग होकर अधिक से अधिक विमान रूस के लिये भेजना चाहिये यहां तक कि जो सामग्री अमरीका से इङ्गलैंड को आ रही है उसका कुछ भाग रूस भी जाना चाहिये। योरुप पर आक्रमण, लिबिया से जर्मनों को निकालना, इटली को अधिक से अधिक परेशान करना ब्रिटेन का परम कर्तव्य होना चाहिये। यदि पूर्व की ओर रूस के साहसपूर्ण युद्ध को इङ्गलैंड चुपचाप बैठा देखता है तो फिर यह उसकी बड़ी भारी भूल होगी।

उत्तरी-पश्चिमी अफ्रीका, विची सरकार और धुरी राष्ट्र

इस लेख में अफ्रीका के उस भाग का वर्णन है जो रूम सागर से अटलांटिक सागर, नील के बेसिन और कांगो नदी के बीच में है। इस भाग के मध्यवर्ती भाग में सहारा का मरुस्थल स्थित है। इस मरुस्थल के बीच होकर सदैव कारवाँ मार्ग चालू रहे हैं। ट्यूनीसिया, अल्जीरिया और नील नदी के बेसिन के मध्य आवागमन के मार्ग प्राचीन काल से ही स्थापित हैं। यह समस्त भाग सहारा मरुस्थल तथा इस्लाम धर्म के कारण संगठित है। अरब, कबीले, तोवारेग, पेव्हल और मूर जातियां और बहुत से निग्रो लोग मुसलमान धर्म के मानने वाले हैं। फ्रान्सीसी पश्चिमी अफ्रीका के ४० प्रतिशत जनसंख्या मुसलमान हैं। फ्रान्सीसी साम्राज्य में होने के कारण भी इस भाग के भिन्न प्रदेश संगठित हैं।

फ्रान्सीसी अफ्रीका में कच्चा माल बहुत है। वहाँ गेहूँ, नाज, जैतून आदि की उपज होती है। जैतून का तेल निकाला जाता है और मदिरा तयार की जाती है। फ्रान्सीसी पश्चिमी अफ्रीका में मूंगफली की उपज अच्छी होती है जिससे तेल निकाला जाता है और साबुन तयार किया जाता है। १९३८ ई० में ६० करोड़ फ्रैंक (फ्रान्सीसी मुद्रा) की मूंगफली वहाँ पैदा हुई थी। मूंगफली के बाद नारियल का तेल, कोको और केला की उपज का नम्बर है। कहवा, कपास और सीसल की उपज भी होती है। १९३८ ई० में फ्रान्सीसी पश्चिमी अफ्रीका से एक अरब ४१ करोड़ ६० लाख फ्रैंक का सामान बाहर भेजा गया था जिसमें ७० प्रतिशत सामान फ्रान्स गया था। आजकल कपास की उपज अधिक हो गई है।

अफ्रीका के विषुवत रेखा वाले प्रदेश और केमरून्स में लकड़ी, नारियल का तेल, कोको और केला की उपज अच्छी होती है।

फ्रान्सीसी पश्चिमी अफ्रीका केवल उपज के ध्यान से ही नहीं वरन् युद्ध दृष्टि से भी बड़ा महत्व का है। फ्रान्स में जन्म संख्या घट जाने पर फ्रान्स ने इस भाग में मानव शक्ति अफ्रीकन निवासियों द्वारा बढ़ाने का प्रयत्न किया था। इसका कारण यह था कि जर्मनी के निवासियों की संख्या फ्रान्स की अपेक्षा बढ़ रही थी। संख्या बढ़ाने के लिये सेनेगाल और सूडान दो प्रधान केन्द्र बनाये गये थे। मरक्को तथा वहां के काले लोग बड़े वीर सैनिक होते हैं। उन्होंने अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरता का परिचय गत महायुद्ध तथा १९४० ई० के युद्ध में भली भांति दिया है। वर्तमान युद्ध के आरम्भ में कालोनी मन्त्री एम० मांडेल ने फ्रान्सीसी कालोनी में तीस लाख सेना संगठित करने की योजना बनाई थी। इस योजना की पूर्ति नहीं हो सकी। फिर भी फ्रान्सीसी सेना में फ्रान्सीसी पश्चिमी अफ्रीका के बहुत से सैनिक सम्मिलित हुये हैं।

जर्मनी फ्रान्स के अफ्रीकन देशों से लाभ उठा रहा है यद्यपि उसने जब फ्रान्स के साथ क्षणिक संधि की थी तो उसने फ्रान्स के उपनिवेशों के सम्बन्ध में कोई धारा नहीं जोड़ी थी। इसका कारण केवल यही था कि वह दूसरे ढंग से अपनी इच्छा की पूर्ति कर सकेगा। विची सरकार और हिटलर के बीच जो संधि की बातें हुई थीं उसमें यह बात तय हुई थी कि अफ्रीका के फ्रान्सीसी उपनिवेशों पर फ्रान्स और जर्मनी दोनों की देख भाल रहेगी। इस नीति से जर्मनी ने फ्रांसीसी लोगों के हृदय को कष्ट भी नहीं दिया और वह वहाँ का शासक भी बना है। वहाँ की उपज को बढ़ा कर वह लाभ उठा रहा है। सिसली के दूसरी ओर रूम सागर पर बिज़ेर्टा स्थान है। वहां पर पहुँच जाने से सिसली जलसंयोजक होकर जाने वाले ब्रिटिश पथ-रक्षक सेना तथा जहाजों पर जर्मनी ने रोक लगा दी है इसलिये ब्रिटिश सहायता मिस्र को नहीं पहुँच सकती है। उस स्थान से होकर वह लिबिया में अपनी अधिक से अधिक सेना पहुँचाने तथा सैनिक सामग्री ले जाने में सफल हो रहा है। मरक्को के अटलांटिक तट पर उसने कैसेब्लांका पर हवाई तथा पनडुब्बी जहाजों का अड्डा बनाया है जिससे अटलांटिक सागरीय युद्ध को चलाने में उसे बड़ी सफलता हो रही है।

अफ्रीका के पश्चिमी तट पर डाकर का बन्दरगाह है। इस पर अधिकार होने से जर्मनी को बड़ा लाभ होगा। दक्षिणी अफ्रीका तथा योरुप के मध्य चलने वाले जहाज इस बन्दरगाह पर रुकते हैं। मोरक्को और कांगो के मध्य यह सबसे बड़ा बन्दरगाह है। यह केप आफ गुड होप, आस्ट्रेलिया और पूर्वी द्वीप-समूह जाने वाले जहाजी मार्ग में है। डाकर में हवाई अड्डा भी है। यह दक्षिणी अमरीका से समीप पड़ता है। यदि डाकर पर जर्मनी अपनी डुबकनी जहाजों तथा विमानों का अड्डा बनाता है तो फिर ब्रिटेन के जहाज गुड होप अंतरीप तथा हिन्द महासागर की ओर जा ही नहीं सकते। डाकर पर अधिकार होने से अमरीका को भी खतरा हो जावेगा। वहां से दक्षिणी अमरीका पहुँचना सरल है।

क्षणिक संधि के पश्चात शीघ्र ही जनरल डेगाले ने डाकर की स्थिति तथा उपयोगिता का ध्यान देते हुये उस पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। उसे समाचार मिला कि वहां की अधिकांश प्रजा मित्र राष्ट्रों के अनुकूल है वह २३ सितम्बर सन् १९४० ई० को बन्दरगाह के बाहर पहुँचा परन्तु विची सरकार ने वहां १९ सितम्बर को ही २ क्रूशियर जहाज और कई एक विध्वंस कारक जहाजों का बेड़ा भेज दिया था। स्वतंत्र फ्रान्स के कार्य को रोकने के लिये बहुत से लोगों की हत्यायें की गईं। जो दूत जनरल डी गाले की ओर से बातचीत करने गये उनको बन्दूकों से उत्तर दिया गया जिसमें से दो व्यक्तियों को गहरी चोट लगी थी। उसके बाद ब्रिटिश लड़ाके जहाजों और फ्रान्सीसी जहाजों में युद्ध हुआ। फ्रांसीसी बेड़े में रिशलयू नामक आधुनिक लड़ाका जहाज भी था। फ्रांसीसी सेना का खून बहाने के डर से जनरल डी गाले ने युद्ध रोक दिया। इस प्रकार डाकर पर विची सरकार का अधिकार हुआ।

उसके बाद से विची सरकार डाकर को बराबर सुदृढ़ बना रही है परन्तु मित्रराष्ट्र बराबर पता लगा रहे हैं कि वहां पर जर्मनी सेना का अधिकार तो नहीं हो रहा है। यदि जर्मनी वहां अपनी सेना भेजेगा तो मित्र राष्ट्र उसे सहन नहीं कर सकते। ब्रिटेन, संयुक्तराष्ट्र अमरीका अवश्य ही उसके प्रतिकूल कार्रवाई करेंगे। इस प्रकार डाकर और पश्चिमी अफ्रीका की स्थिति तटस्थ स्थानों में है।

जर्मनी पश्चिमी अफ्रीका तथा उत्तरी अफ्रीका में अपने राजदूत (क्षणिक संधि के दूत) भेज कर वहां अपना प्रचार फैला रहा है। डाकर की रक्षा का प्रबन्ध करने के लिये जर्मनी ने अपने वैज्ञानिक तथा कारीगर भेजे हैं।

रूस के युद्ध के कारण जर्मनी को अवकाश नहीं मिलता कि वह अफ्रीका की ओर अपना ध्यान आकर्षित करे। वह दोनों सीमाओं पर अपनी शक्ति नहीं बटाना चाहता परन्तु इसका अर्थ यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदापि नहीं है कि हिटलर ने अफ्रीका की ओर से अपना ध्यान बिलकुल हटा लिया है। हिटलर जानता है कि यदि लीबिया में ब्रिटिश सेना की विजय हुई और साइरेनीका, त्रिपोली लीबिया और टयूनिस में यदि डी गाले का ज़ोर हुआ तो फिर उससे जर्मनी को बड़ी हानि पहुँचेगी।

इस प्रकार मिस्र पर जर्मनी का आक्रमण होना आवश्यक है क्योंकि यदि वह मिस्र पर अधिकार कर लेता है तो फिर इराक और फारस के तेल के मैदानों तथा पूर्वी द्वीप समूह के लिये जर्मनी के मार्ग खुल जावेंगे और इसका वर्तमान युद्ध पर भारी प्रभाव पड़ेगा।

फ्रांसीसी अफ्रीका का एक बड़ा भाग मित्रराष्ट्रों के अनकूल है। २७ अगस्त सन् १९४० ई० को चाद फ्रान्सीसी उपनिवेश डी गाले से मिल गया। १८ अगस्त को कर्नल डी लार्मिनाट ब्राज़ील पहुँचा और उसने वहां के गवर्नर को अलग कर दिया जिसने विची सरकार का पक्ष लिया था। इस प्रकार समस्त विश्वत रेखा का फ्रान्सीसी अफ्रीका स्वतंत्र फ्रान्सीसी सरकार का सहायक प्रतीत हो रहा है। कुछ समय के पश्चात् केमरून का प्रान्त भी डी गाले की रक्षा में आ गया है।

उपरोक्त स्थानों की सहायता से इँगलैंड तथा अमरीका से सेना और युद्ध सामग्री ब्रिटेन के मध्य-वर्ती पूर्व के जहाजी सैनिक और हवाई अड्डा भेजा जा सकता है। अमरीकन बम वर्षकों की सहायता पहुँचना तो बहुत ही सरल कार्य है।

समस्त फ्रान्सीसी अफ्रीका पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिये विची सरकार कोशिश कर रही है परन्तु वहां के निवासी मित्रराष्ट्रों के साथ हैं और रहेंगे उनका वर्तमान युद्ध में एक विशेष भाग होगा जिसे अमरीका तथा इँलैण्ड भली प्रकार जानते हैं और भूल नहीं सकते।

चन्द्रमा में चीनी आदमी

एक बार एक बूढ़ा एक खराब सड़क से जा रहा था। मार्ग में उसे एक परी मिली। वह अच्छी स्वभाव की थी। परी को बूढ़े पर दया आई। वह उसे आकाश में ले जाना चाहती थी, जिससे वह वहां सुख से रहे। उसने बूढ़े को दो गोलियां दीं। उसने कहा इन गोलियों को साढ़े सात महीने अपने पास रखना। आखिरी दिन के छठवें घंटे में दक्षिण की ओर देखना। तुम्हें आकाश में जाने का मार्ग मिलेगा।

गोलियों को तुम अपने पास रखना उसके खाने से तुम जीव आत्मा की सूरत में बदल जाओगे फिर तुम उस द्वार के मार्ग द्वारा आराम के देश में पहुँच जाओगे। उसके बाद परी लोप हो गई। बूढ़ा घर गया और उसने सारा हाल अपनी स्त्री से कह सुनाया। उसने दोनों गोलियां भी उसे दिखलाईं। स्त्री को उसकी कहानी सुन बड़ा अचम्भा हुआ।

जब निश्चित दिन आया तो स्त्री अपने पति से पहले उठी। उसने गोलियां ली और घर के बाहर चली गई। उसने दक्षिण की ओर देखा तो आकाश का द्वार खुला था। उसने एक गोली खा लिया और दूसरी अपने पति के लिये छोड़ दिया। इतने में आकाश से एक विमान उतरा उसमें बैठ कर स्त्री आकाश को चली गई। इसी बीच उसका पति आया और उसने अपनी स्त्री को आकाश में उड़ते देखा। उसने दूसरी गोली खाई परन्तु कोई मार्ग नहीं खुला। उसके लिये भी एक विमान उतरा और वह भी आकाश की ओर उड़ गया आकाश का मार्ग बन्द था। वह भीतर नहीं जा सका।

वह द्वार पर खड़ा बहुत समय तक रोता रहा। तब एक अच्छी परी आई और कहा "रोओ नहीं द्वार तुम्हारे लिये नहीं खुलेगा"। तुम्हारे लिये चन्द्रमा में बरफ का एक किला मिलेगा। साल भर में एक बार आकाश का द्वार खुलेगा और तुम अपनी स्त्री को देख सकोगे।

तब से वह बूढ़ा चन्द्रमा में रह रहा है। वह चन्द्रमा में बैठा दिखाई पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१० × ७॥) के २१० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

★ ★ ★ ★ ★

अनोखी दुनिया—इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२६, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

★ ★ ★ ★ ★

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्राय: भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था को ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों से बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग २८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

★ ★ ★ ★ ★

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। इसमें संसार का एक बड़ा नक़्शा दिया गया है जिसमें उन जातियों का निवास-स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिश्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, रोमन, नई दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ९० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है।

पुस्तक मिलने का पता—"भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents: Articles are published on varied topics of geographical interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department: The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances: Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narayan Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, Kakrhaghat, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

चैत्र, सं० १९९९

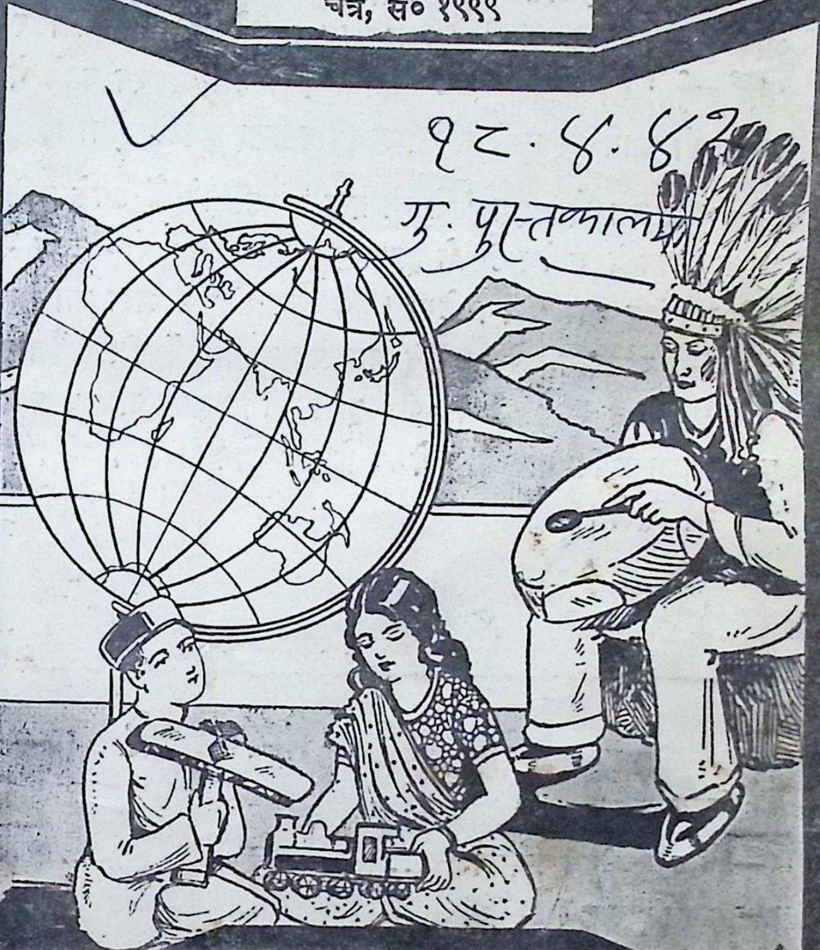

१८.४.४२
गु. पुस्तकालय

सम्पादकः रामनारायण मिश्र बी.ए.

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल-पाठकों के लिये

'देश-दर्शन' के सम्बन्ध में छपा हुआ आवश्यक निवेदन गत मास के भूगोल में आप ने ध्यान पूर्वक पढ़ा होगा। आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि 'देश-दर्शन' का प्रत्येक स्कूलों में होना आवश्यक है। अभी तक आप 'देश-दर्शन' के दर्शन से वंचित हैं। हम चाहते हैं कि भूगोल कार्यालय की प्रकाशित पुस्तकें प्रत्येक पाठकों को आसानी से प्राप्त हो जायँ। इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर 'देश-दर्शन' ग्रन्थमाला का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

'तीर्थ-दर्शन' अंक आप को मुफ़्त मिलेगा। रुपया प्राप्त हो जाने पर इसके आगे के अंक से आप का नाम रजिस्टर में लिखा जायगा। शेष अंक भी बराबर एक वर्ष तक मिलते रहेंगे। 'तीर्थ-दर्शन' की केवल २०० प्रतियां बची हैं। अतएव रुपये भेजने में शीघ्रता करें। प्रतियाँ समाप्त हो जाने पर दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

अभी तक 'देश-दर्शन' के जो ग्राहक नहीं बने हैं उनके सुविधा के लिये वार्षिक मूल्य में ४) के स्थान में मनीआर्डर के द्वारा ३॥) और वी० पी० द्वारा ३॥।) रक्खा गया है। ऐसी सुविधा बार बार नहीं मिलेगी। हमें आशा है कि आप वार्षिक मूल्य ३॥) मनीआर्डर द्वारा भेजने की व्यवस्था करेंगे। यदि आप का रुपया हमें १५ अप्रैल तक नहीं मिला तो एक वर्ष के चन्दे के सहित ३॥।) की वी०पी० द्वारा 'तीर्थ दर्शन' अंक आप की सेवा में भेजा जायगा। हमें पूर्ण आशा है कि वी० पी० भेजने के पूर्व आप के रुपये हमें मिल जायँगे। विशेष योग्य कार्य होय सो लिखें।

भवदीय

मैनेजर

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—हालैंड के भीतरी बन्दरगाह	१
२—पाताल तोड़ कुएँ	५
३—हाथी	६
४—रूस के लिये सामग्री पहुँचाने वाले मार्ग	९
५—रूसी-जर्मन युद्ध	१२
६—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] चैत्र, सं० १९९९, मार्च, १९४२ ई० [अङ्क ११

हालैंड के भीतरी बन्दरगाह

ऐम्सटर्डम का बन्दरगाह हालैंड के लिये बड़ा उपयोगी है। यहां पर राइन नदी, पूर्व की ओर जाने वाली जहाजी लाइन के जहाज, नदियों में चलने वाले पैडिल जहाज, तेल भरने वाले जहाज आदि आदि आया जाया करते हैं। यह बन्दरगाह रेलों द्वारा सारे योरुप से और नहरों द्वारा उत्तरी हालैंड से मिला हुआ है। प्राकृतिक रूप से यह बन्दरगाह नहीं है, क्योंकि न तो यह समुद्र पर स्थित है और न समुद्र की ओर इसका कोई निकास ही है। यह नगर एक ओर उत्तरी सागर की नहर द्वारा समुद्र से मिला है और दूसरी ओर नहर के लाकों द्वारा बनावटी खाड़ियों से मिला है, जहां पर किसी समय में ज्वेडरजी था। १९३२ ई० में ज्वेडरजी के बांधों का बनना समाप्त हो चुका है और यह फिर उसी नाम से पुकारा जाने लगा है। ऐम्सटर्डम के लाक दुनिया के बड़े लाकों (घाट) की भांति ही बड़े हैं।

डच लोगों के ख़्याल से राटर्डम ऐम्सटर्डम के मुकाबिले का बन्दरगाह है। यह भीतरी बन्दरगाह बड़ा सुन्दर है और नहर द्वारा उत्तरी सागर से मिला हुआ है। इस नहर का नाम न्यू वाटर वे है। इस नहर में लाक नहीं हैं। यहाँ पर भी एम्सटर्डम की तरह हर प्रकार के जहाज आते हैं, किन्तु यहां पर नदियों से अधिक जहाज आते हैं। यह नगर नदियों द्वारा सारे योरुा से मिला हुआ है। यहाँ पर बड़े जहाजों द्वारा सामान आता है, वह सामान यहां उतार कर नदी में चलने वाले जहाजों द्वारा योरुप के देशों में भेजा जाता है। यहां पर एम्सटर्डम से अधिक जहाज बनाने के स्थान हैं, यद्यपि यह कहना कठिन है कि किस बन्दरगाह के जहाज अच्छे बनते हैं। राटर्डम एक बड़ा गुनजान व्यापारिक नगर है। यह नगर बिलकुल आधुनिक है।

ऐम्सटर्डम नगर को देखने के पश्चात् हमारे दिमाग पर उसके गौरव का चिन्ह अलंकृत हो जाता है। यह गौरव प्राचीन नहरों और हियरेनग्राट के बांधों के दृश्य के देखने से और भी अधिक हो जाता है। यह नहरें ईज में जाकर गिरती हैं। ऐम्सटर्डम के केन्द्रीय स्टेशन के समान ईज का जलाशय है। यह स्टेशन शीशे और फौलाद का बना हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह दुनिया के प्रसिद्ध तथा सुन्दर वस्तुओं में है। यह मरीन (समुद्री) इञ्जिनों के बनाने के लिये बनाया गया था।

स्टेशन के सामने समुद्र के भीतर से उठे हुये खम्भे दिखाई पड़ते हैं। यह खम्भे लम्बाकार हैं। यहां के जहाज यहां से सामान तथा यात्रियों को ले जाकर हालैंड के दूसरे स्थानों पर पहुँचाते हैं। यह जहाज जटफेन, डेवेन्टरे ग्रोनिन्गेन के उत्तरी बन्दरगाहों को जाते हैं। ऐन्टवर्प, अल्कमार और जानडाम आदि स्थानों को भी यह जहाज जाते हैं। अल्कमार उत्तरी हालैंड में है और मक्खन के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। ज़ानडाम जान नदी के किनारे पर स्थित है। यह नदी ज़ानडाम और अल्कमार को मिलाती है और उत्तरी सागर के नहर में मिलाती है। संगम के समीप ही हालैंड का सर्व प्रसिद्ध जहाज बनाने का स्थान निदरलैंड शिप विल्डिंग (निदरलैंड का जहाज बनाने का कारखाना) कम्पनी है। ईज मईदेन (ईज का मुँह) की बनावटी नदी पर ऐम्स-टर्डम बसा है। यहीं पर जहाज उत्तरी सागर को नहर में प्रवेश करते हैं। यहां से एम्सटर्डम बन्दरगाह १६ मील पड़ता है।

उत्तरी सागर की नहर समतल मैदान में होकर जाती है। इस नहर में केवल वेनसेन नगर में हटने वाला पुल बना है। इस पुल द्वारा उत्तरी हालैंड को रेल जाती है। इस नहर में रात दिन जहाज चल सकते हैं। रात के समय नहर पर बिजली द्वारा प्रकाश होता है। नहर में तटीय नगरों की भांति ही प्रकाश रहता है। इस नहर होकर ऐम्स टर्डम को बड़े से बड़े जहाज जा सकते हैं। इस नहर की चौड़ाई २४६ फुट और गहराई ४१ फुट है। जैसे जैसे जहाजों का आकार बढ़ता जाता है, वैसे वैसे नहर के चौड़ा तथा गहरा बनाने की योजना भी की जाती है।

इजमुईदेन का लाक दुनिया के बड़े तथा प्रसिद्ध झालों में है। यह बिलकुल आधुनिक बना हुआ है। इसके देखने से डच लोगों की कला-कौशल तथा समुद्री चतुरता का विशेष ज्ञान होता है। ऐम्सटर्डम में स्चीपवार्च यूज़ के सुन्दर महल धनुषाकार रूप में बने हुये हैं। यहां पर मुख्य २ कम्पनियों के दफ़्र हैं। नहर के प्रबन्धकों के मकान भी वृत्ताकार गोले में बने हुये हैं।

यहां उत्तरी सागर के नहर का प्रवेश करने वाला लाक बड़ा शानदार बना है। इसकी लम्बाई १३१२ फुट, चौड़ाई १६४ फुट और गहराई ४९ फुट है। इसका स्थान योरुप के सुन्दर हार्बरों में से है। जब कोई जहाज घाट पर खड़ा होने के लिये आता है और हवा तेज़ रहती है तो उसे कुछ समय तक प्रतीक्षा करना पड़ती है। हवा का प्रकोप इतना अधिक रहता है कि वह हवा का सामना नहीं कर सकता और बहुधा सूखे तथा छिछले स्थान पर चला जाता है। उसे उस स्थान से खींच कर लाना पड़ता है।

इस नहर होकर दो बड़े जहाज निकल सकते हैं। ऐसा मौका शायद ही कभी आता है जब कि कोई तीसरा जहाज वहां आ जाय। एक बार पूर्वी द्वीप समूह का व्यवसाय करने वाला एक जहाज़ वहां आ गया। वह धक्का खा गया और उसके अन्दर छेद हो गया। इसके कारण वह जहाज चल नहीं सकता था। टग बोटों द्वारा वह जहाज जावाकेड स्थान पर मरम्मत करने के लिये लाया गया। जब वह जहाज मरम्मत करने के स्थान पर पहुँचा तो लगभग सभी जहाज बनाने वाली कम्पनियों ने उसकी मरम्मत में हाथ बटाया और शीघ्र ही वह बन कर तयार हो गया। ऐम्सटर्डम बन्दरगाह के लोग इतने मेहरबान हैं कि वे अपने देश में आपत्ति में पड़े हुये किसी भी व्यक्ति की सहायता सहर्ष करने को तत्पर हो जाते हैं।

ऐम्स टर्डम बन्दरगाह का भ्रमण करना आसान है, क्योंकि रूईटरफेर स्थान से हार्बर के प्रत्येक स्थान के लिये बोट हर समय छूटा करते हैं। इन बोटों पर नम्बर इजवीर १, २ अथवा ३ करके डाला रहता है। यह नम्बर जाने वाले स्थान के अनुसार डाले जाते हैं। इन बोटों द्वारा हार्बर के देखने योग्य स्थानों का भ्रमण हो सकता है। ऐम्स टर्डम हार्बर को ईज नदी एक ओर उत्तरी सागर नहर से और दूसरी ओर एक बड़ी झील से मिलती है जहां पर व्यापार के कम हो जाने के समय जहाज खड़े रहते हैं।

रूईटकेंड के सामने उत्तरी हालैंड को जाने के लिये नहर के घाट हैं। इन घाटों पर तेल तथा पिट्रौल के उतारने का प्रबन्ध है। नदी के और अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे की ओर पिट्रौल उतारने का मुख्य घाट है। इस घाट पर १००,००० टन (लगभग २८००,००० मन) पिट्रौल रखने का प्रबन्ध है। पिट्रौल अथवा दूसरे सामान उतारने के लिये ही ऐम्सटर्डम का बन्दरगाह प्रसिद्ध नहीं है वरन् यहां पर लकड़ी का व्यापार बहुत अधिक होता है। योरुप भर में लकड़ी के व्यवसाय के अनुसार लन्दन के बाद इसी का नम्बर है। इस बन्दरगाह होकर सामान साल भर आता जाता है। राइन नदी तथा उसके बेसिन का सामान इसी बन्दरगाह होकर आता जाता है।

ऐम्सटर्डम बन्दरगाह पर दक्षिणी अफ्रीका से सामान आता है और यहां उतार कर रूम सागर, इँगलैण्ड, उत्तरी योरुप और अमरीका आदि देशों के बन्दरगाहों को भेजा जाता है।

इस बन्दरगाह पर मुख्य काम एक जहाज़ का माल उतार कर दूसरे जहाज पर लादना होता है। इसलिये यहां पर क्रेनों (सामान उठाने की मशीन) का जँगला लगा रहता है। जहां कहीं भी दृष्टि डालिये क्रेनों का समूह नज़र आता है। यहां एक स्टीम शिप कम्पनी के पास तो ७० से अधिक क्रेनें हैं। इस बन्दरगाह पर कुल ३०० क्रेनें हैं। यह क्रेनें छोटी और बड़ी सभी प्रकार की हैं। छोटी से छोटी क्रेन १½ टन (लगभग ४२ मन) का बोझ उठा सकती है। तैरती हुई क्रेनों को खींच कर ले जाने वाले छोटे जहाज क्रेनों को खींच कर जहाज के सामान भरने वाली कोठी तक ले जाते हैं। इन टगों (छोटे जहाज) में से कुछ में १५० टन (४२०० मन) सामान आता है।

घाटों पर सामान रखने के लिये गुदाम बने हैं। कुछ सामान रखने वाले स्थान गर्म रक्खे जाते हैं। जहां पर जाड़े के दिनों में देश वाले फल रक्खे जाते हैं। बहुत से घाट तथा खम्भे ऐसे भी बनाये गये हैं जहां पर समुद्र से आने वाले जहाज एक ओर अपना सामान उतारते हैं और दूसरी ओर देश के भीतर ले जाने वाले स्टीमर सामान लादते हैं।

ऐम्सटर्डम हार्बर तथा नहर के दूसरे किनारे वाले नगरों में सामान रखने के लिये गुदाम (सामान भरने के घर) बने हैं जहां पर कहवा, चाय, तम्बाकू, सिनकोना की छाल, रबर, चमड़ा और कैपोक आदि वस्तुएँ रक्खी जाती हैं और फिर ऐम्सटर्डम के बाज़ार के लिये रवाना की जाती हैं।

गहरे समुद्री किनारे पर दक्षिणी अमरीका से आने वाला जमा हुआ मांस रखने के लिये स्थान बनाये गये हैं। दूसरे बड़े स्थानों में इण्डीज से आने वाला रबर रक्खा जाता है। एलिवेटरों में गल्ला भरा जाता है। बहुत से एलिवेटर ऐसे हैं जिनमें २५० टन (७००० मन) अनाज एक घंटे में आ सकता है। सबसे बड़ा स्थान सिलो है, जहां पर १८,००० से २०,००० टन (३२६,००० मन से ६०,००० मन) तक गल्ला रक्खा जा सकता है।

सामान के भरने उतारने का काम इतनी फुर्ती से किया जाता है कि देखने वाले देखते ही देखते रह जाते हैं। जब गल्ला भरा या उतारा जाता है तो बड़ी गर्द उड़ती है। कोयला लोहा और दूसरे धातु के सामान उतारने का प्रबन्ध दूसरे कलों द्वारा होता है। जिससे सुगमता पूर्वक काम हो जाता है। इनमें बिजली द्वारा काम होता है।

योरुप में अधिकतर तैरते हुये घाटों तथा दूसरी वस्तुओं से ही काम लिया जाता है। इन तैरते हुये घाटों पर तरह तरह की वस्तुओं का दृश्य बड़ा ही मनोहर होता है। हालैंड के लगभग सभी जहाजी कम्पनियों ने एम्स टर्डम को ही अपना अड्डा बनाया है। हैम्बर्ग अमरीका लाइन, जर्मन पूर्वी अफ्रीका लाइन, एल्डर डेम्पस्टर लाइन, कोसमोस लाइन और उत्तरी जर्मन लाएड लाइन के अड्डे भी यहां पर हैं, जो एम्सटर्डम को दुनिया के और दूसरे भागों से मिलाते हैं।

यदि हम बिजली की रेल द्वारा यात्रा करें तो १ घंटे की सुन्दर रमणीक यात्रा के पश्चात् हम राटर्डम बन्दरगाह पर पहुँचेंगे। राटर्डम मास नदी पर स्थित है। मास नदी राइन नदी की शाखा है। यह नदी स्विज़रलैण्ड को उत्तरी-सागर से मिलाती है।

राटर्डम में मास नदी पर पुल बना हुआ है। इस पुल के ऊपर से राटर्डम नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है। इस पुल से नदी के ऊपर की ओर जाने के लिये एक २०० फुट लम्बा जहाज रहता है। इसमें चार या पांच नावें रहती हैं, जिनमें १००० टन बोझा लादा जा सकता है। यह नावें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी बोझ से भरी रहती हैं, कि पानी ऊपर बिलकुल समीप तक आ जाता है। जहाज के अगले भाग में खिड़कियां तथा एक छोटा कमरा रहता है। इस छोटे कमरे के आगे सुन्दर फूल दिखाई देते हैं। यह जहाज राइन बार्ज कहलाते हैं। यह जहाज केवल माल लादने वाले ही नहीं होते वरन् इनमें जहाज के कैप्टन उसकी स्त्री लड़के बच्चे और कभी कभी उसके रिश्तेदारों के रहने के लिये भी कमरे बने रहते हैं। राटर्डम से जब यह बाजेज चलते हैं तो एक सप्ताह के पश्चात् जर्मनी के रूहर ज़िले में पहुँच जाते हैं। वहां पर इनका लोहा उतार लिया जाता है। उसके बाद यह जहाज स्विस सीमा तक सामान लादने के लिये जाते हैं और उसे हैम्बर्ग आदि स्थानों को पहुँचाते हैं।

राटर्डम में राइन बार्ज (राइन नदी के जहाज) बहुत दिखाई पड़ते हैं। राटर्डम में पानी के समीप ही हवाई जहाजों का स्टेशन है, उसी के समीप इन बार्जों के ठहरने का स्थान है। अभी हाल में जो हवाई जहाजों की उड़ाई राटर्डम में हुई थी। उस समय राटर्डम में २०० बार्जेज ठहरे हुये थे। यद्यपि ये बार्जेज खड़े रहते हैं, तो भी देखने में बड़े सुन्दर मालूम होते हैं। मास पुल से एक ओर हालैंड अमरीका लाइन के जहाज सामान लादते अथवा उतारते दिखाई पड़ेंगे। नदी के बीच वाले भाग में प्लेट नदी से आये हुये जहाज अनाज उतारते अथवा स्वीडन के जहाज लोहा लादते हुये दिखाई पड़ते हैं।

नदी के बहाव की ओर कुछ दूरी पर जहाजों के बनाने तथा मरम्मत करने के लिये कारखाने दिखाई देते हैं।

राटर्डम और उत्तरी सागर के बीच में बहुत से स्थान ऐसे बने हैं जहाँ होकर नहर में प्रवेश किया जा सकता है या नहर को छोड़ा जा सकता है। यह सभी भाग समतल मैदान होकर हैं। न्यू वाटर वे राटर्डम का मुख्य द्वार है। यह द्वार भूमि काट कर बनाया गया है और समुद्र से मिला दिया गया है। यह द्वार काफी चौड़ा है और कई एक जहाज एक साथ इसमें होकर आ जा सकते हैं। इसके किनारों पर कोयला तथा तेल रखने के लिये स्थान बने हुये हैं। व्लारडिन्जन पोर्ट यहीं पर है। यह पोर्ट दुनिया के सबसे बड़े साल्वेज टग्स के जहाजी बेड़े का स्थान है यहां से जहाज न्यूजीलैंड अथवा अटलांटिक सागर के मध्य तक जाते हैं और टूटे हुये अथवा खराब जहाजों को कुशलता पूर्वक खींच कर किनारे पर ले आते हैं। व्लारडिन्जन में मल्लाह तथा जहाज चलाने वाले अधिक संख्या में रहते हैं।

न्यूवाटर वे द्वार के समीप ही हालैण्ड का हुक है। यह मेल तथा पैसेन्जर जहाजों द्वारा हार्विच (एसेक्स) से मिला हुआ है। यहीं पर न्यूवाटर के द्वार में प्रवेश करने वाले जहाजों के घूमने का भी स्टेशन है। मास रेलवे स्टेशन के समीप ही विउनहेविन स्थान है, जहां पर सुन्दर शानदार दफ़्तरों के मकान बने हुये हैं। यहां पर स्थानीय छोटे जहाज ठहरा करते हैं। इसके सिवा लालमन तथा हारिंग्वलीट नामक दूसरे हार्बर हैं।

राटर्डम के केन्द्रीय भाग में मास एक द्वीप द्वारा दो भागों में विभाजित हो जाता है। इस द्वीप में घाट तथा सामान रखने के लिये स्थान बने हुये हैं। यहां पर जहाज बँधे रहते हैं। यह द्वीप पुलों द्वारा मुख्य नगर की भूमि से मिला हुआ है। यहां पर रेल के दो पुल हैं जो राटर्डम और एम्सटर्डम राहेनडाम और वेल्जियम सीमा तक जाती हैं।

राटर्डम पुलों तथा साइकिल चढ़ने वालों का नगर है। यहां पर जहाज में काम करने वाले मित्रों से बात चीत करने में यात्रियों को बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है, क्योंकि बातचीत करते समय बीच ही में जहाजों तथा टगों का समूह पास होने लगता है और फिर यात्री को कम से कम बीस मिनट रुकना पड़ता है।

बड़े बड़े जहाज ज्वारभाटों की सहायता से राटर्डम सुविधा पूर्वक पहुँच सकते हैं और फिर भी उनके पेंदे (कील) के नीचे १ फुट पानी रहेगा। राटर्डम और स्चीडाम हार्वरों में कुल १६ ड्राईडाक्स (सूखे घाट) हैं। इनमें कुछ घाट ४६,००० टन का बोझ उठा सकते हैं।

राटर्डम बन्दरगाह में बहुत से हार्वर हैं, जो काफी बड़े हैं। पारखावेन का हार्बर १४७० फुट लम्बा और ३९३ फुट चौड़ा है। इसकी गहराई २१ फुट है और घाटों की लम्बाई २९४० फुट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारखावेन घाटों द्वारा भीतरी कई एक नहरों से मिला हुआ है।

राटर्डम में नदी के दाहिने किनारे पर सबसे बड़ा घाट है। इसका नाम बूम्पजेस्कडे है। इसकी लम्बाई ३०५० फुट है। व्लाएडकेड घाट की लम्बाई १७४० फुट और किनारे के पानी की गहराई २८ फुट है। नदी के घाटों में १७ समुद्री जहाज ठहर सकते हैं, इसके सिवा और दूसरे छोटे जहाजों के ठहरने के लिये बहुत अधिक स्थान हैं। मशावेन हार्वर में १४८ एकड़ पानी है। यहां पर एक फौलाद का तैरता हुआ घाट है जो १५००० टन बोझ संभाल सकता है।

राटर्डम में होटलों में ठहरे हुये यात्री इञ्जनों की आवाज़ से ऊँघते ऊँघते सो जाते हैं और उनकी सीटियों से जाग पड़ते हैं। यद्यपि योरुप में बहुत से बन्दरगाह ऐसे हैं जहाँ की ऋतु सुहावनी रहती है और दिन साफ रहता है; तथा धूप होती है किन्तु बहुत थोड़े से बन्दरगाह ऐसे हैं जो यात्रियों को उनके व्यय के बदले में कुछ देते हैं। राटर्डम और एम्स टर्डम में बहुत से दृश्य देखने में आते हैं, जिससे यात्रियों की तबीअत बहल जाती है। इन बन्दरगाहों से क्रोयडान के हवाई जहाजों के स्टेशन का केवल ११ घंटे का मार्ग है। यहां से लन्दन नगर की यात्रा दो घंटे में की जा सकती है। हवाई मार्गों के अलावा राटर्डम तथा ऐम्सटर्डम के मार्गों को दूसरे मार्ग (हार्विच, हालैंड का हुक आदि के मार्ग) काटते हैं। इन दोनों बन्दरगाहों की यात्रा अवश्य ही यात्रियों को करनी चाहिये।

पाताल तोड़ कुएँ

पाताल तोड़ या आर्टीजियन वेल बनाने के लिये पहले दो या तीन फुट भूमि नमी का पता लगाने के लिये खोदी जाती है उसके बाद भूमि में छेद किया जाता है। एक बड़े विस्मय की बात यह है कि कभी कभी तो भीतर दूर तक सूराख करने पर भी बहुत कम पानी मिलता है और कभी कभी थोड़ी दूर तक ही सूराख करने पर बहुत ज्यादा पानी निकल आता है। इन कुवों को बनाने वाले चतुर इंजीनियर इस बात को भली भांति जान सकते हैं कि किस स्थान पर अच्छा कुवां तयार हो सकेगा। इसलिये पानी का अच्छा स्थान नियत करने के लिये ऐसे चतुर इंजीनियरों की सलाह लेनी आवश्यक होती है।

सभी लोग देहात के कुवों का ज्ञान रखते हैं। वह जानते हैं कि कुवों में ऐसा होता है कि जब पानी की आवश्यकता होती है तो कुवां एकाएक सूख जाता है। कभी कभी कुओं का पानी गंदा होता है या पानी खराब होता है।

आर्टीजियन कुवों द्वारा मनुष्य को स्वच्छ अच्छा और अधिक पानी प्राप्त होता है। आर्टीजियन कुवां प्रति दिन मनुष्य को ५०००० गैलन पानी दे सकता है। सर्व प्रथम इस प्रकार का कुवां आर्टवाएस में बनाया गया था। उसी स्थान के नाम पर ऐसे कुवों का नाम आर्टीजियन रक्खा गया है।

पृथ्वी के भीतर बहुत सी चट्टानें हैं। कुछ भेदनीय चट्टानें होती हैं और कुछ अभेदनीय होती हैं। वर्षा का पानी छनने वाली चट्टानों में छनता जाता है वह कड़ी चट्टान में जाकर रुक जाता है। कड़ी चट्टान में वह पानी भरता रहता है। नीचे की ओर वह नहीं जा सकता है।

यदि हम पृथ्वी में छेद उस स्थान तक कर दें जहां पर पानी एकत्रित है तो हमारा सूराख अथवा छेद पानी से भर जावेगा। यह हम इस सूराख को निचली भूमि में करते हैं और हमारा सूराख पानी वाली चट्टान के किनारे पर होता है तो फिर पानी अवश्य ही वायु में ऊपर फव्वारे की भांति निकलने लगता है।

लन्दन की भूमि नीची है। पर ऐसे कुवे हजारों हैं और लाखों गैलन पानी लन्दन को इन कुवों से प्राप्त होता है। छेद करने के लिये बरमे कितनी दूर तक चलाये जावें यह बात निश्चय रूप से नहीं कही जा सकती है। लन्दन के आस पास तीन चार सौ फुट तक बरमा चलाने से पानी मिल जाता है परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं कहीं पर हजारों फुट नीचे तक बरमा चलाना पड़ता है। आस्ट्रेलिया के क्वीन्सलैण्ड प्रान्त में ऐसे कुवों के तयार करने में ५००० फुट नीचे तक बरमा चलाना पड़ा है।

आर्टीजियन कुवों के बनाने के कई ढंग होते हैं। एक ढंग तो वही है जो कोयले की खानों के पता लगाने में प्रयोग किया जाता है। हीरे का बरमा पृथ्वी के भीतर चलाया जाता है जब तक कि खरिया मिट्टी की चट्टान नहीं मिल जाती है। साथ ही साथ लोहे के नल भी लगाये जाते हैं। यदि लोहे के नल न लगाये जांय तो बर्मे के मार्ग में गीली मिट्टी आ जाती है और वह पानी में आकर मिल जाती है।

एक दूसरा सूराख़ करने वाला तरीका परकसन (टक्कर) नियम कहलाता है। इस नियम में लम्बे लम्बे छड़ में भांति भांति के लोहे के औज़ार लगाये जाते हैं जो ऊपर नीचे बदलते हुये मिट्टी और चट्टानों को ऊपर फेंकते जाते हैं जब तक कि औज़ार कीचड़ में नहीं फँसते हैं। कीचड़ पड़ जाने पर वह भव्य पदार्थ ऊपर पम्पों द्वारा खींच ली जाती है और फिर बोरिंग की जाती है जब तक सम्भव होता है हीरे के बरमे का प्रयोग किया जाता है। जब तक आर्टीजियन कुवों से पानी ऊपर प्राकृतिक रूप से नहीं आता तो बोरिंग की जाती है और यदि पानी ऊपर न आया तो फिर पानी को पम्प द्वारा आवश्यक ऊँचाई तक उठाया जाता है।

ग्रेनेले और पेरिस में कुवों के बोरिंग का काम किया गया था। वहां काम करने वाले इँजीनियरों को मालूम हुआ कि जब तक एक हजार फुट से अधिक तक बोरिंग न होगी तब तक पानी का ऊपर आना कठिन है। इस कार्य में ८ वर्ष लग गये ३३ फुट कंकड़ में, १०० फुट बालू मिट्टी और लकड़ी वाले कोयले की परत में १६ फुट खरिया मिट्टी और मिट्टी मिश्रित भूमि में तथा १३७८ फुट खरिया में, साढ़े अट्ठासी फुट पिंडोल में और १८६ फुट काली मिट्टी और हरे बालू में बोरिंग की गई। उसके पश्चात् पानी एकाएक पृथ्वी के धरातल से ११२ फुट ऊँचा बाहर आ निकला। यह कुवां पेरिस को ८००,००० गैलन पानी प्रति दिन देता है। यह पानी जब पृथ्वी के धरातल पर आता है तो इसका ताप ८१°८१ अंश रहता है।

हाथी

हाथी कोमल प्रकृति का पशु है। वह अकेला रहना अधिक स्वीकार करता है। परन्तु उसकी इच्छा अब तक पूर्ण नहीं हुई है इसका मुख्य कारण यह है कि मनुष्य जाति उसके दांत की भूखी है, इसी कारण हाथी का शिकार वह करती है। शिकार से बचने के लिये हाथी को अपने जीवन की रक्षा करनी पड़ती है।

ऐसी स्थिति में हाथी अफ्रीका के बनों में अपना प्राकृतिक जीवन निर्वाह करता है। अब से लगभग १०० वर्ष पहले अफ्रीका के हाथी स्वतंत्रता पूर्वक अपना एकान्त जीवन शान्ति के साथ व्यतीत करते थे परन्तु जब से वहां पर मनुष्य जाति बन्दूकें लेकर जाने लगी है तब से हाथी का जीवन संकटमय हो गया है और अब उसे हर समय संदेह लगा रहता है कि कहीं कोई उस पर आक्रमण करने वाला तो नहीं आ धमका है।

लगभग ३० साल पहले जब कोई अफ्रीका के बनों में भ्रमण करता था तो उसे हाथी बहुत दिखाई पड़ते थे परन्तु आज बहुत कम दृष्टिगोचर होते हैं। शिकार के भय से पशु की प्रकृति बदल जाती है। इसी कारण हाथी की प्रकृति में भी अन्तर आगया है।

स्वेत शिकारियों के आने से हाथी की प्रकृति में और भी अन्तर पड़ गया है। वह अब अपने सुखमय तथा शान्तिमय स्थानों में हिलोरें करता तथा मौजें उड़ाता नहीं दिखाई पड़ता है। हाथी सीधा और कोमल प्रकृति का होता हुआ भी अब मनुष्य जाति को शिकार किये जाने के कारण ही बैरी समझने लगा है। अफ्रीका के हाथी बहुत समझ बूझ कर किसी भी स्थान पर बैठने का साहस करते हैं। बैठने के पहले वह चारों ओर सावधानी के साथ देख लेते हैं ... मालूम हो जाता है तो शीघ्र ही वह आक्रमण करने का प्रयत्न करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकार किये जाने के भय से अफ्रीका के हाथी खुले स्थानों पर नहीं आते हैं। वह अधिकतर एकान्त अथवा रिज़र्व (वह बन जहाँ शिकार की आज्ञा नहीं होती) बनों में रहते हैं। हाथी को छेड़ना अच्छा नहीं है। जब वह मनुष्य को बन में देखता है और यदि उसे किञ्चित मात्र भी संदेह हो गया कि मनुष्य उसे या उसके कुटुम्ब के प्राणियों को किसी प्रकार भी कष्ट देगा तो मनुष्य के ऊपर आक्रमण करने से कभी भी नहीं चूकेगा। हाथी की चाल बड़ी तेज होती है। वह २० मील प्रति घंटा चलने वाली मोटर को सरलता के साथ पकड़ सकता है। इसलिये जब वह मनुष्य की ओर दौड़ता है तो फिर उससे बच कर जाना कठिन है। मनुष्य को वह अपने सूंड़ में पकड़ कर किसी बृक्ष में पटक देता है उसके पश्चात् फिर वह अधमरे शरीर को कुचल कर मार डालता है। मनुष्य यदि भाग कर बृक्ष के ऊपर चढ़ कर प्राण रक्षा करना चाहता है तो भी वह उसके लिये कठिन है क्योंकि जिस बृक्ष पर मनुष्य चढ़ जाता है हाथी उसी बृक्ष को पकड़ कर हिलाता रहता है जब तक कि वह उस मनुष्य को पेड़ के नीचे गिरा नहीं लेता है।

जङ्गलों में हाथी १५ फुट ऊँची घास के बीच घुसे रहते हैं। बहुधा वे समूह में रहते हैं। इसलिये बन के अन्दर यदि मनुष्य किसी हाथी को देखता है तो उसे केवल उसी हाथी से ही बचने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये बल्कि उसे और दूसरे हाथियों की आहट भी रखनी चाहिये। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जब मनुष्य एक हाथी की ओर देखता है तो अचानक हाथियों का समूह उसे चुपके से आकर चारों ओर से घेर लेता है।

हाथी की पहचान बृक्षों के बीच में करना कठिन हो जाता है। जब वह बृक्षों के मध्य छिपे रहते हैं तो मनुष्य उनके होने की सम्भावना उस समय तक नहीं कर सकता जब तक कि वह हीलते डोलते नहीं हैं। हाथी मनुष्य का पता शीघ्र लगा लेता है। वह मनुष्य को देख तथा सूंघ कर पता लगाता है। उसकी आँखें बहुत छोटी होती हैं तो भी वह सूंघ कर और उपायों से शीघ्र ही पता लगा लेता है। इसलिये यदि हवा मनुष्य के पीछे की ओर चलती रहती है तो उसका पता लगाया जाना हाथी के लिये बिलकुल सरल हो जाता है।

यदि हाथी से बन में भेंट हो जावे और वह समीप हो तो मनुष्य को चाहिये कि वह सीधा भागने के बजाय तिरछा भागे जिस से उसकी महक हाथी को प्राप्त न हो सके।

एक बार कुछ लोग मोटर पर जा रहे थे मार्ग में उन्हें हाथी मिल गया। उन्होंने ने देखा कि हाथी से बचना कठिन है तो वह मोटर को खड़ी करके अपनी जान बचाने के लिये एक चीटियों द्वारा बनाई हुई पहाड़ी के पीछे चले गये। हाथी मोटर के समीप आया और चारों ओर सूंघा उसके बाद उसने अपनी सूंड़ कार के अन्दर डालकर देखने लगा कि उसके अन्दर कोई बैठा तो नहीं है। उसके बाद वह अपना सूंड़ ऊपर उठाकर सूँघने लगा। हवा बन्द थी इसलिये उसे छिपे हुये लोगों का पता न चला। वह चारों ओर ढूंढ़ने के पश्चात् जिस मार्ग से मोटर आई थी वह उसी मार्ग की ओर चला गया।

हाथी बड़ी सावधानी तथा चुपके के साथ चलता है। उसके चलने में किञ्चित मात्र भी आवाज़ नहीं पैदा होती है। वह समूह के समूह एकाएक मनुष्य के सामने उस समय आ जाते हैं जब मनुष्य के उसके आगमन की आहट कदापि मालूम नहीं होती है।

हाथी घने जङ्गल, बृक्षों के बन, कंटीली झाड़ियों और हाथी-घास (बड़ी ऊँची घास) के मध्य रहा करते हैं। हाथी घास १५ फुट तक ऊँची होती है। हाथी करँगो उगान्दा, केन्या, टैंगानीका, हिन्दुस्तान, वरमा और बोरनिओ द्वीप में पाये जाते हैं। हाथी शीत की भी कुछ चिन्ता नहीं करता है। वह १० हजार फुट ऊँचे पर्वतों के ऊपर बांस के बनों में भी देखा गया है जहां कठिन शीत पड़ती है।

हाथी बनों में बड़े बड़े समूहों में रहते हैं। उनका समूह ३०० हाथियों तक का होता है। हाथियों का समूह बन के अन्दर अपने बनाये हुये मार्ग पर चलता है। समूह के आगे एक बड़ा नर हाथी होता है उसके पीछे मादा, बच्चे होते हैं। कभी कभी हाथियों के समूह में मादा और बच्चे ही होते हैं। जब बच्चे समूह के बीच में चलते हैं तो वह बड़े मुर्दा से लगते हैं। छोटे बच्चे लगभग ३ फिट ऊँचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। जब समूह किसी भय के कारण एकाएक घूम पड़ता है तो यह छोटे बच्चे बड़ी सावधानी के साथ अपने को अपने बड़ों के नीचे कुचले जाने से बचा लेते हैं। बच्चों को माँ चलते चलते उलट उलट कर देखती रहती हैं। जब बच्चे अपनी माँ को प्यार दिखाना चाहते हैं तो वह अपना छोटा सूँड़ अपनी माँ के बड़े सूँड़ के ऊपर रख देते हैं।

हाथी के छोटे बच्चे कभी कभी आपस में एक दूसरे से सूंड़ द्वारा लड़ते भी हैं। वह जब एक दूसरे को प्यार करना अथवा चूमना चाहते हैं तो आपस में सूड़ों को लपेट देते हैं।

हाथी के थन गाय अथवा और दूसरे जानवरों की भांति पीछे के पैरों के समीप नहीं होते हैं वह आगे की ओर आगे के दोनों पैरों के मध्य में होते हैं। जब हाथी का बच्चा दूध पीना चाहता है तो वह अपनी मां के नीचे खड़ा हो जाता है और अपना सूंड़ पीछे की ओर फेंक कर मुँह से दूध पीता है।

हाथी अपने स्नान करने के लिये स्थान नियत रखते हैं। स्नान करने के बाद वह एक नियत वृक्ष अथवा चट्टान पर अपना शरीर रगड़ते हैं। शरीर की रगड़ से वह वृक्ष और चट्टान चिकने हो जाते हैं।

हाथी नहाना बहुत पसंद करता है वह छिछले पानी में जाकर घंटों नहाता है। वह अपने सूंड़ से अपने ऊपर पानी फेंक फेंक कर नहाता है। पानी के अन्दर वह अपना सिर और पानी के ऊपर सूँड़ करके लेट भी जाता है। हाथी अधिक समय तक गर्मी के कारण नहाता है। वह स्वच्छता के कारण नहीं नहाता है क्योंकि देखा गया है कि जब वह नहा कर पानी के बाहर निकलता है तो पानी की भांति ही वह सूँड़ में भर कर गर्द भी अपने ऊपर फेंकने लगता है।

जब हाथी पिछले स्थान पर गड्ढा बनाना चाहता है तो वह अपनी सूंड़ से बालू निकाल निकाल कर अपने पीछे फेंकता जाता है और जब एक बड़ा गड्ढा बन जाता है तो भर पेट वह वहां पानी पीता है।

हाथी बड़ा समझदार जानवर होता है जब उसे किसी स्थान पर खतरा मालूम होता है तो वह उस स्थान पर नहीं जाता है। पानी के अन्दर उसे घड़ियाल का भय होता है इसलिये पानी में समझ बूझ कर फूंक फूंक कर पैर रखता है। जिस स्थान पर कीचड़ होती है वहां पर वह नहीं जाता है फिसलने वाली भूमि पर वह पेड़ की टहनियां तोड़ तोड़ कर अपने पैर के नीचे रखता हुआ चलता है परन्तु मालूम होता है कि हाथी सारी चतुराई अपने जीवन में ही अभ्यास करके सीखता है क्योंकि हाथी का छोटा बच्चा सभी प्रकार की वस्तुओं के जानने का इच्छुक होता है। वह जिस किसी नई वस्तु को देखता है उसे बार बार दौड़ दौड़ कर देखता है और जब तक उसे पूर्ण ज्ञान नहीं होता उसकी उत्सुकता नहीं जाती है।

एक बार एक मनुष्य किसी ऊँचे स्थान पर धातु की खोज मे गया उसने ऊपर जाकर देखा कि वहां पर वह खड़ा था वहां से २० गज की दूरी पर एक हथिनी (मादर हाथी) खर्राटे लेती हुई सो रही थी उस हथिनी के साथ में बच्चा भी था। हाथी के बच्चे ने उस मनुष्य को देख लिया। देखते ही वह उत्सुकता के साथ दौड़ कर मनुष्य के समीप आया और कुछ समय तक खड़ा उसे देखता रहा। वह मनुष्य के बिलकुल समीप तक चला गया था। परन्तु फिर कुछ भय खाकर वह अपनी मां के पास भाग गया। उससे फिर भी रहा न गया और वह शीघ्र ही फिर उस मनुष्य के समीप गया परन्तु जब वह मनुष्य जैसे अजनबी का ज्ञान भली प्रकार न कर सका तो लम्बी चिग्घाड़ देकर उसने अपनी मां को जगा दिया। उस समय तक वह मनुष्य भी अपने प्राण के भय से भाग गया था। इससे मालूम होता है कि हाथी इच्छुक होता है।

हाथी कभी भी किसी दूसरे जंगली पशु पर आक्रमण करते हुये नहीं देखा गया है। जब वह जेब्रा, जिराफ तथा और दूसरे पशुओं के सामने आ जाता है तो अपने स्थान पर पैर पटकने और चिल्लाने लगता है परन्तु उसकी यह आवाज कोप से भरी नहीं होती है इसलिये प्रतीत होता है कि वह किसी भी बनैले पशु से लड़ना नहीं चाहता है परन्तु कभी कभी जब [illegible] गरज कर उस पर आक्रमण करता है तो वह भी चिग्घाड़ कर अपने पैर पटकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ अपने सूंड़ के सहारे उसे पकड़ना चाहता है। कहा जाता है कि शेर और हाथी का युद्ध देखने योग्य होता है। शेर अपने भयानक खूंख्वार पंजे से हाथी पर आक्रमण करता है और हाथी अपने सूंड़ से पकड़ कर उसे अपने पैरों के नीचे दबा कर कुचल डालना चाहता है हाथी प्राकृतिक रूप से लड़ाका पशु नहीं है। वह चुपचाप अपने मार्ग जाना चाहता है।

अफ्रीका के हाथी स्वेत चमड़े वाले आदमियों से बहुत चिढ़ते हैं इसका मुख्य कारण यह है कि स्वेत चमड़े वाले लोग वहां जाकर हाथी का शिकार बहुत करते हैं इसलिये हाथी ने उन्हें अपना शत्रु बना रक्खा है। बनों में जब हाथी मोटर को देख लेता है। तो उसे अपना बैरी समझ कर उस पर आक्रमण कर देता है।

यदि मनुष्य अचानक हाथी के समीप चला जाय और हाथी उस पर आक्रमण करने को हो तो मनुष्य को चाहिये कि वह ऐसी दिशा को भागे जिधर से वायु न चलती है। यदि कोई बुद्धि काम न दे तो फिर मनुष्य को चाहिये कि वह धूर (गर्दा) उठा कर हाथी की ओर फेंके। ऐसा करने से हाथी डर जाता है कि कहीं गर्द आँख में न पड़ जाय दूसरे वह मनुष्य को गर्द के कारण देख भी नहीं सकता है।

रूस के लिये सामग्री पहुँचाने वाले मार्ग

फारस की खाड़ी के बसरा, खुर्रम शहर, अहवाज, बन्दरशाहपुर और बुशीरे आदि बन्दरगाहों पर भारतवर्ष, आस्ट्रेलिया, अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन से आने वाले सामान के उतारने तथा रखने के लिये अच्छा प्रबन्ध है। वहां पर प्रत्येक राष्ट्र के जहाज (जिनमें स्वतंत्र डच, यूनानी और नार्वे के जहाज बड़े हैं) सामान उतारते दिखाई पड़ते हैं। इन जहाजों की समस्त सामग्री रूस के लिये ही नहीं होती है। कुछ सामान टर्की, कुछ इराक और कुछ ईरान जाता है परन्तु अधिकांश भाग सोवियट रूस को ही जाता है।

ईरान-सोव-ट्रांस संस्था का संगठन रूस ने किया है। यह संस्था उत्तरी ईरान के तबरेज़, पहेलवी, नाशर, बन्दरगाह और मेशेद आदि स्थानों पर सामान ले जाती है। सामान ले जाने के लिये प्राकृतिक रूप से ट्रान्स इरानियन रेलवे का प्रयोग किया जाता है। यह लाइन खाड़ी पर के बन्दरगाह बन्दरशापुर से कैस्पियन सागर के बन्दरगाह बन्दर शाह तक जाती है। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय रेलवे लाइन है। यह एक लाइन वाली रेलवे है। इसको दोहरी लाइन बनाने में कम से कम दो वर्ष समय लगेगा। यह एक कठिन मार्ग होकर जाती है। परन्तु इस लाइन का पुनः संगठन करने और रेल के छकड़ों के बढ़ाने से दोगुना और चौगुना अधिक सामान पहुँचाया जा सकता है।

लुढ़कने वाले यंत्र तथा लोकोमोटिव छकड़े वहां पर भारतवर्ष, इँगलैंड, आस्ट्रेलिया और हांगकांग से पहुँचाये जा रहे हैं।

इस रेलवे लाइन के दोनों सिरों पर बन्दरगाह हैं परन्तु बन्दरगाहों पर सामान उतारने चढ़ाने की सुविधायें कम हैं इसलिये शाहपुर बन्दरगाह पर जहाजों के खड़े होने तथा सामान उतारने के लिये अधिक स्थान बनाने की योजना की गई है। योजना भारतीय इञ्जीनियरों के हाथ की बनाई हुई है और भारतीय कम्पनियों द्वारा ही घाट आदि थोड़े समय में तयार कराये जावेंगे।

उत्तरी किनारे पर बन्दरगाह लगभग बिलकुल बेकार है। पिछले कुछ वर्षों में समुद्र बन्दरगाह को छोड़ कर हट गया है और केवल छोटे छिछले जहाज वहां जा सकते हैं। इसलिये सामान को किसी दूसरे स्टेशन पर पहुँचाना होगा जहां से वह कैस्पियन सागर के किसी दूसरे स्थान या काकेशस के किसी स्थान को सड़क द्वारा पहुँचाया जा सके। इसका भी प्रबन्ध किया जा चुका है।

प्रधान रेलवे लाइन तक बहुत सी सहायक छोटी रेलवे लाइनें भी बनाई जा रही हैं। उदाहरणार्थ बन्दर शाहपुर पर सामान उतारने के अतरिक्त कारून नदी के किनारे खुर्रम शहर में जहाजों द्वारा सामान उतारा जा सकता है। वहां से उत्तर की ओर अहवाज़ के बड़े रेलवे स्टेशन तक सामान नदी द्वारा पहुँचाया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। अहवाज से रेल द्वारा सामान अंदीमेश पहुँचाया जा सकता है। अंदीमेश, डिशफुल का रेलवे स्टेशन है। उसके बाद सड़क द्वारा सामान हमदम, पहलेवी और तबरेज़ को पहुँचाया जावेगा।

रेलवे मार्ग के अर्ध-उत्तरी भाग में सामान तेहरान में उतारा जा सकता है और फिर सड़क द्वारा कास्विन से पहलेवी और तबरेज को जा सकता है या सीधे बन्दरशाह को पहुँचाया जा सकता है और फिर वहां से बन्दरगाह को पहुँचाया जा सकता है। इस बन्दरगाह से अधिक सामान नहीं जा सकता परन्तु यह बन्दरगाह बन्दरशाह द्वारा भेजे जाने वाले सामान में सहायक रूप होगा।

इनके अतिरिक्त दो और ट्रान्स-इरानियन सड़क मार्ग हैं यह मार्ग कई सौ मील लम्बे हैं और केवल लारी द्वारा सामान इन मार्गों में होकर जा सकता है। मार्ग में लारियों के सफाई आदि का भी प्रबन्ध करना होगा। इनमें से एक मार्ग बुशायर-स्फहान हमदन सड़क है। यह मार्ग ईरान के मध्यवर्ती भाग होकर कैस्पियन सागर के पहलवी नामक बन्दरगाह को जाता है। इस मार्ग द्वारा अधिक मात्रा में सामान नहीं जा सकता और शीत काल के सामान ले जाने में बड़ी कठिनाई पड़ेगी। शीत-काल में यह मार्ग वरफ से जम सकता है।

दूसरा मार्ग भारतीय स्थल मार्ग है। जो बिलोचिस्तान सीमा से रेलवे लाइन से चलता है और उत्तरी-पूर्वी ईरान होकर मेशेद को जाता है। उसके बाद कैस्पियन सागर के उत्तर की ओर होकर रूस के मध्यवर्ती भाग को जाता है। इसी मार्ग द्वारा भारतीय सामग्री रूस को भेजी जा रही है।

एक दूसरा सहायक मार्ग इराक और ईरान होकर है। यह बसरा के आधुनिक बन्दरगाह से आरम्भ होता है और फिर इराक राज्य की रेलवे लाइनों होकर ६०० मील का मार्ग तै करने के बाद खानकिन के स्टेशन को पहुँचता है। यह स्टेशन ईरान की सीमा पर है। खानकिन से ६ या ८ सौ मील लम्बा मार्ग तय करने के बाद सामान पहलेवी या तबरेज़ पहुँचाया जा सकता है।

कहा जाता है कि ब्रिटिश सरकार ने बरमा सड़क की भांति पूर्वी इरान में सड़क बनाने के लिये उधार और पट्टा सम्बन्धी सहायता की मांग की है। यह सड़क भारतीय रेलवे लाइनों को रूसी रेलवे लाइनों से मिला देगी। यह सड़क सभी ऋतुओं में चालू रह सकेगी।

अमरीकन लोगों का ख्याल है कि जिस प्रकार बरमा सड़क बरमा से यूनान तक शीघ्र ही बन गई है उसी प्रकार ईरान की यह सड़क भी कुछ ही सप्ताह में बड़ी बड़ी मोटर लारियों के प्रयोग करने योग्य बन कर तयार हो जावेगी।

इस सड़क का बनना असम्भव नहीं है परन्तु इस मार्ग में फारस का दश्ते लूट वाला भाग पड़ता है। भारतवर्ष की उत्तरी-पश्चिमी रेलवे लाइन की एक शाखा बिलोचिस्तान को जाती है। यह शाखा ईरान के जहीदन नामक सीमावर्ती स्थान तक जाती है। जहीदन नगर का दूसरा नाम दुज़्दन है। जहीदन से ६०० मील धुर उत्तर की ओर सरखस नामक स्थान रूस और ईरान की सीमा पर है। सरखस स्थान को रूस की तर्कसिब रेलवे लाइन की एक शाखा आती है। जहीदन से सरखस तक का फारसी प्रदेश बड़ा जङ्गली और पहाड़ी है इसी से उसका नाम दस्तेलूट (लूट का बन) है।

युद्ध कौशल की दृष्टि से यह मार्ग बड़ा ही आवश्यक है। वर्तमान समय में तीन ही मार्ग ऐसे हैं जिनसे होकर रूस को सामान मिल सकता है १—आर्कञ्जेल होकर ट्रान्स अटलांटिक मार्ग, २—प्रशान्त महासागर का मार्ग व्लाडीवास्टक होकर—ट्रांस साइबेरियन रेलवे, ३—फारस की खाड़ी और ईरान होकर।

इनमें से प्रथम दो मार्ग शत्रु के हमले के कारण बन्द किये जा सकते हैं। यदि मास्को का पतन होता है तो आर्कञ्जेल मार्ग बड़ा दुष्कर हो जावेगा और यदि जापान युद्ध में उतरता है तो फिर व्लाडीवास्टक होकर सामान नहीं आ सकेगा और फिर इस लम्बे मार्ग द्वारा रण-स्थल पर सामान पहुँचने में बहुत समय लगेगा जो अधिक उपयोगी न सिद्ध होगा।

अब केवल फारस की खाड़ी और ईरान का मार्ग शेष रह जाता है बन्दरगाह से बन्दरशाह पुर तक ट्रान्स-इरानी रेलवे जाती है। अभी यह अकेला मार्ग है और रूसी रेलवे से मिला नहीं है। रूस जाने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक सामान जहाजों द्वारा फारस की खाड़ी के सिरे पर पहुँचाया जावेगा और फिर वहां से रेल के छकड़ों पर लदेगा। इस रेलवे के सुधार तथा इसे उत्तरी-पश्चिमी ईरान सिरे तक बढ़ाने की योजना का समाचार मिला है। परन्तु रेलवे लाइने को चौड़ा बनाने और पर्वतीय जङ्गली मार्ग होकर काट कर ले जाने में बहुत धन, समय और मजदूरों की आवश्यकता है।

इसलिये सबसे आसान यह है कि करांची में समुद्र द्वारा आया हुआ माल उतारा जावे। करांची बन्दर शाहपुर को अपेक्षा संसार के भिन्न-भिन्न भागों के अधिक समीप पड़ता है। करांची से जहीदन को सामान रेलगाड़ी द्वारा जा सकता है। यह मार्ग छोटा भी है। जहीदन से मोटर लारी द्वारा केर्मन, ब्रिजन्द और मेशेद होते हुये मेर्कास्नोवोडस्क रेलवे पर पहुँच सकता है। यह रेलवे रूसी सीमा पर है। इस प्रकार भारतीय सेना भी बिना किसी अड़चन के सीधे भेजी जा सकेगी और जहाज़ पर सामान लाद कर जहाज़ ले जाने की कठिनता भी न उठानी पड़ेगी।

इस मार्ग होकर सामान शीघ्र पहुँचेगा। साथ ही साथ यह रूसी सैनिक लाइन के पीछे काफी दूर पर होगा और यदि जर्मन काकेशिया पर पहुँच भी जावें या उत्तरी-पश्चिमी ईरान में प्रवेश कर जावें तो भी वह ईरान की पूर्वी सड़क से सैकड़ों मील की दूरी पर होंगे। पूर्वी सड़क कैस्पियन सागर के पूर्वी भाग होकर रूस में प्रवेश करेगी। इसलिये जब रूसी लोग साइबेरिया भगा दिये जावेंगे तो भी यह मार्ग शत्रु के अधिकार में आवेगा नहीं तो यह मार्ग चालू रहेगा।

वर्तमान युद्ध में सड़कें रेलवे लाइनों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। यह बात उन राष्ट्रों के लिये और भी अधिक है जैसे कि इङ्गलैंड या रूस हैं।

बम्ब वर्षक या षड्यंत्र करने वाले रेलवे लाइन (खास कर जिसमें पुल और सुरंग हो) को सरलता पूर्वक तोड़ सकते हैं जैसा कि बाल्कन में सिद्ध हो चुका है परन्तु सड़क का बन्द करना कुछ कठिन है। जापानी लोगों ने बर्मा सड़क पर नदी के पुल को तोड़ दिया परन्तु इस कार्य से मार्ग नहीं रुका है। सामान नावों द्वारा नदी पार ले जाया जाता है। जापानी लोगों के महीनों बम्ब वर्षा के पश्चात् भी अमरीकन तथा चीनी विशेषज्ञ के कथनानुसार वर्मा रोड से इतना अधिक सामान आता जाता रहा जितना कि पहले नहीं आता जाता था। पूर्वी ईरान में बम्ब वर्षा द्वारा सड़क का नष्ट करना तो और भी अधिक कठिन होगा क्योंकि वहाँ पर समतल रेगिस्तानी भाग पड़ता है और नदियाँ भी कम हैं।

पूर्वी ईरान में जहीदन से सरख्स तक की दूरी ६०० मील है। वहाँ का कारवाँ मार्ग जहीदन से आरम्भ होता है और केर्मान ब्रिजन्द और मेशेद होता हुआ सरख्स को जाता है। यद्यपि कारवाँ मार्ग की लम्बाई ६०० मील से अधिक है तो भी प्रस्ताविक सड़क इसी कारवाँ मार्ग होकर ही बननी सम्भव होगी।

इस कारवाँ मार्ग में सरख्स से मेशेद तक सड़क पर मोटर चल सकती है। मेशेद से ब्रिजन्द की दूरी ३२८ मील है प्राचीन यूनानियों का दावा था कि इस सड़क पर भी मोटरें चल सकती हैं परन्तु सैनिक सड़क, साधारण सड़क से कहीं भिन्न होती है। सैनिक सड़क को इतनी मजबूत होनी चाहिये कि जिससे बोझ से लदी हुई बड़ी लारियां उस पर तेजी के साथ दौड़ सकें।

चूँकि प्रस्ताविक सड़क-मार्ग पर कच्चा मार्ग पहले सा ही है इसलिये उसका बनाना बहुत कठिन नहीं है। ब्रिजन्द से जहीदन और भारतवर्ष का मार्ग लूट से केर्मान होकर या अधिक पूर्व की ओर नेह होकर जावेगा। इसमें केर्मान होकर सड़क बनना अधिक उपयोगी तथा सरल होगी। नेह वाला मार्ग फारसी-बिलोचिस्तान होकर जावेगा और पर्वतीय होने के कारण उसे बहुत चक्करदार बनाना पड़ेगा। केर्मान और जहीदन के मध्य वाले पर्वतीय भाग में भी यही बात करनी होगी।

कहा जाता है कि केर्मान-जहीदन सड़क होकर बैलगाड़ियां चल सकती हैं। केर्मान से जहीदन पहुँचने में उन्हें २५ या ३० दिन लग जाते हैं। इस मार्ग होकर फारस की दरी और कालीन भारतवर्ष में आती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे जिस मार्ग होकर सड़क बनाई जावे उसमें काफी स्थान ऐसे होंगे जहां सड़क को ऊपर ले जाना होगा अथवा नीचे उतारना पड़ेगा। कर्मान समुद्र के धरातल से ५,६०० फुट ऊँचा है। लूट प्रान्त का अधिकांश (कर्मान और ब्रिजन्द के मध्य का) भाग निचला है। ब्रिजन्द ४६०० और मेशेद ३१०० फुट समुद्र के धरातल से ऊँचे हैं। मेशेद और सरख्स के मध्य कई एक पर्वतीय श्रेणियां भी हैं।

जिस मार्ग पर मोटर और आदमियों को पानी अधिक प्राप्त हो सकेगा वही मार्ग अधिक पसंद किया जावेगा। बिना पानी के मोटर अथवा मनुष्य अपनी यात्रा नहीं कर सकते हैं। खासकर ईरान के नवीन मरु स्थल में यात्रा करनी तो और भी अधिक कठिन है।

जब रूस की सहायक सामग्री संसार के भिन्न भागों से रूसी रेलवे लाइन पर पहुँच जावेगी तो मेर्व रेलवे लाइन द्वारा वह सामान अश्काबाद पहुँचाया जावेगा। अश्काबाद नवीन रूसी कारखाने वाले प्रदेश का केन्द्र है। सामान क्रानोवोड्स्क भी भेजा जायगा। यहां पर तेल के कुएँ हैं और यह बाकू के सामने कैस्पियन सागर का पूर्वी तट है।

पूर्व की ओर रेलवे स्टैलिनाबाद और फरगना को जाती है जहाँ तेल के कुएँ खोदाये जा रहे हैं। ताशकेराट से रेलवे लाइनें यूराल और पश्चिमी साइबेरिया को भी जाती हैं। सचमुच ही यह नया सामान ले जाने वाला मार्ग नवीन रूस के मध्यवर्ती भाग में ले जाकर सामान उतार देगा।

इस बड़े स्थल मार्ग का पूर्वी ईरान पर क्या प्रभाव पड़ेगा इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। ब्रिजन्द नगर खुरासान प्रान्त में स्थित है। यह प्रान्त काफी बड़ा है परन्तु संसार में इसका नाम बहुत कम प्रसिद्ध है। ब्रिजन्द अपनी कालीनों, दरियों और केसर के लिये प्रसिद्ध है। कर्मान नगर के चारों ओर पक्की दीवार है। वहां शाल दुशाले और दरियां अच्छी बनती हैं। शायद इस सड़क के तयार हो जाने से पूर्वी ईरान में जागृति उत्पन्न हो जावे।

रूसी-जर्मन युद्ध

(गतांक से आगे)

जुलाई मास के अंतिम दो सप्ताह में उत्तर की ओर प्स्कोव और ओस्टोव नगरों पर जर्मन सेना ने अधिकार किया और वेलिकाया नदी पर पुल बना लिया। मध्यवर्ती क्षेत्र में घोर संग्राम हुआ और जर्मन सेना अपर नोपर नदी और स्मोलिंस्क के समीप तक पहुँच गई। दक्षिण की ओर ज्हितोमीर का रण क्षेत्र बढ़ गया।

कोरोस्टेन, वर्दीचेव और बएला, जेर्कोक (उत्तर को ओर) से दक्षिण तक भूमि पर जर्मन सेना का अधिकार हो गया और कीव नगर खतरे में हो गया। उस समय प्स्कोव, ओस्ट्रोव, विटेबेस्क और कोरोस्टेन तथा बएला जेर्कोव चार स्थानों में होकर जर्मन सेनायें रूसो सीमा पर चढ़ रही थीं।

द्वितीय आक्रमण (अगस्त-सितम्बर)

अगस्त मास के आरम्भ में जर्मन सेना का दूसरा आक्रमण आरम्भ हुआ। उत्तर की ओर विमानों की अधिकता के कारण वानलोब लूगा तथा नोगोरोड तक बढ़ा और थोड़ा अवकाश लेने के बाद तलिन तथा समस्त एस्टोनियन तट पर अधिकार करके लेनिनग्राड का घेरा डाल दिया। रूसियों ने लेनिनग्राड की रक्षा बड़ी चतुरता और वीरता से की। बाल्टिक सागरीय रूसी जल सेना ने भी आश्चर्यजनक युद्ध किया जिसके कारण लेनिनग्राड की रक्षा हुई। मध्य भाग में जनरल हाट और गूडेरियन की संरक्षता में जर्मन पैञ्जर सेना बढ़ी और स्मोलिंस्क, मोहिलेब, गोमेल और चर्नीगोव पर अधिकार जमा लिया। उत्तर की ओर से भी कीव नगर पर जर्मन सेना ने खतरा उत्पन्न कर दिया।

सबसे खतरनाक धावा दक्षिण की ओर यूक्रेन सीमा पर बस्लाजेर्कोव से यूनान की ओर जनरल वान रून्स्टेट का हुआ। उसने समस्त रूसी सेना को घुमा कर नीपर और बग नदी पर कर दिया! वहाँ रूसी सेना बड़ी तबाही और बर्बादी के बाद

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिरती घिरती बची। जर्मन सेना अपने पूर्ण वेग के साथ बढ़ती गई और क्रेमेनचुग स्थान पर उसने नीपर नदी पर पुल बनाया और कीव नगर पर दक्षिण की ओर से भी खतरा उत्पन्न कर दिया। क्रिवायरोग का लोहे का प्रदेश रूस के हाथ से निकल गया। रूसियों को मजबूर होकर नीपर नदी के बांध को नष्ट करना पड़ा और वह निकोलाएव में जहाज़ बनाने के घाटों के निर्माण करने से वञ्चित रह गये। ओडेसा नगर का घेरा डाल दिया गया।

इस प्रकार सितम्बर के अर्ध मास तक जर्मन सेना रूसी टैंक तथा विमानों की सेना को विध्वंस करती, पैदल सेना का संहार करती, सेना को कैद करती आगे बढ़ी। लेनिनग्राड पर खतरा उत्पन्न किया, ओडेसा नगर घेर लिया, कीव नगर चारों ओर से खतरे में हो गया और मास्को में लड़ाई के डंके की ध्वनि सुनाई देने लगी।

सितम्बर मास के दूसरे अर्ध भाग में उत्तर की ओर जर्मन सेना तो अधिक नहीं बढ़ सकी परन्तु दक्षिण की ओर पुनः भीषण आक्रमण हुआ और वानबोक (जर्मन) की सेना का दाहिना अंग कोनोटोव को काट कर आगे बढ़ गया और रून्स्टेट की सेना का बाम पक्ष उत्तर की ओर वानबोक की सेना से हाथ मिलाने के लिये आगे बढ़ा। इसलिये कीव नगर को खाली करना पड़ा। बड़ी कठिनाई तथा हानि के पश्चात इस बार भी रूसी सेना घेरे में पड़ने से बच सकी। अधिक दक्षिण की ओर जर्मन सेना ने नीपर नदी पार करके खर्सोन तथा पेरेकोप पर अधिकार कर लिया। जर्मन सेना आगे बढ़ती ही गई और रूसी सेना को दोनों ओर से अधिकाधिक भय बढ़ता ही चला गया।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ नवम्बर—संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जल सेना ने जर्मन समुद्री जहाज़ों पर धावा मारा।

२ नवम्बर—चेंगचाव पर चीनी सेना ने फिर अधिकार कर लिया। टर्की के सभापति ने जर्मनी को चेतावनी दिया। ब्रिटिश विमानों ने उत्तरी-पश्चिमी जर्मनी के हवाई अड्डे पर धावा मारा। वेल्स पर जर्मन बम वर्षक विमानों ने धावा किया और ६ बम वर्षक गिराये गये। मास्को के युद्ध में जर्मन सेना की प्रगति रोक दी गई। जापानी सेना ने थाई देश पर आक्रमण करने की तयारी किया। जापान की नई सरकार बनी।

३ नवम्बर—जर्मन सेना ने क्रीमिया की राजधानी सिम्फेरोपोल पर अधिकार जमाया और सेबस्टोपोल की ओर बढ़ी। टूला रण-स्थल में जर्मन सेना ने आक्रमण किया। मास्को के युद्ध की भीषण तथा जटिल स्थिति हो गई। जर्मनी के नवीन सेना विमान तथा टैंक रण-स्थल में पहुँचे।

नैपुल्स पर ब्रिटिश विमानों ने ६ घंटे तक बम वर्षा किया और इटली के जहाज डुबो दिये। योरुपीय तट पर जर्मन पथ रक्षक जहाज़ी बेड़े पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया और लगभग २० जहाज डुबो दिये।

४ नवम्बर—क्रीमिया में जर्मनी की सेना ने रूसी लाल सेना को दो भागों में विभाजित कर दिया, कुर्स्क नगर पर अधिकार कर लिया और डान नदी की ओर बढ़ी। धुरी राष्ट्रों की सेना मुर्मोन्स्क से १४ मील की दूरी पर पहुँच गई। जापानी सेना थाई सीमा पर एकत्रित हुई। राबिनमूर जहाज के डुबाने पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जर्मनी से ३० लाख डालर हर्जाना देने को कहा। मास्को रण स्थल में युद्ध हुआ। काकेशिया का युद्ध आरम्भ हुआ।

५ नवम्बर—रूसी रण क्षेत्रों में युद्ध हुआ। जर्मन सेना ने नगरों पर भीषण बम वर्षा किया। अटलांटिक सागर में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के ५० यू० बोट उतरे और उन्होंने नाज़ी पनडुब्बों की खोज की। टर्की का एक मोटर बोट टार्पीडो द्वारा डुबाया गया। आस्टेण्ड और डंकिर्क जहाजी अड्डों पर ब्रिटिश विमानों ने बम वर्षा किया।

६—मास्को रण स्थल में नया आक्रमण आरम्भ किया गया। क्रीमियां में रूसी सेना पीछे हट गई। लेनिनग्राड में भी नया आक्रमण हुआ फ्रीसियन द्वीप समूह के समीप ब्रिटिश वायुयानों ने नाज़ी समुद्री पथ रक्षक जहाजी बेड़े पर आक्रमण किया। कोरिया के समीप सुरंग से टकरा कर एक जापानी जहाज डूब गया। लिटविनोफ रूस का राजदूत बना कर संयुक्त राष्ट्र भेजा गया।

७ नवम्बर—क्रीमिया में जर्मन सेना आगे बढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेनिनग्राड सीमा पर नाजी सेना ने आक्रमण किया। मास्को के चारों ओर भीषण युद्ध हुआ। संयुक्त राष्ट्र ने रूस को १० हज़ार लाख डालर ऋण दिया।

८ नवम्बर—फिनलैंड ने रूस में युद्ध जारी रखने का निर्णय किया। हैङ्गो सोवियट जहाजी अड्डा खाली कर दिया गया। नाजी सेना मास्को नगर की ओर बढ़ी और मध्यवर्ती रण स्थल में मार्ग बना लिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सेनेट ने तटस्थता नीति में परिवर्तन किया और अपने जहाजों को रण स्थल की सीमा में प्रवेश करने तथा व्यापारिक जहाज़ों को सशस्त्र होने की आज्ञा दिया। बर्लिन पर हवाई आक्रमण हुआ। आइसलैंड में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अड्डे बनाये गये।

९ नवम्बर—मास्को सीमा पर जर्मन आक्रमण रोक दिया गया। कर्च के मैदान में नाज़ी सेना ने प्रवेश किया। स्टेलिन नहर पर रूसी सेना ने नई रक्षक लाइन का निर्माण किया। ब्रिटिश विमानों ने जर्मनी के नगरों पर भीषण आक्रमण किया और आक्रमण के पश्चात् ३५ विमान लौट कर नहीं आये। म्युनिक में हिटलर भाषण देते हुये कहा कि उसे अंतिम विजय का पूर्ण विश्वास है। रूम सागर में समुद्री युद्ध हुआ जिसमें धुरी राष्ट्रों के ९ जहाज़ डुबाये गये।

१०नवम्बर—दक्षिणी क्रीमिया में जर्मन सेना आगे बढ़ी और माल्टा नगर पर अधिकार कर लिया। मास्को सीमा पर जर्मन सेना रोक दी गई। लेनिनग्राड सीमा पर रूसी सेना ने जर्मन सेना के प्रतिकूल आक्रमण किया। भारत में स्टेट की कौंसिल में होम विभाग के मन्त्री कोनरन स्मिथ ने सुभाषचन्द्र बोस के सम्बन्ध में उत्तर देते हुये बतलाया कि वह रोम अथवा बर्लिन में हैं और उन्होंने धुरी राष्ट्रों के साथ संधि कर लिया है। मिस्टर चर्चिल ने मैनशियन हाउस में भाषण देते हुये कहा कि युद्ध सुदूर पूर्व की ओर अगर फैलेगा तो ब्रिटेन अमरीका का साथ जापान के विरुद्ध देगा।

११ नवम्बर—जर्मन सेना सेबस्टोपोल के समीप पहुँची। लेनिनग्राड नगर को नाजी सेना ने घेरने का प्रयत्न किया। मोजेस्क के समीप रूसी तथा नाजी सेना में भीषण संग्राम हुआ और "एस" के समीप जर्मन सेना को रूसी सेना ने घेर लिया। कैले तथा दूसरे नगरों पर ब्रिटिश तोपों द्वारा गोलेबारी की गई। रूम सागर में ब्रिटिश पनडुब्बे ने एक जर्मन जहाज डुबो दिया। प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने जापान के प्रस्ताव अस्वीकार कर दिये।

१२ नवम्बर—मास्को के समीप रूसी तथा जर्मन सेना में नदी में युद्ध हुआ। तीन जर्मन जनरल मारे गये, उत्तर की ओर रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किये। नाज़ी सेना केर्च की ओर बढ़ी। सुदूर पूर्व के युद्ध के सम्बन्ध में चर्चिल ने जो भाषण दिया था उस पर अपना असंतोष प्रगट किया।

१३ नवम्बर—मिस्टर चर्चिल ने कामन्स सभा में भाषण दिया और बतलाया कि डूबने वाले जहाज़ों की संख्या कम हुई है। सभी रूसी रण-स्थलों में जर्मन सेना का आक्रमण रोक दिया गया। रूसी सेना ने भीषण प्रतिकूल आक्रमण किये। मास्को और सेबस्टोपोल पर नाज़ी विमानों ने बम वर्षा किया। मेनीला बन्दरगाह के समीप स्पेन का एक जहाज़ डुबो दिया गया।

१४ नवम्बर—जर्मन सेना केर्च के द्वार पर पहुँच गई। रोस्टोव की ओर जर्मन सेना की प्रगति रोक दी गई। मास्को सीमा में रूसी सेना को प्रतिकूल आक्रमण में सफलता प्राप्त हुई। मुर्मान्सक क्षेत्र में युद्ध हुआ। आर्क राएल नामक विमान ढोने वाला प्रसिद्ध ब्रिटिश जहाज़ जिब्राल्टर के समीप डुबो दिया गया।

१५ नवम्बर—जापान युद्ध के लिये तयार हुआ और उसने अपने सैनिक व्यय को तिगुना कर दिया। उत्तरी अटलांटिक सागर में यू० बोटों के आक्रमण के कारण ब्रिटिश पथ रक्षक जहाज़ी बेड़े के १० जहाज़ डुबाये गये। नैपुल्स और सिसली पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया रूसी क्षेत्रों में भीषण युद्ध हुआ।

१६ नवम्बर—मास्को का युद्ध पुनः आरम्भ हो गया और कई जर्मन सेना ने आक्रमण किया। कलीलिन क्षेत्र में भीषण संग्राम हुआ। सोवियट प्रतिकूल आक्रमण से नाज़ी सेना पीछे हटा दी गई। फिनिश सीमा पर विकट मार काट हुई। क्रीमिया में जर्मन सेना केर्च और सेबस्टोपोल के चारों ओर पहुँच गई। जापान का विशेष दल कुरूसू वाशिंगटन पहुँच गया। वह सभापति रूज़वेल्ट से बात चीत करने वाला है। जापानी डाएट (राज्य सभा) की विशेष बैठक हुई।

१७ नवम्बर—रूस में भीषण शीत के कारण जर्मन सेना तथा टैंक जम गये। मास्को के बाहर नाज़ी सेना ने किले बन्दी किया। लेनिनग्राड-वोलोग्डा रेलवे लाइन काट दी गई। पश्चिमी मास्को में नई सेना का संगठन किया गया। क्रीमिया के मज़बूत किलों पर नाज़ी अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया। लन्दन के पत्रों ने भारतवर्ष की समस्या को सुलझाने के लिये ज़ोर दिया। दक्षिणी अटलांटिक में अमरीकन जहाज़ों ने नाज़ी जहाज़ पकड़ लिया।

१८ नवम्बर—टूला में रूसी सेना ने मज़बूती के साथ अपना संगठन किया। नाज़ी बम वर्षकों ने काकेशिया बन्दरगाहों पर बम गिराये। डोनेज़ बेसिन के लिये युद्ध हुआ। रूसियों ने केर्च खाली कर दिया। जर्मन हवाई सेना के जनरल यूडेट की मृत्यु हुई।

१९ नवम्बर—साइरेनीका में ब्रिटिश सेना ५० मील अचानक बढ़ गई और हलफ़ाया पर समुद्री जहाज़ों ने गोले बारी किया। केर्च प्रान्त में रूसी सेना पीछे हटी। वहां जर्मनी के हाथ हज़ारों सैनिक तथा बहुत सा सैनिक सामान आया। मास्को सीमा पर विकट संग्राम हुआ।

२० नवम्बर—रूसी रण-स्थल में भीषण लड़ाई हुई। कामन्स सभा में चर्चिल ने भाषण दिया कि जर्मनी का सामना डट कर किया जावेगा। रूम सागर में ब्रिटिश पनडुब्बे ने नाज़ी जहाज डुबोया और जिब्राल्टर के समीप नाज़ी यूबोट डुबोया गया।

२१ नवम्बर—साइरेनीका में ब्रिटिश सेना की जीत हुई और रेज़ेग जीत लिया गया। सेना तोब्रक के समीप पहुँच गई। एलगोबी के समीप इटली की सेना से संघर्ष हुआ। थाई सीमा पर जापानी सेना का प्रदर्शन हुआ। लीबिया की लड़ाई में कई सौ नाज़ी सैनिक पकड़े गये।

२२ नवम्बर—मास्को की ओर बढ़ने के लिये नाज़ी सेना ने भीषण युद्ध किया। टूला के पश्चिम की ओर भयंकर स्थिति हो गई। मजोस्क प्रान्त में नाज़ी सेना की विजय हुई। रोस्टोव में भयंकर युद्ध हुआ और जर्मनी ने उस पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश सेना ने कपूज़ा क़िले पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश सेना तोब्रक से शत्रु सेना का सामना करने के लिये बढ़ी और शत्रु के साथ टैंकों का युद्ध किया गया। मास्को की परिस्थिति जटिल हो गई।

२३ नवम्बर—मास्को की ओर बढ़ने वाली जर्मन सेना रोक दी गई। टूला के समीप नाज़ी सेना ने रूसी सैनिक लाइन तोड़ दिया। रोस्टोव की दक्षिणी रक्षक लाइनें तोड़ दी गईं। संयुक्त राष्ट्र में सुदूर पूर्व के प्रश्न को तय करने के लिये सभा किया। रूम सागर में ब्रिटिश जहाज़ों ने दो सामान ले जाने वाले और एक क्रूज़र जर्मन जहाज़ों को डुबो दिया।

२४ नवम्बर—लीबिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी और उसने नाज़ी सेना को कई भागों में विभाजित कर दिया। बार्दिया और सिदी उमर नुओवा पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। नाज़ी टैंकों और पिट्रौल लारियों पर बम गिराये गये। साइरेनीका में नाज़ी सेना घेर ली गई। डच ग्याना में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेना भेजी गई।

२५ नवम्बर—रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण करके जर्मन सेना को दक्षिण की ओर ढकेल दिया। मास्को के समीप युद्ध की परिस्थिति जटिल हो गई। मोजेस्क क्षेत्र से रूसी सेना हट गई। लेनिनग्राड क्षेत्र में रूसी सेना की विजय हुई। लीबिया के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने गिआला ओसिस पर अधिकार कर लिया। रूम सागर में ब्रिटिश जहाज़ों ने जर्मन पथ रक्षक जहाजों को डुबाया। जापानी लोग बटाविया से चले गये। थाईलैंड में जटिल समस्या उत्पन्न हो गई और प्रशान्त महासागरीय युद्ध की सम्भावना प्रतीत हुई।

२६ नवम्बर—जापान और संयुक्त राष्ट्र की सुलह वाली बातचीत का विच्छेद हो गया। ब्रेस्ट और चेरबर्ग पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। मास्को क्षेत्र में टैंकों का भीषण युद्ध हुआ। लीबिया में नाज़ी सेना की हार हुई। ब्रिटिश सेना ने बम वर्षा करके टैंकों तथा लारियों को नष्ट कर डाला। जापान में रहने वाले अमरीकन नागरिकों को आज्ञा दी गई कि वह शीघ्रातिशीघ्र जापान छोड़ कर चले जांय।

२७ नवम्बर—मास्को नगर की रक्षा के लिये रूसी सेना ने भयंकर महासमर किया। वोलाको मास्क की परिस्थिति जटिल हुई। टूला को घेरने के लिये नाज़ी सेना ने प्रयत्न किया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सेनाध्यक्ष ने क्वेज़ोन से बातचीत की और सुदूर पूर्व की स्थिति को डंवांडोल बतलाया।

२८ नवम्बर—सुदूर पूर्व की ओर युद्ध ज्वाला के भड़कने की सम्भावना प्रतीत हुई। थाई देश पर भीषण आक्रमण करने के लिये जापानी सेना एकत्रित की गई। हेग के समीप ब्रिटिश विमानों ने धावा मार कर जर्मनी के सामान ले जाने वाले जहाज को डुबो दिया। लीबिया के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने रेजेग पर अधिकार कर लिया। मरुस्थल में भीषण टैंक युद्ध हुआ। वाशिंगटन में जापानी राजदूत ने रूज़वेल्ट से बातचीत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ नवम्बर—अमरीका ने जापान को चेतावनी दिया कि वह चीन और इण्डोचीन से अपना हाथ हटा ले। जापानी मन्त्री मण्डल ने अमरीका की चेतावनी पर वाद-विवाद किया। कलेनिन और रोस्टोव क्षेत्रों में लाल सेना को सफलता प्राप्त हुई। विची सरकार ने हिटलर की बात स्वीकार करके ठाउलोन और बिजेर्टा हवाई अड्डों को जर्मनी को दे दिया। गोंडर (लीबिया मरुस्थल) के किले ने मित्र सेना के सामने आत्म समर्पण कर दिया।

१ दिसम्बर—साइरेनीका में सिदी रेज़ेक के चारों ओर ब्रिटिश तथा जर्मन सेना में घोर संग्राम हुआ। उत्तरी अटलांटिक सागर में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का मैक्बेथ नामक जहाज़ डुबाया गया। डोनेज़ बेसिन में सोवियट सेना ने धावा मारा, उत्तरी रण स्थल में घोर संग्राम हुआ। दक्षिणी अटलांटिक महासागर में एक जर्मन जहाज़ डुबाया गया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जापान का ब्लाकेड करने की धमकी दी।

२ दिसम्बर—जर्मन सेना मास्को से ३६ मील दूरी पर पहुँच गई। नाज़ी सेना रोस्टोव से हटाई गई। मंचूको सीमा पर रूसी तथा जापानी सेना में कुछ झगड़ा हो गया। आस्ट्रेलिया के समीप आस्ट्रेलिया का सिडनी नामक क्रूशियर जहाज़ डुबाया गया। सीदी रेज़ग पर ब्रिटिश सेना का पुनः अधिकार हो गया। डिंगडोंग में ब्रिटिश तथा जर्मन सेना में युद्ध हुआ। प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने जापान से इण्डोचीन में सेना भेजने के सम्बन्ध में संतोषजनक उत्तर मांगा।

३ दिसम्बर—पं० जवाहरलाल तथा ३ हज़ार दूसरे सत्याग्रही कैदी भारतीय जेलों से सरकारी घोषणा के अनुसार छोड़े गये। अमरीका ने पट्टा सम्बन्धी ऋण टर्की को देने के लिये कहा। टर्की ने सहायता मिलने पर जर्मन आक्रमण का सामना करने का विश्वास दिलाया।

मास्को सीमा में जर्मन सेना और अधिक आगे बढ़ी। टूला क्षेत्र में रूसी सेना ने जवाबी हमले किये। सिंगापुर में ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े के पहुँच जाने से ए० बी० सी० डी० राष्ट्रों की शक्ति मज़बूत हो गई।

४ दिसम्बर—फिनलैंड की सेना ने हैंगो पर अधिकार कर लिया। पेटेन-गोरिंग समझौते के अनुसार अफ्रीका में जर्मन हवाई तथा जहाज़ी अड्डे बनेंगे और जर्मन सेना तथा सामग्री ट्यूनिस होकर जायेगी।

५ दिसम्बर—जापान ने प्रेसीडेन्ट के प्रश्नों का उत्तर भेजा। पूर्वी परिस्थिति डावांडोल हो गई। ब्रिटेन ने फिनलैण्ड, हंग्री और रूमानिया पर युद्ध घोषणा किया। टागानरोग की रक्षक लाइन को तोड़ कर रूसी सेना घुस गई और सैकड़ों गांवों पर अधिकार कर लिया। मास्को सीमा में घोर युद्ध हुआ। मास्को के उत्तरी आने जाने वाले मार्गों को काट देने के लिये जर्मन सेना ने प्रयत्न किया। तोबरुक के चारों ओर ब्रिटिश सेना पहुंच गई। फ्रान्सीसी तट पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मार कर कई जहाज़ नष्ट कर दिये।

६ दिसम्बर—दक्षिणी अटलांटिक सागर में नाज़ी आक्रमणकारी जहाज डुबाया गया। मास्को के चारों ओर घोर संग्राम हुआ। जर्मन सेना टूला-मास्को रेलवे लाइन पर पहुँच गई। टागानरोग में सोवियट सेना ने जवाबी हमले किये।

७ दिसम्बर—एलदूदा में ब्रिटिश सेना को सफलता प्राप्त हुई। जापान ने इण्डोचीन में और अधिक सेना भेजी। प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने जापान के सम्राट को समाचार भेजा।

८ दिसम्बर—जापान ने इङ्गलैण्ड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका पर ६ बजे प्रातःकाल युद्ध घोषणा किया। थाईलैण्ड में जापानी सेनायें प्रवेश कर गईं। जापानी सेना मलय में उतर गई। पर्ल हार्बर, मनिल्ला, ग्वाम, होनोलूलू, हवाई और सिंगापुर में जापानी हवाई तथा समुद्री आक्रमण हुये। सिंगापुर में दो जहाज़ डुबाये गये। मनिल्ला के समीप एक जापानी विमान वाहक जहाज़ नष्ट किया गया। पूर्वी प्रशान्त महासागर में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक जहाज़ डुबाया गया। वेक द्वीप और शंघाई नगर पर जापानियों ने अधिकार कर लिया। हांगकांग पर बम वर्षा की गई।

कलेनिन के कुछ भाग पर रूसी सेना ने अधिकार किया

९ दिसम्बर—ब्रिटिश सेना थाई देश में घुस पड़ी। सिंगापुर मे गैस के बम्ब गिराये गये। हांगकांग पर जापानी विमानों ने बम्ब वर्षा की। लुबंग द्वीप पर जापानी सेना उतरी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक और विध्वंस कारक जहाज़ डुबाया गया। थाई देश ने ५ घंटे तक जापानी सेना का सामना करने के पश्चात् अपने देश होकर जापानी सेना को जाने का मार्ग दे दिया। उत्तरी मलाया में ब्रिटिश तथा जापानी सेनाओं में घोर संग्राम हुआ। जापानी जहाज़ों ने हांगकांग का घेरा डाल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीदी रेज़ेग पर ब्रिटिश अधिकार हुआ तथा लिबिया में शत्रु सेना से घोर संग्राम किया। कलेनिन प्रान्त में रूसी सेना ने जर्मन सेना का बहादुरी से सामना किया और टूला-सेपूखोव सड़क से नाज़ी सेना को हटा दिया।

१० दिस०—संयुक्तराष्ट्र अमरीका के विमानों ने टोकियो पर बम वर्षा किया। जापानी सेना बर्मा रोड की ओर बढ़ी मलय में भीषण संग्राम हुआ। लूजन द्वीप में जापानी सेना उतरी। मनिल्ला और मिडवे द्वीपों पर बम बर्षा की गई। रूसी सेना ने तिखविन पर पुनः अधिकार जमा लिया। मास्को सीमा पर रूसी सेना का जवाबी धावा हुआ।

फिलीपाइन द्वीप पर जापानी सेना ने आक्रमण कर दिया।

जापानियों ने ब्रिटेन के प्रिंस आफ वेल्स तथा रिपल्स नामक लड़ाका जहाज़ों को डुबो दिया।

११ दिसम्बर—हरूना नामक जापानी लड़ाका जहाज़ मनिल्ला के समीप बम द्वारा जलाया गया। ओरेल के समीप एलेटस पर रूसी सेना ने अधिकार जमा लिया। एल अदम पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया जिससे तोबरक का घेरा कम हो गया।

जर्मनी और इटली ने भी संयुक्त राष्ट्र अमरीका पर युद्ध घोषणा किया। इटली, जापान और जर्मनी के मध्य सैनिक संधि हुई। टनासिरम पर जापानी आक्रमण हुआ और कोटा बहरू पर जापानी अधिकार हो गया। ग्वाम द्वीप को जापान ने ले लिया। दो जापानी लड़ाका जहाज़ डुबाये गये।

१२ दिसम्बर—रूसी सीमाओं पर घोर संग्राम हुआ। मास्को सीमा में रूसी सेना को विजय हुई और कई एक नगरों पर उनका अधिकार हो गया। दक्षिण की ओर भी रूसी सेना आगे बढ़ी। जापान और थाई देश के बीच सैनिक संधि हुई। पेनांग और हांगकांग पर भीषण जापानी आक्रमण हुये।

१३ दिसम्बर—जापानी बम बर्षक जहाज़ रंगून जाते हुये भगा दिये गये। पश्चिमी मलय से ब्रिटिश सेना हटी। ग्वाम पर जापान का अधिकार हो गया। ४ जापानी सेना ले जाने वाले जहाज़ डुबाये गये। भूमध्य सागर में दो इटैलियन जहाज़ डुबाये गये। ग़ज़ाला क्षेत्र में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

१४ दिसम्बर—थाई देश की ओर से जापानी सेनायें बर्मा की भूमि में प्रवेश कर गईं। टनासिरम पर फिर बम्ब बर्षा की गई। फारमूसा पर मित्र विमानों ने धावा मारा। आत्म समर्पण करने से इन्कार करने पर जापानी सेना ने हांगकांग पर आक्रमण आरम्भ कर दिये।

१५ दिसम्बर—मास्को सीमा में सोवियट सेना ने ४०० गांवों पर अधिकार कर लिया सेबस्तोपोल पर जर्मन सेना ने गोलाबारी किया। जापानी सेना मलय में और आगे बढ़ी और रक्षक लाइन को पार कर गई। जापानी सेना उत्तरी बोर्नियो में उतर गई। कोवलून पर जापानियों का अधिकार हो गया। हांगकांग के घेरे का श्रीगणेश जापानियों ने कर दिया। लूजन द्वीप में युद्ध हुआ।

१६ दिसम्बर—गज़ाला के दक्षिण भारतीय सेना बढ़ी। रूसी सेना ने कलेलिन और क्लिन पर अधिकार कर लिया। हटती हुई नाज़ी सेना पर रूसी सेना ने भीषण आक्रमण किया।

पर्ल हार्बर पर जापान का अचानक धावा हुआ जिससे २७२९ अमरीकन सैनिक अफसर तथा आदमी मारे गये फिलीपाइन तथा हवाई द्वीपों पर बम बर्षा तथा गोलेबारी की गई।

१७ दिसम्बर—सोवियट सेना के हाथ मास्को सीमा में बहुत सा जर्मन सामान लगा। १५ नाज़ी विमान गिराये गये। केलांतन के समीप जापानी सेना रोकी गई। उत्तरी मलय में केदाह-पेनांग सड़क पर जापानी सेना आगे बढ़ी। यद्यपि हांगकांग पर भीषण अग्नि बर्षा की गई तो भी वहां के गवरनर ने आत्म समर्पण से इन्कार किया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने कर्नल नाक्स की रिपोर्ट पर हवाई से अपने प्रधान सेनापति एडमिरल हसबेंड ई० किमेल को हटा दिया। रूस के रण-स्थल में रूसी सेनाओं ने जर्मन सेनाओं को भगाया।

१८ दिसम्बर—मलय में वेलेज़ली प्रान्त में ब्रिटिश सेना हटाई गई। पेनांग का मार्ग काट दिया गया। बरमा में और अधिक भारतीय सेना पहुँची। साइरेनिका में धुरी सीमा तोड़ दी गई और भागती हुई जर्मन सेना पर पीछे से ब्रिटिश सेना ने धावा मारा। जापानियों ने बरमा सड़क पर बम वर्षा की।

१९ दिसम्बर—हांगकांग पर जापानी अधिकार हो गया। मलय में जापानी सेना का बढ़ना रोक दिया गया। पेनांग खाली कर दिया गया। कवाइट पर बम बर्षा की गई। कोनिनग्राड के समीपवर्ती रेलवे स्टेशनों पर रूसी सेना ने अधिकार कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ दिसम्बर—डच पूर्वी द्वीप समूह के पास तीन जापानी जहाज़ डुबा दिये गये। रूसी सेना ने और अधिक गांवों पर अधिकार किया। हिटलर ने अपने प्रधान ब्राचिटस को अलग कर दिया। लन्दन के तटीय प्रदेश में हवाई आक्रमण हुआ। शत्रु सेना का पीछा करते हुये ब्रिटिश सेना बेंगाजी के समीप पहुँच गई।

२२ दिसम्बर—ब्रिटिश प्रधान मन्त्री वाशिंगटन में जाकर प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट से मिले और युद्ध के सम्बन्ध में परामर्श किया। मलय में ब्रिटिश सेना हटाई गई। फिलीपाइन की ओर जापान का बड़ा जहाज़ी बेड़ा जाता हुआ देखा गया। संयुक्त राष्ट्र के टैंकर जहाज़ों पर आक्रमण हुआ। प्रशान्त महासागर में जापानी डुबुकनी किश्तियां पहुँच गईं।

२३—फिलीपाइन में ८० हज़ार जापानी सेना उतरी। मनिल्ला से १०० मील की दूरी पर युद्ध हुआ। मलय में ब्रिटिश सेना ने हट कर नई रक्षक लाइन बनाई। रूसी रणक्षेत्र में रूसी सेना ने १०० गांवों पर अधिकार किया। लीबिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

२४ दिसम्बर—जापानी बम बर्षकों ने रंगून पर बम वर्षा किया जिससे नगर के कई भाग में आग लग गई। चर्चिल-रूज़वेल्ट सम्मेलन हुआ।

२५ दिसम्बर—फिलीपाइन में और अधिक जापानी सेना उतरी। यहां के अमरीकन प्रधान सेनापति ने रणक्षेत्र में स्वयं सेना का निरीक्षण किया। सरावक (बोर्नियो) के समीप जापानी लड़ाका जहाज़ दिखाई पड़ा। वाशिंगटन में मित्र राष्ट्र के युद्ध-समिति की बैठक हुई। रूसी रणक्षेत्र में आगे बढ़े।

३० दिसम्बर—मनिल्ला की ओर जापानी सेना बढ़ी। सिंगापुर पर चार हवाई आक्रमण हुये और वहाँ मार्शलला की घोषणा की गई। मलय में भीषण युद्ध हुआ। क्रीमिया में रूसी सेना ने कर्च और फ्यूडेशिया पर फिर अधिकार कर लिया। अलास्का के समीप जापानी लड़ाका जहाज़ देखा गया। कई एक ब्रिटिश नगरों पर हवाई आक्रमण हुआ।

१ जनवरी १९४२ ई०—दक्षिणी बरमा में मरगुई में जापानी सेना ने प्रवेश करने का प्रयत्न किया। मोलमोन क्षेत्र में हवाई युद्ध हुआ जिससे शत्रु के ७ जहाज़ गिराये गये। सिंगापुर पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

२ जनवरी—क्वान्टन पर जापानी अधिकार हो गया। इपोह से दक्षिण की ओर जापानी सेना बढ़ी। मनिल्ला में अमरीकन सेना के पीछे हट जाने से दशा खतरनाक हो गई। सिंगापुर और क्वालालुम्पुर पर जापानियों ने हवाई आक्रमण किया। रूसी सेना ने कालूगा पर अधिकार कर लिया। मास्को के दक्षिण जर्मन सैनिक रक्षक लाइन तोड़ दी गई और रूसी सेना ने शत्रु सेना की हानि की।

३ जनवरी—मनिल्ला पर जापानियों का अधिकार हो गया। कवाइट जहाज़ी अड्डा अमरीका ने खाली कर दिया। मलय में जापानी सेना आगे बढ़ी और सेलंगोर के समीप पहुँच गई। सिंगापुर पर हवाई आक्रमण हुआ। भूमध्य सागर में शत्रु ने एक ब्रिटिश विध्वंस कारक तथा क्रूशियर जहाज़ डुबा दिये। लिबिया के समीप तीन शत्रु यू-बोट डुबा दिये गये। मालोयारो स्लावेज़ पर रूसी सेना ने अधिकार कर लिया।

४—जनवरी—दक्षिणी-पश्चमी प्रशान्त महासागर का प्रधान सेनापति बावेल बनाया गया। पेराक सीमा (मलय) में शत्रु सेना आगे बढ़ी। रंगून पर रात को कई बार हवाई आक्रमण हुये। मोलमीन पर जापानी विमानों ने मशीनगन से गोलेबारी किया। उत्तरी बोर्नियो में शत्रु सेना उतरी। मोजेस्क की ओर रूसी सेना बढ़ी।

५ जनवरी—रंगून पर जापानी विमानों का लगातार आक्रमण और हवाई युद्ध हुआ जिससे ६० शत्रु विमान गिराये गये। मलय के पश्चिमी तट पर जापानी सेना उतरी। ब्रिटिश सेना इपोह के दक्षिण हटी। मनिल्ला के उत्तर की ओर अमरीकन सेना ने शत्रु सेना को मार भगाया। अफ्रीका और रूसी रण स्थल में शत्रु की हार हुई।

६ जनवरी—जापानी सेना क्वाला मेलंगो (मलय) में पहुँच गई जिससे क्वाला लुम्पुर खतरे में पड़ गया। मोलमीन, सिंगापुर और जोहोर पर हवाई आक्रमण हुये। कुर्स्क की ओर रूसी सेना बढ़ी।

७ जनवरी—हल्फाया के क़िलों पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया। फिनिश खाड़ी में सोवियट सेना उतरी और मोजेस्क पर अधिकार कर लिया। मलय में जापानी सेना आगे बढ़ी और सिंगापुर तथा बरमा पर हवाई आक्रमण हुये।

८ जनवरी—मलय में ब्रिटिश सेना ने नये स्थान ग्रहण किये। जापानियों ने रंगून पर फिर हवाई आक्रमण किया। फिलीपाइन में भीषण युद्ध हुआ। स्मोलेंस्क के मार्ग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसी सेना आगे बढ़ी। जेदाबावा से जर्मन सेना हटी। ब्रिटिश सेना ने उसका पीछा किया।

९ जनवरी—पश्चिमी मलय में जापानी सेना आगे बढ़ी। सेलंगोर के दक्षिण जापानी सेना उतरी। बंकाक पर शत्रु का हवाई धावा हुआ। गलाटिया नामक ब्रिटिश क्रूशियर जहाज डुबाया गया। अघीला (लिबिया) से शत्रु सेना हटी।

१० जनवरी—जोत्रर पेराक में जापानी सेना का आक्रमण हुआ। सिंगापुर पर हवाई धावा हुआ। फिलीपाइन में अमरीकन सेना ने जापानियों का भीषण सामना किया। रूसी क्षेत्र में जर्मन सेना पर रूसी सेना के जवाबी आक्रमण हुये जिससे शत्रु सेना को लेने के देने पड़ गये। क्वाला लुम्पुर (मलय) का भीषण युद्ध हुआ। मलय पूर्वी तट पर नई जापानी सेना उतरी। रंगून के समीप हवाई अड्डे पर जापानी विमानों का धावा हुआ।

११ जनवरी—डच पूर्वी द्वीप समूह पर जापानी सेना ने आक्रमण किया। तराकन में जापानी सेना उतर गई। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जहाज़ी अड्डों पर जापानी जहाज़ों ने गोलेबारी किया। रूसी सेना ने और अधिक नगरों पर अधिकार कर लिया।

१२ जनवरी—जापानी भीषण हवाई आक्रमण पूर्वी क्षेत्र में हुये। मित्र राष्ट्रों की दशा शोचनीय हो गई।

१३ जनवरी—ब्रिटिश सेना ने क्वाला लुम्पुर खाली कर दिया। ताराकन की दशा शोचनीय हो गई। मिन्हासा और ताराकन द्वीपों की रक्षा शत्रु के सामने करनी कठिन हो गई। रूसी रण क्षेत्र में मास्को की ओर रूसी सेना की विजय हुई। सिंगापुर में दिन में शत्रु के हवाई आक्रमण हुये। अवेला की ओर ब्रिटिश सेना बढ़ी।

१४ जनवरी—रूसी सेना ने कीरोव नगर पर फिर अधिकार कर लिया। क्वाला लुम्पुर के स्टेशन में आग लगा दी गई। सिंगापुर से जापानी सेना १२० मील की दूरी पर पहुँच गई। बोर्नियो में भीषण युद्ध हुआ। फिलीपाइन में जापानी सेना आक्रमण करते हुये पीछे हटा दी गई।

१५ जनवरी—अमरीका के अटलांटिक तट पर अमरीकन टैंकर जहाज़ शत्रु की डुबकनी नाव द्वारा डुबा दिया गया। सिंगापुर पर हवाई आक्रमण हुआ और ब्रिटिश सेना हटाई गई। ब्रिटिश विमानों ने [illegible] किले पर आक्रमण किया। रूसी सेना स्मोलेंस्क की ओर आगे बढ़ी।

१६ जनवरी—दक्षिणी बरमा में जापानी सेना से ब्रिटिश सेना का घोर संग्राम हुआ। फिलीपाइन में जापानी सेना ने नये आक्रमण किये। अघीला क्षेत्र में जर्मन सेना ने ब्रिटिश सेना का डट कर सामना किया।

१७ जनवरी—सिंगापुर पर और अधिक जापानी विमानों ने हवाई आक्रमण किये। जापानी सेना १०० मील की दूरी पर पहुंच गई। मालमीन पर जापानी बम वर्षकों ने फिर आक्रमण किया। दक्षिणी बरमा में शत्रु सेना से भीषण संग्राम किया गया। संयुक्त राष्ट्र की सेना पर जापानी सेना ने फिलीपाइन क्षेत्र में जबरदस्त आक्रमण किये।

१८ जनवरी—जापानी सरकार से सम्बन्ध रखने के जुर्म के कारण यू सा बरमा के प्रधान मंत्री बरमा लौटते हुये ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। रंगून में लूट मार हो गई। बरमा में टनासिरम क्षेत्र में युद्ध हुआ।

१९ जनवरी—मुआर नदी के दक्षिण जापानी सेना उतरी जिससे सिंगापुर का खतरा बढ़ गया। गेमास प्रान्त में दोनों ओर से तोपों द्वारा गोलेबारी हुई। सिंगापुर से ९० मील की दूरी पर शत्रु सेना पहुँची। मोजेस्क नगर में रूसी सेना प्रवेश कर गई और समस्त नगर में आग लगा दी गई। दक्षिणी बरमा से ब्रिटिश सेना हटाई गई। टवाय हवाई स्टेशन पर जापानी अधिकार हो गया।

२० जनवरी—मोजेस्क क्षेत्र में रूसी सेना आगे बढ़ी। और पयोडाशिया पर अधिकार कर लिया।

२१ जनवरी—थाई सेना ने बरमा में प्रवेश किया। मेरावदी के उत्तर शत्रु सेना से भीषण युद्ध हुआ। मोलमीन और सिंगापुर में हवाई आक्रमण हुये। जोहोर प्रान्त के दक्षिणी भाग में जापानी सेना आगे बढ़ी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अटलांटिक तट पर यू-बोट द्वारा तीन अमरीकन जहाज़ डुबाये गये। डोनेज क्षेत्र में भीषण संग्राम होने के बाद जर्मन सेना मिन्स्क की ओर हट गई। रूसी सेना ने कई गांवों पर अधिकार कर लिया।

२२ जनवरी मालमीन की ओर बढ़ती हुई थाई तथा जापानी सेना रोक दी गई। ४० मील लम्बे क्षेत्र में युद्ध हुआ। ६ घंटे तक नीचे उड़ कर आक्रमण करने वाले विमान आक्रमण करते रहे। सेलेबीस के उत्तर मिन्हासा पर जापान का पूरा अधिकार हो गया। मलय में शत्रु सेना का डट कर सामना किया गया। अटलांटिक तट पर दो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जहाज़ डुबा दिये गये। बटाविया के समीप जापानी जहाज़ डुबाया गया।

२३ जनवरी—मोलमीन से ४० मील दक्षिण की ओर जापानी सेना से ब्रिटिश सेना ने घोर संग्राम किया। मलय युद्ध की दशा बड़ी जटिल हो गई। शत्रु को समस्त क्षेत्र में विजय हुई।

२४ जनवरी—मलाया से ब्रिटिश सेना हटाई गई। जापानी सेना सिंगापुर का घेरा डालने के लिये बढ़ी। रंगून पर और अधिक जापानी आक्रमण हुये। अफ्रीका में धुरी राष्ट्र सेना ने जेदाबाया पर फिर अधिकार कर लिया। मास्को तथा लेनिनग्राड सीमा पर रूसी सेना की विजय हुई।

२५ जनवरी—मलय और बरमा में ब्रिटिश सेना को शत्रु सेना की प्रबलता के कारण और अधिक पीछे हटना पड़ा। रंगून नगर के ऊपर आकाश में हवाई युद्ध हुआ। रूसी क्षेत्र में लेनिनग्राड और यूक्रेन रेलवे की ओर रूसी सेना बढ़ी। लिबिया में जनरल रोमेल (जर्मन) के आक्रमण के कारण भीषण युद्ध हुआ।

बंगाल की खाड़ी में दो जहाज़ शत्रु ने डुबा दिये। थाई देश की सरकार ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका और इङ्गलैण्ड पर युद्ध घोषणा की। जापानी सेना मोलमीन की ओर बढ़ी। जोहोर में घोर संग्राम हुआ। न्यूगिनी में और अधिक जापानी सेना पहुँची। अटलांटिक सागर में शत्रु यू बोट द्वारा नार्वे का एक जहाज़ डुबो दिया गया।

२६ जनवरी—बरमा में ब्रिटिश सेना पीछे हटी। जापानी सेना सिंगापुर से ४५ मील की दूरी पर पहुँच गई और बातू पहात पर अधिकार जमा लिया। जनरल रोमेल के भीषण आक्रमण के कारण ब्रिटिश सेना बेंगाज़ी से हटाई गई। मकासर प्रणाली के युद्ध में एक बिमान ढोने वाला जापानी जहाज़ डूबा और ३ क्रूशियर जहाज़ों को चोट पहुँचाई गई। न्यूगिनी में जापानी सेना बढ़ी।

२७ जनवरी—कामन्स सभा में वादाविवाद का उत्तर देते समय ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल ने बतलाया कि संयुक्त राष्ट्र का प्रशान्त महासागरीय जहाज़ी बेड़ा जापानियों द्वारा नष्ट कर दिया गया है और वहां जापानी जहाज़ी बेड़ा अधिक तगड़ा पड़ रहा है। लिबिया में १८ हज़ार मित्र सेना मारी गई।

मरगुई बरमा का नगर शत्रु के कारण खाली कर दिया गया। भूमध्य सागर में ब्रेमन नामक ब्रिटिश लड़ाका जहाज़ शत्रु द्वारा डुबा दिया गया।

२८ जनवरी—ब्रिटेन से पूर्वी रणक्षेत्र में सेना भेजी गई। रंगून पर दिन में दो हवाई आक्रमण हुये। सुमात्रा के पश्चिमी तट पर शत्रु के बम बर्षकों ने भीषण बम वर्षा की। अटलांटिक सागर में शत्रु की एक डुबुकनी किश्ती डुबाई गई। कामन्स सभा में भारत, सिंगापुर, तथा दूसरे पूर्वी स्थानों में रक्षा के लिये ठीक प्रबन्ध न होने के सम्बन्ध में बादाविवाद हुआ।

२९ जनवरी—मकासर प्रणाली के युद्ध में जापानियों के ४६ जहाज़ डुबा दिये गये। रंगून पर बम वर्षा करते हुये १२ विमान गिरा दिये गये। शत्रु सेना ने बेंगाज़ी पर फिर अधिकार कर लिया। रूसी सेना ने ४०० गांवों पर अधिकार किया और बहुत सा सामान उसके हाथ लगा।

३० जनवरी—जापानी सेना सिंगापुर से १८ मील की दूरी पर पहुंच गई। सिंगापुर पर लगातार बम वर्षा की गई। फिलीपाइन में जनरल मैकार्थर ने जापानी सेना के सामने आत्म समर्पण से इन्कार कर दिया। ब्रिटिश सेना ने बेंगाज़ी खाली कर दिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक टैंकर जहाज डुबा दिया गया।

१ फरवरी—सिंगापुर का घेरा जापानी सेना ने आरम्भ कर दिया। दक्षिणी जोहोर मार्ग पर ब्रिटिश तोपें गोलाबारी करती रहीं। पश्चिमी बोर्नियो की राजधानी पांतियानाक पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। बरमा में साल्वीन नदी के तट पर युद्ध हुआ और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जहाजी बेड़े ने मार्शल और गिल्बर्ट द्वीपों के जापानी सैनिक अड्डों पर धावा किया। भूमध्यसागर में दो धुरी राष्ट्रों के जहाज डुबाये गये।

२ फरवरी—धुरी राष्ट्र सेना ने वार्से और एलअबीअर पर अधिकार कर लिया। साइरेका से ब्रिटिश सेना हटा दी गई।

३ फरवरी—सिंगापुर की ओर जापानी सेना मलय प्रदेश में बढ़ी और जापानी विमानों ने वहाँ बम वर्षा किया। बरमा में शत्रु सेना ने साल्वीन नदी को पार करने का प्रयत्न किया। सिंगापुर में बम के साथ ही साथ जापानी प्रचार सम्बन्धी नोटिसों के बंडल भी गिराये गये।

४ फरवरी—जोहोरी प्रणाली में दोनों ओर से गोलेबारी की गई। [illegible] के जहाजी अड्डों पर बम वर्षा की गई। फिलीपाइन के युद्ध में जापानियों की बड़ी हानि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई। देरना के समीप धुरी राष्ट्र सेनाएँ पहुँच गईं। रूसी रण क्षेत्र में रूसी लोग और आगे बढ़े। लार्ड सभा में लार्ड फारिंगडन ने भारत की युद्ध-स्थिति जटिल होने के कारण स्वतंत्रता प्रदान करने के लिये भाषण दिया।

५ फरवरी—जापानी सेना ने जावा में उतरने की कोशिश की। साल्वीन नदी के क्षेत्र में युद्ध हुआ। ब्रिटिश सेना देरना से हटाई गई।

६ फरवरी—सिंगापुर में भीषण हवाई आक्रमण हुये तथा गोले बारी की गई। लीबिया में ब्रिटिश सेना पीछे हट गई।

७ फरवरी—रंगून नगर पर रात को चार घंटे शत्रु का हवाई हमला हुआ और १० जापानी विमान गिराये गये। बोरनिओ में सुमिन्दा नगर पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का सामान ले जाने वाला सिंधिया ओल्सेन डुबा दिया गया।

८ फरवरी—सिंगापुर तथा रंगून पर बम वर्षा हुई। सिंगापुर में गोले बारी हुई। बोरनियो के पश्चिमी तट के समीप एक जहाज डुबो दिया गया। रूसी सेना ने अपने कुछ और गांव छीन लिये।

९ फरवरी—सिंगापुर द्वीप के पश्चिमी तट पर जापानी सेना उतरी। वहां के जहाजी अड्डे का कुछ भाग खाली किया गया। रंगून हवाई अड्डे पर बम्ब वर्षा की गई।

१० फरवरी चियांग काई शेक अपनी धर्म पत्नी सहित दिल्ली पहुँचे। सिंगापुर में और अधिक जापानी सेना उतरी। ब्रिटिश सेना ने जापानी सेना पर प्रतिकूल आक्रमण किया। रूस में रूसी सेना और आगे बढ़ी। सिंगापुर नगर से १० मील की दूरी पर जापानी सेना पहुँच गई।

११ फरवरी पंडित जवाहर लाल नेहरू की भेंट श्री मती चियांग काई शेक से हुई। जापानी सेना ने मर्तबान पर अधिकार किया। सिंगापुर पर पश्चिम की ओर से आक्रमण किया।

१२ फरवरी—सिंगापुर का युद्ध हुआ। मकासर के समीप जापानी सेना उतरी और रूस में नाजी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण आरम्भ किये।

१३ फरवरी—सिंगापुर में जापानी सेना का मजबूती के साथ सामना किया गया। नगर के उत्तर तथा पश्चिम में घोर संग्राम हुआ। समस्त रूसी रण क्षेत्र में युद्ध हुआ। डोवर प्रणाली में समुद्री तथा हवाई युद्ध हुआ जिसमें ३६ ब्रिटिश तथा १८ जर्मन विमान नष्ट हुये।

१४ फरवरी—जापानी सेना की अधिकता के कारण सिंगापुर की स्थिति शोचनीय हो गई। पानी के तालाब शत्रु के हाथ में चले गये। नगर के चारों ओर युद्ध हुआ बरमा और साल्वीन पर युद्ध हुआ। रूस में नाजी सेना को जबाबी हमले में असफलता हुई। जापानी छतरी-सेना ने सुमात्रा पर आक्रमण किया। लगभग १०० विमानों से हमला आरम्भ हुआ।

१५ फरवरी—सिंगापुर ने जापानियों को आत्म समर्पण कर दिया। साल्वीन नदी के पार जापानी सेना आगे बढ़ी। रूस में रूसी सेना का सामना नाज़ी सेना ने डट कर किया।

१६ फरवरी—रंगून से १०५ मील की दूरी पर जापानी सेना पहुँची। थाटन नगर की ओर जापानी सेना बढ़ी। अरूबा द्वीप पर शत्रु के यू-बोटों का हमला हुआ और तीन टैंकर जहाज़ डुबो दिये गये। सिंगापुर में जापानी सेना का शासन हो गया। वहां के गवर्नर तथा श्रीमती थामस कारागार में डाल दिये गये। ब्रेस्ट बन्दरगाह से दो नाज़ी लड़ाका जहाज निकल भागे।

१७ फरवरी—फिलीपाइन बरमा और जावा में जापानी सेना तथा मित्र सेना में युद्ध हुआ। बरमा के आक्रमण के लिये हैफोंग नगर (इण्डोचीन) में ३० हज़ार जापानी सेना एकत्रित की गई।

१८ फरवरी—मिस्टर तथा मेडम चियांग काई शेक ने कलकत्ते में महात्मा गांधी से भेंट की। जापानी सेना ने बिलन नदी (बरमा) पार किया और ब्रिटिश सेना से हाथों हाथ युद्ध हुआ। सुबिया बन्दरगाह पर बम वर्षा की गई। डर्विन (आस्ट्रेलिया) बन्दरगाह पर हवाई हमला किया गया।

२० फरवरी जावा द्वीप पर चारों ओर से जापानी सेना का आक्रमण हुआ। तिमोर द्वीप से उसका सम्बन्ध काट दिया गया। डार्विन बन्दरगाह खाली किया गया। खारकोव (रूस) सीमा पर नाज़ी सेना की बड़ी हानि हुई।

२१ फरवरी—बाली (जावा) के समीप मित्र तथा जापान के जल सैनिक जहाजों का युद्ध हुआ जिसमें मित्र सेना का एक विध्वंस कारक जहाज तथा शत्रु सेना के कई जहाज डूब गये। बिलन नदी का युद्ध हुआ।

२३ फरवरी—बाली द्वीप के कुछ भाग पर जापानी सेना ने अधिकार जमा लिया। जावा के हवाई स्टेशनों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापानी विमानों का हमला हुआ। पुर्तगाली तिमोर द्वीप के दिल्ली नामक स्थान पर जापानी सेना उतर गई। बरमा में भीषण युद्ध हुआ। रूसी सेना ने कई नगरों पर अधिकार किये।

२४ फरवरी—न्यूफाउण्डलैण्ड के समीप संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक विध्वंस कारक जहाज, दो टैंकर जहाज और एक सामान ले जाने वाला जहाज़ डुबो दिये गये। बिलना नदी पर घोर संग्राम हुआ जापानी सेना की प्रबलता के कारण मित्र सेना दूसरे स्थानों को हट गई। बाली और दक्षिणी सुमात्रा पर जापानी अधिकार हो गया।

२५ फरवरी—कामन्स सभा में सर स्टफर्ड क्रिप्स ने भाषण दिया और भारत के सम्बन्ध में शीघ्र ही घोषणा करने के लिये कहा। अमरीका के पश्चिमी तट पर शत्रु के विमानों का हमला हुआ। बोरनिओ के समीप रियर ऐडमिरल शुसाकू शिबूया जापान सेनानायक मार डाला गया।

२६ फरवरी—जावा में जापानी तीन ओर उतर गये जिससे वहां की दशा शोचनीय हो गई। रंगून में कर्फ्यू आर्डर (फौजी कानून) लगा दिया गया। दो ब्रिटिश टैंकर जहाज डुबा दिये गये।

२७ फरवरी—रंगून नगर पर जापानी विमानों का भीषण हमला हुआ। २७ जापानी जहाज गिराये गये। जनरल वैवेल (मित्र सेना) सिंगापुर में घायल हो गये।

२८ फरवरी—फ्रांसीसी तट पर ब्रिटिश विमानों का हमला हुआ जिससे रेडियो स्टेशनों को हानि पहुँचाई गई। जावा और बरमा में भीषण युद्ध हुआ जिससे जावा में जापानी सेना ने प्रवेश किया और उत्तरी बरमा की ओर जापानी सेना बढ़ी।

१ मार्च—जापानी सेना जावा में उतर गई। रंगून के चारों ओर भयानक संग्राम हुआ। पेगू के समीप रेलवे लाइन काट दी गई। सीतांग नदी के क्षेत्र में भयानक युद्ध हुआ।

२ मार्च—जावा में जापानी सेना ने आगे बढ़ कर सोयम्बांग नगर पर अधिकार कर लिया। बटाविया और सबीया का सम्बन्ध जापानी विमानों ने तोड़ दिया। बरमा रंगून तथा फिलीपाइन में युद्ध हुआ। रूसी रणक्षेत्र में विकट युद्ध हुआ। टेंगू में जापानी लोगों ने आग लगा दी। बरमा सड़क स्वयम् बन्द हो गई।

४ मार्च—डच द्वीप की सरकार बटाविया से हटा दी गई। सुबीया को लेने का प्रयत्न जापानी सेना ने किया। जावा तट पर और अधिक जापानी सेना उतरी। बन्देओंग पर हवाई आक्रमण हुआ। जनरल वावेल भारत लौट आये।

५ मार्च—जापानी सेना जावा में और आगे बढ़ी। बन्देओंग में मित्रसेना ने कई स्थान स्वयम् नष्ट कर दिये। होनोलूलू पर हवाई धावा हुआ। जापानी सेना ने सीतांग नदी पार किया। रूसी सेना ने और अधिक गांवों पर अधिकार किया।

६ मार्च—बटाविया से ८ मील की दूरी पर जापानी सेना पहुंच गई बन्देओंग तथा दूसरे नगरों पर भीषण जापानी हमले हुये। रंगून का घेरा जपानी सेना ने डालना आरम्भ किया। मोरन्बी बन्दरगाह (आस्ट्रेलिया) पर जापानी हवाई आक्रमण हुआ।

७ मार्च—बटाविया पर जापानी सेना का अधिकार हो गया। समस्त पश्चिमी जावा शत्रु के हाथों में चला गया। एक ब्रिटिश टैंकर और एक अमरीकन फाइटर जहाज डुबो दिये गये। बरमा तथा रंगून में भीषण युद्ध हुआ और शत्रु की विजय हुई।

८ मार्च—जावा का सम्बन्ध काट दिया गया। वहां मित्र सहायता नहीं पहुंच सकी। जापानी सेना ने वहां के नगरों को नष्ट कर दिया। ओरेल (रूस) क्षेत्र में जर्मन सेना घेर ली गई और सेना ले जाने वाले ३० विमान नष्ट किये गये। बरमा में ब्रिटिश टैंक युद्ध के लिये पहुँच गये।

९ मार्च—मोरेस्बी बन्दरगाह पर जापानी विमानों ने हवाई हमला किया तथा न्यूगिनी में जापानी सेना उतर गई। पयागी नगर (बरमा) पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। लेनिनग्राड क्षेत्र में ६ हजार जर्मन सेना मारी गई।

१० मार्च—रंगून बिलकुल खाली कर दिया गया। और साथ ही साथ आवश्यक स्थान तथा वस्तुऐं नष्ट कर दी गईं। डच पूर्वी द्वीपसमूह की सरकार आस्ट्रेलिया भाग गई। लीबिया में हवाई युद्ध हुआ। रूसी सेना ने अपने ३७ गांवों पर पुनः अधिकार कर लिया। एक जापानी जहाज डुबाया गया।

११ मार्च—रंगून से पूर्ण रूप से ब्रिटिश सेनाएँ हटा ली गईं और आवश्यक स्थान जिनसे शत्रु को लाभ हो सकता था नष्ट कर दिये गये। बन्दोएग पर जापानी अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार हो गया। पूर्वी द्वीप समूह की सरकार आस्ट्रेलिया चली गई। मध्यवर्ती और उत्तरी बरमा में युद्ध हुआ।

लीबिया में ब्रिटिश बम वर्षकों के कारण जर्मन चौकसी करने वाली सेना को हटना पड़ा। स्वतंत्र फ्रान्सीसी सेना ने मुजिक पर बम वर्षा की। रूसी सेना ने रूसी क्षेत्र में जर्मन सेना की रक्षक लाइन को तोड़ कर ३७ निवास स्थानों पर अधिकार जमा लिया।

१२ मार्च—रंगून के भीतर भीषण युद्ध हुआ, प्रोम नगर की सड़क काट दी गई। थारावादी पर जापानी अधिकार हो गया। सीरियम के तेल साफ करने वाले कारखाने नष्ट कर दिये गये। न्यूगिनी में फिन्सचाफेन के बन्दरगाह पर जापानी सेना उतरी। सलामायु, ले, हेनिंश बन्दरगाह और मोरेस्बी पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ फिलीपाइन में सेबू बन्दरगाह पर जापानी क्रूशियर जहाज ने गोला बारी किया।

उत्तरी अटलांटिक सागर में एक टैंकर जहाज़ डुबोया गया। कलेनिन प्रान्त और डान बैसिन में रूसी सेना की विजय हुई। खारकोव नगर की ओर रूसी सेनाएँ चारों ओर से बढ़ीं।

१३ मार्च—नार्वे तट के समीप "ऐडमिरल ट्रिपिज़" नामक जर्मन लड़ाका जहाज पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया। यह जहाज ४५ हज़ार टन का बतलाया जाता है।

जापान से बेसीन की ओर बढ़ी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के विमानों ने न्यूगिनी के बन्दरगाहों पर हमला किया। आस्ट्रेलिया के विमानों ने जापानी जहाजी बेड़े पर हमला करके ४ जहाजों में आग लगा दी।

१४ मार्च—दक्षिण की ओर रूसी सेना ने नया आक्रमण १० डिवीजन सेना के साथ किया और खारकोव तथा तागांरोग की ओर बढ़ी।

जापानी जहाजी बेड़ा मोरेबी बन्दरगाह की ओर बढ़ा परन्तु मित्र राष्ट्र के हवाई आक्रमण से छिन्न भिन्न कर दिया गया।

१५ मार्च—रूस के दक्षिणी क्षेत्र में भीषण युद्ध हुआ। क्रीमिया की नाजी सेना को बड़ा भय उत्पन्न हो गया। न्यूगिनी के सैनिक अड्डों पर जापानी सेना ने हवाई हमला किया। आकाश में विमानों का युद्ध हुआ और मोरेस्बी बन्दरगाह पर मशीनगन द्वारा धावा कर गोले चलाये गये।

१६ मार्च—अमरीकन सेना आस्ट्रेलिया पहुँचाई गई। जापानी सेना ने आस्ट्रेलिया के उत्तरी पूर्वी तट के समीप बम गिराया। मोरेस्बी बन्दरगाह पर फिर हवाई हमला किया। बरमा में युद्ध हुआ। सुमात्रा के उत्तर वेह द्वीप पर जापानी अधिकार हो गया। जावा के समुद्री युद्ध में ५ मित्र राष्ट्रों के क्रूशियर और ६ विध्वंस कारक जहाज डुबा दिये गये जापानियों को भी हानि हुई। व्याज्मा सड़क पर भीषण रूसी-जर्मन युद्ध हुआ।

१७ मार्च—दक्षिणी पश्चिमी रूसी सीमा में रूसी सेना की विजय हुई रूसी छतरी सेना का काम आरम्भ हुआ। जर्मन सेना का प्रतिकूल आक्रमण पीछे हटा दिया गया। न्यूब्रिटेन के शत्रु अड्डों पर मित्र राष्ट्रों के विमानों का हमला हुआ। बरमा में युद्ध हुआ।

१८ मार्च—सीतांग नदी के तीन गांवों पर मित्र सेना ने अधिकार किया। बेसीन पर जापानी अधिकार हो गया।

१९ मार्च—आस्ट्रेलिया के डार्विन बन्दरगाह पर शत्रु का हवाई हमला हुआ आस्ट्रेलिया का प्रधान सेनापति जनरल मकार्थर बनाया गया। रूस में रूसी सेना व्याज्मा से १० मील की दूरी पर पहुँच गई। फिलीपाइन में बातान बन्दरगाह पर जापानी जहाजों ने गोलेबारी की।

२० मार्च—न्यूगिनी तट के समीप अमरीकन तथा आस्ट्रेलियन विमानों ने जापानी जहाजी बेड़े पर धावा मारा और २३ जापानी जहाज डुबा दिये। मोरेस्बी को आक्रमण से भय उत्पन्न हो गया। आस्ट्रेलिया पर धावा बोलने के लिये १२ डिवीजन सेना तयार खड़ी रही। बरमा में जापानी सेना की प्रगति फिर आरम्भ हुई। तिमोर द्वीप पर पूर्ण रूप से जापानी अधिकार हो गया। रूसी क्षेत्र में रूसी सेना की विजय हुई।

२१ मार्च—जापानी सेना मोरेस्बी बन्दरगाह की ओर बढ़ी। डार्विन, राबौल और कोपंग बन्दरगाहों पर हवाई आक्रमण हुये। बरमा और थाई सीमा पर युद्ध हुआ। स्मोलिन्स्क सीमा पर सोवियत सेना की विजय हुई और खारकोव नगर में भीषण आग लगा दी गई। जर्मन सेना ने उसे छोड़ने की तयारी की।

२२ मार्च—माडन्मे की सड़क पर जापानी सेना आगे बढ़ी और ब्रिटिश सेना मिमू के उत्तर हट गई। टौंगू पर पूर्व की ओर से जापानी सेना ने धावा मारने की तयारी की। राबौल बन्दरगाह पर जापानी जहाजी बेड़े पर मित्र विमानों ने धावा मार कर दो क्रूशियर जहाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट कर दिये। अटलांटिक सागर के समीप दो अमरीकन जहाज़ डुबा दिये गये।

२३ मार्च—जापानी सेनायें मांडले की सड़क पर आगे बढ़ीं। ब्रिटिश सेनायें प्यू नगर के उत्तर की ओर पीछे हटीं। चीनी सेनाओं ने बरमा युद्ध में भाग लिया। जापानी हवाई जहाजों ने रबौल बन्दरगाह पर बम्ब गिराये गये।

अटलांटिक तट पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के दो बड़े व्यापारी जहाज डुबो दिये गये। हवाई द्वीप में फौजों के लिये छः मास के लिये भोजन सामग्री एकत्रित कर ली गई। रूसी सेनाओं ने स्टराया रूसा के समीप एक जर्मन सेना को घेर लिया। रूसी सेनाओं ने खारकोव पर भी दबाव डाला।

२४ मार्च—जापानी हवाई जहाजों ने न केवल डार्विन वरन् उत्तरी आस्ट्रेलिया पर भी तट से १८० मील भीतर की ओर स्थित केथरिन नगर पर हमला किया। न्यूगिनी की मर्खाम घाटी में जापानी सेनायें धीमी चाल से आगे, बढ़ीं। फिलीपाइन द्वीप में जापानियों ने अमरीकन फौजों को आत्मसमर्पण करने के लिये आग्रह किया। बरमा में जापानी लोग टौंगू की ओर पूरी शक्ति लगा रहे हैं।

रूस ने साइबेरिया से कई डिवीजन (एक डिवीजन में प्रायः २५००० सिपाही होते हैं) पश्चिम को ओर भेजे। क्राइमिया के कर्च प्रायद्वीप पर जो रूसियों ने हमला किया उसे जर्मनों ने पीछे हटा दिया। अटलांटिक तट पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के तोन जहाज़ और डूबे।

२५ मार्च—जापान ने और नई फौजें बरमा में भेजी। जापानी हवाई जहाज़ों ने न्यूगिनी के पोर्ट मोर्सबी पर फिर भीषण हमला किया। जापानी हवाई जहाज़ों ने पश्चिमी आस्ट्रेलिया के विंढम नगर पर भी बम्ब गिराये

२६ मार्च—टौंगू के आस पास भीषण लड़ाई हुई। पिनमिना की सड़क काट दी गई। जापानी हवाई जहाज़ों ने मध्य बरमा पर भी हमले किये। न्यूगिनी में जापानी सेनायें आगे बढ़ीं। जावा सागर में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के दो विध्वंसक जहाज़ नष्ट कर दिये गये। लीबिया के क्षेत्र में ब्रिटेन ने हवाई हमले किये। स्टराया रूसा में जर्मनी लोग अपनी घिरी हुई फौज को न छुड़ा सके। बहुत फौजी सामान रूसियों के हाथ आया।

२७ मार्च—जापानियों ने अण्डमान द्वीप समूह पर अधिकार कर लिया। बरमा में उनकी फौजें थारावादी और सीटांग दोनों क्षेत्रों में आगे बढ़ीं। बलगेरिया का राजा बोरिस हिटलर से मिला। जर्मनी ने नई सेनायें रूस में भेजी।

२८ मार्च—जापानी सेनायें अक्याव की ओर बढ़ीं। टौंगू की स्थिति भयंकर हो गई है। जापानी फौजें टौंगू को चारों ओर से घेरे हुये हैं। माल्टा पर भीषण हवाई हमला हुआ। जर्मन पनडुब्बे जहाज़ केरीबियन सागर में पहुँच गये हैं।

२९ मार्च—जापानी सेनायें प्रोम और मांडले की ओर बढ़ीं। थारावादी नगर खाली कर दिया गया। मांडले से १६० मील दक्षिण में भीषण लड़ाई हो रही है।

व्याज्मा के पास जर्मन और रूसी फौजों में घमासान लड़ाई हुई।

३० मार्च—टौंगू में चीनी फौजें बड़ी वीरता से लड़ रही हैं। लेकिन जापानी फौजों ने नगर को उत्तर, दक्षिण पूर्व और पश्चिम की ओर बुरी तरह से घेर लिया है। टौंगू का हवाई स्टेशन जापान के हाथ में चला गया है। उत्तर की ओर क्युंगुन गाँव भी जापानी फौजों ने ले लिया है। प्रोम की ओर बढ़ने वाली जापानी फौजों से कुछ बरमी फौजें भी मिल गईं। इससे उन्होंने इरावदी को सुगमता से पार कर लिया।

फिलीपाइन द्वीप समूह के कोरेगीडोर द्वीप पर जापानियों ने लगातार बम वर्षा की।

उत्तर में आर्टिक प्रदेश में रूसी फौजों ने जर्मन फौजों को बुरी तरह हराया।

३१ मार्च—जापानी फौजों ने टौंगू नगर के पश्चिमी भाग पर अधिकार कर लिया। पूर्वी भाग में चीनी फौजें वीरता से लड़ रही हैं। जापानी हवाई जहाज़ों ने पोर्ट मोर्सबी और डार्विन पर हमले किये। ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने जर्मन अधिकृत फ्रांसीसी बन्दरगाह सेन्टनेज़ियर पर बम्ब गिराये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१० × ७॥) के २६० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

★ ★ ★ ★ ★

अनोखी दुनिया—इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२६, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

★ ★ ★ ★ ★

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्रायः भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था को ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों से बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग ५८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

★ ★ ★ ★ ★

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। इसमें संसार का एक बड़ा नक़्शा दिया गया है जिसमें उन जातियों का निवास-स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिश्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, रोमन, नई दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ३० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है।

पुस्तक मिलने का पता—"भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, Kakrhaghat, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

चैत्र, सं० १९९९

१-५-८२
गु. पुस्तकालय

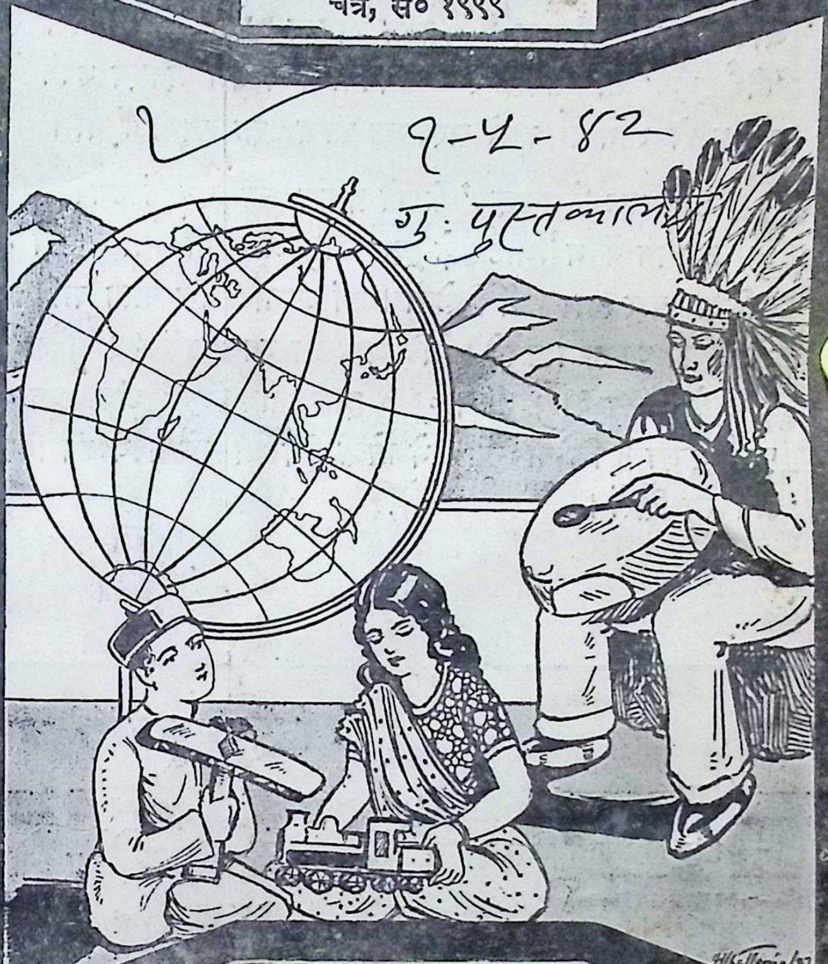

सम्पादकः रामनारायण मिश्र बी.ए.

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल-पाठकों के लिये

'देश-दर्शन' के सम्बन्ध में छपा हुआ आवश्यक निवेदन गत मास के भूगोल में आप ने ध्यान पूर्वक पढ़ा होगा। आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि 'देश-दर्शन' का प्रत्येक स्कूलों में होना आवश्यक है। अभी तक आप 'देश-दर्शन' के दर्शन से वंचित हैं। हम चाहते हैं कि भूगोल कार्यालय की प्रकाशित पुस्तकें प्रत्येक पाठकों को आसानी से प्राप्त हो जायँ। इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर 'देश-दर्शन' ग्रन्थमाला का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

'तीर्थ-दर्शन' अंक आप को मुफ्त मिलेगा। रुपया प्राप्त हो जाने पर इसके आगे के अंक से आप का नाम रजिस्टर में लिखा जायगा। शेष अंक भी बराबर एक वर्ष तक मिलते रहेंगे। 'तीर्थ-दर्शन' की केवल २०० प्रतियां बची हैं। अतएव रुपये भेजने में शीघ्रता करें। प्रतियाँ समाप्त हो जाने पर दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

अभी तक 'देश-दर्शन' के जो ग्राहक नहीं बने हैं उनके सुविधा के लिये वार्षिक मूल्य में ४) के स्थान में मनीआर्डर के द्वारा ३॥) और वी० पी० द्वारा ३॥।) रक्खा गया है। ऐसी सुविधा बार बार नहीं मिलेगी। हमें आशा है कि आप वार्षिक मूल्य ३॥) मनीआर्डर द्वारा भेजने की व्यवस्था करेंगे। यदि आप का रुपया हमें १५ अप्रैल तक नहीं मिला तो एक वर्ष के चन्दे के सहित ३॥।) की वी०पी० द्वारा 'तीर्थ दर्शन' अंक आप की सेवा में भेजा जायगा। हमें पूर्ण आशा है कि वी० पी० भेजने के पूर्व आप के रुपये हमें मिल जायँगे। विशेष योग्य कार्य होय सो लिखें।

भवदीय

मैनेजर

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—हालैंड के भीतरी बन्दरगाह	१
२—पाताल तोड़ कुएँ	५
३—हाथी	६
४—रूस के लिये सामग्री पहुँचाने वाले मार्ग	९
५—रूसी-जर्मन युद्ध	१२
६—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] चैत्र, सं० १९९९, मार्च, १९४२ ई० [अङ्क ११

हालैंड के भीतरी बन्दरगाह

ऐम्सटर्डम का बन्दरगाह हालैंड के लिये बड़ा उपयोगी है। यहां पर राइन नदी, पूर्व की ओर जाने वाली जहाजी लाइन के जहाज, नदियों में चलने वाले पैडिल जहाज, तेल भरने वाले जहाज आदि आदि आया जाया करते हैं। यह बन्दरगाह रेलों द्वारा सारे योरुप से और नहरों द्वारा उत्तरी हालैंड से मिला हुआ है। प्राकृतिक रूप से यह बन्दरगाह नहीं है, क्योंकि न तो यह समुद्र पर स्थित है और न समुद्र की ओर इसका कोई निकास ही है। यह नगर एक ओर उत्तरी सागर की नहर द्वारा समुद्र से मिला है और दूसरी ओर नहर के लाकों द्वारा बनावटी खाड़ियों से मिला है, जहां पर किसी समय में ज्वेडरजी था। १९३२ ई० में ज्वेडरजी के बांधों का बनना समाप्त हो चुका है और यह फिर उसी नाम से पुकारा जाने लगा है। ऐम्सटर्डम के लाक दुनिया के बड़े लाकों (घाट) की भांति ही बड़े हैं।

डच लोगों के ख्याल से राटर्डम ऐम्सटर्डम के मुकाबिले का बन्दरगाह है। यह भीतरी बन्दरगाह बड़ा सुन्दर है और नहर द्वारा उत्तरी सागर से मिला हुआ है। इस नहर का नाम न्यू वाटर वे है। इस नहर में लाक नहीं हैं। यहाँ पर भी एम्सटर्डम की तरह हर प्रकार के जहाज आते हैं, किन्तु यहां पर नदियों से अधिक जहाज आते हैं। यह नगर नदियों द्वारा सारे योरुप से मिला हुआ है। यहाँ पर बड़े जहाजों द्वारा सामान आता है, वह सामान यहां उतार कर नदी में चलने वाले जहाजों द्वारा योरुप के देशों में भेजा जाता है। यहां पर एम्सटर्डम से अधिक जहाज बनाने के स्थान हैं, यद्यपि यह कहना कठिन है कि किस बन्दरगाह के जहाज अच्छे बनते हैं। राटर्डम एक बड़ा गुलजार व्यापारिक नगर है। यह नगर बिलकुल आधुनिक है।

ऐम्सटर्डम नगर को देखने के पश्चात् हमारे दिमाग पर उसके गौरव का चिन्ह अलंकृत हो जाता है। यह गौरव प्राचीन नहरों और हियरेनग्राट के बांधों के दृश्य के देखने से और भी अधिक हो जाता है। यह नहरें ईज में जाकर गिरती हैं। ऐम्सटर्डम के केन्द्रीय स्टेशन के समान ईज का जलाशय है। यह स्टेशन शीशे और फौलाद का बना हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह दुनिया के प्रसिद्ध तथा सुन्दर वस्तुओं में है। यह मरीन(समुद्री)इञ्जिनों के बनाने के लिये बनाया गया था।

स्टेशन के सामने समुद्र के भीतर से उठे हुये खम्भे दिखाई पड़ते हैं। यह खम्भे लम्बाकार हैं। यहां के जहाज यहां से सामान तथा यात्रियों को ले जाकर हालैंड के दूसरे स्थानों पर पहुँचाते हैं। यह जहाज जटफेन, डेवेन्टरे ग्रोनिन्गेन के उत्तरी बन्दरगाहों को जाते हैं। ऐन्टवर्प, अल्कमार और जानडाम आदि स्थानों को भी यह जहाज जाते हैं। अल्कमार उत्तरी हालैंड में है और मक्खन के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। ज़ानडाम जान नदी के किनारे पर स्थित है। यह नदी ज़ानडाम और अल्कमार को मिलाती है और उत्तरी सागर के नहर में मिलाती है। संगम के समीप ही हालैंड का सर्व प्रसिद्ध जहाज बनाने का स्थान निदरलैंड शिप विल्डिंग (निदरलैंड का जहाज बनाने का कारखाना) कम्पनी है। ईज मईदेन (ईज का मुँह) की बनावटी नदी पर ऐम्सटर्डम बसा है। यहीं पर जहाज उत्तरी सागर को नहर में प्रवेश करते हैं। यहां से एम्सटर्डम बन्दरगाह १६ मील पड़ता है।

उत्तरी सागर की नहर समतल मैदान में होकर जाती है। इस नहर में केवल वेनसेन नगर में हटने वाला पुल बना है। इस पुल द्वारा उत्तरी हालैंड को रेल जाती है। इस नहर में रात दिन जहाज चल सकते हैं। रात के समय नहर पर विजली द्वारा प्रकाश होता है। नहर में तटीय नगरों की भांति ही प्रकाश रहता है। इस नहर होकर ऐम्स टर्डम को बड़े से बड़े जहाज जा सकते हैं। इस नहर की चौड़ाई २४६ फुट और गहराई ४१ फुट है। जैसे जैसे जहाजों का आकार बढ़ता जाता है, वैसे वैसे नहर के चौड़ा तथा गहरा बनाने की योजना भी की जाती है।

इजमुईदेन का लाक दुनिया के बड़े तथा प्रसिद्ध झालों में है। यह बिलकुल आधुनिक बना हुआ है। इसके देखने से डच लोगों की कला-कौशल तथा समुद्री चतुरता का विशेष ज्ञान होता है। ऐम्सटर्डम में स्चीपवार्च यूज़ के सुन्दर महल धनुषाकार रूप में बने हुये हैं। यहां पर मुख्य २ कम्पनियों के दफ़्तर हैं। नहर के प्रबन्धकों के मकान भी वृत्ताकार गोले में बने हुये हैं।

यहां उत्तरी सागर के नहर का प्रवेश करने वाला लाक बड़ा शानदार बना है। इसकी लम्बाई १३१२ फुट, चौड़ाई १६४ फुट और गहराई ४९ फुट है। इसका स्थान योरुप के सुन्दर हार्बरों में से है। जब कोई जहाज घाट पर खड़ा होने के लिये आता है और हवा तेज़ रहती है तो उसे कुछ समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। हवा का प्रकोप इतना अधिक रहता है कि वह हवा का सामना नहीं कर सकता और बहुधा सूखे तथा छिछले स्थान पर चला जाता है। उसे उस स्थान से खींच कर लाना पड़ता है।

इस नहर होकर दो बड़े जहाज निकल सकते हैं। ऐसा मौका शायद ही कभी आता है जब कि कोई तीसरा जहाज वहां आ जाय। एक बार पूर्वी द्वीप समूह का व्यवसाय करने वाला एक जहाज वहां आ गया। वह धक्का खा गया और उसके अन्दर छेद हो गया। इसके कारण वह जहाज चल नहीं सकता था। टग बोटों द्वारा वह जहाज जावाकेड स्थान पर मरम्मत करने के लिये लाया गया। जब वह जहाज मरम्मत करने के स्थान पर पहुँचा तो लगभग सभी जहाज बनाने वाली कम्पनियों ने उसकी मरम्मत में हाथ बटाया और शीघ्र ही वह बन कर तयार हो गया। ऐम्सटर्डम बन्दरगाह के लोग इतने मेहरबान हैं कि वे अपने देश में आपत्ति में पड़े हुये किसी भी व्यक्ति की सहायता सहर्ष करने को तत्पर हो जाते हैं।

ऐम्स टर्डम बन्दरगाह का भ्रमण करना आसान है, क्योंकि रूईटरफोर स्थान से हार्बर के प्रत्येक स्थान के लिये बोट हर समय छूटा करते हैं। इन बोटों पर नम्बर इजवीर १, २ अथवा ३ करके डाला रहता है। यह नम्बर जाने वाले स्थान के अनुसार डाले जाते हैं। इन बोटों द्वारा हार्बर के देखने योग्य स्थानों का भ्रमण हो सकता है। ऐम्स टर्डम हार्बर को ईज नदी एक ओर उत्तरी सागर नहर से और दूसरी ओर एक बड़ी झील से मिलती है जहां पर व्यापार के कम हो जाने के समय जहाज खड़े रहते हैं।

रूईटर्कैंड के सामने उत्तरी हालैंड को जाने के लिये नहर के घाट हैं। इन घाटों पर तेल तथा पिट्रौल के उतारने का प्रबन्ध है। नदी के और अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे की ओर पिट्रौल उतारने का मुख्य घाट है। इस घाट पर १००,००० टन (लगभग २८००,००० मन) पिट्रौल रखने का प्रबन्ध है। पिट्रौल अथवा दूसरे सामान उतारने के लिये ही ऐम्सटर्डम का बन्दरगाह प्रसिद्ध नहीं है वरन् यहां पर लकड़ी का व्यापार बहुत अधिक होता है। योरुप भर में लकड़ी के व्यवसाय के अनुसार लन्दन के बाद इसी का नम्बर है। इस बन्दरगाह होकर सामान साल भर आता जाता है। राइन नदी तथा उसके बेसिन का सामान इसी बन्दरगाह होकर आता जाता है।

ऐम्सटर्डम बन्दरगाह पर दक्षिणी अफ्रीका से सामान आता है और यहां उतार कर रूम सागर, इँग्लैण्ड, उत्तरी योरुप और अमरीका आदि देशों के बन्दरगाहों को भेजा जाता है।

इस बन्दरगाह पर मुख्य काम एक जहाज़ का माल उतार कर दूसरे जहाज पर लादना होता है। इसलिये यहां पर क्रेनों (सामान उठाने की मशीन) का जँगला लगा रहता है। जहां कहीं भी दृष्टि डालिये क्रेनों का समूह नज़र आता है। यहां एक स्टीम शिप कम्पनी के पास तो ७० से अधिक क्रेनें हैं। इस बन्दरगाह पर कुल ३०० क्रेने हैं। यह क्रेने छोटी और बड़ी सभी प्रकार की हैं। छोटी से छोटी क्रेन १½ टन (लगभग ४२ मन) का बोझ उठा सकती है। तैरती हुई क्रेनों को खींच कर ले जाने वाले छोटे जहाज क्रेनों को खींच कर जहाज के सामान भरने वाली कोठी तक ले जाते हैं। इन टगों (छोटे जहाज) में से कुछ में १५० टन (४२०० मन) सामान आता है।

घाटों पर सामान रखने के लिये गुदाम बने हैं। कुछ सामान रखने वाले स्थान गर्म रक्खे जाते हैं। जहां पर जाड़े के दिनों में देश वाले फल रक्खे जाते हैं। बहुत से घाट तथा खम्भे ऐसे भी बनाये गये हैं जहां पर समुद्र से आने वाले जहाज एक ओर अपना सामान उतारते हैं और दूसरी ओर देश के भीतर ले जाने वाले स्टीमर सामान लादते हैं।

ऐम्सटर्डम हार्बर तथा नहर के दूसरे किनारे वाले नगरों में सामान रखने के लिये गुदाम (सामान भरने के घर) बने हैं जहां पर कहवा, चाय, तम्बाकू, सिनकोना की छाल, रबर, चमड़ा और कपोक आदि वस्तुएँ रक्खी जाती हैं और फिर ऐम्सटर्डम के बाज़ार के लिये रवाना की जाती हैं।

गहरे समुद्री किनारे पर दक्षिणी अमरीका से आने वाला जमा हुआ मांस रखने के लिये स्थान बनाये गये हैं। दूसरे बड़े स्थानों में इण्डीज से आने वाला रबर रक्खा जाता है। एलिवेटरों में गल्ला भरा जाता है। बहुत से एलिवेटर ऐसे हैं जिनमें २५० टन (७००० मन) अनाज एक घंटे में आ सकता है। सबसे बड़ा स्थान सिलो है, जहां पर १८,००० से २०,००० टन (३२६,००० मन से ६०,००० मन) तक गल्ला रक्खा जा सकता है।

सामान के भरने उतारने का काम इतनी फुर्ती से किया जाता है कि देखने वाले देखते ही देखते रह जाते हैं। जब गल्ला भरा या उतारा जाता है तो बड़ी गर्द उड़ती है। कोयला लोहा और दूसरे धातु के सामान उतारने का प्रबन्ध दूसरे कलों द्वारा होता है। जिससे सुगमता पूर्वक काम हो जाता है। इनमें बिजली द्वारा काम होता है।

योरुप में अधिकतर तैरते हुये घाटों तथा दूसरी वस्तुओं से ही काम लिया जाता है। इन तैरते हुये घाटों पर तरह तरह की वस्तुओं का दृश्य बड़ा ही मनोहर होता है। हालैंड के लगभग सभी जहाजी कम्पनियों ने एम्स टर्डम को ही अपना अड्डा बनाया है। हैम्बर्ग अमरीका लाइन, जर्मन पूर्वी अफ्रीका लाइन, एल्डर डेम्टस्टर लाइन, कोसमोस लाइन और उत्तरी जर्मन लाएड लाइन के अड्डे भी यहां पर हैं, जो एम्सटर्डम को दुनिया के और दूसरे भागों से मिलाते हैं।

यदि हम बिजली की रेल द्वारा यात्रा करें तो १ घंटे की सुन्दर रमणीक यात्रा के पश्चात् हम राटर्डम बन्दरगाह पर पहुँचेंगे। राटर्डम मास नदी पर स्थित है। मास नदी राइन नदी की शाखा है। यह नदी स्विज़रलैण्ड को उत्तरी-सागर से मिलाती है।

राटर्डम में मास नदी पर पुल बना हुआ है। इस पुल के ऊपर से राटर्डम नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है। इस पुल से नदी के ऊपर की ओर जाने के लिये एक २०० फुट लम्बा जहाज रहता है। इसमें चार या पांच नावें रहती हैं, जिनमें १००० टन माल लादा जा सकता है। यह नावें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी बोझ से भरी रहती हैं, कि पानी ऊपर बिलकुल समीप तक आ जाता है। जहाज के अगले भाग में खिड़कियां तथा एक छोटा कमरा रहता है। इस छोटे कमरे के आगे सुन्दर फूल दिखाई देते हैं। यह जहाज राइन बार्ज कहलाते हैं। यह जहाज केवल माल लादने वाले ही नहीं होते वरन् इनमें जहाज के कैप्टन उसकी स्त्री लड़के बच्चे और कभी कभी उसके रिश्तेदारों के रहने के लिये भी कमरे बने रहते हैं। राटर्डम से जब यह बाजेज चलते हैं तो एक सप्ताह के पश्चात् जर्मनी के रूहर ज़िले में पहुँच जाते हैं। वहां पर इनका लोहा उतार लिया जाता है। उसके बाद यह जहाज स्विस सीमा तक सामान लादने के लिये जाते हैं और उसे हैम्बर्ग आदि स्थानों को पहुँचाते हैं।

राटर्डम में राइन बार्ज (राइन नदी के जहाज) बहुत दिखाई पड़ते हैं। राटर्डम में पानी के समीप ही हवाई जहाजों का स्टेशन है, उसी के समीप इन बार्जों के ठहरने का स्थान है। अभी हाल में जो हवाई जहाजों की उड़ाई राटर्डम में हुई थी। उस समय राटर्डम में २०० बार्जेज ठहरे हुये थे। यद्यपि ये बार्जेज खड़े रहते हैं, तो भी देखने में बड़े सुन्दर मालूम होते हैं। मास पुल से एक ओर हालैंड अमरीका लाइन के जहाज सामान लादते अथवा उतारते दिखाई पड़ेंगे। नदी के बीच वाले भाग में प्लेट नदी से आये हुये जहाज अनाज उतारते अथवा स्वीडन के जहाज लोहा लादते हुये दिखाई पड़ते हैं।

नदी के बहाव की ओर कुछ दूरी पर जहाजों के बनाने तथा मरम्मत करने के लिये कारखाने दिखाई देते हैं।

राटर्डम और उत्तरी सागर के बीच में बहुत से स्थान ऐसे बने हैं जहाँ होकर नहर में प्रवेश किया जा सकता है या नहर को छोड़ा जा सकता है। यह सभी भाग समतल मैदान होकर हैं। न्यू वाटर वे राटर्डम का मुख्य द्वार है। यह द्वार भूमि काट कर बनाया गया है और समुद्र से मिला दिया गया है। यह द्वार काफी चौड़ा है और कई एक जहाज एक साथ इसमें होकर आ जा सकते हैं। इसके किनारों पर कोयला तथा तेल रखने के लिये स्थान बने हुये हैं। व्लारडिन्जन पोर्ट यहीं पर है। यह पोर्ट हालैंड के सबसे बड़े साल्वेज टग्स के जहाजी बेड़े का स्थान है यहां से जहाज न्यूज़ीलैंड अथवा अटलांटिक सागर के मध्य तक जाते हैं और टूटे हुये अथवा खराब जहाजों को कुशलता पूर्वक खींच कर किनारे पर ले आते हैं। व्लारडिन्जन में मल्लाह तथा जहाज चलाने वाले अधिक संख्या में रहते हैं।

न्यूवाटर वे द्वार के समीप ही हालैण्ड का हुक है। यह मेल तथा पैसेन्जर जहाजों द्वारा हार्विच (एसेक्स) से मिला हुआ है। यहीं पर न्यूवाटर के द्वार में प्रवेश करने वाले जहाजों के घूमने का भी स्टेशन है। मास रेलवे स्टेशन के समीप ही विजनहेविन स्थान है, जहां पर सुन्दर शानदार दफ़्तरों के मकान बने हुये हैं। यहां पर स्थानीय छोटे जहाज ठहरा करते हैं। इसके सिवा लालमन तथा हारिंग्व्लीट नामक दूसरे हार्बर हैं।

राटर्डम के केन्द्रीय भाग में मास एक द्वीप द्वारा दो भागों में विभाजित हो जाता है। इस द्वीप में घाट तथा सामान रखने के लिये स्थान बने हुये हैं। यहां पर जहाज बँधे रहते हैं। यह द्वीप पुलों द्वारा मुख्य नगर की भूमि से मिला हुआ है। यहां पर रेल के दो पुल हैं जो राटर्डम और एम्सटर्डम राहेनडाम और बेल्जियम सीमा तक जाती हैं।

राटर्डम पुलों तथा साइकिल चढ़ने वालों का नगर है। यहां पर जहाज में काम करने वाले मित्रों से बात चीत करने में यात्रियों को बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है, क्योंकि बातचीत करते समय बीच ही में जहाजों तथा टगों का समूह पास होने लगता है और फिर यात्री को कम से कम बीस मिनट रुकना पड़ता है।

बड़े बड़े जहाज ज्वारभाटों की सहायता से राटर्डम सुविधा पूर्वक पहुँच सकते हैं और फिर भी उनके पेंद (कील) के नीचे १ फुट पानी रहेगा। राटर्डम और स्चीडाम हार्बरों में कुल १६ ड्राईडाक्स (सूखे घाट) हैं। इनमें कुछ घाट ४६,००० टन का बोझ उठा सकते हैं।

राटर्डम बन्दरगाह में बहुत से हार्बर हैं, जो काफी बड़े हैं। पारखावेन का हार्बर १४७० फुट लम्बा और ३९३ फुट चौड़ा है। इसकी गहराई ३१ फुट है और घाटों की लम्बाई २९४० फुट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारखावेन घाटों द्वारा भीतरी कई एक नहरों से मिला हुआ है।

राटर्डम में नदी के दाहिने किनारे पर सबसे बड़ा घाट है। इसका नाम बूम्पजेस्कडे है। इसकी लम्बाई ३०५० फुट है। व्लाएडकेड घाट की लम्बाई १७४० फुट और किनारे के पानी की गहराई २८ फुट है। नदी के घाटों में १७ समुद्री जहाज ठहर सकते हैं, इसके सिवा और दूसरे छोटे जहाजों के ठहरने के लिये बहुत अधिक स्थान हैं। मशावेन हार्बर में १४८ एकड़ पानी है। यहां पर एक फौलाद का तैरता हुआ घाट है जो १५००० टन बोझ संभाल सकता है।

राटर्डम में होटलों में ठहरे हुये यात्री इञ्जनों की आवाज़ से ऊँघते ऊँघते सो जाते हैं और उनकी सीटियों से जाग पड़ते हैं। यद्यपि योरुप में बहुत से बन्दरगाह ऐसे हैं जहाँ की ऋतु सुहावनी रहती है और दिन साफ रहता है; तथा धूप होती है किन्तु बहुत थोड़े से बन्दरगाह ऐसे हैं जो यात्रियों को उनके व्यय के बदले में कुछ देते हैं। राटर्डम और एम्स्टर्डम में बहुत से दृश्य देखने में आते हैं, जिससे यात्रियों की तबीअत बहल जाती है। इन बन्दरगाहों से क्रोयडान के हवाई जहाजों के स्टेशन का केवल ११ घंटे का मार्ग है। यहां से लन्दन नगर की यात्रा दो घंटे में की जा सकती है। हवाई मार्गों के अलावा राटर्डम तथा ऐम्सटर्डम के मार्गों को दूसरे मार्ग (हार्विच, हालैंड का हुक आदि के मार्ग) काटते हैं। इन दोनों बन्दरगाहों की यात्रा अवश्य ही यात्रियों को करनी चाहिये।

पाताल तोड़ कुएँ

पाताल तोड़ या आर्टीजियन वेल बनाने के लिये पहले दो या तीन फुट भूमि नमी का पता लगाने के लिये खोदी जाती है उसके बाद भूमि में छेद किया जाता है। एक बड़े विस्मय की बात यह है कि कभी कभी तो भीतर दूर तक सूराख करने पर भी बहुत कम पानी मिलता है और कभी कभी थोड़ी दूर तक ही सूराख करने पर बहुत ज्यादा पानी निकल आता है। इन कुवों को बनाने वाले चतुर इंजीनियर इस बात को भली भांति जान सकते हैं कि किस स्थान पर अच्छा कुवां तयार हो सकेगा। इसलिये पानी का अच्छा स्थान नियत करने के लिये ऐसे चतुर इंजीनियरों की सलाह लेनी आवश्यक होती है।

सभी लोग देहात के कुवों का ज्ञान रखते हैं। वह जानते हैं कि कुवों में ऐसा होता है कि जब पानी की आवश्यकता होती है तो कुवां एकाएक सूख जाता है। कभी कभी कुओं का पानी गंदा होता है या पानी खराब होता है।

आर्टीजियन कुवों द्वारा मनुष्य को स्वच्छ अच्छा और अधिक पानी प्राप्त होता है। आर्टीजियन कुवां प्रति दिन मनुष्य को ५० लाख गैलन पानी दे सकता है। सर्व प्रथम इस प्रकार का कुवां आर्टवाएस में बनाया गया था। उसी स्थान के नाम पर ऐसे कुवों का नाम आर्टीजियन रक्खा गया है।

पृथ्वी के भीतर बहुत सी चट्टानें हैं। कुछ भेदनीय चट्टानें होती हैं और कुछ अभेदनीय होती हैं। बर्षा का पानी छनने वाली चट्टानों में छनता जाता है वह कड़ी चट्टान में जाकर रुक जाता है। कड़ी चट्टान में वह पानी भरता रहता है। नीचे की ओर वह नहीं जा सकता है।

यदि हम पृथ्वी में छेद उस स्थान तक कर दें जहां पर पानी एकत्रित है तो हमारा सूराख अथवा छेद पानी से भर जावेगा। यह हम इस सूराख को निचली भूमि में करते हैं और हमारा सूराख पानी वाली चट्टान के किनारे पर होता है तो फिर पानी अवश्य ही वायु में ऊपर फव्वारे की भांति निकलने लगता है।

लन्दन की भूमि नीची है। पर ऐसे कुवे हजारों हैं और लाखों गैलन पानी लन्दन को इन कुवों से प्राप्त होता है। छेद करने के लिये बरमे कितनी दूर तक चलाये जावें यह बात निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकती है। लन्दन के आस पास तीन चार सौ फुट तक बरमा चलाने से पानी मिल जाता है परन्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं कहीं पर हजारों फुट नीचे तक बरमा चलाना पड़ता है। आस्ट्रेलिया के क्वीन्सलैण्ड प्रान्त में ऐसे कुवों के तयार करने में ५००० फुट नीचे तक बरमा चलाना पड़ा है।

आर्टीजियन कुवों के बनाने के कई ढंग होते हैं। एक ढंग तो वही है जो कोयले की खानों के पता लगाने में प्रयोग किया जाता है। हीरे का बरमा पृथ्वी के भीतर चलाया जाता है जब तक कि खरिया मिट्टी की चट्टान नहीं मिल जाती है। साथ ही साथ लोहे के नल भी लगाये जाते हैं। यदि लोहे के नल न लगाये जांय तो बर्मे के मार्ग में गीली मिट्टी आ जाती है और वह पानी में आकर मिल जाती है।

एक दूसरा सूराख़ करने वाला तरीका परकसन (टक्कर) नियम कहलाता है। इस नियम में लम्बे लम्बे छड़ में भांति भांति के लोहे के औज़ार लगाये जाते हैं जो ऊपर नीचे बदलते हुये मिट्टी और चट्टानों को ऊपर फेंकते जाते हैं जब तक कि औज़ार कीचड़ में नहीं फँसते हैं। कीचड़ पड़ जाने पर वह भव्य पदार्थ ऊपर पम्पों द्वारा खींच ली जाती है और फिर बोरिंग की जाती है जब तक सम्भव होता है हीरे के बरमे का प्रयोग किया जाता है। जब तक आर्टीज़ियन कुवों से पानी ऊपर प्राकृतिक रूप से नहीं आता तो बोरिंग की जाती है और यदि पानी ऊपर न आया तो फिर पानी को पम्प द्वारा आवश्यक ऊँचाई तक उठाया जाता है।

ग्रेनेले और पेरिस में कुवों के बोरिंग का काम किया गया था। वहां काम करने वाले इँजीनियरों को मालूम हुआ कि जब तक एक हजार फुट से अधिक तक बोरिंग न होगी तब तक पानी का ऊपर आना कठिन है। इस कार्य में ८ वर्ष लग गये २३ फुट कंकड़ में, १०० फुट बालू मिट्टी और लकड़ी वाले कोयले की परत में १६ फुट खरिया मिट्टी और मिट्टी मिश्रित भूमि में तथा १३७८ फुट खरिया में, साढ़े अट्ठासी फुट पिंडोल में और १८६ फुट काली मिट्टी और हरे बालू में बोरिंग की गई। उसके पश्चात् पानी एकाएक पृथ्वी के धरातल से ११२ फुट ऊँचा बाहर आ निकला। यह कुवां पेरिस को ८००,००० गैलन पानी प्रति दिन देता है। यह पानी जब पृथ्वी के धरातल पर आता है तो इसका ताप ८१८१ अंश रहता है।

हाथी

हाथी कोमल प्रकृति का पशु है। वह अकेला रहना अधिक स्वीकार करता है। परन्तु उसकी इच्छा अब तक पूर्ण नहीं हुई है इसका मुख्य कारण यह है कि मनुष्य जाति उसके दांत की भूखी है, इसी कारण हाथी का शिकार वह करती है। शिकार से बचने के लिये हाथी को अपने जीवन की रक्षा करनी पड़ती है।

ऐसी स्थिति में हाथी अफ्रीका के बनों में अपना प्राकृतिक जीवन निर्वाह करता है। अब से लगभग १०० वर्ष पहले अफ्रीका के हाथी स्वतंत्रता पूर्वक अपना एकान्त जीवन शान्ति के साथ व्यतीत करते थे परन्तु जब से वहां पर मनुष्य जाति बन्दूकें लेकर जाने लगी है तब से हाथी का जीवन संकटमय हो गया है और अब उसे हर समय संदेह लगा रहता है कि कहीं कोई उस पर आक्रमण करने वाला तो नहीं आ धमका है।

लगभग ३० साल पहले जब कोई अफ्रीका के बनों में भ्रमण करता था तो उसे हाथी बहुत दिखाई पड़ते थे परन्तु आज बहुत कम दृष्टिगोचर होते हैं। शिकार के भय से पशु की प्रकृति बदल जाती है। इसी कारण हाथी की प्रकृति में भी अन्तर आगया है।

स्वेत शिकारियों के आने से हाथी की प्रकृति में और भी अन्तर पड़ गया है। वह अब अपने सुखमय तथा शान्तिमय स्थानों में हिलोरें करता तथा मौजें उड़ाता नहीं दिखाई पड़ता है। हाथी सीधा और कोमल प्रकृति का होता हुआ भी अब मनुष्य जाति को शिकार किये जाने के कारण ही बैरी समझने लगा है। अफ्रीका के हाथी बहुत समझ बूझ कर किसी भी स्थान पर बैठने का साहस करते हैं। बैठने के पहले वह चारों ओर सावधानी के साथ देख लेते हैं यदि उन्हें खतरा मालूम हो जाता है तो शीघ्र ही वह आक्रमण करने का प्रयत्न करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकार किये जाने के भय से अफ्रीका के हाथी खुले स्थानों पर नहीं आते हैं। वह अधिकतर एकान्त अथवा रिज़र्व (वह वन जहाँ शिकार की आज्ञा नहीं होती) बनों में रहते हैं। हाथी को छेड़ना अच्छा नहीं है। जब वह मनुष्य को वन में देखता है और यदि उसे किञ्चित मात्र भी संदेह हो गया कि मनुष्य उसे या उसके कुटुम्ब के प्राणियों को किसी प्रकार भी कष्ट देगा तो मनुष्य के ऊपर आक्रमण करने से कभी भी नहीं चूकेगा। हाथी की चाल बड़ी तेज होती है। वह २० मील प्रति घंटा चलने वाली मोटर को सरलता के साथ पकड़ सकता है। इसलिये जब वह मनुष्य की ओर दौड़ता है तो फिर उससे बच कर जाना कठिन है। मनुष्य को वह अपने सूंड़ में पकड़ कर किसी बृक्ष में पटक देता है उसके पश्चात् फिर वह अधमरे शरीर को कुचल कर मार डालता है। मनुष्य यदि भाग कर बृक्ष के ऊपर चढ़ कर प्राण रक्षा करना चाहता है तो भी वह उसके लिये कठिन है क्योंकि जिस बृक्ष पर मनुष्य चढ़ जाता है हाथी उसी बृक्ष को पकड़ कर हिलाता रहता है जब तक कि वह उस मनुष्य को पेड़ के नीचे गिरा नहीं लेता है।

जङ्गलों में हाथी १५ फुट ऊँची घास के बीच घुसे रहते हैं। बहुधा वे समूह में रहते हैं। इसलिये बन के अन्दर यदि मनुष्य किसी हाथी को देखता है तो उसे केवल उसी हाथी से ही बचने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये बल्कि उस और दूसरे हाथियों की आहट भी रखनी चाहिये। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जब मनुष्य एक हाथी की ओर देखता है तो अचानक हाथियों का समूह उसे चुपके से आकर चारों ओर से घेर लेता है।

हाथी की पहचान बृक्षों के बीच में करना कठिन हो जाता है। जब वह बृक्षों के मध्य छिपे रहते हैं तो मनुष्य उनके होने की सम्भावना उस समय तक नहीं कर सकता जब तक कि वह हीलते डोलते नहीं हैं। हाथी मनुष्य का पता शीघ्र लगा लेता है। वह मनुष्य को देख तथा सूंघ कर पता लगाता है। उसकी आखें बहुत छोटी होती हैं तो भी वह सूंघ कर और उपायों से शीघ्र ही पता लगा लेता है। इसलिये यदि हवा मनुष्य के पीछे की ओर चलती रहती है तो उसका पता लगाया जाना हाथी के लिये बिलकुल सरल हो जाता है।

यदि हाथी से वन में भेंट हो जावे और वह समीप हो तो मनुष्य को चाहिये कि वह सीधा भागने के बजाय तिरछा भागे जिस से उसकी महक हाथी को प्राप्त न हो सके।

एक बार कुछ लोग मोटर पर जा रहे थे मार्ग में उन्हें हाथी मिल गया। उन्होंने ने देखा कि हाथी से बचना कठिन है तो वह मोटर को खड़ी करके अपनी जान बचाने के लिये एक चीटियों द्वारा बनाई हुई पहाड़ी के पीछे चले गये। हाथी मोटर के समीप आया और चारों ओर सूंघा उसके बाद उसने अपनी सूंड़ कार के अन्दर डालकर देखने लगा कि उसके अन्दर कोई बैठा तो नहीं है। उसके बाद वह अपना सूंड़ ऊपर उठाकर सूँघने लगा। हवा बन्द थी इसलिये उसे छिपे हुये लोगों का पता न चला। वह चारों ओर ढूंढ़ने के पश्चात् जिस मार्ग से मोटर आई थी वह उसी मार्ग की ओर चला गया।

हाथी बड़ी सावधानी तथा चुपके के साथ चलता है। उसके चलने में किञ्चित मात्र भी आवाज़ नहीं पैदा होती है। वह समूह के समूह एकाएक मनुष्य के सामने उस समय आ जाते हैं जब मनुष्य के उसके आगमन की आहट कदापि मालूम नहीं होती है।

हाथी घने जङ्गल, बृक्षों के बन, कंटीली झाड़ियों और हाथी-घास (बड़ी ऊँची घास) के मध्य रहा करते हैं। हाथी घास १५ फुट तक ऊँची होती है। हाथी करँगो उगान्दा, केन्या, टैंगानीका, हिन्दुस्तान, बरमा और बोरनिओ द्वीप में पाये जाते हैं। हाथी शीत की भी कुछ चिन्ता नहीं करता है। वह १० हजार फुट ऊँचे पवतों के ऊपर बांस के बनों में भी देखा गया है जहां कठिन शीत पड़ती है।

हाथी बनों में बड़े बड़े समूहों में रहते हैं। उनका समूह ३०० हाथियों तक का होता है। हाथियों का समूह बन के अन्दर अपने बनाये हुये मार्ग पर चलता है। समूह के आगे एक बड़ा नर हाथी होता है उसके पीछे मादा, बच्चे होते हैं। कभी कभी हाथियों के समूह में मादा और बच्चे ही होते हैं। जब बच्चे समूह के बीच में चलते हैं तो वह बड़े सुहाने लगते हैं। छोटे बच्चे लगभग ३ फिट ऊँचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। जब समूह किसी भय के कारण एकाएक घूम पड़ता है तो यह छोटे बच्चे बड़ी सावधानी के साथ अपने को अपने बड़ों के नीचे कुचले जाने से बचा लेते हैं। बच्चों को माँ चलते चलते उलट उलट कर देखती रहती हैं। जब बच्चे अपनी माँ को प्यार दिखाना चाहते हैं तो वह अपना छोटा सूँड़ अपनी माँ के बड़े सूँड़ के ऊपर रख देते हैं।

हाथी के छोटे बच्चे कभी कभी आपस में एक दूसरे से सूंड़ द्वारा लड़ते भी हैं। वह जब एक दूसरे को प्यार करना अथवा चूमना चाहते हैं तो आपस में सूड़ों को लपेट देते हैं।

हाथी के थन गाय अथवा और दूसरे जानवरों की भांति पीछे के पैरों के समीप नहीं होते हैं वह आगे की ओर आगे के दोनों पैरों के मध्य में होते हैं। जब हाथी का बच्चा दूध पीना चाहता है तो वह अपनी मां के नीचे खड़ा हो जाता है और अपना सूंड़ पीछे की ओर फेंक कर मुँह से दूध पीता है।

हाथी अपने स्नान करने के लिये स्थान नियत रखते हैं। स्नान करने के बाद वह एक नियत वृक्ष अथवा चट्टान पर अपना शरीर रगड़ते हैं। शरीर की रगड़ से वह वृक्ष और चट्टान चिकने हो जाते हैं।

हाथी नहाना बहुत पसंद करता है वह छिछले पानी में जाकर घंटों नहाता है। वह अपने सूंड़ से अपने ऊपर पानी फेंक फेंक कर नहाता है। पानी के अन्दर वह अपना सिर और पानी के ऊपर सूँड़ करके लेट भी जाता है। हाथी अधिक समय तक गर्मी के कारण नहाता है। वह स्वच्छता के कारण नहीं नहाता है क्योंकि देखा गया है कि जब वह नहा कर पानी के बाहर निकलता है तो पानी की भांति ही वह सूँड़ में भर कर गर्द भी अपने ऊपर फेंकने लगता है।

जब हाथी पिछले स्थान पर गड्ढा बनाना चाहता है तो वह अपनी सूंड़ से बालू निकाल निकाल कर अपने पीछे फेंकता जाता है और जब एक बड़ा गड्ढा बन जाता है तो भर पेट वह वहां पानी पीता है।

हाथी बड़ा समझदार जानवर होता है जब उसे किसी स्थान पर खतरा मालूम होता है तो वह उस स्थान पर नहीं जाता है। पानी के अन्दर उसे घड़ियाल का भय होता है इसलिये पानी में समझ बूझ कर फूंक फूंक कर पैर रखता है। जिस स्थान पर कीचड़ होती है वहां पर वह नहीं जाता है फिसलने वाली भूमि पर वह पेड़ की टहनियां तोड़ तोड़ कर अपने पैर के नीचे रखता हुआ चलता है परन्तु मालूम होता है कि हाथी सारी चतुराई अपने जीवन में ही अभ्यास करके सीखता है क्योंकि हाथी का छोटा बच्चा सभी प्रकार की वस्तुओं के जानने का इच्छुक होता है। वह जिस किसी नई वस्तु को देखता है उसे बार बार दौड़ दौड़ कर देखता है और जब तक उसे पूर्ण ज्ञान नहीं होता उसकी उत्सुकता नहीं जाती है।

एक बार एक मनुष्य किसी ऊँचे स्थान पर धातु की खोज में गया उसने ऊपर जाकर देखा कि वहां पर वह खड़ा था वहां से २० गज की दूरी पर एक हथिनी (मादर हाथी) खर्राटे लेती हुई सो रही थी उस हथिनी के साथ में बच्चा भी था। हाथी के बच्चे ने उस मनुष्य को देख लिया। देखते ही वह उत्सुकता के साथ दौड़ कर मनुष्य के समीप आया और कुछ समय तक खड़ा उसे देखता रहा। वह मनुष्य के बिलकुल समीप तक चला गया था। परन्तु फिर कुछ भय खाकर वह अपनी मां के पास भाग गया। उससे फिर भी रहा न गया और वह शीघ्र ही फिर उस मनुष्य के समीप गया परन्तु जब वह मनुष्य जैसे अजनबी का ज्ञान भली प्रकार न कर सका तो लम्बी चिग्घाड़ देकर उसने अपनी मां को जगा दिया। उस समय तक वह मनुष्य भी अपने प्राण के भय से भाग गया था। इससे मालूम होता है कि हाथी इच्छुक होता है।

हाथी कभी भी किसी दूसरे जंगली पशु पर आक्रमण करते हुये नहीं देखा गया है। जब वह जेब्रा, जिराफ तथा और दूसरे पशुओं के सामने आ जाता है तो अपने स्थान पर पैर पटकने और चिल्लाने लगता है परन्तु उसकी यह आवाज कोप से भरी नहीं होती है इसलिये प्रतीत होता है कि वह किसी भी बनैले पशु से लड़ना नहीं चाहता है परन्तु कभी कभी जब शेर एकाएक गरज कर उस पर आक्रमण करता है तो वह भी चिग्घाड़ कर अपने पैर पटकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ अपने सूंड़ के सहारे उसे पकड़ना चाहता है। कहा जाता है कि शेर और हाथी का युद्ध देखने योग्य होता है। शेर अपने भयानक खूंखार पंजे से हाथी पर आक्रमण करता है और हाथी अपने सूंड़ से पकड़ कर उसे अपने पैरों के नीचे दबा कर कुचल डालना चाहता है हाथी प्राकृतिक रूप से लड़ाका पशु नहीं है। वह चुपचाप अपने मार्ग जाना चाहता है।

अफ्रीका के हाथी श्वेत चमड़े वाले आदमियों से बहुत चिढ़ते हैं इसका मुख्य कारण यह है कि श्वेत चमड़े वाले लोग वहां जाकर हाथी का शिकार बहुत करते हैं इसलिये हाथी ने उन्हें अपना शत्रु बना रक्खा है। बनों में जब हाथी मोटर को देख लेता है। तो उसे अपना बैरी समझ कर उस पर आक्रमण कर देता है।

यदि मनुष्य अचानक हाथी के समीप चला जाय और हाथी उस पर आक्रमण करने को हो तो मनुष्य को चाहिये कि वह ऐसी दिशा को भागे जिधर से वायु न चलती है। यदि कोई बुद्धि काम न दे तो फिर मनुष्य को चाहिये कि वह धूर (गर्द) उठा कर हाथी की ओर फेंके। ऐसा करने से हाथी डर जाता है कि कहीं गर्द आँख में न पड़ जाय दूसरे वह मनुष्य को गर्द के कारण देख भी नहीं सकता है।

रूस के लिये सामग्री पहुँचाने वाले मार्ग

फारस की खाड़ी के बसरा, खुर्रम शहर, अहवाज़, बन्दरशाहपुर और बुशीरे आदि बन्दरगाहों पर भारतवर्ष, आस्ट्रेलिया, अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन से आने वाले सामान के उतारने तथा रखने के लिये अच्छा प्रबन्ध है। वहां पर प्रत्येक राष्ट्र के जहाज़ (जिनमें स्वतंत्र डच, यूनानी और नार्वे के जहाज़ी बेड़े हैं) सामान उतारते दिखाई पड़ते हैं। इन जहाजों की समस्त सामग्री रूस के लिये ही नहीं होती है। कुछ सामान टर्की, कुछ इराक और कुछ ईरान जाता है परन्तु अधिकांश भाग सोवियट रूस को ही जाता है।

ईरान-सोव-ट्रांस संस्था का संगठन रूस ने किया है। यह संस्था उत्तरी ईरान के तबरेज़, पहेलवी, नाशर, बन्दरगाह और मेशेद आदि स्थानों पर सामान ले जाती है। सामान ले जाने के लिये प्राकृतिक रूप से ट्रान्स इरानियन रेलवे का प्रयोग किया जाता है। यह लाइन खाड़ी पर के बन्दरगाह बन्दरशापुर से कैस्पियन सागर के बन्दरगाह बन्दर शाह तक जाती है। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय रेलवे लाइन है। यह एक लाइन वाली रेलवे है। इसको दोहरी लाइन बनाने में कम से कम दो वर्ष समय लगेगा। यह एक कठिन मार्ग होकर जाती है। परन्तु इस लाइन का पुनः संगठन करने और रेल के छकड़ों के बढ़ाने से दोगुना और चौगुना अधिक सामान पहुँचाया जा सकता है।

लुढ़कने वाले यंत्र तथा लोकोमोटिव छकड़े वहां पर भारतवर्ष, इँगलैंड, आस्ट्रेलिया और हांगकांग से पहुँचाये जा रहे हैं।

इस रेलवे लाइन के दोनों सिरों पर बन्दरगाह हैं परन्तु बन्दरगाहों पर सामान उतारने चढ़ाने की सुविधायें कम हैं इसलिये शाहपुर बन्दरगाह पर जहाज़ों के खड़े होने तथा सामान उतारने के लिये अधिक स्थान बनाने की योजना की गई है। योजना भारतीय इञ्जीनियरों के हाथ की बनाई हुई है और भारतीय कम्पनियों द्वारा ही घाट आदि थोड़े समय में तयार कराये जावेंगे।

उत्तरी किनारे पर बन्दरगाह लगभग बिलकुल बेकार है। पिछले कुछ वर्षों में समुद्र बन्दरगाह को छोड़ कर हट गया है और केवल छोटे छिछले जहाज़ वहां जा सकते हैं। इसलिये सामान को किसी दूसरे स्टेशन पर पहुँचाना होगा जहां से वह कैस्पियन सागर के किसी दूसरे स्थान या काकेशस के किसी स्थान को सड़क द्वारा पहुँचाया जा सके। इसका भी प्रबन्ध किया जा चुका है।

प्रधान रेलवे लाइन तक बहुत सी सहायक छोटी रेलवे लाइनें भी बनाई जा रही हैं। उदाहरणार्थ बन्दर शाहपुर पर सामान उतारने के अतरिक्त कारून नदी के किनारे खुर्रम शहर में जहाजों द्वारा सामान उतारा जा सकता है। वहां से उत्तर की ओर अहवाज़ के बड़े रेलवे स्टेशन तक सामान नदी द्वारा पहुँचाया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। अह्वाज़ से रेल द्वारा सामान अंदीमेश पहुँचाया जा सकता है। अंदीमेश, डिशफुल का रेलवे स्टेशन है। उसके बाद सड़क द्वारा सामान हमदम, पहलेवी और तबरेज़ को पहुँचाया जावेगा।

रेलवे मार्ग के अर्ध-उत्तरी भाग में सामान तेहरान में उतारा जा सकता है और फिर सड़क द्वारा काज़्विन से पहलेवी और तबरेज को जा सकता है या सीधे बन्दरशाह को पहुँचाया जा सकता है और फिर वहां से बन्दरगाह को पहुँचाया जा सकता है। इस बन्दरगाह से अधिक सामान नहीं जा सकता परन्तु यह बन्दरगाह बन्दरशाह द्वारा भेजे जाने वाले सामान में सहायक रूप होगा।

इनके अतिरिक्त दो और ट्रान्स-इरानियन सड़क मार्ग हैं यह मार्ग कई सौ मील लम्बे हैं और केवल लारी द्वारा सामान इन मार्गों में होकर जा सकता है। मार्ग में लारियों के सफाई आदि का भी प्रबन्ध करना होगा। इनमें से एक मार्ग बुशायर-स्फहान हमदन सड़क है। यह मार्ग ईरान के मध्यवर्ती भाग होकर कैस्पियन सागर के पहलवी नामक बन्दरगाह को जाता है। इस मार्ग द्वारा अधिक मात्रा में सामान नहीं जा सकता और शीत काल के सामान ले जाने में बड़ी कठिनाई पड़ेगी। शीत-काल में यह मार्ग बरफ से जम सकता है।

दूसरा मार्ग भारतीय स्थल मार्ग है। जो बिलोचिस्तान सीमा से रेलवे लाइन से चलता है और उत्तरी-पूर्वी ईरान होकर मेशेद को जाता है। उसके बाद कैस्पियन सागर के उत्तर की ओर होकर रूस के मध्यवर्ती भाग को जाता है। इसी मार्ग द्वारा भारतीय सामग्री रूस को भेजी जा रही है।

एक दूसरा सहायक मार्ग इराक और ईरान होकर है। यह बसरा के आधुनिक बन्दरगाह से आरम्भ होता है और फिर इराक राज्य की रेलवे लाइनों होकर ६०० मील का मार्ग तै करने के बाद खानकिन के स्टेशन को पहुँचता है। यह स्टेशन ईरान की सीमा पर है। खानकिन से ६ या ८ सौ मील लम्बा मार्ग तय करने के बाद सामान पहलेवी या तबरेज़ पहुँचाया जा सकता है।

कहा जाता है कि ब्रिटिश सरकार ने बरमा रोड की भांति पूर्वी इरान में सड़क बनाने के लिये उधार और पट्टा सम्बन्धी सहायता की मांग की है। यह सड़क भारतीय रेलवे लाइनों को रूसी रेलवे लाइनों से मिला देगी। यह सड़क सभी ऋतुओं में चालू रह सकेगी।

अमरीकन लोगों का ख्याल है कि जिस प्रकार बरमा सड़क बरमा से यूनान तक शीघ्र ही बन गई है उसी प्रकार ईरान को यह सड़क भी कुछ ही सप्ताह में बड़ी बड़ी मोटर लारियों के प्रयोग करने योग्य बन कर तयार हो जावेगी।

इस सड़क का बनना असम्भव नहीं है परन्तु इस मार्ग में फारस का दश्ते लूट वाला भाग पड़ता है। भारतवर्ष की उत्तरी-पश्चिमी रेलवे लाइन की एक शाखा बिलोचिस्तान को जाती है। यह शाखा ईरान के जहीदन नामक सीमावर्ती स्थान तक जाती है। जहीदन नगर का दूसरा नाम दुज़दन है। जहीदन से ६०० मील धुर उत्तर की ओर सरख्स नामक स्थान रूस और ईरान की सीमा पर है। सरख्स स्थान को रूस की तर्कसिब रेलवे लाइन की एक शाखा आती है। ज़हीदन से सरख्स तक का फारसी प्रदेश बड़ा जङ्गली और पहाड़ी है इसी से उसका नाम दश्तेलूट (लूट का बन) है।

युद्ध कौशल की दृष्टि से यह मार्ग बड़ा ही आवश्यक है। वर्तमान समय में तीन ही मार्ग ऐसे हैं जिनसे होकर रूस को सामान मिल सकता है १—आर्कञ्जेल होकर ट्रान्स अटलांटिक मार्ग, २—प्रशान्त महासागर का मार्ग व्लाडीवास्टक होकर—ट्रांस साइबेरियन रेलवे, ३—फारस की खाड़ी और ईरान होकर।

इनमें से प्रथम दो मार्ग शत्रु के हमले के कारण बाद किये जा सकते हैं। यदि मास्को का पतन होता है तो आर्कञ्जेल मार्ग बड़ा दुष्कर हो जावेगा और यदि जापान युद्ध में उतरता है तो फिर व्लाडीवास्टक होकर सामान नहीं आ सकेगा और फिर इस लम्बे मार्ग द्वारा रण-स्थल पर सामान पहुँचने में बहुत समय लगेगा जो अधिक उपयोगी न सिद्ध होगा।

अब केवल फारस की खाड़ी और ईरान का मार्ग शेष रह जाता है बन्दरगाह से बन्दरशाह पुर तक ट्रांस ईरान रेलवे जाती है। अभी यह अकेला मार्ग है और रूसी रेलवे से मिला नहीं है। रूस जाने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक सामान जहाजों द्वारा फारस की खाड़ी के सिरे पर पहुँचाया जावेगा और फिर वहां से रेल के छकड़ों पर लदेगा। इस रेलवे के सुधार तथा इसे उत्तरी-पश्चिमी ईरान सिरे तक बढ़ाने की योजना का समाचार मिला है। परन्तु रेलवे लाइने को चौड़ा बनाने और पर्वतीय जङ्गली मार्ग होकर काट कर ले जाने में बहुत धन, समय और मजदूरों की आवश्यकता है।

इसलिये सबसे आसान यह है कि करांची में समुद्र द्वारा आया हुआ माल उतारा जावे। करांची बन्दर शाहपुर की अपेक्षा संसार के भिन्न-भिन्न भागों के अधिक समीप पड़ता है। करांची से जहीदन को सामान रेलगाड़ी द्वारा जा सकता है। यह मार्ग छोटा भी है। जहीदन से मोटर लारी द्वारा केर्मन, ब्रिजन्द और मेशेद होते हुये मेर्कास्नोवोडस्क रेलवे पर पहुँच सकता है। यह रेलवे रूसी सीमा पर है। इस प्रकार भारतीय सेना भी बिना किसी अड़चन के सीधे भेजी जा सकेगी और जहाज़ पर सामान लाद कर जहाज़ ले जाने की कठिनता भी न उठानी पड़ेगी।

इस मार्ग होकर सामान शीघ्र पहुँचेगा। साथ ही साथ यह रूसी सैनिक लाइन के पीछे काफी दूर पर होगा और यदि जर्मन काकेशिया पर पहुँच भी जावें या उत्तरी-पश्चिमी ईरान में प्रवेश कर जावें तो भी वह ईरान की पूर्वी सड़क से सैकड़ों मील की दूरी पर होंगे। पूर्वी सड़क कैस्पियन सागर के पूर्वी भाग होकर रूस में प्रवेश करेगी। इसलिये जब रूसी लोग साइबेरिया भगा दिये जावेंगे तो भी यह मार्ग शत्रु के अधिकार में आवेगा नहीं तो यह मार्ग चालू रहेगा।

वर्तमान युद्ध में सड़कें रेलवे लाइनों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। यह बात उन राष्ट्रों के लिये और भी अधिक है जैसे कि इङ्गलैंड या रूस हैं।

बम्ब वर्षक या षड्यंत्र करने वाले रेलवे लाइन (खास कर जिसमें पुल और सुरंग हो) को सरलता पूर्वक तोड़ सकते हैं जैसा कि बाल्कन में सिद्ध हो चुका है परन्तु सड़क का बन्द करना कुछ कठिन है। जापानी लोगों ने बर्मा सड़क पर नदी के पुल को तोड़ दिया परन्तु इस कार्य से मार्ग नहीं रुका है। सामान नावों द्वारा नदी पार ले जाया जाता है। जापानी लोगों के महीनों बम्ब वर्षा के पश्चात् भी अमरीकन तथा चीनी विशेषज्ञ के कथनानुसार बर्मा रोड से इतना अधिक सामान आता जाता रहा जितना कि पहले नहीं आता जाता था। पूर्वी ईरान में बम्ब वर्षा द्वारा सड़क का नष्ट करना तो और भी अधिक कठिन होगा क्योंकि वहाँ पर समतल रेगिस्तानी भाग पड़ता है और नदियाँ भी कम हैं।

पूर्वी ईरान में जहीदन से सरख्स तक की दूरी ६०० मील है। वहाँ का कारवाँ मार्ग जहीदन से आरम्भ होता है और केर्मान ब्रिजन्द और मेशेद होता हुआ सरख्स को जाता है। यद्यपि कारवाँ मार्ग की लम्बाई ६०० मील से अधिक है तो भी प्रस्ताविक सड़क इसी कारवाँ मार्ग होकर ही बननी सम्भव होगी।

इस कारवाँ मार्ग में सरख्स से मेशेद तक सड़क पर मोटर चल सकती है। मेशेद से ब्रिजन्द की दूरी ३२८ मील है प्राचीन यूनानियों का दावा था कि इस सड़क पर भी मोटरें चल सकती हैं परन्तु सैनिक सड़क, साधारण सड़क से कहीं भिन्न होती है। सैनिक सड़क को इतनी मज़बूत होनी चाहिये कि जिससे बोझ से लदी हुई बड़ी लारियां उस पर तेज़ी के साथ दौड़ सकें।

चूँकि प्रस्ताविक सड़क-मार्ग पर कच्चा मार्ग पहले सा ही है इसलिये उसका बनाना बहुत कठिन नहीं है। ब्रिजन्द से जहीदन और भारतवर्ष का मार्ग लूट से केर्मान होकर या अधिक पूर्व की ओर नेह होकर जावेगा। इसमें केर्मान होकर सड़क बनना अधिक उपयोगी तथा सरल होगी। नेह वाला मार्ग फारसी-बिलोचिस्तान होकर जावेगा और पर्वतीय होने के कारण उसे बहुत चक्करदार बनाना पड़ेगा। केर्मान और जहीदन के मध्य वाले पर्वतीय भाग में भी यही बात करनी होगी।

कहा जाता है कि केर्मान-जहीदन सड़क होकर बैलगाड़ियां चल सकती हैं। केर्मान से जहीदन पहुँचने में उन्हें २५ या ३० दिन लग जाते हैं। इस मार्ग होकर ही फारस की दरी और कालीन भारतवर्ष में आती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे जिस मार्ग होकर सड़क बनाई जावे उसमें काफी स्थान ऐसे होंगे जहां सड़क को ऊपर ले जाना होगा अथवा नीचे उतारना पड़ेगा। कर्मान समुद्र के धरातल से ५,६०० फुट ऊँचा है। लूट प्रान्त का अधिकांश (कर्मान और ब्रिजन्द के मध्य का) भाग निचला है। ब्रिजन्द ४६०० और मेशेद ३१०० फुट समुद्र के धरातल से ऊँचे हैं। मेशेद और सरख्स के मध्य कई एक पर्वतीय श्रेणियां भी हैं।

जिस मार्ग पर मोटर और आदमियों को पानी अधिक प्राप्त हो सकेगा वही मार्ग अधिक पसंद किया जावेगा। बिना पानी के मोटर अथवा मनुष्य अपनी यात्रा नहीं कर सकते हैं। खासकर ईरान के नवीन मरु स्थल में यात्रा करनी तो और भी अधिक कठिन है।

जब रूस की सहायक सामग्री संसार के भिन्न भागों से रूसी रेलवे लाइन पर पहुँच जावेगी तो मेर्व रेलवे लाइन द्वारा वह सामान अश्काबाद पहुँचाया जावेगा। अश्काबाद नवीन रूसी कारखाने वाले प्रदेश का केन्द्र है। सामान क्रानोवोड्स्क भी भेजा जायगा। यहां पर तेल के कुएँ हैं और यह बाकू के सामने कैस्पियन सागर का पूर्वी तट है।

पूर्व की ओर रेलवे स्टैलिनाबाद और फरगना को जाती है जहाँ तेल के कुएँ खोदाये जा रहे हैं। ताश-केराट से रेलवे लाइनें यूराल और पश्चिमी साइबेरिया को भी जाती हैं। सचमुच ही यह नया सामान ले जाने वाला मार्ग नवीन रूस के मध्यवर्ती भाग में ले जाकर सामान उतार देगा।

इस बड़े स्थल मार्ग का पूर्वी ईरान पर क्या प्रभाव पड़ेगा इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। ब्रिजन्द नगर खुरासान प्रान्त में स्थित है। यह प्रान्त काफी बड़ा है परन्तु संसार में इसका नाम बहुत कम प्रसिद्ध है। ब्रिजन्द अपनी कालीनों, दरियों और केसर के लिये प्रसिद्ध है। कर्मान नगर के चारों ओर पक्की दीवार है। वहां शाल दुशाले और दरियां अच्छी बनती हैं। शायद इस सड़क के तयार हो जाने से पूर्वी ईरान में जागृति उत्पन्न हो जावे।

रूसो-जर्मन युद्ध

(गतांक से आगे)

जुलाई मास के अंतिम दो सप्ताह में उत्तर की ओर प्स्कोव और ओस्टोव नगरों पर जर्मन सेना ने अधिकार किया और वेलिकाया नदी पर पुल बना लिया। मध्यवर्ती क्षेत्र में घोर संग्राम हुआ और जर्मन सेना अपर नीपर नदी और स्मोलिंस्क के समीप तक पहुँच गई। दक्षिण की ओर ज़्हितोमीर का रण क्षेत्र बढ़ गया।

कोरोस्टेन, वर्दीचेव और बएला, जेर्कोव (उत्तर को ओर) से दक्षिण तक भूमि पर जर्मन सेना का अधिकार हो गया और कीव नगर खतरे में हो गया। उस समय प्स्कोव, ओस्ट्रोव, विटेवेस्क और कोरोस्टेन तथा बएला जेर्कोव चार स्थानों में होकर जर्मन सेनायें रूसी सीमा पर चढ़ रही थीं।

द्वितीय आक्रमण (अगस्त-सितम्बर)

अगस्त मास के आरम्भ में जर्मन सेना का दूसरा आक्रमण आरम्भ हुआ। उत्तर की ओर विमानों की अधिकता के कारण वानलीब लूगा तथा नोगोरोड तक बढ़ा और थोड़ा अवकाश लेने के बाद तलिन तथा समस्त एस्टोनियन तट पर अधिकार करके लेनिनग्राड का घेरा डाल दिया। रूसियों ने लेनिनग्राड की रक्षा बड़ी चतुरता और वीरता से की। बाल्टिक सागरीय रूसी जल सेना ने भी आश्चर्यजनक युद्ध किया जिसके कारण लेनिनग्राड की रक्षा हुई। मध्य भाग में जनरल हाट और गूडेरियन की संरक्षता में जर्मन पैञ्जर सेना बढ़ी और स्मोलिंस्क, मोहिलेब, गोमेल और चर्नीमोव पर अधिकार जमा लिया। उत्तर की ओर से भी कीव नगर पर जर्मन सेना ने खतरा उत्पन्न कर दिया।

सबसे खतरनाक धावा दक्षिण की ओर यूक्रेन सीमा पर बस्लाजेर्कोव से यूनान की ओर जनरल वान रून्स्टेट का हुआ। उसने समस्त रूसी सेना को घुमा कर नीपर और बग नदी पर कर दिया! वहाँ रूसी सेना बड़ी तबाही और बर्बादी के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिरती घिरती बची। जर्मन सेना अपने पूर्ण वेग के साथ बढ़ती गई और क्रेमेनचुग स्थान पर उसने नीपर नदी पर पुल बनाया और कीव नगर पर दक्षिण की ओर से भी खतरा उत्पन्न कर दिया। क्रिवायरोग का लोहे का प्रदेश रूस के हाथ से निकल गया। रूसियों को मजबूर होकर नीपर नदी के बांध को नष्ट करना पड़ा और वह निकोलाएव में जहाज बनाने के घाटों के निर्माण करने से वञ्चित रह गये। ओडेसा नगर का घेरा डाल दिया गया।

इस प्रकार सितम्बर के अर्ध मास तक जर्मन सेना रूसी टैंक तथा विमानों की सेना को विध्वंस करती, पैदल सेना का संहार करती, सेना को कैद करती आगे बढ़ी। लेनिनग्राड पर खतरा उत्पन्न किया, ओडेसा नगर घेर लिया, कीव नगर चारों ओर से खतरे में हो गया और मास्को में लड़ाई के डंके की ध्वनि सुनाई देने लगी।

सितम्बर मास के दूसरे अर्ध भाग में उत्तर की ओर जर्मन सेना तो अधिक नहीं बढ़ सकी परन्तु दक्षिण की ओर पुनः भीषण आक्रमण हुआ और वानबोक (जर्मन) की सेना का दाहिना अंग कोनोटोव को काट कर आगे बढ़ गया और रून्स्टेट की सेना का वाम पक्ष उत्तर की ओर वानबोक की सेना से हाथ मिलाने के लिये आगे बढ़ा। इसलिये कीव नगर को खाली करना पड़ा। बड़ी कठिनाई तथा हानि के पश्चात इस बार भी रूसी सेना घेरे में पड़ने से बच सकी। अधिक दक्षिण की ओर जर्मन सेना ने नीपर नदी पार करके खर्सोन तथा पेरेकोप पर अधिकार कर लिया। जर्मन सेना आगे बढ़ती ही गई और रूसी सेना को दोनों ओर से अधिकाधिक भय बढ़ता ही चला गया।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ नवम्बर—संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जल सेना ने जर्मन समुद्री जहाज़ों पर धावा मारा।

२ नवम्बर—चेंगचाव पर चीनी सेना ने फिर अधिकार कर लिया। टर्की के सभापति ने जर्मनी को चेतावनी दिया। ब्रिटिश विमानों ने उत्तरी-पश्चिमी जर्मनी के हवाई अड्डे पर धावा मारा। वेल्स पर जर्मन बम वर्षक विमानों ने धावा किया और ६ बम वर्षक गिराये गये। मास्को के युद्ध में जर्मन सेना की प्रगति रोक दी गई। जापानी सेना ने थाई देश पर आक्रमण करने की तयारी किया। जापान की नई सरकार बनी।

३ नवम्बर—जर्मन सेना ने क्रीमिया की राजधानी सिम्फेरोपोल पर अधिकार जमाया और सेबस्टोपोल की ओर बढ़ी। टूला रण-स्थल में जर्मन सेना ने आक्रमण किया। मास्को के युद्ध की भीषण तथा जटिल स्थिति हो गई। जर्मनी के नवीन सेना विमान तथा टैंक रण-स्थल में पहुँचे।

नैपुल्स पर ब्रिटिश विमानों ने ६ घंटे तक बम वर्षा किया और इटली के जहाज डुबो दिये। योरुपीय तट पर जर्मन पथ रक्षक जहाज़ी बेड़े पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया और लगभग २० जहाज डुबो दिये।

४ नवम्बर—क्रीमिया में जर्मनी की सेना ने रूसी लाल सेना को दो भागों में विभाजित कर दिया, कुर्स्क नगर पर अधिकार कर लिया और डान नदी की ओर बढ़ी। धुरी राष्ट्रों की सेना मुर्मोन्स्क से १४ मील की दूरी पर पहुँच गई। जापानी सेना थाई सीमा पर एकत्रित हुई। राबिनमूर जहाज के डुबाने पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जर्मनी से ३० लाख डालर हर्जाना देने को कहा। मास्को रण स्थल में युद्ध हुआ। काकेशिया का युद्ध आरम्भ हुआ।

५ नवम्बर—रूसी रण क्षेत्रों में युद्ध हुआ। जर्मन सेना ने नगरों पर भीषण बम वर्षा किया। अटलांटिक सागर में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के ५० यू० बोट उतरे और उन्होंने नाज़ी पनडुब्बों की खोज की। टर्की का एक मोटर बोट टार्पीडो द्वारा डुबाया गया। आस्टेरड और डंकिर्क जहाजी अड्डों पर ब्रिटिश विमानों ने बम वर्षा किया।

६—मास्को रण स्थल में नया आक्रमण आरम्भ किया गया। क्रीमियां में रूसी सेना पीछे हट गई। लेनिनग्राड में भी नया आक्रमण हुआ फ्रीसियन द्वीप समूह के समीप ब्रिटिश वायुयानों ने नाज़ी समुद्री पथ रक्षक जहाजी बेड़े पर आक्रमण किया। कोरिया के समीप सुरंग से टकरा कर एक जापानी जहाज डूब गया। लिटविनोफ रूस का राजदूत बना कर संयुक्त राष्ट्र भेजा गया।

७ नवम्बर- क्रीमिया में जर्मन सेना आगे बढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेनिनग्राड सीमा पर नाजी सेना ने आक्रमण किया। मास्को के चारों ओर भीषण युद्ध हुआ। संयुक्त राष्ट्र ने रूस को १० हज़ार लाख डालर ऋण दिया।

८ नवम्बर—फिनलैंड ने रूस में युद्ध जारी रखने का निर्णय किया। हैङ्गो सोवियट जहाजो अड्डा खाली कर दिया गया। नाजी सेना मास्को नगर की ओर बढ़ी और मध्यवर्ती रण स्थल में मार्ग बना लिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सेनेट ने तटस्थता नीति में परिवर्तन किया और अपने जहाजों को रण स्थल की सीमा में प्रवेश करने तथा व्यापारिक जहाज़ों को सशस्त्र होने की आज्ञा दिया। बर्लिन पर हवाई आक्रमण हुआ। आइसलैंड में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अड्डे बनाये गये।

९ नवम्बर—मास्को सीमा पर जर्मन आक्रमण रोक दिया गया। कर्च के मैदान में नाज़ी सेना ने प्रवेश किया। स्टेलिन नहर पर रूसी सेना ने नई रक्षक लाइन का निर्माण किया। ब्रिटिश विमानों ने जर्मनी के नगरों पर भीषण आक्रमण किया और आक्रमण के पश्चात् ३९ विमान लौट कर नहीं आये। म्युनिक में हिटलर भाषण देते हुये कहा कि उसे अंतिम विजय का पूर्ण विश्वास है। रूम सागर में समुद्री युद्ध हुआ जिसमें धुरी राष्ट्रों के ९ जहाज़ डुबाये गये।

१०नवम्बर—दक्षिणी क्रीमिया में जर्मन सेना आगे बढ़ी और माल्टा नगर पर अधिकार कर लिया। मास्को सीमा पर जर्मन सेना रोक दी गई। लेनिनग्राड सीमा पर रूसी सेना ने जर्मन सेना के प्रतिकूल आक्रमण किया। भारत में स्टेट की कौंसिल में होम विभाग के मन्त्री कानरन स्मिथ ने सुभाषचन्द्र बोस के सम्बन्ध में उत्तर देते हुये बतलाया कि वह रोम अथवा बर्लिन में हैं और उन्होंने धुरी राष्ट्रों के साथ संधि कर लिया है। मिस्टर चर्चिल ने मैनशियन हाउस में भाषण देते हुये कहा कि युद्ध सुदूर पूर्व की ओर अगर फैलेगा तो ब्रिटेन अमरीका का साथ जापान के विरुद्ध देगा।

११ नवम्बर—जर्मन सेना सेवस्टोपोल के समीप पहुँची। लेनिनग्राड नगर को नाजी सेना ने घेरने का प्रयत्न किया। मोजेस्क के समीप रूसी तथा नाजी सेना में भीषण संग्राम हुआ और "एस" के समीप जर्मन सेना को रूसी सेना ने घेर लिया। कैले तथा दूसरे नगरों पर ब्रिटिश तोपों द्वारा गोलेबारी की गई। रूम सागर में ब्रिटिश पनडुब्बे ने एक जर्मन जहाज डुबो दिया। प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने जापान के प्रस्ताव अस्वीकार कर दिये।

१२ नवम्बर—मास्को के समीप रूसी तथा जर्मन सेना में नदी में युद्ध हुआ। तीन जर्मन जनरल मारे गये, उत्तर की ओर रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किये। नाज़ी सेना केर्च की ओर बढ़ी। सुदूर पूर्व के युद्ध के सम्बन्ध में चर्चिल ने जो भाषण दिया था उस पर अपना असंतोष प्रगट क

१३ नवम्बर—मिस्टर चर्चिल ने कामन्स सभा में भाषण दिया और बतलाया कि डूबने वाले जहाज़ों की संख्या कम हुई है। सभी रूसी रण-स्थलों में जर्मन सेना का आक्रमण रोक दिया गया। रूसी सेना ने भीषण प्रतिकूल आक्रमण किये। मास्को और सेवस्टोपोल पर नाज़ी विमानों ने बम वर्षा किया। मेनीला बन्दरगाह के समीप स्पेन का एक जहाज़ डुबो दिया गया।

१४ नवम्बर—जर्मन सेना केर्च के द्वार पर पहुँच गई। रोस्टोव की ओर जर्मन सेना की प्रगति रोक दी गई। मास्को सीमा में रूसी सेना को प्रतिकूल आक्रमण में सफलता प्राप्त हुई। मुर्मान्सक क्षेत्र में युद्ध हुआ। आर्क राएल नामक विमान ढोने वाला प्रसिद्ध ब्रिटिश जहाज़ जिब्राल्टर के समीप डुबो दिया गया।

१५ नवम्बर—जापान युद्ध के लिये तयार हुआ और उसने अपने सैनिक व्यय को तिगुना कर दिया। उत्तरी अटलांटिक सागर में यू० बोटों के आक्रमण के कारण ब्रिटिश पथ रक्षक जहाज़ी बेड़े के १० जहाज़ डुबाये गये। नैपुलस और सिसली पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया रूसी क्षेत्रों में भीषण युद्ध हुआ।

१६ नवम्बर—मास्को का युद्ध पुनः आरम्भ हो गया और कई जर्मन सेना ने आक्रमण किया। कलीनिन क्षेत्र में भीषण संग्राम हुआ। सोवियट प्रतिकूल आक्रमण से नाज़ी सेना पीछे हटा दी गई। फिनिश सीमा पर विकट मार काट हुई। क्रीमिया में जर्मन सेना केर्च और सेवस्टोपोल के चारों ओर पहुँच गई। जापान का विशेष दल कुरूसू वाशिंगटन पहुँच गया। वह सभापति रूज़वेल्ट से बात चीत करने वाला है। जापानी डाएट (राज्य सभा) की विशेष बैठक हुई।

१७ नवम्बर—रूस में भीषण शीत के कारण जर्मन सेना तथा टैंक जम गये। मास्को के बाहर नाज़ी सेना ने किले बन्दी किया। लेनिनग्राड-वोलोग्डा रेलवे लाइन काट दी गई। पश्चिमी मास्को में नई सेना का संगठन किया गया। क्रीमिया के मज़बूत किलों पर नाज़ी अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया। लन्दन के पत्रों ने भारतवर्ष की समस्या को सुलझाने के लिये ज़ोर दिया। दक्षिणी अटलांटिक में अमरीकन जहाजों ने नाज़ी जहाज़ पकड़ लिया।

१८ नवम्बर—टूला में रूसी सेना ने मज़बूती के साथ अपना संगठन किया। नाजी बम वर्षकों ने काकेशिया बन्दरगाहों पर बम गिराये। डोनेज़ बेसिन के लिये युद्ध हुआ। रूसियों ने कर्च खाली कर दिया। जर्मन हवाई सेना के जनरल यूडेट की मृत्यु हुई।

१९ नवम्बर—साइरेनीका में ब्रिटिश सेना ५० मील अचानक बढ़ गई और हलफाया पर समुद्री जहाज़ों ने गोले बारी किया। कर्च प्रान्त में रूसी सेना पीछे हटी। वहां जर्मनी के हाथ हज़ारों सैनिक तथा बहुत सा सैनिक सामान आया। मास्को सीमा पर विकट संग्राम हुआ।

२० नवम्बर—रूसी रण-स्थल में भीषण लड़ाई हुई। कामन्स सभा में चर्चिल ने भाषण दिया कि जर्मनी का सामना डट कर किया जावेगा। रूम सागर में ब्रिटिश पनडुब्बे ने नाजी जहाज डुबोया और जिब्राल्टर के समीप नाज़ी यूबोट डुबोया गया।

२१ नवम्बर—साइरेनीका में ब्रिटिश सेना की जीत हुई और रेज़ेग जीत लिया गया। सेना तोब्रक के समीप पहुँच गई। एलगोबी के समीप इटली की सेना से संघर्ष हुआ। थाई सीमा पर जापानी सेना का प्रदर्शन हुआ। लीबिया की लड़ाई में कई सौ नाज़ी सैनिक पकड़े गये।

२२ नवम्बर—मास्को की ओर बढ़ने के लिये नाज़ी सेना ने भीषण युद्ध किया। टूला के पश्चिम की ओर भयंकर स्थिति हो गई। मजोस्क प्रान्त में नाज़ी सेना की विजय हुई। रोस्टोव में भयंकर युद्ध हुआ और जर्मनी ने उस पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश सेना ने कपूज़ा क़िले पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश सेना तोब्रक से शत्रु सेना का सामना करने के लिये बढ़ी और शत्रु के साथ टैंकों का युद्ध किया गया। मास्को की परिस्थिति जटिल हो गई।

२३ नवम्बर—मास्को की ओर बढ़ने वाली जर्मन सेना रोक दी गई। टूला के समीप नाज़ी सेना ने रूसी सैनिक लाइन तोड़ दिया। रोस्टोव की दक्षिणी रक्षक लाइनें तोड़ दी गईं। संयुक्त राष्ट्र में सुदूर पूर्व के प्रश्न को तय करने के लिये सभा किया। रूम सागर में ब्रिटिश जहाजों ने दो सामान ले जाने वाले और एक क्रूशियर जर्मन जहाजों को डुबो दिया।

२४ नवम्बर—लीबिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी और उसने नाजी सेना को कई भागों में विभाजित कर दिया। बार्दिया और सिदी उमर नुश्रोवा पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। नाज़ी टैंकों और पिट्रौल लारियों पर बम गिराये गये। साइरेनीका में नाजी सेना घेर ली गई। डच ग्याना में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेना भेजी गई।

२५ नवम्बर—रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण करके जर्मन सेना को दक्षिण की ओर ढकेल दिया। मास्को के समीप युद्ध की परिस्थिति जटिल हो गई। मोजेस्क क्षेत्र से रूसी सेना हट गई। लेनिनग्राड क्षेत्र में रूसी सेना की विजय हुई। लीबिया के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने गिआलो ओसिस पर अधिकार कर लिया। रूम सागर में ब्रिटिश जहाज़ों ने जर्मन पथ रक्षक जहाजों को डुबाया। जापानी लोग बटाविया से चले गये। थाईलैंड में जटिल समस्या उत्पन्न हो गई और प्रशान्त महासागरीय युद्ध की सम्भावना प्रतीत हुई।

२६ नवम्बर—जापान और संयुक्त राष्ट्र की सुलह वाली बातचीत का विच्छेद हो गया। ब्रेस्ट और चेरबर्ग पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। मास्को क्षेत्र में टैंकों का भीषण युद्ध हुआ। लीबिया में नाजी सेना की हार हुई। ब्रिटिश सेना ने बम वर्षा करके टैंकों तथा लारियों को नष्ट कर डाला। जापान में रहने वाले अमरीकन नागरिकों को आज्ञा दी गई कि वह शीघ्रातिशीघ्र जापान छोड़ कर चले जांय।

२७ नवम्बर—मास्को नगर की रक्षा के लिये रूसी सेना ने भयंकर महासमर किया। वोलांको मास्क की परिस्थिति जटिल हुई। टूला को घेरने के लिये नाजी सेना ने प्रयत्न किया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सेनाध्यक्ष ने क्वेजोन से बातचीत की और सुदूर पूर्व की स्थिति को डांवांडोल बतलाया।

२८ नवम्बर—सुदूर पूर्व की ओर युद्ध ज्वाला के भड़कने की सम्भावना प्रतीत हुई। थाई देश पर भीषण आक्रमण करने के लिये जापानी सेना एकत्रित की गई। हेग के समीप ब्रिटिश विमानों ने धावा मार कर जर्मनी के सामान ले जाने वाले जहाज को डुबो दिया। लीबिया के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने रेजेग पर अधिकार कर लिया। मरुस्थल में भीषण टैंक युद्ध हुआ। वाशिंगटन में जापानी राजदूत ने रूजवेल्ट से बातचीत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ नवम्बर—अमरीका ने जापान को चेतावनी दिया कि वह चीन और इण्डोचीन से अपना हाथ हटा ले। जापानी मन्त्री मण्डल ने अमरीका की चेतावनी पर वादा-विवाद किया। कलेनिन और रोस्टोव क्षेत्रों में लाल सेना को सफलता प्राप्त हुई। विची सरकार ने हिटलर की बात स्वीकार करके ठाउलोन और बिजेर्टा हवाई अड्डों को जर्मनी को दे दिया। गोंडर (लीबिया मरुस्थल) के किले ने मित्र सेना के सामने आत्म समर्पण कर दिया।

१ दिसम्बर—साइरेनीका में सिदी रेज़ेक के चारों ओर ब्रिटिश तथा जर्मन सेना में घोर संग्राम हुआ। उत्तरी अटलांटिक सागर में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का मैक्बेथ नामक जहाज़ डुबाया गया। डोनेज़ बेसिन में सोवियट सेना ने धावा मारा, उत्तरी रण स्थल में घोर संग्राम हुआ। दक्षिणी अटलांटिक महासागर में एक जर्मन जहाज़ डुबाया गया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जापान का ब्लाकेड करने की धमकी दी।

२ दिसम्बर—जर्मन सेना मास्को से ३६ मील दूरी पर पहुँच गई। नाज़ी सेना रोस्टोव से हटाई गई। मंचूको सीमा पर रूसी तथा जापानी सेना में कुछ झगड़ा हो गया। आस्ट्रेलिया के समीप आस्ट्रेलिया का सिडनी नामक क्रूशियर जहाज़ डुबाया गया। सीदी रेज़ंग पर ब्रिटिश सेना का पुनः अधिकार हो गया। डिंगडोंग में ब्रिटिश तथा जर्मन सेना में युद्ध हुआ। प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने जापान से इण्डोचीन में सेना भेजने के सम्बन्ध में संतोषजनक उत्तर मांगा।

३ दिसम्बर—पं० जवाहरलाल तथा ३ हज़ार दूसरे सत्याग्रही कैदी भारतीय जेलों से सरकारी घोषणा के अनुसार छोड़े गये। अमरीका ने पट्टा सम्बन्धी ऋण टर्की को देने के लिये कहा। टर्की ने सहायता मिलने पर जर्मन आक्रमण का सामना करने का विश्वास दिलाया।

मास्को सीमा में जर्मन सेना और अधिक आगे बढ़ी। टूला क्षेत्र में रूसी सेना ने जवाबी हमले किये। सिंगापुर में ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े के पहुँच जाने से ए० बी० सी० डी० राष्ट्रों की शक्ति मज़बूत हो गई।

४ दिसम्बर—फिनलैंड की सेना ने हैंगो पर अधिकार कर लिया। पेटेन-गोरिंग समझौते के अनुसार अफ्रीका में जर्मन हवाई तथा जहाजी अड्डे बनेंगे और जर्मन सेना तथा सामग्री ट्यूनिस होकर जावेगी।

५ दिसम्बर—जापान ने प्रेसीडेन्ट के प्रश्नों का उत्तर भेजा। पूर्वी परिस्थिति डावांडोल हो गई। ब्रिटेन ने फिनलैण्ड, हंग्री और रूमानिया पर युद्ध घोषणा किया। टागानरोग की रक्षक लाइन को तोड़ कर रूसी सेना घुस गई और सैकड़ों गांवों पर अधिकार कर लिया। मास्को सीमा में घोर युद्ध हुआ। मास्को के उत्तरी आने जाने वाले मार्गों को काट देने के लिये जर्मन सेना ने प्रयत्न किया। तोबरक के चारों ओर ब्रिटिश सेना पहुंच गई। फ्रान्सीसी तट पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मार कर कई जहाज़ नष्ट कर दिये।

६ दिसम्बर—दक्षिणी अटलांटिक सागर में नाज़ी आक्रमणकारी जहाज डुबाया गया। मास्को के चारों ओर घोर संग्राम हुआ। जर्मन सेना टूला-मास्को रेलवे लाइन पर पहुँच गई। टागानरोग में सोवियट सेना ने जवाबी हमले किये।

७ दिसम्बर—एलदूदा में ब्रिटिश सेना को सफलता प्राप्त हुई। जापान ने इण्डोचीन में और अधिक सेना भेजी। प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने जापान के सम्राट को समाचार भेजा।

८ दिसम्बर—जापान ने इङ्गलैण्ड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका पर ६ बजे प्रातःकाल युद्ध घोषणा किया। थाईलैण्ड में जापानी सेनायें प्रवेश कर गईं। जापानी सेना मलय में उतर गई। पर्ल हार्बर, मनिल्ला, ग्वाम, होनोलूलू, हवाई और सिंगापुर में जापानी हवाई तथा समुद्री आक्रमण हुये। सिंगापुर में दो जहाज़ डुबाये गये। मनिल्ला के समीप एक जापानी विमान वाहक जहाज़ नष्ट किया गया। पूर्वी प्रशान्त महासागर में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक जहाज़ डुबाया गया। वेक द्वीप और शंघाई नगर पर जापानियों ने अधिकार कर लिया। हांगकांग पर बम वर्षा की गई।

कलेनिन के कुछ भाग पर रूसी सेना ने अधिकार किया

९ दिसम्बर—ब्रिटिश सेना थाई देश में घुस पड़ी। सिंगापुर मे गैस के बम्ब गिराये गये। हांगकांग पर जापानी विमानों ने बम्ब वर्षा की। लुंबग द्वीप पर जापानी सेना उतरी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक और विध्वंस कारक जहाज़ डुबाया गया। थाई देश ने ५ घंटे तक जापानी सेना का सामना करने के पश्चात् अपने देश होकर जापानी सेना को जाने का मार्ग दे दिया। उत्तरी मलाया में ब्रिटिश तथा जापानी सेनाओं में घोर संग्राम हुआ। जापानी जहाज़ों ने हांगकांग का घेरा डाल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीदी रेज़ेग पर ब्रिटिश अधिकार हुआ तथा लिबिया में शत्रु सेना से घोर संग्राम किया। कलेनिन प्रान्त में रूसी सेना ने जर्मन सेना का बहादुरी से सामना किया और टूला-सेर्पू खोव सड़क से नाज़ी सेना को हटा दिया।

१० दिस०—संयुक्तराष्ट्र अमरीका के विमानों ने टोकियो पर बम वर्षा किया। जापानी सेना बर्मा रोड की ओर बढ़ी मलय में भीषण संग्राम हुआ। लूजन द्वीप में जापानी सेना उतरी। मनिल्ला और मिड्वे द्वीपों पर बम बर्षा की गई। रूसी सेना ने तिखविन पर पुनः अधिकार जमा लिया। मास्को सीमा पर रूसी सेना का जवाबी धावा हुआ।

फिलीपाइन द्वीप पर जापानी सेना ने आक्रमण कर दिया।

जापानियों ने ब्रिटेन के प्रिंस आफ वेल्स तथा रिपल्स नामक लड़ाका जहाज़ों को डुबो दिया।

११ दिसम्बर—हरूना नामक जापानी लड़ाका जहाज़ मनिल्ला के समीप बम द्वारा जलाया गया। ओरेल के समीप एलेटस पर रूसी सेना ने अधिकार जमा लिया। एल अदम पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया जिससे तोबरक का घेरा कम हो गया।

जर्मनी और इटली ने भी संयुक्त राष्ट्र अमरीका पर युद्ध घोषणा किया। इटली, जापान और जर्मनी के मध्य सैनिक संधि हुई। टनासिरम पर जापानी आक्रमण हुआ और कोटा बहरू पर जापानी अधिकार हो गया। ग्वाम द्वीप को जापान ने ले लिया। दो जापानी लड़ाका जहाज़ डुबाये गये।

१२ दिसम्बर—रूसी सीमाओं पर घोर संग्राम हुआ। मास्को सीमा में रूसी सेना को विजय हुई और कई एक नगरों पर उनका अधिकार हो गया। दक्षिण की ओर भी रूसी सेना आगे बढ़ी। जापान और थाई देश के बीच सैनिक संधि हुई। पेनांग और हांगकांग पर भीषण जापानी आक्रमण हुये।

१३ दिसम्बर—जापानी बम बर्षक जहाज़ रंगून जाते हुये भगा दिये गये। पश्चिमी मलय से ब्रिटिश सेना हटी। ग्वाम पर जापान का अधिकार हो गया। ४ जापानी सेना ले जाने वाले जहाज़ डुबाये गये। भूमध्य सागर में दो इटैलियन जहाज़ डुबाये गये। ग़ज़ाला क्षेत्र में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

१४ दिसम्बर—थाई देश की ओर से जापानी सेनायें बर्मा की भूमि में प्रवेश कर गईं। टनासिरम पर फिर बम्ब बर्षा की गई। फारमूसा पर मित्र विमानों ने धावा मारा। आत्म समर्पण करने से इन्कार करने पर जापानी सेना ने हांगकांग पर आक्रमण आरम्भ कर दिये।

१५ दिसम्बर—मास्को सीमा में सोवियट सेना ने ४०० गांवों पर अधिकार कर लिया सेबस्तोपोल पर जर्मन सेना ने गोलाबारी किया। जापानी सेना मलय में और आगे बढ़ी और रक्षक लाइन को पार कर गई। जापानी सेना उत्तरी बोर्नियो में उतर गई। कोवलून पर जापानियों का अधिकार हो गया। हांगकांग के घेरे का श्रीगणेश जापानियों ने कर दिया। लूजन द्वीप में युद्ध हुआ।

१६ दिसम्बर—ग़ज़ाला के दक्षिण भारतीय सेना बढ़ी। रूसी सेना ने कलेलिन और क्लिन पर अधिकार कर लिया। हटती हुई नाज़ी सेना पर रूसी सेना ने भीषण आक्रमण किया।

पर्ल हार्बर पर जापान का अचानक धावा हुआ जिससे २७२६ अमरीकन सैनिक अफसर तथा आदमी मारे गये फिलीपाइन तथा हवाई द्वीपों पर बम बर्षा तथा गोलेबारी की गई।

१७ दिसम्बर—सोवियट सेना के हाथ मास्को सीमा में बहुत सा जर्मन सामान लगा। १५ नाज़ी विमान गिराये गये। केलांतन के समीप जापानी सेना रोकी गई। उत्तरी मलय में केदाह-पेनांग सड़क पर जापानी सेना आगे बढ़ी। यद्यपि हांगकांग पर भीषण अग्नि बर्षा की गई तो भी वहां के गवरनर ने आत्म समर्पण से इन्कार किया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने कर्नल नाक्स की रिपोर्ट पर हवाई से अपने प्रधान सेनापति एडमिरल हसबेंड ई० किमेल को हटा दिया। रूस के रण-स्थल में रूसी सेनाओं ने जर्मन सेनाओं को भगाया।

१८ दिसम्बर—मलय में वेलेज़ली प्रान्त में ब्रिटिश सेना हटाई गई। पेनांग का मार्ग काट दिया गया। बरमा में और अधिक भारतीय सेना पहुँची। साइरेनिका में धुरी सीमा तोड़ दी गई और भागती हुई जर्मन सेना पर पीछे से ब्रिटिश सेना ने धावा मारा। जापानियों ने बरमा सड़क पर बम वर्षा की।

१९ दिसम्बर—हांगकांग पर जापानी अधिकार हो गया। मलय में जापानी सेना का बढ़ना रोक दिया गया। पेनांग खाली कर दिया गया। क्वाइट पर बम बर्षा की गई। लेनिनग्रेड के समीपवर्ती रेलवे स्टेशनों पर रूसी सेना ने अधिकार कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ दिसम्बर—डच पूर्वी द्वीप समूह के पास तीन जापानी जहाज़ डुबा दिये गये। रूसी सेना ने और अधिक गांवों पर अधिकार किया। हिटलर ने अपने प्रधान ब्राचिटस को अलग कर दिया। लन्दन के तटीय प्रदेश में हवाई आक्रमण हुआ। शत्रु सेना का पीछा करते हुये ब्रिटिश सेना बेंगाजी के समीप पहुँच गई।

२२ दिसम्बर—ब्रिटिश प्रधान मन्त्री वाशिंगटन में जाकर प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट से मिले और युद्ध के सम्बन्ध में परामर्श किया। मलय में ब्रिटिश सेना हटाई गई। फिलीपाइन की ओर जापान का बड़ा जहाज़ी बेड़ा जाता हुआ देखा गया। संयुक्त राष्ट्र के टैंकर जहाज़ों पर आक्रमण हुआ। प्रशान्त महासागर में जापानी डुबुकनी किश्तियां पहुँच गईं।

२३—फिलीपाइन में ८० हज़ार जापानी सेना उतरी। मनिल्ला से १०० मील की दूरी पर युद्ध हुआ। मलय में ब्रिटिश सेना ने हट कर नई रक्षक लाइन बनाई। रूसी रणक्षेत्र में रूसी सेना ने १०० गांवों पर अधिकार किया। लीबिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

२४ दिसम्बर—जापानी बम बर्षकों ने रंगून पर बम वर्षा किया जिससे नगर के कई भाग में आग लग गई। चर्चिल-रूज़वेल्ट सम्मेलन हुआ।

२५ दिसम्बर—फिलीपाइन में और अधिक जापानी सेना उतरी। यहां के अमरीकन प्रधान सेनापति ने रणक्षेत्र में स्वयं सेना का निरीक्षण किया। सरावक (बोर्नियो) के समीप जापानी लड़ाका जहाज़ दिखाई पड़ा। वाशिंगटन में मित्र राष्ट्र के युद्ध-समिति की बैठक हुई। रूसी रणक्षेत्र में आगे बढ़े।

३० दिसम्बर—मनिल्ला की ओर जापानी सेना बढ़ी। सिंगापुर पर चार हवाई आक्रमण हुये और वहाँ मार्शल्ला की घोषणा की गई। मलय में भीषण युद्ध हुआ। क्रीमिया में रूसी सेना ने कर्च और फ्यूडेशिया पर फिर अधिकार कर लिया। अलास्का के समीप जापानी लड़ाका जहाज़ देखा गया। कई एक ब्रिटिश नगरों पर हवाई आक्रमण हुआ।

१ जनवरी १९४२ ई०—दक्षिणी बरमा में मरगुई में जापानी सेना ने प्रवेश करने का प्रयत्न किया। मोलमीन क्षेत्र में हवाई युद्ध हुआ जिससे शत्रु के ७ जहाज़ गिराये गये। सिंगापुर पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

२ जनवरी—क्वान्टन पर जापानी अधिकार हो गया। इपोह से दक्षिण की ओर जापानी सेना बढ़ी। मनिल्ला में अमरीकन सेना के पीछे हट जाने से दशा खतरनाक हो गई। सिंगापुर और क्वालालुम्पुर पर जापानियों ने हवाई आक्रमण किया। रूसी सेना ने कालूगा पर अधिकार कर लिया। मास्को के दक्षिण जर्मन सैनिक रक्षक लाइन तोड़ दी गई और रूसी सेना ने शत्रु सेना की हानि की।

३ जनवरी—मनिल्ला पर जापानियों का अधिकार हो गया। कवाइट जहाज़ी अड्डा अमरीका ने खाली कर दिया। मलय में जापानी सेना आगे बढ़ी और सेलंगोर के समीप पहुँच गई। सिंगापुर पर हवाई आक्रमण हुआ। भूमध्य सागर में शत्रु ने एक ब्रिटिश विध्वंस कारक तथा क्रूशियर जहाज़ डुबा दिये। लिबिया के समीप तीन शत्रु यू-बोट डुबा दिये गये। मालोयारो स्लावेज़ पर रूसी सेना ने अधिकार कर लिया।

४—जनवरी—दक्षिणी-पश्चमी प्रशान्त महासागर का प्रधान सेनापति बावेल बनाया गया। पेराक सीमा (मलय) में शत्रु सेना आगे बढ़ी। रंगून पर रात को कई बार हवाई आक्रमण हुये। मोलमीन पर जापानी विमानों ने मशीनगन से गोलेबारी किया। उत्तरी बोर्नियो में शत्रु सेना उतरी। मोजेस्क की ओर रूसी सेना बढ़ी।

५ जनवरी—रंगून पर जापानी विमानों का लगातार आक्रमण और हवाई युद्ध हुआ जिससे ६० शत्रु विमान गिराये गये। मलय के पश्चिमी तट पर जापानी सेना उतरी। ब्रिटिश सेना इपोह के दक्षिण हटी। मनिल्ला के उत्तर की ओर अमरीकन सेना ने शत्रु सेना को मार भगाया। अफ्रीका और रूसी रण स्थल में शत्रु की हार हुई।

६ जनवरी—जापानी सेना क्वाला मेलंगो (मलय) में पहुँच गई जिससे क्वाला लुम्पुर खतरे में पड़ गया। मोलमीन, सिंगापुर और जोहोर पर हवाई आक्रमण हुये। कुर्स्क की ओर रूसी सेना बढ़ी।

७ जनवरी—हल्फाया के क़िलों पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया। फिनिश खाड़ी में सोवियट सेना उतरी और मोजेस्क पर अधिकार कर लिया। मलय में जापानी सेना आगे बढ़ी और सिंगापुर तथा बरमा पर हवाई आक्रमण हुये।

८ जनवरी—मलय में ब्रिटिश सेना ने नये स्थान ग्रहण किये। जापानियों ने रंगून पर फिर हवाई आक्रमण किया। फिलीपाइन में भीषण युद्ध हुआ। स्मोलेंस्क के मार्ग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसी सेना आगे बढ़ी। जेदाबावा से जर्मन सेना हटी। ब्रिटिश सेना ने उसका पीछा किया।

९ जनवरी—पश्चिमी मलय में जापानी सेना आगे बढ़ी। सेलंगोर के दक्षिण जापानी सेना उतरी। बंकाक पर शत्रु का हवाई धावा हुआ। गलाटिया नामक ब्रिटिश क्रूशियर जहाज डुबाया गया। अघीला (लिबिया) से शत्रु सेना हटी।

१० जनवरी—तांत्र पेराक में जापानी सेना का आक्रमण हुआ। सिंगापुर पर हवाई धावा हुआ। फिलीपाइन में अमरीकन सेना ने जापानियों का भीषण सामना किया। रूसी क्षेत्र में जर्मन सेना पर रूसी सेना के जवाबी आक्रमण हुये जिससे शत्रु सेना को लेने के देने पड़ गये। क्वाला लुम्पुर (मलय) का भीषण युद्ध हुआ। मलय पूर्वी तट पर नई जापानी सेना उतरी। रंगून के समीप हवाई अड्डे पर जापानी विमानों का धावा हुआ।

११ जनवरी—डच पूर्वी द्वीप समूह पर जापानी सेना ने आक्रमण किया। तराकन में जापानी सेना उतर गई। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जहाज़ी अड्डों पर जापानी जहाज़ों ने गोलेबारी किया। रूसी सेना ने और अधिक नगरों पर अधिकार कर लिया।

१२ जनवरी—जापानी भीषण हवाई आक्रमण पूर्वी क्षेत्र में हुये। मित्र राष्ट्रों की दशा शोचनीय हो गई।

१३ जनवरी—ब्रिटिश सेना ने क्वाला लुम्पुर खाली कर दिया। ताराकन की दशा शोचनीय हो गई। मिन्हासा और ताराकन द्वीपों की रक्षा शत्रु के सामने करनी कठिन हो गई। रूसी रण क्षेत्र में मास्को की ओर रूसी सेना की विजय हुई। सिंगापुर में दिन में शत्रु के हवाई आक्रमण हुये। अघेला की ओर ब्रिटिश सेना बढ़ी।

१४ जनवरी—रूसी सेना ने कीरोव नगर पर फिर अधिकार कर लिया। क्वाला लुम्पुर के स्टेशन में आग लगा दी गई। सिंगापुर से जापानी सेना १२० मील की दूरी पर पहुँच गई। बोर्नियो में भीषण युद्ध हुआ। फिलीपाइन में जापानी सेना आक्रमण करते हुये पीछे हटा दी गई।

१५ जनवरी—अमरीका के अटलांटिक तट पर अमरीकन टैंकर जहाज़ शत्रु की डुबुकनी नाव द्वारा डुबा दिया गया। सिंगापुर पर हवाई आक्रमण हुआ और ब्रिटिश सेना हटाई गई। ब्रिटिश विमानों ने [illegible] किले पर आक्रमण किया। रूसी सेना स्मोलेंस्क की ओर आगे बढ़ी।

१६ जनवरी—दक्षिणी बरमा में जापानी सेना से ब्रिटिश सेना का घोर संग्राम हुआ। फिलीपाइन में जापानी सेना ने नये आक्रमण किये। अघीला क्षेत्र में जर्मन सेना ने ब्रिटिश सेना का डट कर सामना किया।

१७ जनवरी—सिंगापुर पर और अधिक जापानी विमानों ने हवाई आक्रमण किये। जापानी सेना १०० मील की दूरी पर पहुंच गई। मोलमीन पर जापानी बम वर्षकों ने फिर आक्रमण किया। दक्षिणी बरमा में शत्रु सेना से भीषण संग्राम किया गया। संयुक्त राष्ट्र की सेना पर जापानी सेना ने फिलीपाइन क्षेत्र में जबरदस्त आक्रमण किये।

१८ जनवरी—जापानी सरकार से सम्बन्ध रखने के जुर्म के कारण यू सा बरमा के प्रधान मंत्री बरमा लौटते हुये ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। रंगून में लूट मार हो गई। बरमा में टनासिरम क्षेत्र में युद्ध हुआ।

१९ जनवरी—मुआर नदी के दक्षिण जापानी सेना उतरी जिससे सिंगापुर का खतरा बढ़ गया। गेमास प्रान्त में दोनों ओर से तोपों द्वारा गोलेबारी हुई। सिंगापुर से ९० मील की दूरी पर शत्रु सेना पहुँची। मोजेस्क नगर में रूसी सेना प्रवेश कर गई और समस्त नगर में आग लगा दी गई। दक्षिणी बरमा से ब्रिटिश सेना हटाई गई। टवाय हवाई स्टेशन पर जापानी अधिकार हो गया।

२० जनवरी—मोजेस्क क्षेत्र में रूसी सेना आगे बढ़ी। और पयोडाशिया पर अधिकार कर लिया।

२१ जनवरी—थाई सेना ने बरमा में प्रवेश किया। मेरावदी के उत्तर शत्रु सेना से भीषण युद्ध हुआ। मोलमीन और सिंगापुर में हवाई आक्रमण हुये। जोहोर प्रान्त के दक्षिणी भाग में जापानी सेना आगे बढ़ी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अटलांटिक तट पर यू-बोट द्वारा तीन अमरीकन जहाज़ डुबाये गये। डोनेज क्षेत्र में भीषण संग्राम होने के बाद जर्मन सेना मिन्स्क की ओर हट गई। रूसी सेना ने कई गांवों पर अधिकार कर लिया।

२२ जनवरी मोलमीन की ओर बढ़ती हुई थाई तथा जापानी सेना रोक दी गई। ४० मील लम्बे क्षेत्र में युद्ध हुआ। ६ घंटे तक नीचे उड़ कर आक्रमण करने वाले विमान आक्रमण करते रहे। सेलेबीस के उत्तर मिन्हासा पर जापान का पूरा अधिकार हो गया। मलय में शत्रु सेना का डट कर सामना किया गया। अटलांटिक तट पर दो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जहाज़ डुबा दिये गये। बटाविया के समीप जापानी जहाज़ डुबाया गया।

२३ जनवरी—मोलमीन से ४० मील दक्षिण की ओर जापानी सेना से ब्रिटिश सेना ने घोर संग्राम किया। मलय युद्ध की दशा बड़ी जटिल हो गई। शत्रु को समस्त क्षेत्र में विजय हुई।

२४ जनवरी—मलाया से ब्रिटिश सेना हटाई गई। जापानी सेना सिंगापुर का घेरा डालने के लिये बढ़ी। रंगून पर और अधिक जापानी आक्रमण हुये। अफ्रीका में धुरी राष्ट्र सेना ने जेदाबाया पर फिर अधिकार कर लिया। मास्को तथा लेनिनग्राड सीमा पर रूसी सेना की विजय हुई।

२५ जनवरी—मलय और बरमा में ब्रिटिश सेना को शत्रु सेना की प्रबलता के कारण और अधिक पीछे हटना पड़ा। रंगून नगर के ऊपर आकाश में हवाई युद्ध हुआ। रूसी क्षेत्र में लेनिनग्राड और यूक्रेन रेलवे की ओर रूसी सेना बढ़ी। लिबिया में जनरल रोमेल (जर्मन) के आक्रमण के कारण भीषण युद्ध हुआ।

बंगाल की खाड़ी में दो जहाज़ शत्रु ने डुबा दिये। थाई देश की सरकार ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका और इङ्गलैण्ड पर युद्ध घोषणा की। जापानी सेना मोलमीन की ओर बढ़ी। जोहोर में घोर संग्राम हुआ। न्यूगिनी में और अधिक जापानी सेना पहुँची। अटलांटिक सागर में शत्रु यू बोट द्वारा नार्वे का एक जहाज़ डुबो दिया गया।

२६ जनवरी—बरमा में ब्रिटिश सेना पीछे हटी। जापानी सेना सिंगापुर से ५५ मील की दूरी पर पहुँच गई और बातू पहात पर अधिकार जमा लिया। जनरल रोमेल के भीषण आक्रमण के कारण ब्रिटिश सेना बेंगाज़ी से हटाई गई। मकासर प्रणाली के युद्ध में एक विमान ढोने वाला जापानी जहाज़ डूबा और ३ क्रूशियर जहाज़ों को चोट पहुँचाई गई। न्यूगिनी में जापानी सेना बढ़ी।

२७ जनवरी—कामन्स सभा में वादाविवाद का उत्तर देते समय ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल ने बतलाया कि संयुक्त राष्ट्र का प्रशान्त महासागरीय जहाज़ी बेड़ा जापानियों द्वारा नष्ट कर दिया गया है और वहां जापानी जहाज़ी बेड़ा अधिक तगड़ा पड़ रहा है। लिबिया में १८ हज़ार मित्र सेना मारी गई।

मरगुई बरमा का नगर शत्रु के कारण खाली कर दिया गया। भूमध्य सागर में ब्रेमन नामक ब्रिटिश लड़ाका जहाज़ शत्रु द्वारा डुबा दिया गया।

२८ जनवरी—ब्रिटेन से पूर्वी रणक्षेत्र में सेना भेजी गई। रंगून पर दिन में दो हवाई आक्रमण हुये। सुमात्रा के पश्चिमी तट पर शत्रु के बम बर्षकों ने भीषण बम वर्षा की। अटलांटिक सागर में शत्रु की एक डुबुकनी किश्ती डुबाई गई। कामन्स सभा में भारत, सिंगापुर, तथा दूसरे पूर्वी स्थानों में रक्षा के लिये ठीक प्रबन्ध न होने के सम्बन्ध में वादाविवाद हुआ।

२९ जनवरी—मकासर प्रणाली के युद्ध में जापानियों के ४६ जहाज़ डुबा दिये गये। रंगून पर बम वर्षा करते हुये १२ विमान गिरा दिये गये। शत्रु सेना ने बेंगाज़ी पर फिर अधिकार कर लिया। रूसी सेना ने ४०० गांवों पर अधिकार किया और बहुत सा सामान उसके हाथ लगा।

३० जनवरी—जापानी सेना सिंगापुर से १८ मील की दूरी पर पहुंच गई। सिंगापुर पर लगातार बम वर्षा की गई। फिलीपाइन में जनरल मैकार्थर ने जापानी सेना के सामने आत्म समर्पण से इन्कार कर दिया। ब्रिटिश सेना ने बेंगाज़ी खाली कर दिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक टैंकर जहाज डुबा दिया गया।

१ फरवरी—सिंगापुर का घेरा जापानी सेना ने आरम्भ कर दिया। दक्षिणी जोहोर मार्ग पर ब्रिटिश तोपें गोलाबारी करती रहीं। पश्चिमी बोर्नियो की राजधानी पोन्तियानाक पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। बरमा में साल्वीन नदी के तट पर युद्ध हुआ और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जहाजी बेड़े ने मार्शल और गिल्बर्ट द्वीपों के जापानी सैनिक अड्डों पर धावा किया। भूमध्यसागर में दो धुरी राष्ट्रों के जहाज डुबाये गये।

२ फरवरी—धुरी राष्ट्र सेना ने बार्से और एलअबीअर पर अधिकार कर लिया। साइरेका से ब्रिटिश सेना हटा दी गई।

३ फरवरी—सिंगापुर की ओर जापानी सेना मलय प्रदेश में बढ़ी, और जापानी विमानों ने वहाँ बम वर्षा किया। बरमा में शत्रु सेना ने साल्वीन नदी को पार करने का प्रयत्न किया। सिंगापुर में बम के साथ ही साथ जापानी प्रचार सम्बन्धी नोटिसों के बंडल भी गिराये गये।

४ फरवरी—जोहोरी प्रणाली में दोनों ओर से गोलेबारी की गई। सुमात्रा के डच जहाजी अड्डों पर बम वर्षा की गई। फिलीपाइन के युद्ध में जापानियों की बड़ी हानि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई। देरना के समीप धुरी राष्ट्र सेनाएँ पहुँच गई। रूसी रण क्षेत्र में रूसी लोग और आगे बढ़े। लार्ड सभा में लार्ड फारिंगडन ने भारत की युद्ध-स्थिति जटिल होने के कारण स्वतंत्रता प्रदान करने के लिये भाषण दिया।

५ फरवरी—जापानी सेना ने जावा में उतरने की कोशिश की। साल्वीन नदी के क्षेत्र में युद्ध हुआ। ब्रिटिश सेना देरना से हटाई गई।

६ फरवरी—सिंगापुर में भीषण हवाई आक्रमण हुये तथा गोले बारी की गई। लीबिया में ब्रिटिश सेना पीछे हट गई।

७ फरवरी—रंगून नगर पर रात को चार घंटे शत्रु का हवाई हमला हुआ और १० जापानी विमान गिराये गये। बोरनिओ में सुर्मिन्दा नगर पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का सामान ले जाने वाला सिंधिया ओलसेन डुबा दिया गया।

८ फरवरी—सिंगापुर तथा रंगून पर बम वर्षा हुई। सिंगापुर में गोले बारी हुई। बोरनियो के पश्चिमी तट के समीप एक जहाज डुबो दिया गया। रूसी सेना ने अपने कुछ और गांव छीन लिये।

९ फरवरी—सिंगापुर द्वीप के पश्चिमी तट पर जापानी सेना उतरी। वहां के जहाजी अड्डे का कुछ भाग खाली किया गया। रंगून हवाई अड्डे पर बम्ब बर्षा की गई।

१० फरवरी चियांग काई शेक अपनी धर्म पत्नी सहित दिल्ली पहुँचे। सिंगापुर में और अधिक जापानी सेना उतरी। ब्रिटिश सेना ने जापानी सेना पर प्रतिकूल आक्रमण किया। रूस में रूसी सेना और आगे बढ़ी। सिंगापुर नगर से १० मील की दूरी पर जापानी सेना पहुँच गई।

११ फरवरी पंडित जवाहर लाल नेहरू की भेंट श्रीमती चियांग काई शेक से हुई। जापानी सेना ने मर्तबान पर अधिकार किया। सिंगापुर पर पश्चिम की ओर से आक्रमण किया।

१२ फरवरी—सिंगापुर का युद्ध हुआ। मकासर के समीप जापानी सेना उतरी और रूस में नाजी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण आरम्भ किये।

१३ फरवरी—सिंगापुर में जापानी सेना का मजबूती के साथ सामना किया गया। नगर के उत्तर तथा पश्चिम में घोर संग्राम हुआ। समस्त रूसी रण क्षेत्र में युद्ध हुआ। डोवर प्रणाली में समुद्री तथा हवाई युद्ध हुआ जिसमें ३६ ब्रिटिश तथा १८ जर्मन विमान नष्ट हुये।

१४ फरवरी—जापानी सेना की अधिकता के कारण सिंगापुर की स्थिति शोचनीय हो गई। पानी के तालाब शत्रु के हाथ में चले गये। नगर के चारों ओर युद्ध हुआ बरमा और साल्वीन पर युद्ध हुआ। रूस में नाजी सेना को जबाबी हमले में असफलता हुई। जापानी छतरी-सेना ने सुमात्रा पर आक्रमण किया। लगभग १०० विमानों से हमला आरम्भ हुआ।

१५ फरवरी—सिंगापुर ने जापानियों को आत्म समर्पण कर दिया। साल्वीन नदी के पार जापानी सेना आगे बढ़ी। रूस में रूसी सेना का सामना नाज़ी सेना ने डट कर किया।

१६ फरवरी—रंगून से १०५ मील की दूरी पर जापानी सेना पहुँची। थाटन नगर की ओर जापानी सेना बढ़ी। अरूबा द्वीप पर शत्रु के यू-बोटों का हमला हुआ और तीन टैंकर जहाज़ डुबो दिये गये। सिंगापुर में जापानी सेना का शासन हो गया। वहां के गवर्नर तथा श्रीमती थामस कारागार में डाल दिये गये। ब्रेस्ट बन्दरगाह से दो नाज़ी लड़ाका जहाज निकल भागे।

१७ फरवरी—फिलीपाइन बरमा और जावा में जापानी सेना तथा मित्र सेना में युद्ध हुआ। बरमा के आक्रमण के लिये हैफोंग नगर (इण्डोचीन) में ३० हज़ार जापानी सेना एकत्रित की गई।

१८ फरवरी—मिस्टर तथा मेडम चियांग काई शेक ने कलकत्ते में महात्मा गांधी से भेंट की। जापानी सेना ने बिलन नदी (बरमा) पार किया और ब्रिटिश सेना से हाथों हाथ युद्ध हुआ। सुबियो बन्दरगाह पर बम वर्षा की गई। डर्विन (आस्ट्रेलिया) बन्दरगाह पर हवाई हमला किया गया।

२० फरवरी जावा द्वीप पर चारों ओर से जापानी सेना का आक्रमण हुआ। तिमोर द्वीप से उसका सम्बन्ध काट दिया गया। डार्विन बन्दरगाह खाली किया गया। खारकोव (रूस) सीमा पर नाज़ी सेना की बड़ी हानि हुई।

२१ फरवरी—बाली (जावा) के समीप मित्र तथा जापान के जल सैनिक जहाजों का युद्ध हुआ जिसमें मित्र सेना का एक विध्वंस कारक जहाज तथा शत्रु सेना के कई जहाज डूब गये। बिलन नदी का युद्ध हुआ।

२३ फरवरी—बाली द्वीप के कुछ भाग पर जापानी सेना ने अधिकार जमा लिया। जावा के हवाई स्टेशनों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापानी विमानों का हमला हुआ। पुर्तगाली तिमोर द्वीप के दिल्ली नामक स्थान पर जापानी सेना उतर गई। बरमा में भीषण युद्ध हुआ। रूसी सेना ने कई नगरों पर अधिकार किये।

२४ फरवरी—न्यूफाउण्डलैण्ड के समीप संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक विध्वंस कारक जहाज, दो टैंकर जहाज और एक सामान ले जाने वाला जहाज़ डुबो दिये गये। बिलना नदी पर घोर संग्राम हुआ जापानी सेना की प्रबलता के कारण मित्र सेना दूसरे स्थानों को हट गई। बाली और दक्षिणी सुमात्रा पर जापानी अधिकार हो गया।

२५ फरवरी—कामन्स सभा में सर स्टफर्ड क्रिप्स ने भाषण दिया और भारत के सम्बन्ध में शीघ्र ही घोषणा करने के लिये कहा। अमरीका के पश्चिमी तट पर शत्रु के विमानों का हमला हुआ। बोरनिओ के समीप रियर ऐड-मिरल शुसाकू शिबूया जापान सेनानायक मार डाला गया।

२६ फरवरी—जावा में जापानी तीन ओर उतर गये जिससे वहां की दशा शोचनीय हो गई। रंगून में कर्फ्यू आर्डर (फौजी कानून) लगा दिया गया। दो ब्रिटिश टैंकर जहाज डुबा दिये गये।

२७ फरवरी—रंगून नगर पर जापानी विमानों का भीषण हमला हुआ। २७ जापानी जहाज गिराये गये। जनरल वैवेल (मित्र सेना) सिंगापुर में घायल हो गये।

२८ फरवरी—फ्रांसीसी तट पर ब्रिटिश विमानों का हमला हुआ जिससे रेडियो स्टेशनों को हानि पहुँचाई गई। जावा और बरमा में भीषण युद्ध हुआ जिससे जावा में जापानी सेना ने प्रवेश किया और उत्तरी बरमा की ओर जापानी सेना बढ़ी।

१ मार्च—जापानी सेना जावा में उतर गई। रंगून के चारों ओर भयानक संग्राम हुआ। पेगू के समीप रेलवे लाइन काट दी गई। सीतांग नदी के क्षेत्र में भयानक युद्ध हुआ।

२ मार्च—जावा में जापानी सेना ने आगे बढ़ कर सोयरबांग नगर पर अधिकार कर लिया। बटाविया और सबीया का सम्बन्ध जापानी विमानों ने तोड़ दिया। बरमा रंगून तथा फिलीपाइन में युद्ध हुआ। रूसी रणक्षेत्र में विकट युद्ध हुआ। टैंगू में जापानी लोगों ने आग लगा दी। बरमा सड़क स्वयम् बन्द हो गई।

४ मार्च—डच द्वीप की सरकार बटाविया से हटा दी गई। सुबीया को लेने का प्रयत्न जापानी सेना ने किया। जावा तट पर और अधिक जापानी सेना उतरी। बन्देओंग पर हवाई आक्रमण हुआ। जनरल वावेल भारत लौट आये।

५ मार्च—जापानी सेना जावा में और आगे बढ़ी। बन्देओंग में मित्रसेना ने कई स्थान स्वयम् नष्ट कर दिये। होनोलूलू पर हवाई धावा हुआ। जापानी सेना ने सीतांग नदी पार किया। रूसी सेना ने और अधिक गांवों पर अधिकार किया।

६ मार्च—बटाविया से ८ मील की दूरी पर जापानी सेना पहुंच गई बन्देओंग तथा दूसरे नगरों पर भीषण जापानी हमले हुये। रंगून का घेरा जपानी सेना ने डालना आरम्भ किया। मोरन्बी बन्दरगाह (आस्ट्रेलिया) पर जापानी हवाई आक्रमण हुआ।

७ मार्च—बटाविया पर जापानी सेना का अधिकार हो गया। समस्त पश्चिमी जावा शत्रु के हाथों में चला गया। एक ब्रिटिश टैंकर और एक अमरीकन फाइटर जहाज डुबो दिये गये। बरमा तथा रंगून में भीषण युद्ध हुआ और शत्रु की विजय हुई।

८ मार्च—जावा का सम्बन्ध काट दिया गया। वहां मित्र सहायता नहीं पहुंच सकी। जापानी सेना ने वहां के नगरों को नष्ट कर दिया। ओरेल (रूस) क्षेत्र में जर्मन सेना घेर ली गई और सेना ले जाने वाले ३० विमान नष्ट किये गये। बरमा में ब्रिटिश टैंक युद्ध के लिये पहुँच गये।

९ मार्च—मोरेस्बी बन्दरगाह पर जापानी विमानों ने हवाई हमला किया तथा न्यूगिनी में जापानी सेना उतर गई। पयागी नगर (बरमा) पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। लेनिनग्राड क्षेत्र में ६ हजार जर्मन सेना मारी गई।

१० मार्च—रंगून बिलकुल खाली कर दिया गया। और साथ ही साथ आवश्यक स्थान तथा वस्तुएं नष्ट कर दी गईं। डच पूर्वी द्वीपसमूह की सरकार आस्ट्रेलिया भाग गई। लीबिया में हवाई युद्ध हुआ। रूसी सेना ने अपने ३७ गांवों पर पुनः अधिकार कर लिया। एक जापानी जहाज डुबाया गया।

११ मार्च—रंगून से पूर्ण रूप से ब्रिटिश सेनाएँ हटा ली गईं और आवश्यक स्थान जिनसे शत्रु को लाभ हो सकता था नष्ट कर दिये गये। बन्दोएग पर जापानी अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार हो गया। पूर्वी द्वीप समूह की सरकार आस्ट्रेलिया चली गई। मध्यवर्ती और उत्तरी बरमा में युद्ध हुआ।

लीबिया में ब्रिटिश बम वर्षकों के कारण जर्मन चौकसी करने वाली सेना को हटना पड़ा। स्वतंत्र फ्रान्सीसी सेना ने मुजिक पर बम वर्षा की। रूसी सेना ने रूसी क्षेत्र में जर्मन सेना की रक्षक लाइन को तोड़ कर ३७ निवास स्थानों पर अधिकार जमा लिया।

१२ मार्च—रंगून के भीतर भीषण युद्ध हुआ, प्रोम नगर की सड़क काट दी गई। थारावादी पर जापानी अधिकार हो गया। सीरियम के तेल साफ करने वाले कारखाने नष्ट कर दिये गये। न्यूगिनी में फिन्सचाफेन के बन्दरगाह पर जापानी सेना उतरी। सलामायु, ले, हेनिंश बन्दरगाह और मोरेस्बी पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ फिलीपाइन में सेबू बन्दरगाह पर जापानी क्रूशियर जहाज ने गोला बारी किया।

उत्तरी अटलांटिक सागर में एक टैंकर जहाज़ डुबोया गया। कलेनिन प्रान्त और डान बेसिन में रूसी सेना की विजय हुई। खारकोव नगर की ओर रूसी सेनाएँ चारों ओर से बढ़ीं।

१३ मार्च—नार्वे तट के समीप "ऐडमिरल ट्रिपिज़" नामक जर्मन लड़ाका जहाज पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया। यह जहाज ४५ हज़ार टन का बतलाया जाता है।

जापान से बेसीन की ओर बढ़ी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के विमानों ने न्यूगिनी के बन्दरगाहों पर हमला किया। आस्ट्रेलिया के विमानों ने जापानी जहाजी बेड़े पर हमला करके ४ जहाजों में आग लगा दी।

१४ मार्च—दक्षिण की ओर रूसी सेना ने नया आक्रमण ६० डिवीजन सेना के साथ किया और खारकोव तथा तागांरोग की ओर बढ़ी।

जापानी जहाजी बेड़ा मोरेबी बन्दरगाह की ओर बढ़ा परन्तु मित्र राष्ट्र के हवाई आक्रमण से छिन्न भिन्न कर दिया गया।

१५ मार्च—रूस के दक्षिणी क्षेत्र में भीषण युद्ध हुआ। क्रीमिया की नाजी सेना को बड़ा भय उत्पन्न हो गया। न्यूगिनी के सैनिक अड्डों पर जापानी सेना ने हवाई हमला किया। आकाश में विमानों का युद्ध हुआ और मोरेस्बी बन्दरगाह पर मशीनगन द्वारा धावा कर गोले चलाये गये।

१६ मार्च—अमरीकन सेना आस्ट्रेलिया पहुँचाई गई। जापानी सेना ने आस्ट्रेलिया के उत्तरी पूर्वी तट के समीप बम गिराया। मोरेस्बी बन्दरगाह पर फिर हवाई हमला किया। बरमा में युद्ध हुआ। सुमात्रा के उत्तर वेह द्वीप पर जापानी अधिकार हो गया। जावा के समुद्री युद्ध में ५ मित्र राष्ट्रों के क्रूशियर और ६ विध्वंस कारक जहाज डुबा दिये गये जापानियों की भी हानि हुई। व्याज्मा सड़क पर भीषण रूसी-जर्मन युद्ध हुआ।

१७ मार्च—दक्षिणी पश्चिमी रूसी सीमा में रूसी सेना की विजय हुई रूसी छतरी सेना का काम आरम्भ हुआ। जर्मन सेना का प्रतिकूल आक्रमण पीछे हटा दिया गया। न्यूब्रिटेन के शत्रु अड्डों पर मित्र राष्ट्रों के विमानों का हमला हुआ। बरमा में युद्ध हुआ।

१८ मार्च—सीतांग नदी के तीन गांवों पर मित्र सेना ने अधिकार किया। बेसीन पर जापानी अधिकार हो गया।

१९ मार्च—आस्ट्रेलिया के डार्विन बन्दरगाह पर शत्रु का हवाई हमला हुआ आस्ट्रेलिया का प्रधान सेनापति जनरल मकार्थर बनाया गया। रूस में रूसी सेना व्याज्मा से १० मील की दूरी पर पहुँच गई। फिलीपाइन में बातान बन्दरगाह पर जापानी जहाजों ने गोलेबारी की।

२० मार्च—न्यूगिनी तट के समीप अमरीकन तथा आस्ट्रेलियन विमानों ने जापानी जहाजी बेड़े पर धावा मारा और २३ जापानी जहाज डुबा दिये। मोरेस्बी को आक्रमण से भय उत्पन्न हो गया। आस्ट्रेलिया पर धावा बोलने के लिये १२ डिवीजन सेना तयार खड़ी रही। बरमा में जापानी सेना की प्रगति फिर आरम्भ हुई। तिमोर द्वीप पर पूर्ण रूप से जापानी अधिकार हो गया। रूसी क्षेत्र में रूसी सेना की विजय हुई।

२१ मार्च—जापानी सेना मोरेस्बी बन्दरगाह की ओर बढ़ी। डार्विन, राबौल और कोपंग बन्दरगाहों पर हवाई आक्रमण हुये। बरमा और थाई सीमा पर युद्ध हुआ। स्मोलिन्स्क सीमा पर सोवियत सेना की विजय हुई और खारकोव नगर में भीषण आग लगा दी गई। जर्मन सेना ने उसे छोड़ने की तयारी की।

२२ मार्च—माडन्मे की सड़क पर जापानी सेना आगे बढ़ी और ब्रिटिश सेना मिमू के उत्तर हट गई। टैंगू पर पूर्व की ओर से जापानी सेना ने धावा मारने की तयारी की। राबौल बन्दरगाह पर जापानी जहाजी बेड़े पर मित्र विमानों ने धावा मार कर दो क्रूशियर जहाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट कर दिये। अटलांटिक सागर के समीप दो अमरीकन जहाज़ डुबा दिये गये।

२३ मार्च—जापानी सेनायें मांडले की सड़क पर आगे बढ़ीं। ब्रिटिश सेनायें प्यू नगर के उत्तर की ओर पीछे हटीं। चीनी सेनाओं ने बरमा युद्ध में भाग लिया। जापानी हवाई जहाजों ने रबौल बन्दरगाह पर बम्ब गिराये गये।

अटलांटिक तट पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के दो बड़े व्यापारी जहाज डुबो दिये गये। हवाई द्वीप में फौजों के लिये छः मास के लिये भोजन सामग्री एकत्रित कर ली गई। रूसी सेनाओं ने स्टराया रूसा के समीप एक जर्मन सेना को घेर लिया। रूसी सेनाओं ने खारकोव पर भी दबाव डाला।

२४ मार्च—जापानी हवाई जहाजों ने न केवल डार्विन वरन् उत्तरी आस्ट्रेलिया पर भी तट से १८० मील भीतर की ओर स्थित केथरिन नगर पर हमला किया। न्यूगिनी की मर्खाम घाटी में जापानी सेनायें धीमी चाल से आगे बढ़ीं। फिलीपाइन द्वीप में जापानियों ने अमरीकन फौजों को आत्मसमर्पण करने के लिये आग्रह किया। बरमा में जापानी लोग टौंगू की ओर पूरी शक्ति लगा रहे हैं।

रूस ने साइबेरिया से कई डिवीजन (एक डिवीजन में प्रायः २२००० सिपाही होते हैं) पश्चिम को ओर भेजे। क्राइमिया के कर्च प्रायद्वीप पर जो रूसियों ने हमला किया उसे जर्मनों ने पीछे हटा दिया। अटलांटिक तट पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के तीन जहाज़ और डूबे।

२५ मार्च—जापान ने और नई फौजें बरमा में भेजी। जापानी हवाई जहाज़ों ने न्यूगिनी के पोर्ट मोर्सबी पर फिर भीषण हमला किया। जापानी हवाई जहाज़ों ने पश्चिमी आस्ट्रेलिया के विंढम नगर पर भी बम्ब गिराये

२६ मार्च—टौंगू के आस पास भीषण लड़ाई हुई। पिनमिना की सड़क काट दी गई। जापानी हवाई जहाज़ों ने मध्य बरमा पर भी हमले किये। न्यूगिनी में जापानी सेनायें आगे बढ़ीं। जावा सागर में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के दो विध्वंसक जहाज़ नष्ट कर दिये गये। लीबिया के क्षेत्र में ब्रिटेन ने हवाई हमले किये। स्टराया रूसा में जर्मनी लोग अपनी घिरी हुई फौज़ को न छुड़ा सके। बहुत फौज़ी सामान रूसियों के हाथ आया।

२७ मार्च—जापानियों ने अण्डमान द्वीप समूह पर अधिकार कर लिया। बरमा में उनकी फौजें थारावादी और सीटांग दोनों क्षेत्रों में आगे बढ़ीं। बल्गेरिया का राजा बोरिस हिटलर से मिला। जर्मनी ने नई सेनायें रूस में भेजी।

२८ मार्च—जापानी सेनायें अक्याब की ओर बढ़ीं। टौंगू की स्थिति भयंकर हो गई है। जापानी फौजें टौंगू को चारों ओर से घेरे हुये हैं। माल्टा पर भीषण हवाई हमला हुआ। जर्मन पनडुब्बे जहाज़ केरीबियन सागर में पहुँच गये हैं।

२९ मार्च—जापानी सेनायें प्रोम और मांडले की ओर बढ़ीं। थारावादी नगर खाली कर दिया गया। मांडले से १६० मील दक्षिण में भीषण लड़ाई हो रही है।

व्याज्मा के पास जर्मन और रूसी फौज़ों में घमासान लड़ाई हुई।

३० मार्च—टौंगू में चीनी फौजें बड़ी वीरता से लड़ रही हैं। लेकिन जापानी फौजों ने नगर को उत्तर, दक्षिण पूर्व और पश्चिम की ओर बुरी तरह से घेर लिया है। टौंगू का हवाई स्टेशन जापान के हाथ में चला गया है। उत्तर की ओर क्युंगुन गाँव भी जापानी फौज़ों ने ले लिया है। प्रोम की ओर बढ़ने वाली जापानी फौज़ों से कुछ बरमी फौजें भी मिल गईं। इससे उन्होंने इरावदी को सुगमता से पार कर लिया।

फिलीपाइन द्वीप समूह के कोरेगीडोर द्वीप पर जापानियों ने लगातार बम वर्षा की।

उत्तर में आर्कटिक प्रदेश में रूसी फौज़ों ने जर्मन फौज़ों को बुरी तरह हराया।

३१ मार्च—जापानी फौजों ने टौंगू नगर के पश्चिमी भाग पर अधिकार कर लिया। पूर्वी भाग में चीनी फौजें वीरता से लड़ रही हैं। जापानी हवाई जहाज़ों ने पोर्ट मोर्सबी और डार्विन पर हमले किये। ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने जर्मन अधिकृत फ्रांसीसी बन्दरगाह सेन्टनेज़ियर पर बम्ब गिराये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१० × ७॥) के २६० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

★ ★ ★ ★ ★

अनोखी दुनिया—इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२६, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

★ ★ ★ ★ ★

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्रायः भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था का ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों से बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग ५८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

★ ★ ★ ★ ★

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। इसमें संसार का एक बड़ा नक़शा दिया गया है जिसमें उन जातियों का निवास-स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिश्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, रोमन, नई दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ९० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है।

पुस्तक मिलने का पता—"भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, Kakrhaghat, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

अप्रैल सन् १९४२ ई०

गु. पुस्तकालय
23-6-42

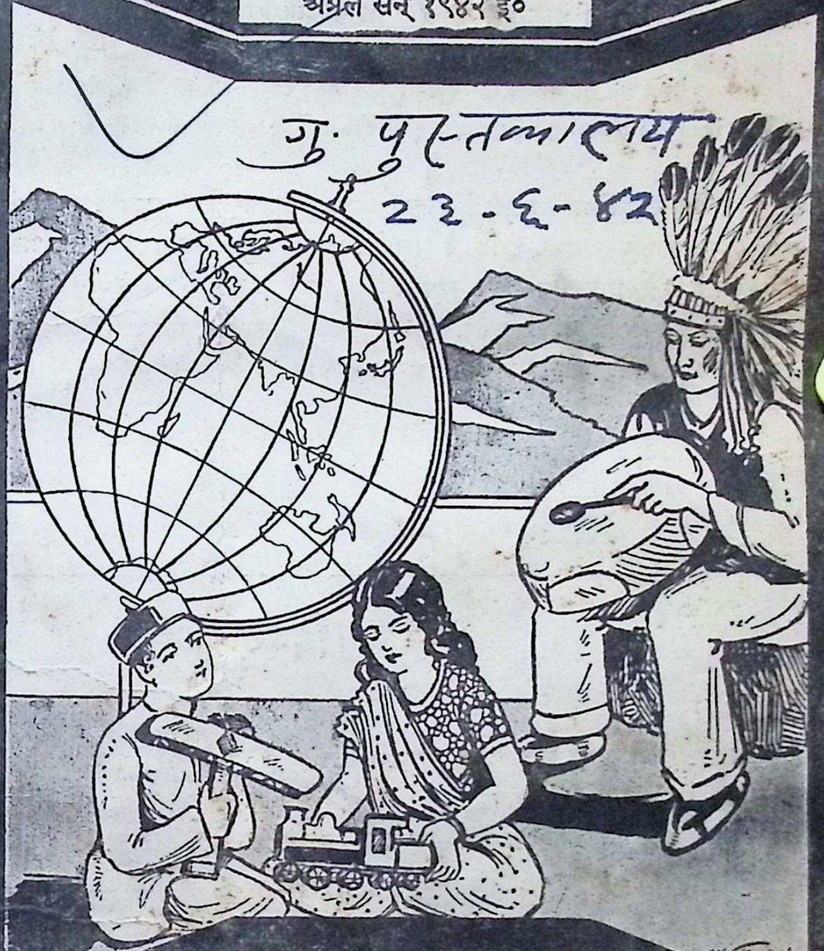

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल-पाठकों से

हमें यह सूचित करने में हर्ष होता है कि आप की सहायता से 'भूगोल' अपने जीवन के १८ वर्ष व्यतीत कर चुका है। अब उन्नीसवें वर्ष के उपलक्ष में 'द्वितीय महासमर-परिचय' नामक विशेषांक जुलाई ४२ में प्रकाशित होगा। इस विशेषांक का विस्तृत परिचय विषय-सूची पढ़ने से ही ज्ञात हो जायगा। इसकी आवश्यकता आप अवश्य समझेंगे जिस प्रकार आप 'भूगोल' के गत वर्षों के विशेषांक बाल-संसार, देशीराज्य, महासमर अंक, महासमर एटलस, गंगा अङ्क, और आसाम अंक इत्यादि देख चुके हैं। इस वर्ष का विशेषांक अपने विषय का अद्वितीय अंक होगा। युद्ध के कारण इस अंक की छपाई परिमित संख्या में हो रही है। आप की कृपा होगी यदि इस अवसर पर एक या इससे अधिक भूगोल के ग्राहक बढ़ाने की कोशिश कर दें तो भूगोल की आर्थिक स्थिति सहज में ही सुलभ हो सकती है और इस संस्था द्वारा भविष्य में भूगोल सम्बन्धी जो साहित्य प्रकाशित होगा उससे आप को लाभ पहुँचता रहेगा।

जिन ग्राहकों का चन्दा इस (अप्रैल ४२) अंक को भेज कर समाप्त होता है उन्हें चाहिये कि अपना वार्षिक मूल्य ३) मनीआर्डर द्वारा भेज दें। वी० पी० द्वारा अंक भेजने में चार आने और अधिक खर्च पड़ता है।

'देश-दर्शन' ग्रन्थ-माला के निम्न लिखित ३४ पुस्तकों का मूल्य १२) के स्थान में १०॥) जुलाई ४२ तक आर्डर आने पर दिया जायगा लंका, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १—२, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैण्ड, रूस और बल्गेरिया, थाई-देश, (स्याम) अलसेस लारेन, काश्मीर, ग्वालियर, जापान, स्वीडन, मलय-दर्शन, फिलीपाइन, तीर्थ-दर्शन हवाई द्वीप समूह, न्यूजीलैण्ड, न्यू गिनी, और आस्ट्रेलिया आशा हैं आप इस रियायती मूल्य से लाभ उठाने की कृपा करेंगे।

भवदीय

मैनेजर

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—सोवियत रूस की कुछ अद्भुत गुप्त बातें	१
२—रूस के पक्ष द्वार से भय	६
३—बरमा रोड (ले० केदारनाथ पाण्डेय, विशारद)	७
४—नवीन बरमा सड़क	९
५—मार्सेल्स का बन्दरगाह	९
६—अमेजन नदी का रोमाञ्चकारी यात्रा	१२
७—अमरीका की बरमा सड़क	१५
८—टार्पेडो	१६
९—रूस के विरुद्ध लड़ने वाले हिटलर के सेनापति	१८
१०—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] वैशाख, सं० १९९९, अप्रैल, १९४२ ई० [अङ्क १२

सोवियत रूस की कुछ अद्भुत गुप्त बातें

सोवियत रूस का क्षेत्रफल ८२,५०,००० वर्ग मील और जन-संख्या १८ करोड़ है। वहां का एक मात्र नेता स्टेलिन है। जर्मनी तथा रूस योरुप के दो बड़े शक्ति शाली देश हैं। उन दोनों के मध्य इस समय घोर संग्राम छिड़ा हुआ है। गत पिछले बीस वर्षों में संसार का भूठा विश्वास था कि सोवियत सेना एक असंगठित तथा गड़बड़ प्रजा का एक बड़ा समुदाय है। इंगलैंड का भी यही मिथ्या विश्वास था। सोवियत की हवाई सेना तथा पैराट्रूप्स की गणना तो एक अद्भुत उपहास की भांति होती थी। वरन् सोवियत सेना की शक्ति का ठीक अंदाज करने के लिये हमें स्टेलिन की कुशलता तथा सुयोग्य कार्य के भीतर प्रवेश करके करना चाहिये।

समस्त संसार ने रूस की पंच वर्षीय आर्थिक योजना के सम्बन्ध में सुना है परन्तु उसकी पंच वर्षीय सैनिक योजना के सम्बन्ध में किञ्चित मात्र भी भेद किसी पर प्रगट नहीं हुआ था। आज उसी पंच वर्षीय सैनिक योजना युद्ध की जलती हुई प्रबल ज्वालाओं की कसौटी में कसी जा रही है जिसमें कि योरुप का आधा भाग और एशिया का अधिकांश भाग लगा हुआ है। इसी कसौटी में सोवियत रूस की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की जा सकती है। यदि सोवियत सेना समस्त सीमाओं पर पराजित हो जाती है तो भी वह यूराल पर्वत और तुर्किस्तान के ऊपर कैस्पियन सागर के पीछे दो सुरक्षित सीमाओं में हटकर वर्षों जर्मनी का साहस पूर्ण सामना कर सकती है। इन्हीं दोनों सीमाओं को ध्यान में रखते हुये सोवियत रूस की लाल सेना के प्रधान अफसरों ने जर्मनी के साथ युद्ध करने की तयारी की थी। जब हिटलर ने अपनी सेना बढ़ाई और फिर उसे बढ़ाकर ६३ डिवीजन किये और उसे पूर्वी प्रूसा में भेजा तो भी रूस ने उसकी तनिक भी परवाह नहीं की। परन्तु जब हिटलर ने आर्मर्ड डिवीजन (मशीन तथा तोपों वाली सेना) तयार किये तो स्टैलिन ने बहुत बड़ी संख्या में टैंक तयार करवाये और लाल अर्मर्ड सेना का निर्माण किया।

जब रूस ने युद्ध आरम्भ किया तो उसके पास टैंकों का एक बहुत बड़ा बेड़ा था। आज रूस १००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टन के विशाल टैंक, भयानक अग्नि उगलने वाले तयार कर रहा है। यह टैंक फ्रान्स के ७२ टन वाले टैंकों से अधिक शक्तिशाली हैं जिनके सामने जर्मनों को मैदान छोड़ कर प्राण बचाने पड़े थे। १०० टन वाले टैंक सोवियत सेना का प्रथम गुप्त रहस्य है। इस प्रकार के टैंक रूस के पास बहुत हैं परन्तु अभी कुछ रहस्यमय भेद के कारण उनका प्रयोग युद्ध में नहीं हुआ है। जब रूसी सेना प्रतिकूल आक्रमण करेगी तो इन टैंकों के गुल खिलेंगे।

१९३७ ई० में जर्मनी ने ३०० डिवीजन सेना तयार करने का कार्य आरम्भ किया। इस सेना में ३० वर्ष तक के युवक भर्ती होने को थे। यह सेना १९४३ ई० तक में तयार होने को थी और इसमें ५ लाख सैनिक होते। इसके उत्तर में रूस ने अपनी पंच वर्षीय सैनिक योजना का श्री गणेश किया। प्रथम काल १९३६-४० तक में रूस जो सेना तयार करने को था वह रक्षक सेना थी और वह रूस की रक्षा पश्चिमी (जर्मन) और पूर्वी (जापान) दोनों आक्रमण से करती। सेना की दूसरी योजना का काल १९४१-४५ ई० तक का था। इस काल में रूस एक ऐसी सेना का निर्माण करता जो एक सीमा से रूस की रक्षा करती और दूसरी सीमा पर आक्रमण करती। १९४६ ई० के पश्चात रूस एक ऐसी सेना का निर्माण करने को था जो दोनों सीमाओं पर आक्रमण करके शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर उसके देशों पर अधिकार जमा लेती।

स्टैलिन ने "अपने युद्ध सम्बधी कारखानों को नाजी हवाई अड्डों से बहुत दूर बनाने का प्रबन्ध किया था। अनिवार्य सैनिक सेवा का प्रयोग ऐसी कुशलता के साथ किया गया था कि सेना की चाल फेर से किसी प्रकार की हानि कृषि अथवा देशी व्यवसायों को नहीं हुई। आवागमन के साधन की समस्या स्टैलिन के लिये बड़ी कठिन थी। रूस में रेलें कम हैं और जो हैं वह भी बड़ी मन्दगति की हैं। रूस में अच्छी सड़कों का बनाना पत्थर की न्यूनता के कारण कठिन है। जो सड़कें तयार भी होती हैं वह अधिक भारी गाड़ियों के चलने के कारण शीघ्र ही नष्ट हो जाती हैं। रेल द्वारा दूसरे देशों से सेना पहुँचाना और भी कठिन कार्य है। फिर भी रूस में फ्रान्स के बराबर की लम्बाई की रेलें हैं।

रूस को सैनिक सामग्री पहुँचाने की समस्या कैस्पियन सागर के पीछे होकर पश्चिमी रूस में जल-मार्ग द्वारा पहुँचा कर हल की गई है। यहां पर भी स्टैलिन ने अपनी पञ्च वर्षीय योजना का प्रयोग किया है। प्रथम योजना में स्टैलिन नहर बनने को थी। जिसका अस्तित्व संसार के लिये निस्सन्देह कोई गुप्त रहस्य न था परन्तु उस नहर को शक्ति अवश्य ही संसार के लिये रहस्य पूर्ण बात है।

लेनिनग्राड को नहर द्वारा श्वेत सागर से लडोगा और आनेगा झीलों होकर मिलाया गया है। पहले यह नहर इतनी गहरी बनाई गई थी कि ७ हजार टन के जहाज तथा छोटे क्रूशियर जहाज उसमें चल सकते थे। उसके बाद नहर को इतना बड़ा तथा गहरा बनाने की योजना थी कि उसमें ३५ हजार टन के लड़ाका जहाज जा सकें जो कि लडोगा झील में ठहर सकते हैं परन्तु यह योजना समाप्त नहीं की जा सकी। दूसरी नहर योजना संसार के सामने अद्भुत रूप से आई। इस योजना के अनुसार डान नदी जो अजोव सागर में गिरती है वह वालगा नदी तक कितनी मोड़ के साथ जाती है। वालगा नदी कैस्पियन सागर में गिरती है।

वालगा नदी को डान नदी से मिलाने के लिये स्टैलिन के इंजीनियर एक सीधी नहर (रहस्य नम्बर २) ६० मील लम्बे मैदान में तयार कर रहे हैं। इस नहर में केवल पानी के दो फाटक बनाये जा रहे हैं क्योंकि डान नदी वालगा नदी से केवल २१ मीटर ऊँची है। हो सकता है कि इस नहर की उपयोगिता युद्ध के कारण बहुत अधिक हो जावे। रूस की समस्त नहरों का जाल वालगा नदी पर ही निर्भर करता है। वालगा नदी पश्चिमी रूस के विशाल प्रदेश में फैली है। यह नदी वाल्दाल पहाड़ी के निचले मैदान से निकलती है और कैस्पियन सागर में गिरती है। वाल्दाल पहाड़ी से कैस्पियन सागर तक यह नदी सर्प की भांति टेढ़ी लहर खाती हुई प्रवाह करती है। वालगा नदी समस्त २४ सौ मील में चौड़ी तथा गहरी की गई है। इसमें नहरें बनाई गई हैं। इस प्रकार स्टैलिन नहर तथा वाल्दाल पहाड़ी लेनिनग्राड से नहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा मिला दी गई हैं। इस प्रकार डुबुकनी, विध्वंस-कारक जहाज और हजारों युद्ध सामग्री से लदे हुये जहाज बाल्टिक श्वेत सागर और कजाकी वाल्टक से कैस्पियन तथा काला सागर तक दौड़ लगा सकते हैं।

अजोव सागर को एक संकरी जल संयोजक द्वारा कालासागर से मिलाया गया है। इस भूमि के आरपार एक बांध बनाया गया है जिससे अजोव सागर का पानी ऊपर उठाया गया है और उसमें बड़े जहाज जा सकते हैं। पेरेकोप स्थल संयोजक के आरपार एक नहर बनाकर क्रीमिया को रूस से दिया गया है। इस प्रकार ओडेसा का जल-मार्ग खुल जाता है जो डनूब नदी के मुख्य दहाने के सामने है। डनूब नदी में २ हजार टन के जहाज चलते हैं जिनमें रेलगाड़ी के ५० छकड़ों के बराबर सामान लादा जाता है। इस प्रकार संसार की सबसे बड़ी सेना को युद्ध सामग्री पहुँचाने की समस्या हल की गई है। परन्तु यह प्रान्त रूस के हाथ से जर्मनी के हाथ चला गया है जो उसका पूर्ण रूप से लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

यह बात सत्य है कि जर्मनी पर आक्रमण करने के लिये रूस ने चेकोस्लोवेकिया में प्रेसबर्ग तक पहुँचने के लिये योजना बनाई थी। रूस इस प्रदेश को स्प्रिंग-बोर्ड (उछलने का तख्ता) बनाया था। रूस की इस योजना का समाचार जर्मनी तथा इङ्गलैंड को मिल गया। रूस की सैनिक योजना जर्मनी की सैनिक योजना के साथ ही साथ समाप्त होने को थी इसलिये नाजी जनरल स्टाफ ने इस भीषण खतरे की ओर ध्यान दिया और चेकोस्लोवेकिया के राजनीतिज्ञों को मिला कर उस पर अधिकार कर लिया। चेकोस्लोवेकिया के अफसर रूस का अपने ऊपर अधिकार नहीं देखना चाहते थे। साथ ही साथ वह जानते थे कि यदि पोलैण्ड पर आक्रमण हुआ तो उन्हें अवश्य ही युद्ध करना पड़ेगा।

लन्दन तथा पेरिस के राजनीतिज्ञों का विश्वास और उन्हें निसन्देह आशा थी कि सितम्बर १९३९ ई० में रूस उनके साथ हो जावेगा परन्तु रूस को जर्मन सेना, पंजर डिवीजन और लफ्टवाफे (जर्मन हवाई सेना) की शक्तियों का भली भांति पता था। साथ ही साथ रूस जानता था कि यदि वह मित्र राष्ट्रों के साथ खुल्लमखुल्ला मिल जाता है तो फिर उसे उनकी सहायता यहाँ तक कि हवाई सहायता भी मिलनी कठिन होगी जैसा कि पोलैण्ड को आखिर हुआ ही कि वह किसी प्रकार की सहायता मित्र राष्ट्रों से न प्राप्त कर सका।

इसलिये रूस ने जर्मनी के साथ संधि करके अपनी शक्ति संगठित तथा मजबूत बनाने के लिये समय प्राप्त किया। फिनलैण्ड का युद्ध करके स्टैलिन ने लेनिनग्राड की रक्षा उत्तर की ओर से की। बेसा-बिया प्रान्त पर अधिकार जमा कर दक्षिण की मजबूती की ओर कैस्पियन सागर की रक्षा का प्रबन्ध करने के लिये बढ़ा तथा वहाँ युद्ध सामग्री एकत्रित करने लगा। स्टैलिन के दूरदर्शिता के यह कार्य कितने सराहनीय हैं। स्टैलिन ने जर्मनी की विजय, फ्रान्स के पतन आदि से यह पाठ सीख चुका था और वह इसीलिये उनसे लाभ उठाना चाहता था। जर्मनी को म्यूज तथा सेदान पर दो घंटे की बम वर्षा के कारण जितनी सफलता प्राप्त हुई उसका स्वप्न में भी जर्मन जनरल स्टाफ को विश्वास न था। जब फ्रांसीसी सेना सोमे और ल्वारे सीमा के पीछे हटा दी गई थी तो भी जर्मन सेना अपने में लड़ने की शक्ति का अनुमान कर रही थी यदि उसी समय लगातार जर्मनी अपनी समस्त शक्ति ब्रिटेन के विरुद्ध लगा देता तो इङ्गलैण्ड की रक्षा करनी वहां के राजनीतिज्ञों के लिये बहुत कठिन हो जाती। डन्किर्क से सेना हटा कर इङ्गलैण्ड ने अपनी रक्षा कर ली जिसमें प्रधान अफसर तथा लड़ाकू सैनिक थे। अपनी इस गलती पर जर्मनी को बड़ा पश्चात्ताप है।

स्टैलिन ने देखा कि जर्मनी को अपनी तयारी पूरी करने के पूर्व ही मजबूर होकर युद्ध में उतरना पड़ा है। उसने यह भी देखा कि मई सन् १९४० ई० के अन्त में वह फ्रान्स और इङ्गलैंड दोनों के साथ नहीं लड़ सका। रूस को अपनी तयारी पूरी करने के लिये अभी दो वर्ष शेष थे।

रूस का रहस्य नम्बर ४ यह है कि उसने २०० डिवीजन सेना २५ वर्ष के भीतर के युवकों की तयार की। इसमें १ करोड़ सैनिक थे। उसने फिनलैण्ड के युद्ध में कम से कम सेना तथा युद्ध सामग्री लगाई थी क्योंकि वह जानता था कि किसी न किसी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस पर विजय कर ही लेगा। यही कारण था जो कि संसार चकित दृष्टि से देख रहा था कि फिनलैण्ड के युद्ध में रूस अपनी समस्त शक्ति क्यों नहीं लगा रहा है।

रूस का पञ्चम रहस्य उसके ११८ लड़ाका विमानों का है। यह विमान ४०० मील प्रति घंटा चलने वाले हैं। तोपों तथा मशीनगनों से सुसज्जित हैं। यह स्पिट फ़ायर की समानता करते थे और जब लफ़्टवाफे के विमान उनके सामने आये तो सचमुच ही यह लड़ाका विमान उनके सामने आग उगलते थे। इन लड़ाका विमानों के साथ ही साथ अच्छे, भारी तेज उड़ने वाले डी० बी० बम वर्षक विमान बहुत बड़ी संख्या में थे। डी० बी० बम वर्षक रात के समय बम वर्षा करने के लिये अधिक उपयोगी थे।

रूसी सेना का षष्टम रहस्य यह है कि रूस के सबसे अधिक आधुनिक फाइटर (लड़ाका) विमानों में विध्वंशकारी तोपें लगी थीं। यह तोपें अपने गोलों से जर्मन टैंकों के धुर्रे उड़ा देती थीं और उन्हें पिघला कर इस प्रकार तोड़ देती थीं मानो वह मक्खन अथवा मोम के बने हों। इन्हीं लड़ाका विमानों की प्रशंसा लार्ड ब्रीवर ब्रुक ने मास्को से लन्दन लौटने पर की है। इन विमानों में वह गोले तथा तोपें हैं जिनको जर्मन लोगों ने 'दि मैड टारपीडो' (पागल टार्पिडो गोले) का नाम दिया है।

मैड टारपीडो (The Mad Tarpedo) क्या है?

अब तक संसार में कोई वस्तु हवाई टारपीडो नहीं है जो विमानों द्वारा प्रयोग की जाती हो। रूस के स्टोरमोविक्स विमान जो टैंकों पर बम गिराते तथा उनका नाश करते हैं। वह जब टैंकों के समूह के ऊपर से जाते हैं तो बम के गोलों की लगातार पंक्ति टैंकों पर गिराते जाते हैं। गिरने के बाद यह गोले टैंक के आर्मर (शस्त्र रखने वाले स्थान) में प्रवेश कर जाते हैं और फिर टैंक गाड़ी को गुब्बारे की भांति फाड़ कर तितर बितर कर देते हैं। हो सकता है कि विमानों में जो तोप लगाई जाती है उसमें कुछ और सुधार कर के यह मशीन लगाई गई हो। इसके गोले टैंक विध्वंश करने वाली तोपों के गोलों से कुछ छोटे होते हैं। शायद रूसी लोगों ने स्टोर्मोविक्स के पहियों के बीच में कोई बड़ी तोप लगाई है जिसमें बम भरे रहते हैं। जब बम वर्षक नीचे की ओर गोता लगाता है तो उसका ज़ोर, तोप के छूटने का ज़ोर तथा बम के भार का ज़ोर गोलों पर पड़ता है। इस कारण समस्त ज़ोर संगठित होकर अधिक प्रबल हो जाता है और टैंकों को चकनाचूर करने में सफल होता है।

रूस के लाल हवाई सेना में एक विमान ऐसा है जिसमें ६ मोटरें लगी हैं, उसे एल ७६० (L 760) कहते हैं। यदि यह विमान दो फुट और बड़ा होता तो संसार का सबसे बड़ा विमान होता। इसका हिस्पानों स्विजा इञ्जिन की शक्ति ६६०० अश्व-शक्ति के बराबर है। पंखों के साथ इसका फैलाव २१० फुट का तथा भार १०३००० पौंड का है। जब यह बम वर्षक का काम करता है तो इसमें १० मनुष्य बैठते हैं और १८६ मील प्रति घंटे के हिसाब से यह १८८४ मील की यात्रा कर सकता है। इसमें भरे जाने वाले बमों की संख्या अज्ञात है। जब यह पैराट्रूप्स (सेना) ले जाने के लिये प्रयोग किया जाता है तो इसमें ६४ सुसज्जित सैनिक जा सकते हैं। युद्ध सामग्री (१० मनुष्यों के साथ) कितनी लाद कर ले जा सकता है यह बात रहस्य की है जो कदाचित् बहुत गुप्त होगी।

सातवां रूसी सैनिक भेद बरफ़ तोड़ने वाले जहाजों का बेड़ा है। यह जहाज वर्तमान शीत काल में आर्कैञ्जल तक का आर्कटिक मार्ग खोले हुये थे जिससे संयुक्त राष्ट्र अमरीका से रूस को युद्ध-सामग्री पहुँच सके इसी कारण अमरीका ने ब्लाडीवास्टक बन्दरगाह पर सैनिक सामान नहीं भेजा यह बात अब तक गुप्त थी। यह बेड़ा १२ जहाज़ों का है जिसमें तीन या चार जहाज १२ टन के हैं। यह जहाज हिटलर को आर्कटिक में चकित कर देंगे।

ब्लाडीवास्टक रूस का आठवां रहस्य है। ब्लाडीवास्टक का अर्थ ही प्राचीन देशों पर प्रभुत्व रखने वाला है। उसे इस प्रकार रूस ने दृढ़ बनाया है कि वह सदैव जापान के हृदय पर पिस्तौल ताने रहता है जिससे जापान साइबेरिया की ओर नहीं झुक सकता है।

आज मुरमान्स्क से ब्लाडीवास्टक तक स्टीमर चलते हैं। यह मार्ग अटलांटिक की चौड़ाई का तिगुना है स्टीमरों पर लोहा, फौलाद, कलें और काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले आते जाते हैं। यहां ब्लाडीवास्टक में औसौरी तथा अमूर नदियों की विशाल स्चुअरी हैं। अमूर नदी की लम्बाई ७५०० मील है। इस भाग में रूसी लोग एक बड़ा बन्दरगाह बना रहे हैं जहां से वह अमरीका से आने वाली समस्त सामग्री को पार कर अपने देश में ले जा सकें।

ब्लाडीवास्टक में डुबुकनी जहाजों का एक बड़ा बेड़ा रहता जिसमें ५० से कम जहाज कभी नहीं रहते हैं। वहां पर युद्ध के विमानों का भी एक बेड़ा रहता है। चूंकि ब्लाडीवास्टक भी बरफ से जम जाता है इसलिये उसकी डुबुकनी नावें तथा उसके बाहक भी अद्भुत हैं। वह बरफ के नीचे २० मील की यात्रा करके खुले समुद्र में पहुँच सकती हैं। यह डुबुकनी किश्तियां स्टैलिन की सबसे आश्चर्य जनक वस्तुएँ हैं। इन डुबुकिनी किश्तियों की चाल का अंधेरे में घुस सुनसान में चलने का अन्दाज़ करना कितना आश्चर्यजनक है जहां पर कि पेरिसकोप यंत्र का भी प्रयोग नहीं हो सकता है। उन किश्तियों के कमांडर तथा मनुष्यों पर कितना दबाव पड़ता होगा इसका अनुमान करना कठिन है।

जापान का जहाजी बेड़ा टोरंटो के इटैलियन सेना के भाग्य की भांति अपनी दशा होने के लिये भयभीत है। जापान के लकड़ी के नगरों को भी भय है कि कहीं उनकी भाग्य का निपटारा भी ब्रेमेन और हैम्बर्ग नगरों की भांति बम वर्षा से न हो। जापानी हवाई शक्ति लफटवाफे से कहीं अधिक निर्बल है।

रूस का नवां रहस्यपूर्ण कार्य उसका जहाजी बेड़ा है। इस कार्य को लेनिन ने आरम्भ किया था और स्टैलिन नहरों को समाप्त करके उसकी पूर्ति कर रहा है। स्टैलिन और वालगा डान नहरों का प्रयोग करके रूसी जहाजी बेड़ा कालासागर बाल्टिक सागर और अटलांटिक सागर का प्रयोग कर सकता है। स्टैलिन ने ज़ार की बास्फोरस तथा डार्डनलीस की रखवाली वाली नीति को छोड़ दिया है जिससे जहाज चारों ओर दौड़ सकें।

यद्यपि बाल्टिक सागर में रूस के पास जर्मनी के टिर्पिज जैसे लड़ाका जहाज का सामना करने वाला कोई जहाज नहीं है तो भी वहां रूस के २ पुराने २३ हजार टन के लड़ाका जहाज, ६ विध्वंसकारक जहाज, १५ पुराने विध्वंस कारक जहाज और १२ समुद्र में जाने वाले टार्पिडो नावें हैं।

रूस का दसवाँ रहस्य उसके नवीन कारखानों की पेटी है जो कैस्पियन और अरल सागर के पीछे वाले भाग से चीनी सीमा तक जाती है। इस पेटी में रूस के बड़े बड़े कारखाने तथा हजारों की संख्या में मजदूर काम कर रहे हैं। अब यह भाग भारतवर्ष तथा ईरान से मिलाया जा रहा है। कारखाने वाली पट्टी में आवागमन के साधन भी बड़े उपयुक्त बनाये गये हैं।

इस प्रदेश में यूराल प्रदेश से अधिक कलें तथा युद्ध सामग्री तयार हो रही है। जिसका हिटलर अथवा संसार को स्वप्न में भी अनुमान न था। इस प्रदेश में मास्को और रोस्टोव के प्रदेश के समस्त कारखाने पूर्ण रूप से उठा लाकर स्थापित किये गये हैं। छोटी बड़ी कलें, कड़े मजबूत तथा कोमल पुर्जे इस प्रदेश में लाकर लगाये जा रहे हैं। इस प्रदेश में कारखानों के स्थापित करने तथा सामान तयार करने में जो संगठन किया गया है और तत्परता दिखाई गई है वह अद्वितीय है।

रूस के इन १० रहस्यों के पीछे स्टेलिन की बुद्धि तथा दूरदर्शिता का परिचय मिलता है। स्टैलिन की बुद्धि ने वह बातें खोज निकाली हैं जिसे संसार को स्वप्न में भी अनुमान न था। स्टैलिन के विचारों की शाखें जो समस्त संसार में फैली हैं उनकी गाथा पर अभी विश्वास होना कठिन है। इस सम्बन्ध में एक कहानी है जो फ्रांस तथा इटली से सम्बन्ध रखती है। इटली ने फ्रान्स पर उस समय तक आक्रमण 'क्यों नहीं किया' जब तक कि वह पूर्ण रूप से परास्त नहीं हो गया। इसका मुख्य कारण यह था:—

आधुनिक महासमर से ४ वर्ष पूर्व फ्रान्स ने इटली की सीमा पर आवश्यक किले बनाने आरम्भ किये। यह किले मेंटोने नगर के समीप अधिक बनाये गये थे। इटली के कुछ फ्रान्सीसी भाषा जानने वाले फैसिस्ट अफसर फ्रान्स के किले बनाने वाले अफसरों के समूह में गुप्त रूप से प्रवेश कर गये। जब वह इटली लौट कर आये तो उन्होंने उन किलों का मान चित्र तथा ब्योरा मुसोलनी के सामने रक्खा।

उन्हें देख कर इटली की सेना के अफसरों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय किया कि उनके पास ऐसी तोपें नहीं हैं जिनसे वह इन किलों को तोड़ सकें उन्होंने ड्यूस से कहा कि उन किलों के तयार करने में ५ अरब रुपया तथा ५ वर्ष का समय लगेगा। यह १९३८ ई० की बात है।

उसके कुछ महीनों के बाद रूसी भाषा में उन किलों की योजना रूसियों ने फ्रान्स के युद्ध मन्त्री मण्डल के सामने रक्खी और कहा कि रूसी जनरल स्टाफ इस बात के जानने के लिये बड़े इच्छुक हैं कि उनके द्वारा दिया हुआ फ्रांसीसी किलों का विवरण पूर्ण रूप से ठीक है। इस छोटी कहानी से पता चलता है कि रूस की बुद्धिमत्ता का जाल किस तरह संसार में फैला है।

रूस को पूर्व द्वार से भय

चीनी लोगों में एक कहावत प्रचलित है कि एक शय्या पर शयन करते हुये दो व्यक्ति भिन्न भिन्न स्वप्न देखते हैं। आज यही कहावत जर्मनी तथा जापान के आपसी सम्बन्ध को पूर्ण रूप से चरितार्थ कर रही है। आज जो जर्मन सेना मास्को पहुँच चुकी है वह जापान के लिये चुनौती दे रही है। जर्मनी की बढ़ती हुई सेनाओं को यदि सफलता प्राप्त हुई तो वह साइबेरिया और ब्लाडीवास्टक पर अवश्य ही धावा करेंगी और इसमें आश्चर्य ही क्या यदि वे रूस की भांति जापान पर भी धावा करें। जापान का वर्तमान प्रधान मन्त्री जनरल टोजो है। वह धुरी राष्ट्रों की नीति का अनुसरण पूर्ण रूप से कर रहा है। अभी जापानी तथा जर्मन योजनायें ऊपरी रूप से समान दिखाई पड़ रही हैं।

जर्मन कूटनीतिज्ञों की भांति जापान भी युद्ध और संधि की शर्तें साथ ही साथ लेकर बढ़ रहा है।

जब जर्मनी ने रूस पर धावा मारा तो जापानी सेनायें मञ्चूरिया में भेजी गईं। लड़ाई का सामान भी खूब भेजा गया इससे प्रतीत हुआ कि जापान रूस के योरुपीय युद्ध से भली भांति लाभ उठाना चाहता है। आज मञ्चूरिया में जापान की लगभग ३५ डिवीज़न सेना है।

उत्तर की ओर जापान के दो मुख्य ध्येय हैं। १—ब्लाडीवास्टक बन्दरगाह पर अधिकार जमाना। २—जापानी साम्राज्य को ओकुटस्क तथा जापान सागर से लेकर बैकाल झील तक स्थापित करना। ब्लाडीवास्टक बन्दरगाह ही केवल ऐसा बन्दरगाह है जहां से रूस को समस्त वर्ष डच तथा अमरीकन सहायता पहुँच सकती है। रूसियों ने ब्लाडीवास्टक के चारों ओर के सागर में सुरंगें लगा रक्खी हैं। साइबेरिया प्रान्त में पूर्वी रक्षा के लिये रूस ने कई वर्षों से ३० डिवीज़न सेना लगा रक्खी थी। उसके बाद रूस ने २० या २५ डिवीज़न सेना यूराल के पूर्व और भेज दी है। इस प्रकार रूस की शक्ति साइबेरिया प्रदेश में जापान की अपेक्षा अधिक है।

जापान का विश्वास है कि रूस के योरुपीय युद्ध में फंसने का लाभ वह भली भांति उठा सकेगा। १९३८ ई० में रूस की पूर्वी सेना तथा जापानी सेना में झगड़ा हो गया था उसके एक मास बाद दोनों में संधि हो गई थी। यह घटना चांगकूफेंग स्थान पर हुई थी। इस घटना के पश्चात् रूस ने पूर्व की ओर अपनी शक्ति को और अधिक मज़बूत बना लिया है।

जापान को जापानी सागर में केवल रूस से ही भय है। साइबेरिया के हवाई अड्डों से जापानी नगरों पर बम बर्षा होनी भी प्रायः बड़ा सरल है। ब्लाडीवास्टक बन्दरगाह में रूस की सामुद्रिक सेना डुबुकनी किश्तियाँ विध्वंसकारक जहाज़ आदि हैं।

रूस जापान की साम्राज्य सम्बन्धी नीति तथा १९१४ ई० की चालों से भली प्रकार परिचित था इसी कारण उसने साइबेरिया में अपनी शक्ति को भली प्रकार संगठित किया है। खाबारोव्स्क और कोम्सोमोल्स्क बड़े कारखाने वाले नगर बन गये हैं। वहां पश्चिमी साइबेरिया और यूराल से लोहा तथा फौलाद टूटियूके से जस्ता, सूचान की खानों से कोयला पहुँचता है। इस प्रकार रूस की पूर्वी सेना अपनी आवश्यकता की पूर्ति स्वयं कर सकती है।

पूर्वी भाग में रूस की ट्रांस साइबेरियन रेलवे लाइन है। दूसरी नवीन साइबेरियन रेलवे ट्रान्स साइबेरियन लाइन के उत्तर है। यह मध्य साइबेरिया के टैचेट स्थान से सोवेटस्काया को जाती है। इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों लाइनों द्वारा आमूर तथा जहाज़ चलाने वाले प्रदेशों को रूसी सेनायें भेजी जा सकती हैं। कान्सो-मोल्स्क और खावारोव्स्क के बीच आवागमन के अच्छे साधन बनाये गये हैं। पश्चिम की ओर मध्य एशिया और ट्रान्स वैकाल के बीच रेलों का जाल बिछा हुआ है। इसमें सबसे प्रसिद्ध रेलवे सेमिपाला-टिन्स्क से यूलियासूटाई जाने वाली लाइन है जो मध्य एशिया को मंगोलिया के दक्षिणी पश्चिमी भाग से मिलाती है। पूर्व को ओर आउटर मंगोलिया नामक रेलवे लाइन है जो यूलान-बातोर से बेर्चाना पुडिन्स्की तक जाती है। बीच में सड़कें भी बनी हैं।

लगभग साढ़े चार वर्ष चीन में युद्ध करने के कारण जापान की स्थल-सेना की शक्ति क्षीण हो गई है। इसलिये वह कदाचित् स्थल सेना से आक्रमण नहीं कर सकता है। उसके पास टैंक तथा मशीनों की सैनिक शक्ति कैसी है यह निश्चय तौर पर नहीं बतलाया जा सकता परन्तु उसने इन सेनाओं का जैसा प्रदर्शन चीन में किया है उससे तो यही अंदाज होता है कि जापान की शक्ति रूस की अपेक्षा बहुत कमज़ोर है। जब से अमरीका, रूस और इंगलैंड ने चीन से अपने हाथ खींच लिये तब से चीन जापान के हाथ अपना तेल तथा दूसरे सामान बेंचता रहा है। इसलिये जापान के पास तेल आदि का भण्डार अधिक होना सम्भव है। जापान की हवाई शक्ति भी रूस की अपेक्षा निर्बल है। इसलिये जापान अपने नगरों की रक्षा रूस के विमानों के आक्रमण से नहीं कर सकता है।

जापान की जल सेना का प्रयोग अब तक नहीं हुआ था। जापान ने अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाते हुये एक बड़ा शक्तिशाली जहाज़ी बेड़ा बना लिया है। जापानी जहाज़ी बेड़े की पूर्ण शक्ति का अंदाज़ ठीक तौर पर करना संभव नहीं है फिर भी यह कहना कदाचित अनुचित नहीं है कि जापान प्रशान्त महासागर में जहाज़ी शक्ति में सभी राष्ट्रों से तगड़ा है।

अभी हाल ही में रूस तथा जापान के मध्य समझौता हो गया है जिसका तात्पर्य यही है कि (रूस जर्मनी से लड़ते हुये और जापान इङ्गलैण्ड तथा अमरीका से लड़ता हुआ) वह एक दूसरे का सामना नहीं कर सकते।

जापान जिस वेग के साथ प्रशान्त महासागर में बढ़ा है उसका उदाहरण मिलना कठिन है। योरुपीय युद्ध के कारण उसे बड़ी भारी सफलता प्राप्त हुई है। रूस तथा जापान को एक दूसरे से भय है इसलिये शायद उनमें एक दूसरे से युद्ध भी न छिड़े।

बरमा रोड

(ले०—केदारनाथ पाण्डेय, विशारद)

सुदूर पूर्व से गरज कर आते हुये जापान की गृद्ध-दृष्टि आज बरमा के जिस प्रसिद्ध रोड पर लगी हुई है, वह है बरमा रोड। जापान इसे पहले से ही नष्ट करने पर तुला हुआ था। इसके लिये सर्व प्रथम उसने ब्रिटेन से इस रोड के बन्द कर देने की प्रार्थना की थी। जापान इस दुष्टता पूर्ण चालों में आकर ब्रिटिश प्रधान सचिव स्व० चेम्बरलेन जी ने कुछ महीनों के लिये बरमा रोड को बन्द भी कर दिया था। किन्तु चीन में हाहाकार मच जाने के कारण जापान की यह चाल गुप्त न रह सकी क्योंकि वह धुरी राष्ट्रों के गृह में सम्मिलित हो चीन विरोधी नीति में सहायता देने लगा। इस कारण चीन की प्रार्थना पर ब्रिटेन ने यह मार्ग खोल दिया।

बरमा रोड खुल जाने पर जापान की चिन्ता फिर बढ़ गई।

इस कारण उसने युद्ध आरम्भ होते ही अपना पहला लक्ष्य इस रोड को ही बनाया। अब जब से सिंगापुर का भाग्य जापान के हाथों चला गया है, तब से उसको और भी सुविधायें प्राप्त हो गई हैं। अब जापान किसी तरह बरमा रोड तक पहुँच चुका है इसलिये उसने जहाजों के तांते लगा दिये हैं और जिस विधि से हो सकता है। बम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बम गिराने आरम्भ कर दिये हैं। इसके पहिले भी उसने कई बार बर्बरता पूर्वक पाशविक आक्रमण किये थे जिससे कि बरमा रोड को अत्यधिक क्षति पहुँची। कहीं कहीं उसे बमों की मार से उड़ा दिया गया और पुल तोड़ दिये गये लेकिन स्वतंत्र चीन, चीन का एकमात्र सहायक बरमा रोड अभी तक जीवित और खुला रहा किन्तु जापान की धुआंधार पाशविकता से बरमा रोड का भाग्य खतरे में पड़ गया।

यह बरमा रोड क्या है? कब बनी? और इसकी अब क्या अवस्था है? इन सम्पूर्ण बातों के लिये इसका अध्ययन अत्यावश्यक हो जाता है। किसी समय में यह सड़क एक साधारण देहाती पगडंडी थी और इस पर खच्चर के समूह के समूह चला करते थे किन्तु अब यह एक सड़क है, सड़क ही नहीं प्रत्युत आवागमन का एक प्रधान पथ है। अब तो इस पर से बड़ी बड़ी मोटरें और लारियां सरलता से आने जाने लगी थीं जिससे चीन को सभी आवश्यक सामग्रियां प्राप्त हो रही थीं।

यह सड़क लासियो (जो कि रंगून से मिला हुआ बरमा रेलवे का उत्तरी अन्तिम स्थान है) से चल कर चुङ्गकिंग से मिल जाती है।

यह सड़क इस अवस्था में १९३६ और १९३८ ई० में बनाई गई है और १९३९ ई० में पूर्ण रूप से तैयार हो गई। इस सड़क पर पुल भी बने हुये हैं। यद्यपि इनकी संख्या अधिक नहीं है, परन्तु हैं सभी उपयोगी और लाभप्रद। इस सड़क का क्षेत्रफल ४५००० वर्ग मीटर है। इस सड़क का ऊँचे से ऊँचा स्थान समुद्र तट से २६००० मीटर हैं। यह संपूर्ण सड़क पहाड़ और पहाड़ियों में घूमती हुई अत्यन्त सघन वनों को पार करती है। यह लम्बाई में ९९० किलोमीटर अर्थात् ६०० मील है।

जब से यह सड़क बन कर तयार हुई थी तभी से राजनैतिक क्षेत्रों में हलचल-सी मच गई। सड़क के खुलते ही बरमा के प्रधान मन्त्री ने नोटिस दी। क्योंकि अधिकांश जापानी अधिकृत बर्मीय यह समझते थे कि इससे चीनी बरमा में प्रविष्ट हो जांयगे। इस कारण बरमा को इसे रोकना चाहिये परन्तु चीन और बरमा के सौभाग्य से यह सारी कठिनाइयां दूर हो गईं और चीन बरमा रोड फिर ज्यों का त्यों खुल गया।

जिस बरमा रोड को बरमा ने कभी अपने लिये अनुचित और अनुपयुक्त समझा था, वही आज बरमा की सहायक हुई। आज जब बरमा में जापान ने अपनी राक्षसी-क्रिया प्रारम्भ कर दी है और असंख्य जन-धन का संहार कर रहा है ऐसे अवसर पर बरमा रोड ही एक ऐसा साधन था जिससे बरमा अधिक दिन तक शत्रु का सामना कर सका।

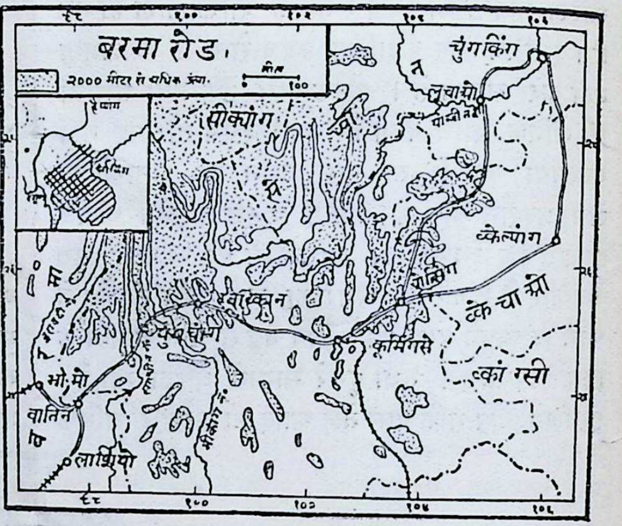

वर्तमान महत्व और पुनर्निर्माण

आज जापान की प्रगति से सारा देश चिन्तित है। ऐसे समय में जब कि शत्रु रंगून तक विजय कर चुका है सारे लोगों की आंखें बरमा रोड पर केन्द्रित हो गई थीं। इस से न केवल चीन पंगु होगा, प्रत्युत चीन भारत संबन्ध भी भंग हो जायगा। इस कारण इस समय बरमा रोड का महत्व और भी बढ़ गया है। इसीलिये सुदूर पूर्व के सर्वोच्च सुयोग्य सैनिकाधिकारी जनरल वेवेल ने इसे फिर से दुरुस्त करवाया है जिससे जापान को युद्ध का मज़ा मिले।

चीन की प्राण-रेखा

आज चीन के संपूर्ण बन्दरगाह जापान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार में हैं। इसके कारण उसके लिये यहां रोड सब कुछ है। क्योंकि इसी पथ से चीन को सहायता प्राप्त हो रही है। आज चीन युद्ध में लिप्त है। इस युद्ध के लिये जिन आवश्यक सामग्रियों की प्रचुर मात्रा में आवश्यकता है इसकी पूर्ति चीन से नहीं हो सकती। चीन के सभी दोस्त पृथक हो गये हैं। अब चीन को सोवियट रूस और बरमा की तरफ से ही सहायता प्राप्त हो सकती है। परन्तु रूस स्वयं युद्ध में व्यस्त है और वह मार्ग भी अति बीहड़ है इस कारण बरमा से ही सहायता प्राप्त हो सकती है जिसका प्रधान साधन बरमा रोड ही है। इसलिये यही चीन की प्राण रेखा है। परन्तु बरमा पर जापानी आक्रमण के कारण इससे भी निराश होना पड़ रहा है।

नवीन बरमा सड़क

बरमा रोड के बन्द हो जाने की शंका हो जाने पर वीर चीनियों ने नवीन बरमा सड़क बनानी आरम्भ कर दी है। यह नवीन सड़क चुङ्किंग से चेंग्तू (जेचूना प्रान्त की राजधानी) नगर होती हुई बातांग से आकर मिल जावेगी। बातांग तिब्बत की सीमा पर है।

यद्यपि इस नवीन सड़क के सम्बन्ध में अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं है तो भी यह निश्चय है कि यह सड़क सदिया (आसाम का सीमावर्ती टाऊन) तक आवेगी। सदिया नगर ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर आसाम की उत्तरी पूर्वी सीमा पर स्थित है। यह स्थान बातांग से ३०० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है। चीनी लोग अपनी इस सड़क के बनाने में बातांग से उत्तर तथा दक्षिण जाने वाली घाटियों का प्रयोग कर रहे हैं। सदिया से कलकत्ता तक ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा आने जाने तथा सामान ले जाने का कार्य होगा। हिमालय श्रेणी इस नवीन सड़क बनाने में एक बड़ी घातक है परन्तु चीनी लोग सड़क बनाने में बड़े प्रवीण तथा चतुर हो गये हैं। चीनी समाचार के अनुसार इस सड़क के बनाने में १ लाख चीनी लगे हैं। चतुर तथा योग्य पत्थर काटने वाले चीन के भिन्न भिन्न भागों से आकर इसमें लगे हैं। सड़क बनाने वालों की मलेरिया से रक्षा करने के लिये सुयोग्य आयुर्वेदिक सहायता पहुँचाई जा रही है।

नवीन सड़क बरमा रोड से ४०० मील उत्तर की ओर है। इसलिये बंगाल की खाड़ी में आक्रमणकारी जापानी जहाजों के आक्रमण के भय से यह स्वतंत्र है।

मार्सेलस का बन्दरगाह

मार्सेलस का बन्दरगाह बहुत प्राचीन तथा आधुनिक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। साउथ ऐम्पटन का नया बन्दरगाह इसी के समीप है। मार्सेलस का बन्दरगाह राइन नदी के मुहाने के पूर्व की ओर स्थित है। यह बन्दरगाह फोयनीशियन तथा गोथ लोगों के समय में भी था।

६०० वर्ष ईसा के पूर्व यूनानी सौदागर एशियाई रूम से यहां आए और उन्होंने राइन नदी के दहाने के पूर्व की ओर मसालिया (मार्सेलस) नगर बसाया।

जब रोमन काल आया तो योरुप के सभी देशों में उनका राज्य फैल गया। गाल के दक्षिणी तटों में भी यूनानी बस्तियों ने खूब उन्नति की। रोमन लोगों ने 'मसालिया' शब्द के उच्चारण को कुछ बदल दिया और इसे 'मसोलिया' कहने लगे।

रोमन काल में मार्सेलस का बन्दरगाह कार्थेज के बन्दरगाह की समानता करने लगा। कुछ समय के पश्चात् रोमन और फोयनीशियन लोगों में युद्ध छिड़ गया और रोमन विजयी हुये तो उन्होंने कार्थेज नगर को बर्बाद कर डाला। इस प्रकार रोमन काल में मार्सेलस दक्षिणी पश्चिमी योरप का सबसे बड़ा बन्दरगाह हो गया। यह उस समय में भी रोमन के बड़े प्रान्त का व्यापारिक केन्द्र था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतमान समय में मार्सेल्स का बन्दरगाह इम्पीरियल मार्ग में पड़ता है। इँगलैंड से भारतवर्ष तथा पूर्वी देशों को आने वाले लोग फ्रांस होकर आते हैं। और मार्सेल्स में पी० और आर० स्टीमर को पकड़ते हैं। इँगलैंड को जाने वाले लोग भी इसी मार्ग होकर फ्राँस को पार कर कैले जाते हैं और वहाँ से फिर इँगलैंड को प्रस्थान करते हैं।

रोमन लोग भी अपने समय में इस बन्दरगाह का प्रयोग बिलकुल इसी भाँति करते थे। पहली शताब्दी में वाटलिन्ग स्ट्रीट नामक रोमन सड़क व्रोक्स्टर (Wroxeter) से लन्दन होती हुई डोवर को जाती थी। कैले से एक दूसरी रोमन सड़क दक्षिण की ओर गाल होकर जाती थी। मार्सेल्स से की दशा कुछ शोचनीय अवश्य हो गई थी किन्तु दसवीं शताब्दी के बाद उसकी दशा फिर सुधर गई। मध्य कालीन समय तथा फ्राँस की क्रान्ति के समय भी नगर की दशा शोचनीय हो गई थी किन्तु फिर भी इस नगर की सत्ता आज तक वैसी ही बनी है।

मार्सेल्स बन्दरगाह में दुनिया के सभी देशों के लोग पाये जाते हैं। यह नगर केवल नाम के लिये फ्राँसीसी है। यहाँ के निवासी अरब, मूर, सिंगली और कोचीनी आदि लोग फ्रेन्च भाषा का प्रयोग करते हैं।

इसके सिवा और भी दूसरे देशों के लोग हैं, जो अपने को फ्राँस राष्ट्रीयता से अलग समझते हैं, वे भी दुनिया के दूसरे देशों के निवासी हैं। उनमें

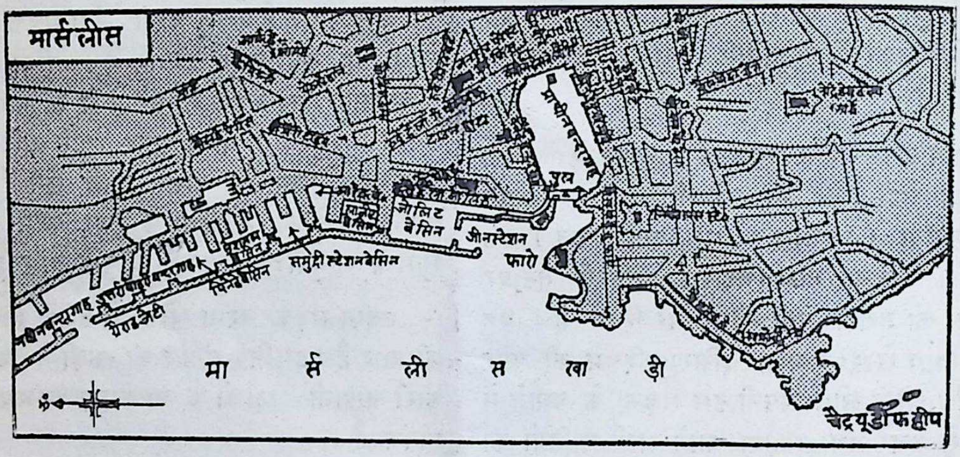

सुन्दर जहाज (रोमन) ओस्टिया को जाते थे। आस्टिया उस समय रोम राज्य का जलद्वार (मुख्य बन्दरगाह) माना जाता था।

बर्तमान समय में कार्थेज के स्थान पर खँडहर के सिवा और कुछ नहीं है। जेनोआ का नाम आस्टिया की अपेक्षा अधिक प्रसिद्ध है। सिडौन नगर का नाम मिट गया उसके स्थान पर हैफा नगर प्रसिद्ध है। राई (Rye) के बन्दरगाह का तो नाम निशान ही मिट गया है। मार्सेल्स आज भी पश्चिमी दुनिया के बड़े बन्दरगाहों में गिना जाता है। यह नगर फ्राँस का द्वितीय श्रेणी का नगर है। इस नगर की जन-संख्या ८ लाख है।

रोमन राज्य को अवनति होने पर मार्सेल्स नगर

प्रधान स्वीडन, इँगलैंड, जापान, चीन, अमरीका, जर्मनी, बर्मा, दक्षिणी अमरीका आदि।

मार्सेल्स का बन्दरगाह पूर्वी देश के नगरों की भाँति नहीं है। वह पश्चिमी सभ्यता वाले नगरों से भी नहीं मिलता जुलता। इसको फ्राँसीसी नगर भी कहना कठिन है, क्योंकि फ्राँस का कोई भी नगर इससे समानता नहीं रखता। इस प्रकार मार्सेल्स नगर की सत्ता स्वयम् अपनी अलग है।

इँगलैंड के यात्री मार्सेल्स नगर भूमार्ग रेलों तथा सड़कों द्वारा पहुँचते हैं। मार्सेल्स पहुँचने के लिये ठीक मार्ग लाएन्स की खाड़ी होकर है।

मार्सेल्स नगर हार्बर के पूर्व की ओर स्थित है। तट से कुछ दूर पर चैट्यू डालफ का द्वीप तथा किला,

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस किले में एडमान्ड दान्ते और अब्बे फारिया कैद रहे थे। प्राचीन समय में यह किला बहुत मज़बूत ख्याल किया जाता था और इसमें कैद होने वाले व्यक्ति का छुटकारा होना गैर मुमकिन था। जब तक कि वह डूयूमा के "माउन्टे क्रिस्टो" की भांति न हो अर्थात् मुर्दा जान कर बाहर निकाल न दिया जाय।

मार्सेलस में स्मारकों की कमी नहीं है। नाटरे डमे डी ला ग्रेड का चर्च बहुत प्रसिद्ध है। यह प्राचीन हार्बर के दक्षिण एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है। चर्च में एक गुम्बद में एक बड़ा घंटा और तांबे की एक बड़ी मूर्ति वर्जिन मैरी की है। इसको फ्राँसीसी लोग गुड मदर (अच्छी माँ) के नाम से पुकारते हैं। प्रत्येक जहाज चलाने वाला इसको बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखता है। जिस प्रकार 'लिबर्टी' की मूर्ति का आदर न्यूयार्क वाले करते हैं इसी प्रकार इस मूर्ति का आदर यहाँ के निवासी करते हैं।

प्राचीन हार्बर वर्तमान बांधों के दक्षिण में है। इसका मुँह पश्चिम की ओर है। हार्बर के जल का क्षेत्रफल ६५ एकड़ है। इसकी लम्बाई २९२० फुट और चौड़ाई १०४९ फुट है। पानी की गहराई ११½ फुट से २४½ फुट तक है। इसके बाँधों की लम्बाई ६२१० फुट है। बैसिन डयूकार्निज के पानी का क्षेत्रफल २¾ एकड़ और बाँधों की लम्बाई १८११ फुट है।

प्राचीन हार्बर के मुख के दक्षिण की ओर फारो महल है, जहाँ पर अब कालेनियल मेडीसिन का स्कूल है। मुख पर सेंट जीन का किला उत्तर की ओर और दक्षिण की ओर सेन्टनिकोलस का किला है।

प्राचीन हार्बर का पुल देखने योग्य है। यह १९०५ ई० में बना था। इस पुल में दो गुम्बद हैं और प्रत्येक गुम्बद की ऊँचाई २८२ फुट है। यहाँ पर एक ऊँचा प्लैट फार्म है, जिसकी लम्बाई ८७० फुट है। यहाँ का बैज़न टाइन कैथीड्रल भी देखने योग्य है।

प्राचीन हार्बर और प्राचीन नगर को मिलाकर 'ली व्युक्स पोर्ट' के नाम से पुकारते हैं। प्रत्येक मार्सेलस के यात्री को चाहिये कि वह इस भाग का भ्रमण अवश्य करे।

मार्सेल्स के नये डाक प्राचीन हार्बर के उत्तर में स्थित हैं। समुद्र की ओर ये डाक उभरी हुई पहाड़ी चट्टानों द्वारा बन्द हैं। यह उभरी हुई चट्टानें पानी के समानान्तर फैली हुई हैं। इन चट्टानों के भीतर की ओर बेसिन तथा सूखे घाट हैं।

दक्षिण की ओर जालीटी का बेसिन है। इसके जलभाग का क्षेत्रफल ५४ एकड़ है। इसकी लम्बाई १,६४० फुट चौड़ाई १,३१२ फुट और पानी की गहराई १३ से ३३ फुट तक है। यहां पर ८१४८ फुट लम्बे बांध हैं। यहां पर सी० जी० टी० स्टीमर रहते हैं, जो उत्तरी अफ्रीका के फ्रान्सीसी प्रान्तों को फ्रांस से मिलाते हैं। यद्यपि फ्रान्स की नौ आबादियां अफ्रीका और दूसरे स्थानों में हैं तो भी फ्रान्स एक साम्राज्य नहीं है, क्योंकि वे सभी नौ आबादियां फ्रन्च रिपब्लिक के भाग हैं।

जालीटो बेसिन में सुदूर पूर्व और प्रशान्त महासागर से फ्रान्स आने वाले जहाज ठहरा करते हैं। नहर स्वेज के खुलने से फ्रान्स का पूर्वी व्यापार अधिक उन्नति कर गया है।

जालोहे के बेसिन के उत्तर की ओर लजारेत का बेसिन है। यहाँ पर जापान, ऐन्कार लाइन, यूनियन कैसिल लाइन और सिटी लाइन के जहाज ठहरा करते हैं। अरेन्क बेसिन और लजारेत बेसिन का क्षेत्रफल मिलाकर ४६ एकड़ है। एरेन्क बेसिन अपने अनाज के एलिवेटरों के लिये प्रसिद्ध है। अरेन्क बेसिन में ५७ अनाज भरने के टावर हैं जिनमें २२,००० टन (६१६,००० मन) अनाज आ सकता इन टावरों के अनाज के भरने वाले एलिवेटरों की ऊँचाई १६२ फुट है।

मैरीटाइम स्टेशन पर पेनिनशुलर तथा ओरियन्टल जहाज ठहरते हैं। हार्बर स्टेशन पर कैले तथा बाव-लोगनें से एक्सप्रेस तथा मेल गाड़ियाँ आती हैं।

गेर मैरीटाइम बेसिन (मैरीटाइम स्टेशन) का क्षेत्रफल ४४½ एकड़ है। इसकी गहराई २९½ फुट से ३२ फुट ८ इँच तक है। इसकी लम्बाई १७१२ फुट और चौड़ाई १२०० फुट है। इसके बाँधों की लम्बाई ७,६५० फुट है। गेर मैरी टाइम बेसिन से कान्गो तथा फ्रांन्सीसी पश्चिमी अफ्रीका को फ्रान्सीसी जहाज जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अधिक उत्तर को ओर नैशनल बेसिन है। इसके पानी का क्षेत्रफल १०२ एकड़ है। इसकी लम्बाई ३०३४ फुट और चौड़ाई १६८९ फुट है इसकी गहराई ११½ फुट से ५२½ फुट तक है। इसके घाटों की लम्बाई १३,००० फुट है। यहाँ पर बिब्बी अँग्रेज़ी लाइन, संयुक्त राष्ट्र अमरीका और स्पेन के प्लेट नदी के जाने वाले जहाज़ ठहरते हैं। नैशनल बेसिन के उत्तर की ओर पिनेंडे का बेसिन है। इसका क्षेत्रफल ६६ एकड़, लम्बाई १९६८ फुट और चौड़ाई १६६० फुट है। इसकी गहराई २६ फुट से ६५ फुट तक है। इसके घाटों की लम्बाई १०५८४ फुट है। यहाँ पर निदरलैंड्स डोलज़ार लाइन और मेस्सेगरीज़ मैरीटाइम के जहाज ठहरा करते हैं। इन लाइनों के जहाज अधिकाँश पूर्व की ओर जाने वाले होते हैं।

मिनेंडे के और उत्तर की ओर ग्रैन्डजेटी का ब्रेक वाटर दुनिया में सबसे बड़ा है। इसके आगे बिल्सन डाक है। इस डाक के घाट ९७२५ फुट लम्बे हैं। यहाँ पर इटैलियन, फ्रान्सीसी और इँगलिश जहाज़ ठहरते हैं। ये जहाज दुनिया के भिन्न भिन्न भागों को जाते हैं।

अमेज़न नदी की रोमाञ्चकारी यात्रा

संसार में बहुत से ऐसे साहसी तथा वीर पुरुष हो चुके हैं जिन्होंने अज्ञात देशों तथा प्रदेशों की खोज के लिये अपनी भयानक यात्रा की और फिर वह सदैव के लिये अज्ञात देश वासी बन गये। उनका समाचार भी ज्ञात जगत नहीं मालूम हुआ। इसी प्रकार के खोज करने वालों में कर्नल पी० एच० फासेट का नाम भी आता है। फासेट अपने समूह के साथ विशाल अमेज़न बनों में गया और फिर लौट कर नहीं आया। १९०७ ई० में फासेट से बोल्विया और ब्राजील की सीमा नियत करने के लिये कहा गया। उस समय दक्षिणी अमरीका के देशों की भली भांति खोज नहीं की गई थी और न उनके मान चित्र ही बनाये गये थे। फासेट अपने कार्य के खतरों से भली भांति परिचित था वह घबड़ाया नहीं। उसने लंका के बनों का भ्रमण किया था। वह तगड़ा तथा स्वस्थ था। वह प्रत्येक भांति का जीवन व्यतीत कर सकता था। वह भारतीय भाषाओं को भली प्रकार समझ सकता था। वह कहा करता था कि यदि उसे किसी जाति के साथ १५ दिन रहने का समय मिले तो वह उस जाति के लोगों से भली भांति बातें कर सकेगा।

फासेट ने बोलिविया में काम करते समय बोलिविया और चिली तथा पीरू की सीमावर्ती पहाड़ियों को ६ बार पार किया था। उसने विस्मय पूर्ण टिटीकाका झील का पता लगाया था। जो १२० मील लम्बी और ७२० फुट गहरी है। यह झील समुद्र तल से १२ हज़ार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। उसने प्लाटा और प्राग्वे नदियों की यात्रा उनके उद्गम तक की है। यह मार्ग बड़ा कठिन है और सघन बनों में होकर है। किसी किसी दिन तो वह बनों के मध्य २४ घंटों में केवल ५० गज की ही यात्रा कर सका था।

फासेट बड़ा बहादुर था। उसने अंतिम समय छोड़ कर अपनी यात्रा में कभी गोली नहीं चलाई थी। एक बार जब कि वह अपने साथियों के साथ अमेज़न नदी की एक छोटी नदी में भ्रमण कर रहा था तो परेसिस (एक लड़ाका जाति) लोगों ने उसकी नाव पर एक बाण मारा। यह बाण फासेट की नाव में एक इँच घुस गया। फासेट ने नाव पर खड़े होकर कहा कि वह उनका बैरी नहीं है परन्तु रेड इण्डियन लोगों ने उसकी बात नहीं मानी और वह छिपे रहे। फासेट के सभी साथी डर गये और कहा कि यदि वह आगे जावेंगे तो अवश्य ही मारे जावेंगे। फासेट तट पर उतरा और अपने खाली हाथ ऊपर उठाये हुये रेड इण्डियन लोगों की ओर पहाड़ी के पीछे साहस पूर्ण गया। रेड इण्डियन सर्दार आगे बढ़ा और फासेट से बड़ी खातिर के साथ मिला। कुछ ही समय के बाद फासेट और वह सर्दार घनिष्ट मित्र हो गये।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ काल में अमेज़न बेसिन के बहुत से भागों का पता नहीं लग पाया था। प्रधान अमेज़न नदी का मार्ग तो मालूम था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु उसकी उत्तरी तथा दक्षिणी सहायक नदियों की यात्रा किसी ने न की थी। इन सहायक नदियां में कुछ नदियां एक हज़ार मील लम्बी थीं। इन सहायक नदियों के बीच में बड़े बड़े बनैले मैदान में जिनका बिलकुल पता न लगा था नदियों के समीप कहीं कहीं रबर के ढूंढ़ने वाले गये थे परन्तु वह विशाल प्रपातों तथा वहां के निवासियों के भय के कारण आगे न जा सके थे।

अमेज़न नदी के दक्षिणी बेसिन की नदियां का भ्रमण बीसवीं सदी के आरम्भ में ब्राजील के प्रसिद्ध यात्री कर्नल रोनडन ने किया था। उसने समस्त प्रान्त का पता लगाया और वहां के निवासियों से मित्रता की। १९१३ ई० में उसने थियोडोर रोज़वेल्ट (संयुक्त राष्ट्र का भूतपूर्व सभापति) के साथ ब्राजील के भीतरी प्रदेश का भ्रमण किया।

प्राग्वे नदी में उनकी भेंट पिरानहा (एक अनोखी मछली जो अमेज़न की शाखाओं में मिलती है) मछली से हुई। यह मछलो १८ इंच लम्बी होती है। इसके दाँत बड़े तेज़ तथा ज़हरीले होते हैं। पानी में उतरे हुये पशुओं का बड़ा भय है। छोटी नदियों दलदलों आदि में रात के समय भयानक जीव रहते हैं। इनमें अनाकोंड नामक एक बड़ा सांप रहता है। आसेट ने अग्रूबा नामक नदी में एक बड़े साँप को मारा था वह साँप एक वृक्ष के चारों ओर लपटा था और उसकी पूँछ नदी में थी। नदी के बाहर उसकी लम्बाई ४८ फुट थी। कोरम्बा के समीप एक अनाकोंडा मारा गया था जिसकी लम्बाई ८५ फुट थी। यह सांप मनुष्य को खा जाते हैं।

अमेज़न प्रदेश में रहे तथा बान मछलियां भी पाई जाती हैं। रहे मछली के काटने से मनुष्य अथवा पशु मर जाते हैं। यदि वह मरने से बच गये तो कुछ समय के लिये लँगड़े या लूले अवश्य हो जाते हैं। बान मछली छू जाने पर मनुष्य को चोट पहुँचाती है। इसमें बिजली की भांति शक्ति होती है जो छूते ही समस्त शरीर में बेध जाती है। इसके छू जाने से मनुष्य को इतनी चोट लगती है कि उससे मनुष्य मर जाता है। बनों में भांति भांति के जहरीले पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े पाये जाते हैं जिनके काटने से मनुष्य मर जाता है।

मैटो ग्रोसो को पार करके रूज़वेल्ट रोडोन्स के खोज किये हुये प्रान्त में पहुँचा। तपीर पौन नगर तपीर पौन नदी पर है। इस स्थान से खोज करने वाली पार्टी उत्तर की ओर गई। उसे मार्ग में प्लान अल्टो नामक ब्राज़ील के पठारी बनों को पार करना पड़ा। मार्ग में न्हम्बीक्वेरस जाति के लोगों की बस्ती थी। यह लोग बड़े प्राचीन ढंग के हैं। इस जाति के स्त्री तथा पुरुष दोनों नंगे होते हैं। पुरुष अपनी नासिका तथा ऊपरी होंठ में सूराख रखते हैं। जिनमें घास के तिनके लगे रहते हैं।

कुछ दिनों के पश्चात् वह लोग एक अज्ञात नदी पर पहुँचे जो ९०० मील लम्बी थी। इसका नाम उन्होंने डाउट (संदेह की) नदी रक्खा। इस नदी का धरातल समतल न था। कहीं कहीं पर नदी की धार बड़ी तीव्र थी। एक स्थान पर तीव्र धारा में रूज़वेल्ट का पुत्र केर्मिट बाल बाल बचा। उसकी नाव एक स्थान पर तेज़ धार तथा भँवर में उलट गई। उसके दो सहायक नाव-वाहक नदी में गिर गये। उनमें से एक तो शिलाओं की चोट खाकर मर गया। केर्मिट ने लटकती हुई वृक्ष की एक शाख पकड़ कर अपनी जान बचाई। बाद को वह दूसरे नाव-वाहक की सहायता से किनारे आ लगा। सैंतालीस दिन तक वह लगातार नदी में चले गये। उन्हें मार्ग में बड़ी बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ीं। कभी कभी तो वह दिन भर में केवल दो मील चल पाते थे। आखिरकार वह नदी के मुहाने पर पहुँचे। उस समय सभी लोग थकावट से परेशान थे। सभों की तबीयत खराब थी। अचानक उन्हें मालूम हुआ कि जिस नदी में वह मिली वह मदीरा नदी थी। मदीरा अमेज़न की एक बड़ी सहायक नदी है।

१९२५ ई० में फासेट अपने पुत्र जैक और रैले रिमेल के साथ गुयाहा से चला और एक्सिंगू देश में लापता हो गया। यह यात्रा उसने वहां के निवासियों के संबन्ध में पता लगाने के लिये की थी। वहां के निवासियों के सम्बन्ध में कहा जाता था कि उनका चमड़ा सफेद, बाल लाल और आंखें नीली हैं। वह लोग रात के समय यात्रा और शिकार करते हैं और दिन के समय छिपे रहते हैं। वहाँ के प्राचीन खँडहरों तथा पशुओं के सम्बन्ध में भी भाँति भाँति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बातें सुनने में आती थीं।

फासेट के सम्बन्ध में सन् १९२५ ई० को पता चला कि वह बकैरी स्थान पर पहुँच चुका है। यह स्थान गुयाहा से उत्तर की ओर है। यहाँ से उसने अपने दोनों मज़दूरों को वापस कर दिया था क्योंकि वह लोग उसके साथ अधिक आगे जाने को राज़ी न थे।

१९२८ ई० में कमांडर ड्योट ने अपनी यात्रा आरम्भ की। यात्रा बड़ी भयानक तथा कठिन थी। ड्योट गुयाहा से कुलीसेहू नदी तक का प्रदेश पार करके एक्सिंगू में पहुँचा और उस नदी में होकर उसके मुहाने तक गया। उसे मार्ग में वहां के निवासियों का कई स्थान पर सामना करना पड़ा। उसने कई बार सोचा कि मार्ग को बदल देना या शीघ्र ही वापस चले जाना उसके लिये अच्छा होगा नहीं तो वहां के निवासी अवश्य ही उसका और उसके साथियों का अंत कर देंगे। ड्योट ने देखा कि वर्षा तथा वायु के कारण वहाँ की नंगी पहाड़ियाँ उजाड़ घरों तथा गिरजाघरों की भाँति प्रतीत होती हैं और चिकनी चट्टानों पर जो किरणें पड़ती हैं वही चमकने वाले बनैले प्रकाश हैं जिनके सम्बन्ध में उसने सुना था।

ड्योट ने फासेट के मार्ग का कुलीसेहू तक पता लगाया। कुलीसेहू स्थान पर उसे फासेट की वस्तुएँ तथा एक दवा बन्द संदूक मिला। इसी से ड्योट ने समझा कि फासेट तथा उसके साथी रेड इण्डियनों द्वारा मार डाले गये और उनका सामान वहीं पड़ा रह गया।

वायुपेरु नदी की खोज

जब कि खोज करने वाले अमेज़न के दक्षिणी बेसिन का पता लगा रहे थे डाक्टर हमिल्टन राइस (अमरीकन) अमेज़न के बेसिन के उत्तरी-पूर्वी भाग की खोज कर रहा था। वह रियोनेग्रो तथा उसकी सहायक नदियों का पता लगा रहा था।

१९०७ ई० में वायुपेस नदी की खोज करते हुए उसने बोगोटा से एंडीस पर्वत को पार किया। वायुपेस नदी रिवोनेगो नदी की एक बड़ी सहायक नदी है। एक दिन जब वह नदी में होकर जा रहे थे तो सामने से एक बड़ा रैटिल स्नेक (दक्षिणी अमरीका का एक बड़ा बिषधारी साँप) निकला। एक मल्लाह ने उसे डाँड़ से मार दिया। इस पर वह नाव के ऊपर उछल कर पहुँचा। नाव में बड़ी गड़बड़ी पड़ गई। लोग बन्दूक तथा कारतूस ढूँढ़ने लगे परन्तु इसी बीच किसी ने उस पर फिर डाँड से चोट की और वह मर गया।

कुछ दिनों के बाद राइस अपने एक साथी के साथ किनारे पर उतरा। वह अपने भोजन के लिये बन्दरों को मारना चाहता था। धीरे धीरे वह दोनों बन में एक दूसरे से अलग होकर एक बड़े दलदल में पहुँच गये जिसके अन्दर से उन्हें निकलने का मार्ग ही न मिलता था। उसी समय एक बड़ा तूफान आया जिससे उनका संकट और भी अधिक बढ़ गया। मार्ग में उन्हें पेकैरी पशुओं का समूह मिला। पेकैरी पशुओं से अपनी जान बचाने के लिये वह वृक्षों पर चढ़ गये। आखिर वह वायुपेस नदी के किनारे पहुँचे और ४०० मील की यात्रा समाप्त करने के पश्चात् उस स्थान पर जा पहुँचे जहाँ वायुपेस नदी रियो नेग्रो नदी से मिलती है।

पाँच वर्ष के बाद १९१२-१३ में राइस फिर उसी प्रान्त में पहुँचा और इनीरीदा नदी का पता लगाया। यह ओरीनिको नदी की एक बड़ी सहायक नदी है। उसके बाद उसने स्थली प्रदेश पार किया और इकाना नदी में पहुँचा। इकाना नदी भी रिवो नेग्रो की एक बड़ी सहायक नदी है। इस यात्रा में लोगों को भूक तथा कीड़े मकोड़ों से बड़ा कष्ट पहुँचा। मछली मारते हुए उनके एक साथी को रहे मछली ने काट खाया। दो दिन तक लगातार घसिटता हुआ वह अपने अड्डे पर पहुँचा।

१९१९ ई० में राइस ने रिवोनेग्रो नदी की खोज कसी क्वारे नदी और ओरीनिको नदियों तक किया। पांचवीं बार सन् १९२४-२५ ई० में राइस ने पुनः यात्रा की और रिवो ब्रांको और यूरारिकोमरा नदियों का पता लगाया। उसके बाद राइस ने हवाई जहाजों का प्रयोग अपनी यात्रा में किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका की "बरमा सड़क"

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सैनिक विभाग के इञ्जीनियरों ने पश्चिमी कनैडा की खोज की और अलास्का को एक सड़क द्वारा संयुक्त राष्ट्र अमरीका से मिलाने की योजना तयार की है। यह सड़क अमरीका के पश्चिमी तट को धुर-उत्तरी सैनिक अड्डों से मिला देगी।

यह सड़क पश्चिमी कनैडा होकर राकी पर्वत के पूर्व होकर जावेगी। राकी पर्वत की ऊँचाई और कुहरा आदि के कारण इस सड़क की रक्षा साल के टोकियो की लम्बाई की लगभग आधे के बराबर होगी और सैनिक अड्डों को मिला देगी तथा उन्हें सामान पहुँचा सकेगी। साइबेरिया तथा इर्कुटस्क होकर रूस पहुँचने के लिये भी यह शीघ्र पहुँचने का मार्ग सिद्ध होगा। इस मार्ग के बनने से प्रशान्त महासागर तथा गुडहोप अंतरीप का चक्कर लगा कर जाने वाले संकटमय मार्ग द्वारा जाने से बचत होगी। यह मार्ग मुर्मान्स्क जाने वाले उत्तरी अटलांटिक मार्ग के अतिरिक्त प्रयोग हो

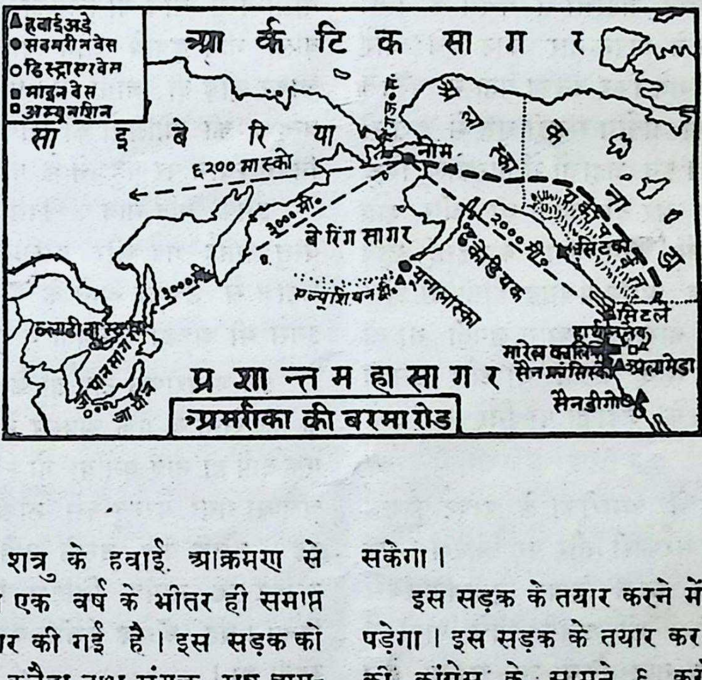

अमरीका की बरमारोड

अधिकांश भाग तक शत्रु के हवाई आक्रमण से होगी। इस सड़क को एक वर्ष के भीतर ही समाप्त करने की योजना तयार की गई है। इस सड़क को तयार करने के लिये कनैडा तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका दोनों की सरकारों की रक्षक बोर्ड ने स्वीकार कर लिया है।

यह बरमा सड़क पूर्वी और मध्यवर्ती अमरीकन राज्यों के सैनिक कारखानों को अलास्का से मिला देगी जो जापान के विरुद्ध युद्ध लड़ने में बड़ी सहायक होगी। इस सड़क की लम्बाई सीटले और सकेगा।

इस सड़क के तयार करने में खर्च भी बहुत नहीं पड़ेगा। इस सड़क के तयार करने के लिये अमरीका की कांग्रेस के सामने ६ करोड़ रुपये का बिल रक्खा जावेगा जिसे वह स्वीकार करेगी। बहरिंग प्रणाली जून से नवम्बर तक (६ मास) समुद्री जहाजों द्वारा पार की जा सकती है। दिसम्बर से मई मास तक जब वह जमी रहेगी तो विमानों द्वारा पार की जा सकेगी। शीत काल में वहां बरफ भी कम पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टार्पेडो

३०० वर्ष से अधिक हो चुके जब कि स्पेनिश आर्मेडा फ्लैण्डर्स के तट के समीप जा ठहरा था। स्पेनिश आर्मेडा को महारानी एलिज़बेथ के छोटे जहाजों ने इंगलिश चैनल से मार भगाया था। इस भगदड़ में आर्मेडा के कुछ जहाज डूब गये थे और कुछ इधर उधर बिखर गये थे। अन्त में कुछ जहाज बच कर अपनी सेना के पास पहुँचे। वे अपनी सेना को भर कर इँगलैंड में उतारने वाले थे। आधी रात के समय जब एक भयानक तूफान समुद्र में आया तो तूफान के साथ ही साथ अँग्रेज़ी अग्नि-जहाज चले। यही अग्नि-जहाज बर्तमान टार्पेडो के चिन्ह सूचक थे। इन अग्नि जहाजों से बचने के लिये आर्मेडा के जहाजों ने अपने तार काट दिये और तूफान के आगे पड़ गये फिर उनका पता न चला।

अग्नि जहाजों का प्रयोग समुद्री युद्ध में हज़ारों वर्षों तक होता रहा। इन जहाजों में तारकोल, मिट्टी का तेल और बारूद भर दी जाती थी और शत्रु जहाजों के मध्य इनमें आग लगा कर इन्हें छोड़ दिया जाता था। जब अग्नि प्रचण्ड होती थी और तारकोल, तेल तथा बारूद में आग लगती थी तो जहाज बड़े धड़ाके के साथ फटता था और उसकी जलती ज्वालायें शत्रु के जहाज़ों पर गिर कर उन्हें जला डालती थीं।

सन् १८०५ ई० में अमरीका के राबर्ट फुल्टन नामक इञ्जीनियर ने सरकारी तौर पर ब्रिटिश समुद्र में इस बात को सिद्ध करके दिखा दिया कि किस तरह से समुद्री जहाज को उसके नीचे पानी में बारूद को जला कर नष्ट किया जा सकता है। उसने इस प्रकार बारूद में आग लगा कर जो धड़ाका उत्पन्न किया था उसे टार्पेडो नाम दिया गया था। बारूद का धड़ाका जहाज में किस तरह से किया जावे यह प्रश्न उस समय हल नहीं हो सका इसी कारण बहुत समय तक टार्पेडो एक उपयोगी अस्त्र नहीं बन सका।

अमरीकन गृह-युद्ध के समय दक्षिणी बन्दरगाहों की रक्षा करने वालों ने टार्पेडो का प्रयोग किया। उन्होंने नदियों में छोटे स्टीमरों और जहाजों में बारूद भर दी और बत्ती द्वारा धीरे धीरे बारूद तक आग पहुँचाने की कोशिश की। उनका विचार था कि जब तक बारूद में बत्ती द्वारा आग पहुँचेगी तब तक उनके आग लगाने वाले जहाज शत्रु के जहाजों के बीच में होंगे परन्तु ऐसा न हुआ और जहाजों का धड़ाका ठीक स्थान तथा समय पर न हुआ। उत्तरी अमरीका के लोग फिर भी टार्पेडो के काम में लगे रहे और गृह-युद्ध में टार्पेडो द्वारा ६ जहाज डुबाये गये।

उसके बाद स्पार-टार्पेडो (मस्तूल टार्पेडो) बनाया गया। इसमें नाव के मस्तूल या दूसरे किसी स्तम्भ में ४० फुट पर बाहर की ओर कुछ धड़ाके वाली वस्तु बांध या चिपका दी जाती थी। टार्पेडो वाली नावें डुबाये जाने वाले जहाजों के पास ले जाकर छोड़ दी जाती थी। परन्तु यह नावें शत्रु के बन्दूक की गोलियों की शिकार हो जाती थीं और नियत स्थान पर पहुँचने के पहले ही कट जाती थीं।

इसके बाद नाव के पिछले भाग में धड़ाके की वस्तु लगाई गई और इस प्रकार की नावें शत्रु के जहाज से टक्कर खाने के लिये भेजी गईं परन्तु इनसे भी अच्छी सफलता न हुई।

इन अमरीकन टार्पेडो के सम्बन्ध में आस्ट्रेलिया के जल सेना के एक अफसर ने पढ़ा और फिर उसने एक टार्पेडो नाव बनाया जो स्वयं भाप के इञ्जिन से चलाया गया परन्तु उसे ठीक तौर पर सफलता न हुई। उसके बाद उसने टार्पेडो का वर्णन राबर्ट व्हाइट हेड नामक ब्रिटिश सिविल इंञ्जीनियर से किया। वह अँग्रेज़ इंजीनियर उस समय फ्यूम में रहता था।

इस घटना के बाद व्हाइट हेड ने एक टार्पेडो बनाकर तयार कर दिया जो पानी पर स्वयम् तैरने लगा। उसी टार्पेडो के अनुसार आधुनिक टार्पेडो बनाये गये हैं। उसका प्रथम टार्पेडो टिन की मछली की भांति था। उसमें केवल १८ पौंड डाइनामाइट था। इसमें ७०० पौंड प्रति बर्ग इंच के हिसाब से हवा भरी थी और उसकी चाल ६ नाट प्रति घंटा की थी। यह बहुत थोड़ी दूर तक जा सकता था। इस टार्पेडो में एक बड़ी खराबी यह थी कि या तो यह पानी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर आ जाता था और लहरों द्वारा नियत मार्ग से अलग फेंक दिया जाता था या पानी के नीचे धरातल में जाकर बैठ जाता था।

१८६८ ई० में व्हाइट हेड ने टार्पेडो की इस खराबी को निकाल बाहर करने का आविष्कार किया और उसने व्हाइट हेड नामक टार्पेडो बनाने की कुञ्जी तथा अधिकार ब्रिटिश सरकार के हाथ २,२५,००० रुपया में बेंच दिया।

टार्पेडो को मामूली गहराई पर रखने का भेद ब्रिटिश सरकार को इतना आवश्यक प्रतीत हुआ कि ५ वर्ष तक उसने गिने चुने अफसरों को छोड़कर बाकी किसी भी टार्पेडो बनाने वाले को नहीं बतलाया। ५ वर्ष के पश्चात् योरुप के प्रत्येक सभ्य राष्ट्र ने व्हाइट हेड के नमूने का टार्पेडो बनाना आरम्भ कर दिया और सभों के दिमाग में मामूली गहराई पर टार्पेडो रखने की विधि आ गई।

उसके बाद तटों की रक्षा के लिये ब्रेनान नामक टार्पेडो बनाया गया जो तट पर ठहरे हुये इंजिन से चलता था। सिम्स-एडीसन नामक अमरीकन टार्पेडो को चलने के लिये अपने जहाज से ही बिजली मिलती थी। यह टार्पेडो जहाज से ४५०० गज़ लम्बे तार द्वारा मिला रहता था परन्तु पेरू के विरुद्ध युद्ध में जब यह प्रयोग किया गया तो उसने घूम कर अपने छोड़ने वाले जहाज पर ही हमला करना चाहता था परन्तु दुर्घटना किसी प्रकार बच गई।

अब भी संसार के लोग टार्पेडो को ठीक मार्ग पर जाने का ठीक ठीक उपाय खोज निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। जापानी लोगों ने जो टार्पेडो बनाया है उसमें एक सैनिक बैठता है वह स्वयम् टार्पेडो को डुबाये जाने वाले जहाज की ओर ले जाता है। उसमें बैठा हुआ व्यक्ति मर तो अवश्य जाता है परन्तु टार्पेडो का निशाना भी अचूक होता है। बेतार के तार द्वारा भी टार्पेडो को ठीक मार्ग पर छोड़ने का उपाय किया गया है। चुम्बक द्वारा खिंच जाने वाले टार्पेडो को बनाने के लिये भी योजनाएँ बनाई गई हैं ऐसे टार्पेडो नाव में एक छोटी कल होती है जो फौलाद तथा लोहे के बड़े जहाज की ओर खिंचती है इस प्रकार उस बड़े जहाज की ओर ही टार्पेडो खिंच जाता है। इस प्रकार के टार्पेडो से भविष्य में लाभ हो सकता है परन्तु वर्तमान समय में साधारण टार्पेडो का प्रयोग होता है। यह टार्पेडो ठीक निशाना लगा कर छोड़ा जाता है और जीरोस्कोप यंत्र द्वारा वह स्वयम् अपने नियत किये हुये मार्ग पर चला जाता है।

व्हाइट हेड टार्पेडो लाइफ-बोट (जीवन-नौका) की भांति ही पानी पर उतारा जाता था। आज कल डुबुकनी किश्ती या जहाज को टार्पेडो छोड़ने के लिये स्वयम् घूमना पड़ता है। आधुनिक टार्पेडो व्हाइट हेड से आठ गुना तेज चलता है। २१ फुट लम्बे टार्पेडो में ३०० पौंड फटने वाली वस्तु रक्खी जाती है और इसमें २५०० पौंड प्रति वर्ग इंच के हिसाब से दबी हुई हवा रहती है जिससे यह अपने नियत स्थान से भी कुछ आगे तक जा सकता है। टार्पेडो का धड़ाका बड़ा ही भीषण होता है और धड़ाका होने के पश्चात् किसी भी जहाज का बच जाना बड़ा असम्भव है। जिस जहाज में इसकी ठोकर लगती है वह चकनाचूर हो जाता है।

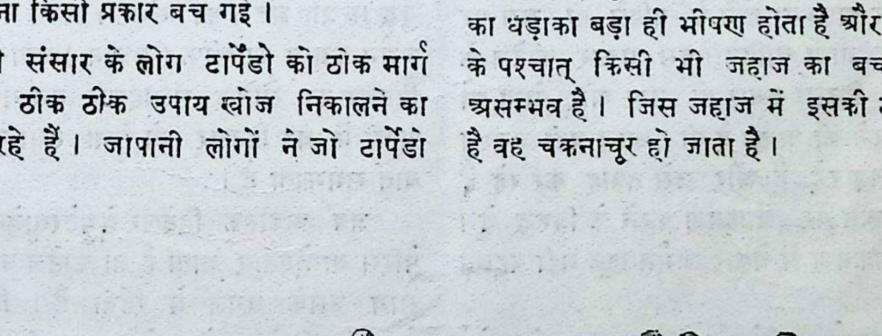

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस के विरुद्ध लड़ने वाले हिटलर के सेनापति

रूस पर जर्मन आक्रमण होने के बीज उस समय अंकुरित हुये थे जब कि दिसम्बर १९३९ ई० में बर्लिन चान्सलरी में सभा हो रही थी। सभा में फ्यूहरर जोचिम वान रिबेनट्राप और फील्ड मार्शल विलियम कीटेल रूस पर आक्रमण होने के पक्ष में थे और अग्रगामी सेनापति, हर्बन गोरिंग, प्रीवी कौंसिल के सदस्य और मन्त्री मंडल के प्रधान व्यक्ति आक्रमण के विरुद्ध थे। रिबेन ट्राप का मत था कि शक्तिशाली इङ्गलैंड अथवा रूस के विरुद्ध निर्बल जर्मनी का अस्तित्व कायम रहना कठिन है इसलिये जर्मन नव-युग की रक्षा के लिये इन दोनों शक्तियों को नष्ट करना पड़ेगा। इस पर फील्ड मार्शल कीटेल ने कहा "मेरे फ्यूहरर हम सब ग्रेट ब्रिटेन और रूस को नष्ट करने के लिये तयार हैं"। हिटलर ने कीटेल का विश्वास कर लिया। आगे बैठे हुये सेनापति और उच्च पद के सरकारी अफसर सभा की कार्रवाई और कीटेल के शानदार उत्तर के सम्बन्ध में बात-चीत करते रहे। इस प्रकार हिटलर, रिबेन ट्राप और कीटेल की विजय हुई और कीटेल रूसी आक्रमण का जन्मदाता बनाया गया। उसके बाद सभा स्थगित कर दी गई।

पहली मई सन् १९४१ और ११ जून को कीटेल ने रूस की तयारी का ब्यौरा हिटलर के सामने रक्खा और इस बात पर जोर दिया कि स्टैलिन की सेना की चाल फेर आरम्भ होने के पहिले ही रूस पर आक्रमण हो जाना चाहिये। इस प्रकार कीटेल के फुसलाने पर हिटलर तयार हो गया और सेना को आक्रमण करने की आज्ञा दे दी। आज वही जनरल जो रूस में लड़ रहे हैं और उसे तबाह कर रहे हैं उस समय रूस पर आक्रमण करने के विरुद्ध थे। वह रूसी आक्रमण में बेकार जर्मन खून नहीं बहाना चाहते थे।

फील्ड मार्शल कीटेल साधारण रूप से कोई योग्य सेनापति नहीं माना जाता है। उसके साथी उसे उपहासक सेनापति मानते हैं। वह राजनैतिक उलट और सुन्दर नाज़ी सैनिक वस्त्र धारण करने के कारण हिटलर का प्रेम पात्र बन गया है इसी कारण ऐसा उच्च पद ग्रहण कर सका है। कीटेल ६ फुट ऊँचा तगड़ा, हट्टा-कट्टा मनुष्य है। उसकी आयु ५८ वर्ष की है। कीटेल उन व्यक्तियों में से है जिन्होंने गत महायुद्ध में किसी प्रकार की उन्नति नहीं की और उच्च पद की ओर तरक्की नहीं की थी। महायुद्ध के पश्चात् उसकी गणना बड़े लोगों में न थी। १९३८ ई० में हिटलर ने उसे ढूँढ़ निकाला और तब से उसकी गणना बड़े लोगों में होने लगी।

वह एक किसान का पुत्र है और १९०१ ई० में वह सेना में भर्ती हुआ। १९१४ ई० में वह ऐडमिरल वान स्च्रोडेर के स्टाफ का सदस्य बनाया गया। स्चोडेर अपनी कठोरता और निर्दयता के लिये प्रसिद्ध है। उसने बेल्जियम के नागरिकों के ऊपर बड़ी निर्दयता की थी। वह अपने सहकारी सैनिक या अफसरों पर भी कठोरता पूर्वक व्यवहार करता था और धमकी देता था कि यदि वे अपने काम में असफल होंगे तो उन्हें प्राण दंड दिया जावेगा। स्च्रोडेर के साथ कीटेल ही एक व्यक्ति था जो अन्त तक उसके साथ रहा इसी कारण कीटेल में उसकी निर्दयता और कठोरता के अवगुण बर्तमान हैं। वह अपनी सैनिक घोषणाओं में कहता है कि जो अफसर अथवा सैनिक धोका देगा, पराजय स्वीकार करेगा या पराजय की चर्चा करेगा उसे प्राण दंड दिया जावेगा।

फरवरी १९३८ ई० में जब हिटलर ने अपना युद्ध मन्त्री मंडल का संगठन किया तो कीटेल हाई जर्मन कमांड का चीफ (प्रधान) बनाया गया। वह हिटलर का सैनिक सलाहकार बन गया और युद्ध यात्रा में वह हिटलर को सेना तथा युद्ध सम्बन्धी बातें समझाता है।

जब अडोल्फ हिटलर बेर्चटेस्गाडेन, ब्रेनर दर्रा पेरिस या हेगडाए जाता है तो कीटेल उसके साथ ही साथ उसके बगल में रहता है। हिटलर अपने सेनापतियों को कीटेल के द्वारा ही आज्ञा प्रदान करता है। पराजित देशों की आत्म समर्पण सम्बन्धी शर्तें कीटेल द्वारा ही पढ़ी जाती हैं। जब हिटलर सुनने को इच्छुक होता है तो कीटेल उसे भीषण सैनिक योजनाएँ तथा अग्रगामी राजनैतिक यन्त्रों की गाथा सुनाता है। आज जर्मनी की शक्ति जर्मन सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हाथ में है यह शक्ति नाजी दल से सेना के हाथ में चली गई है। इसलिये कीटेल का पद बहुत उच्च है और वह हिटलर और सेना के मध्य मध्यस्त का काम करता है।

दूसरे जर्मन लोगों की भांति कीटेल अपने को उपनिवेशिक चातुर मानता है यह बात अफ्रीका के सम्बन्ध में और अधिक सत्य है। उसका विचार है कि डाकर पर अवश्य जर्मन अधिकार होना चाहिये। डाकर से टैंजियर तक सड़क तयार करने की आज्ञा उसी ने प्रदान की है। युद्ध आरम्भ होने के कुछ समय पहले कीटेल ने मिस्र का भ्रमण किया था। घूमते घूमते वह किसो किले बन्दो के स्थान में पहुँचा वहां कुछ प्राचीन भग्नावशेष थे जिन्हें उसने देखना चाहा परन्तु उसके चौकीदार सैनिक ने उसे भीतर प्रवेश करने से रोक दिया। इस पर कीटेल ने अपने साथ के ब्रिटिश अफसर की ओर घूम कर कहा "अगर तुम इन गुलामों का प्रबन्ध करना नहीं जानते तो शीघ्र ही तुम्हें दूसरे बतला देंगे कि किस तरह करना चाहिये"।

कीटेल का दफ्तर बर्लिन में टिरपिज़ एम्बैकमेंट पर है जिसे जर्मन-युद्ध-दफ्तर कहते हैं। उसके कमरे में दो प्रूसा के झंडे, बड़े फ्रैडरिक की एक मूर्ति और हिटलर की दो बड़ी तस्वीरें हैं। चारों ओर दीवार में आलमारियां पुस्तकों तथा सैनिक पत्रों से भरी हैं कीटेल भी दूसरे लोगों से मिलते समय हिटलर की तरह व्योहार करता है। जब उसके पास मुलाकाती लोग आते हैं तो वह उसकी ओर घूर कर देखता है जिससे वे घबड़ा जावें। वह अपने दोनों होठों को मजबूती से बन्द रखता है और जिस प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहता उसे टाल देता है और बातचीत करते करते एकाएक चुप हो जाता है और काफी समय तक चुप रहता है। पैदल घूमना और घोड़े की सवारी करना यही दो उसके दिल बहलाव के साधन हैं।

हिटलर की भांति वह वैगनेर और बथोवेन के गोतों का शौकीन है। यात्रा में वह अपने साथ ग्रामोफोन रखता है। पोलैंड में एक दिन विजय होने पर हिटलर और कीटेल रेलगाड़ी में हिटलर के कमरे में चले गये थे और एक घंटे तक वैगनेरियन वीरत्व के गीत सुनते रहे कीटेल स्वयम् रेकार्ड के तावे लगा रहा था।

कीटेल के सेनापति शिष्टता पूर्वक घृणा करते हैं। वह हिटलर और रिबेन ट्राप से अधिक घनिष्टता रखता है। प्रूशा के सेनापतियों ने उसे कभी नहीं अपनाया। वह उसे नीचता की दृष्टि से देखते हैं। आज कीटेल हिटलर के साथ ही साथ युद्ध क्षेत्र से दूर रहता है। उसे हिटलर की अपेक्षा और अधिक परेशानो है क्योंकि वह भली भांति जानता है कि रूस पर आक्रमण करने की योजना उसी की है। जहां पर समस्त जर्मन शक्ति लगानी पड़ी है अब यदि उसमें असफलता होती है तो फिर उसका क्या परिणाम होगा।

हीनरिच अल्फर्ड हरमन वाल्टर ब्राचिस्च रूस में लड़ने वाली सेनाओं का प्रधान सेनापति है परन्तु उसने पूर्वी युद्ध का निर्माण स्वयम् नहीं किया है। सत्य तो यह है कि जर्मन सेना में जब से उसकी गणना प्रधान अफसरों में हुई है उसने रूस के साथ बेकार शत्रुता उत्पन्न करने का विरोध किया है और बोल्शेविकों से मित्रता रखने का अनुरोध करता रहा है। वह जर्मनी का ध्यान रूस से हटा कर दूसरे आवश्यक प्रश्नों की ओर घसीटना चाहता था। लोगों का कहना है कि जब जर्मनी के सैनिक प्रधान हिटलर को आक्रमणों के सम्बन्ध में सलाह दे रहे थे तो उसने कुछ भी नहीं कहा और उसे रूसी आक्रमण का भार सौंप दिया गया।

वह सबसे पहले राएल एलिज़बेथ ग्रेनाडीर गार्डस में लैफ्टिनेंट बनाया गया था। वह सुन्दर सैनिक वस्त्र धारण करता था और होहेन्ज़लर्न कोर्ट के सामाजिक कार्यों में भाग लेता था। वह सैनिक स्टाफ में काम करता था और रण-स्थल में लड़ने नहीं जाता था। उसने हिटलर को देखकर पहचाना कि वर्साई की संधि के बन्धन से छुड़ाने की शक्ति उसमें है। हिटलर ने भी ब्राचिस्च में त्याग भाव देखा और समझा कि वह स्वामिभक्त सेना की देख भाल बड़ी चतुरता से कर सकता है। हिटलर ने उसे तोपों की सेना के कार्य के लिये बड़ा कुशल पात्र समझा इसलिये हिटलर की उससे पट गई।

ब्राचिस्च ने ही हिटलर से पूर्वी सीमा पर किले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दी करने और सीजफ्रीड लाइन बनाने के लिये सलाह की थी जिससे जर्मनी पर पूर्व अथवा पश्चिम की ओर से आक्रमण न हो सके। उसने जर्मनी की रक्षा के लिये ही हिटलर को यह सलाह दी थी। उसे हिटलर के मोटो "सबसे उत्तम रक्षा आक्रमण करना है" का पता न था। पोलैंड की विजय के पश्चात् भी ब्राचिस्च ने हिटलर को सलाह दी कि कुछ समय सेना को आराम दिया जावे और देश-रक्षा का प्रबन्ध किया जावे।

जब पश्चिम की ओर आक्रमण हुआ तो ब्राचिस्च भी दूसरे सेनापतियों की भांति युद्ध में भेजा गया परन्तु जब कम्पेने में क्षणिक संधि हुई हुई तो वहाँ बिजय का मुकुट कीटेल के सिर पर ही रहा। जब हिटलर ने रूसी आक्रमण की बातचीत आरम्भ की तो कीटेल के सामने ब्राचिस्च की गणना और भी कम हो गई और जैसे जैसे रूसी आक्रमण बढ़ता गया हिटलर का प्रधान सेनापति ब्राचिस्च का नाम सैनिक क्षेत्र से हटता चला गया।

रूस पर आक्रमण करने के लिये कीटेल ने जर्मन सेना को तीन भागों में बांट दिया उत्तर की ओर मार्शल वोरोशिलोव की सेना का सामना करने के लिये फील्ड मार्शल "विलियम जोजेफ फ्रांज स्टेर वान लीब" सेनापति बना कर भेजा गया। वह बवेरिया का एक धार्मिक कैथलिक मत का सैनिक है। गत महा-युद्ध में उसने बड़ी वीरता का काम किया था। उसकी देख-रेख में दो सेनाएँ और एक आर्मर्ड जत्था है।

वानलीब नाजी मत का भक्त नहीं है। फरवरी १९३८ ई० में वह जर्मन सेना से अलग कर दिया गया था परन्तु चेक आन्दोलन के समय हिटलर ने उसे फिर बुलाया तो वह सहर्ष तयार हो गया और सुडेटन लैंड पर आक्रमण करने वाली चार सेनायें में से एक का प्रधान सेनापति बनाया गया। फ्रांस में मैजीनाट लाइन पर प्रयोग रूप से उसने धावा मारा था जिसमें उसे पूर्ण रूप से सफलता हुई थी क्योंकि फ्रांसीसी सेना ने लड़ाई बन्द कर दी थी। पोलैंड के आक्रमण में उसके तीन पुत्र युद्ध में लड़ रहे थे जिसमें से एक वहीं मारा गया। उसकी मृत्यु पर वानलीन को बड़ा शोक हुआ। जब वह बर्लिन लौटा तो उसका चेहरा सूखा हुआ था। उसके मुखड़े पर मुर्दनी छाई हुई थी। सेना के अफसरों ने उसकी दशा देख कर विचार किया कि शायद वह फिर दोबारा सैनिक सेवा से अलग हो जावे परन्तु हिटलर ने पुनः उसे रूस में सेनापति बना कर भेज दिया।

लीब एक साहित्यिक व्यक्ति है उसने अपने बंश की बंशावली भी लिखी है जिससे उसे बंश बृक्ष सेनापति की पदवी मिली है। उदास, सख्त चेहरा और हंसमुख होने के कारण वह अपने सैनिकों के मध्य प्रिय नहीं है परन्तु सुयोग्य सेनापति और वीर सैनिक होने के कारण उसका सैनिक आदर करते हैं। वह उत्साह के अवसरों पर अपने तग़मों और बिल्लों को धारण करता है तब उसकी गणना जर्मनी के अति सुसज्जित अफसरों में होती है।

फील्ड मार्शल फेडोवान बाक प्रशा का निवासी है। वह सैनिक सेवा और सैनिक कार्य को पवित्र बनाने वाले वंश का प्राणी है। बर्लिन के लोगों का कथन है कि उसकी रंगों में नवाबी खून जोश मार रहा है। १९३८ ई० में वह अपनी सेना लेकर चेकोस्लोवाकिया गया था उस समय उसका बारह वर्षीय पुत्र भी सेनापति भेष में उसके साथ था। उसकी सूरत भी वान बाक से मिलती जुलती है। सुडेटन लैंड के जर्मन निवासियों ने उसका स्वागत बड़ी प्रसन्नता से किया था। जब पत्रकारों ने बाक से बालक को रण-स्थल में लाने की बात पूछी तो उसने उत्तर दिया कि इस खतरनाक और भयानक स्थान पर मैं बालक को इस लिये ले आया हूँ जिससे उसके ऊपर सैनिक सेवा की सुन्दरता और अपार आनन्द का उस पर प्रभाव पड़े।

रूसी आक्रमण में वान बाक की संरक्षता में तीन सेनाएँ हैं और एक आर्मर्ड जत्था है। वह प्रीवेट दलदलों से होता हुआ स्मोलिन्स्क गया और फिर मास्को की ओर बढ़ा है।

वान बाक अपनी मातृ-भूमि के हेतु प्राण देने वाले देश-भक्त सैनिक की मृत्यु और वीरता पर अफसरों तथा सैनिकों के सामने बड़ा सुन्दर रोचक और प्रभावशाली भाषण देता है। इसी से सैनिक उसे डाई-एर कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८८० ई० में कुस्तरिन में बाक का जन्म हुआ था उसके पिता एक प्रसिद्ध सेनापति थे। गत महायुद्ध में वह सैनिक दफ़्तर में एक अफ़सर बनाया गया। १९१७ ई० में पैदल सेना का सेनापति बना कर भेजा गया और उसे वीरता का तमग़ा दिया गया। १९३८ ई० तक में वह सेनापति बना दिया गया और आस्ट्रिया पर आक्रमण करने वाली सेनाओं का निरीक्षण उसी ने किया। आट्रियन आक्रमण में उसकी बड़ी आलोचना की गई थी क्योंकि उसमें जर्मन कलों वाली सेना का उत्तम प्रदर्शन नहीं किया था और सेना का मुख्य भाग वियना विजय प्रदर्शन के समय नहीं पहुँच सका था। पोलैंड के युद्ध में उत्तरी सेनाओं का वह सेनापति बनाया गया था। यह सेनाएँ पूर्वी प्रूशा से पोलैंड में घुसी थीं। फ्रांस के युद्ध में उसकी सेना लोअर सोमे सीमा में घुसी थी।

वान बाक एक सैनिक योगी है और उसका पूर्ण विश्वास है कि संसार पर जर्मन शासन करने के लिये ही जर्मनी का नाजी दल ईश्वर की ओर से उत्पन्न किया गया है। आक्रमण के समय वह सैनिक वैज्ञानिकों को पहचानने का प्रयत्न करता है। वान वाक सचमुच ही एक वीर साहसी तथा कुशल सेनापति है।

कीव प्रान्त में रूसी सेनापति मार्शल बुडनी की सेना का सामना करने वाला व्यक्ति विलियम है। संडस्टेट जर्मनी की सैनिक नीति का सबसे बड़ा प्रधान है। जो कुछ भी उसके मुख से निकलता है वह हिटलर और कीटेल को छोड़कर सभी के लिये एक कानून बन जाता है। उसका नाम फील्ड मार्शल कर्ल रुडोल्फ जेर्ड वान रुएडस्टेट है। उसकी देख-रेख में दो सेनाएँ और एक अर्मर्ड जत्था है। जर्मन सैनिक क्षेत्र में वह डेंर जनरल के नाम से विख्यात है। गत महायुद्ध में उसने लगभग प्रत्येक सीमा पर युद्ध किया था।

रुडस्टेट का पिता एक प्रसिद्ध जर्मन सेनापति था इसलिये उसका जन्म ही सैनिक सेवा के लिये हुआ था। उसने अपने जीवन में प्रत्येक कार्य बड़ी कुशलता के साथ किये हैं और कार्य करने के पहिले उसने पूर्ण तयारी करने और चतुर सेना पतियों की नियुक्ति करने को आदत डाल रक्खी है। १९३२ ई० में कुछ समय के लिये उसका नाम पत्रकारों में प्रसिद्ध हो गया था। उस समय फ्राञ्ज वान पेपन ने उसे बर्लिन नगर की रक्षा नाजी दल से करने के लिये नियुक्त किया था। इसका मुख्य कारण यह था कि रुएडस्टेट राजकीय मत का मानने वाला था और वह हिंडन बर्ग का एक बड़ा समर्थक था इसलिये रुएडस्टेट से किसी प्रकार का भय न था कि वह नाजी धोके में आ जावेगा।

१८३८ ई० में वह अपनी इच्छानुसार सेना से अलग हो गया था। परन्तु बर्लिन का प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि ब्राचिस्ट्स्च के स्थान पर हिटलर ने उसे प्रधान सेनापति बनाने के लिये निश्चय कर लिया है इसी कारण उसने त्याग पत्र दिया है। प्रत्येक नाजी अफसर को उसकी खूबियां भलीभांति मालूम थीं और उनका ख्याल था कि यदि वह नाजी मत की ओर झुक जावे तो बड़े काम का आदमी है।

जब पोलैंड पर आक्रमण का समय आया तो और दूसरे अफसरों की भांति वह भी फौज में लड़ने के लिये पहुँच गया और दक्षिण की तीन सेनाओं का निरीक्षण उसी ने किया। उसकी सेना ने समस्त पोलिश आक्रमण में सबसे अधिक सराहनीय कार्य किया।

फ्रांस में उसकी मध्यवर्ती सेना ने सेदान स्थान पर फ्राँसीसी मैजीनाट लाइन का भेदन किया था। इंगलिश चैनल के बन्दरगाहों पर पहुँचने वाले उसी की आर्मर्ड सेना के जत्थे थे।

वह ऊँचे मस्तक का बड़े गोल चेहरे का व्यक्ति है। उसकी अवस्था ६५ वर्ष की है। उसकी आंखें भूरी हैं और मूँछ छोटी है। जर्मनी के रण-स्थली सेनापतियों में उसका मान सबसे बढ़कर है। जर्मन सेना में वह सबसे अधिक कुशल, वीर तथा तजुरबेकार सेनापति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१९४२—

१ अप्रैल—जापानी सेना प्रोम नगर के बहुत समीप पहुँच गई। ब्रिटिश सेना पीछे हटी। टौंगू में भीषण युद्ध हुआ। कलीलिन युद्ध-क्षेत्र में रूसी सेना को विजय हुई और वह आगे की ओर बढ़ी।

२ अप्रैल—माल्टा द्वीप पर शत्रु विमानों का भीषण हवाई हमला हुआ। प्रोम नगर से चीनी प्रजा हटाई गई। रूसी क्षेत्र में रूसी सेना शत्रु का सामना करती हुई आगे बढ़ी।

३ अप्रैल—प्रोम से ब्रिटिश सेना हटाई गई। टौंगू क्षेत्र में चीनी सेना ने नवीन स्थान ग्रहण किया। स्टाराया। रूसी क्षेत्र में अनुकूल और प्रतिकूल आक्रमण होने लगे जर्मन सेना घेर ली गई।

४ अप्रैल—बरमा से ब्रिटिश सेना हटाई गई। इरावदी नदी के पश्चिमी तट पर जापानी सेना एकत्रित हुई। लेनिनग्राड सीमा में भीषण युद्ध हुआ जर्मन प्रतिकूल आक्रमण रोक दिया गया।

५ अप्रैल—उत्तरी फ्रांस में आर० ए० एफ० के विमानों ने धावा मारा जिसमें ११ लड़ाका विमान ला पता हो गये। एक नार्वेजियन जहाज़ डुबाया गया।

६ अप्रैल—कोलम्बों पर जापानी विमानों ने बम वर्षा किया। बन्दरगाह और रत्नामाला क्षेत्र में बम गिराये गये जिसके फल स्वरूप २५ जापान वायुयान गिराये गये ५ नष्ट किये गये और २५ को हानि पहुँचाई गई। इरावदी सीमा में युद्ध हुआ। प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट के दूत कर्नल लूई जान्सन ने पंडित जवाहर लाल नेहरू से भेंट की। बटान में जापानी सेना का उतरना रोक दिया गया।

७ अप्रैल—विज़गापट्टम और कोकोनाडा (पूर्वी भारतीय तट) नगरों पर जापानी वायुयानों ने हवाई आक्रमण कियो। बन्दरगाह पर बम गिराये गये कुछ लोगों की मृत्यु हो गई। राइन लैंड प्रदेश में ३०० ब्रिटिश बम वर्षकों ने धावा मारा जिसमें से ५ विमान ला पता हो गये। रूसी क्षेत्र में जर्मन आक्रमणकारी सेना पीछे हटा दी गई और ब्रियांस्क नगर को रूसियों ने घेर लिया। बटान में जापानी सेना और आगे बढ़ी। माल्टा के बन्दरगाह और हवाई अड्डे पर शत्रु के हवाई हमले हुये। सिकन्दरिया पर हवाई आक्रमण हुआ जिसमें ५२ मनुष्य मारे गये और ८० घायल हुये।

८ अप्रैल—जापान के प्रधान मन्त्री जनरल टोजो ने टोकियो में ब्राड कास्ट करते हुये कहा कि भारतीयों के लिये अच्छा समय आ गया है कि वह "भारत भारतीयों के लिये" अपनी पूरी शक्ति लगा दें। बटान में गोताखोर जापानी विमानों ने आक्रमण किया और कुछ स्थानों पर अधिकार कर लिया।

९ अप्रैल—सीलोन के ट्रिंकोमाली तट पर जापानी बम वर्षकों ने बम गिराये। बटान से अमरीकन सेना हटाई गई। लीबिया में जर्मन टैंक तथा हवाई सेना फिर भेजी गई। सोवियत सेना श्वेत रूस में दाखिल हुई। जापानी विमान बरमा में लाशियो-माँडले सड़क को काटने में लगे रहे।

१० अप्रैल—बटान पर जापानी अधिकार हो गया। अमरीकन सेना ने युद्ध समाप्त कर दिया। कारीडर में युद्ध हो रहा है। बटान में ३६ हज़ार से अधिक अमरीकन सेना ने आत्म समर्पण किये। मांडले नगर बम वर्षा करके खँडहर बना दिया गया। हिन्द महा सागर में डोसेट शायर और कार्नवाल दो ब्रिटिश क्रूशियरों को जापानी विमानों ने बम्ब वर्षा करके डुबो दिया। कलीलिन और स्मॉलिंस्क क्षेत्र में रूसी सेना ने जर्मन सेना को परास्त किया।

११ अप्रैल—सीलोन के समीप हिन्द महासागर में जापानी बम वर्षा के कारण हर्मेस नामक ब्रिटिश विमान ले जाने वाला जहाज़ डुबो दिया गया। सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स जो भारतीय राजनैतिक स्थिति में सुधार करने आये थे उन्हें सफलता न हुई क्योंकि ब्रिटिश सरकार देश की आजादी की माँग को पूरा करने को तयार न थी।

१२ अप्रैल—माल्टा पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ जिससे बन्दरगाह हवाई अड्डा और गिरजाघर को हानि हुई। सेबू द्वीप में १२ हज़ार जापानी सेना उतरी ब्राएन्स्क और लेनिन ग्राड क्षेत्र में ४६०० जर्मन मारे गए। बरमा के तेल के प्रदेश में युद्ध हुआ।

१३ अप्रैल—जापानी सेना ने बरमा में फिर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया चीनी सेना ने कई आक्रमण पीछे हटा दिये। चियांग काई शेक बरमा गए और सैनिक प्रधानों से बातचीत की। मित्र राष्ट्र के विमानों ने ले, राबौल और फैसी पर हवाई हमले किये। फिलीपाइन के ६ द्वीपों पर जापानी अधिकार हो गया। मिंडनाव और उत्तरी लूज़ोन में युद्ध हुआ। राइन प्रान्त में मित्र विमानों ने आक्रमण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। मास्को सीमा में नाज़ी आक्रमण पीछे हटा दिया गया।

१४ अप्रैल—प्रधान मन्त्री मि० चर्चिल द्वारा मालूम हुआ कि हिन्द महासागर में ३ लड़ाका जहाज़ और ५ विमान ले जाने वाले जहाज़ों का बेड़ा चक्कर लगा रहा है। बरमा के मिग्यौंग्वी नगर पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। रूस ने जापान को चेतावनी दी कि वह तटस्थता की संधि का पूर्ण रूप से आदर करे। अटलांटिक सागर में एक ब्रिटिश व्यापारिक जहाज़ डुबो दिया गया।

१५ अप्रैल—बरमा में जापानी सेना आगे बढ़ी। चीनी मन्त्री ने चेतावनी दी कि भारत पर शीघ्र ही जापानी आक्रमण होने वाला है। यूक्रेन में सोवियत सेना आगे बढ़ी। पेतां के स्थान पर लावल फ्रांसीसी सरकार का प्रधान और डर्लन रक्षक मन्त्री बने। बिलियर बन्दरगाह पर आर० ए० एफ० के विमानों ने हवाई आक्रमण किया।

१६ अप्रैल—बरमा में शान राज्यों और सावा नदी के उत्तर जापानी तथा चीनी सेना में भीषण संग्राम हुआ अमरीकन विमानों ने फिलीपाइन के बन्दरगाहों पर हमला किया। इँगलैंड के तटीय नगरों पर शत्रु के हवाई आक्रमण हुये। कलेलिन प्रान्त में रूसी तथा जर्मन सेना में भीषण बम्म वर्षा हुई।

१७ अप्रैल—जापानी सेना पैने (फिलीपाइन) में उतरी। चीनी सेना बरमा से हटाई गई। इंडस नामक भारतीय जल सैनिक जहाज डुबा दिया गया। हिन्दमहासागर की गर्मी को जापानी जहाजी बेड़ा नहीं सहन कर सका इसी कारण वह लौट गया।

१९ अप्रैल—टोकियो और याकोहामा पर अमरीकन विमानों ने हवाई आक्रमण किये। रंगून पर स० रा० अम० के बम वर्षकों ने धावा मारा। हटती हुई ब्रिटिश सेना ने बरमा के सबसे बड़े तेल के क्षेत्र को नष्ट कर दिया। लेनिनग्राड और स्मोलिंस्क क्षेत्र में भीषण संग्राम हुआ। पैने में भीषण युद्ध के कारण जापानी जहाज शान्त कर दिये गये।

२० अप्रैल—पैने में विकट संग्राम हुआ। सेबू नगर पर जापानी अधिकार हो गया। माल्टा पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ। बरमा से ब्रिटिश सेना हटाई गई और समस्त तेल का क्षेत्र नष्ट कर दिया गया। रूस में उत्तर की ओर रूसी सेना की विजय हुई।

२१ अप्रैल—इरावदी सीमा में भीषण लड़ाई हुई जापानी सेना तेल प्रदेश के उत्तर पहुँच गई। चीनी अमरीकन तथा ब्रिटिश सेनाओं ने शत्रु सेना पर आक्रमण किया। लूज़न में अमरीकन हवाई हमला हुआ। फ्रांस के नार मन्डी नामक जहाज़ में आग लगाई गई। चीनी सेना ने येनानगाँव नगर पर अधिकार कर लिया। बसीन पर ब्रिटिश विमानों ने हवाई आक्रमण किया। माल्टा पर भीषण हवाई आक्रमण हुआ।

२२ अप्रैल—बरमा के तेल-प्रदेश में जापानी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किये। मित्र सेना ने पिनचौंग नदी पार किया। टैंगू के ६० मील उत्तर-पूर्व युद्ध हुआ। पैने से सेना हटाई गई। संजांस के समीप नई जापानी सेना उतरी। बाल्टिक तट के शत्रु हवाई स्टेशन पर सोवियत विमानों ने आक्रमण करके १५ जर्कर्स विमान नष्ट कर दिये। आस्ट्रेलिया का एक विध्वंस कारक जहाज डुबो दिया गया। भारत में प्रधान सेनापति ने भारत के शत्रु आक्रमण से रक्षा करने के सम्बन्ध में ब्राडकास्ट किया।

२३ अप्रैल—जापानी सेना मांडले की ओर बढ़ी। प्यीन्माना के उत्तर युद्ध हुआ। साल्विन क्षेत्र में नया आक्रमण आरम्भ हुआ। जापानी सेना ने चीनी सेना को घेरने का प्रयत्न किया। पैने द्वीप से अमरीकन सेना हटा ली गई। बलोमे के समीप कामडोस का हवाई आक्रमण हुआ।

२४ अप्रैल—लोईकाव (बरमा) के उत्तर युद्ध हुआ। जापानी सेना कबेग के साथ साल्वीन क्षेत्र की ओर बढ़ी। काकेशिया पर जर्मनी के हवाई आक्रमण हुये। जर्मनी तथा रूसी सेनाएँ बड़ी लड़ाई के लिये तयार हुईं चीन पर जापानी हवाई आक्रमण हुआ। न्यूब्रिटेन पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

२५ अप्रैल—रूस में लड़ाई की ज्वाला भीषण रूप धारण कर गई। शान राज्यों में संग्राम हुआ जापानी सेना आगे बढ़ी। क्वांतुंग सीमा में जापानी पीछे हटा दिये गये। रोस्टाक के बाल्टिक बन्दरगाह को ब्रिटिश बम वर्षकों ने नष्ट कर दिया। फ्लशिंग के आक्रमण में ६ नष्ट हुये।

२६ अप्रैल—मांडले के दक्षिण-पूर्व भीषण संग्राम हुआ और तीन ओर से जापानी सेना आगे बढ़ी। चीनी सेना ने सफलता पूर्ण आक्रमण किये। ले और मोरस्बी पर मित्र हवाई हमले हुये। ब्रिटेन के बन्दरगाहों और कारखानों पर शत्रु के हवाई हमले हुये। फिनलैंड की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा पर भीषण युद्ध हुआ। कलीलिन क्षेत्र में नाज़ी सेना का हमला पीछे हटा दिया गया।

२७ अप्रैल—चीनी सेना ने टैंगग्यी पर फिर अधिकार कर लिया जापानी सेना उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ी और यामे थिन तथा होपोंग पर अधिकार कर लिया।

राएस्टैग में हिटलर ने भाषण देते हुये और अधिक अधिकार मांगे जिसमें युद्ध को वह भलीभांति चला सके। महात्मा गांधी ने जापानी आक्रमण के विरुद्ध अहिंसात्मक रूप से साधन न देने के सम्बन्ध में अपना विचार प्रगट किया।

ब्रिटिश विमानों ने उत्तरी फ्रान्स पर हवाई आक्रमण किया।

जापानी सेना मान्सोन नगर पहुँची। वहां से लाशियो नगर ११० मील है। लाशियों में बम वर्षा करके समस्त नगर में जापानी बम वर्षकों ने आग लगा दी।

डार्विन पर जापानी हवाई आक्रमण हुआ, ७ विमान गिराये गये। कलोने नगर पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण के कारण भीषण आग लग गई।

२६ अप्रैल—फिलीपाइन में बलेंटे दर्रे की ओर जापानी सेना बढ़ी। ब्रिटिश सवारी ले जाने वाला लाकहेड विमान ला पता हो गया। उसमें १२ नागरिक थे। भूमध्य सागर में एक धुरी राष्ट्रीय जहाज़ डुबोया गया।

नार्विच और बाथ नगरों पर जर्मन बम वर्षकों के हवाई आक्रमण हुये। लाशियों के समीप भीषण संग्राम हुआ। रूसी क्षेत्र में रूसी सेना आगे बढ़ी और उसने जर्मन सेना पर आक्रमण किये।

जर्मनी का पेञ्जर डिवीज़न (मोटर सेना)

जर्मनी के एक पेञ्जर डिवीजन में निम्न सामान रहते हैं—

भारी टैंक	४८	तोपें	९६
मध्यम श्रेणी के टैंक	८४	गोताखोर बिमान	२७
छोटे टैंक	२५२	आर्मर्ड मोटर साइकिलें	२५८
सेना ले जाने वाली लारियां	२३०		

इसके सिवा लगभग १००० और दूसरी गाड़ियां, ४ बटैलियन मोटर सेना, इंजीनियर और संकेत करने वाले होते हैं।

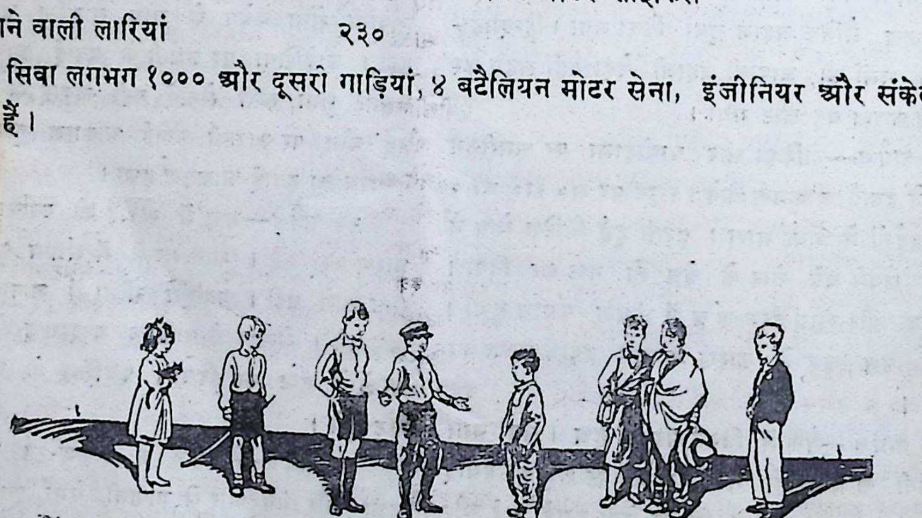

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'भूगोल' के उन्नीसवें वर्ष का विशेषांक,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

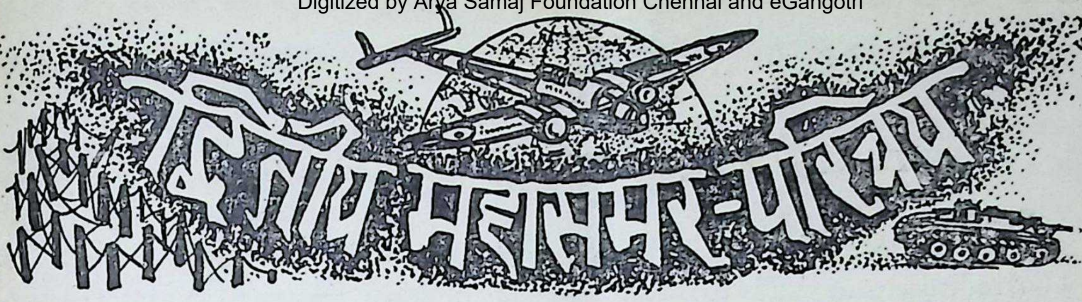

यह अंक इसी जुलाई में छपकर प्रकाशिक होगा

इस विशेषांक में चुने शब्दों, चित्रों और प्रायः १०० नक़शों द्वारा संसार की दूसरी बड़ी लड़ाई का पूरा परिचय दिया गया है। नक़शे इस प्रकार बनाये गये हैं कि उन पर नजर डालते ही महत्त्वपूर्ण स्थान और घटनायें मस्तिष्क में अंकित हो जाती हैं। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि इतने रोचक और परिपूर्ण ढंग से द्वितीय महासमर का परिचय हिन्दी में पहली ही बार प्रकाशित हो रहा है। छपाई कागज़ आदि की मँहगी होने पर भी इस विशेषांक का मूल्य केवल डेढ़ रुपया रक्खा गया है। १५ जुलाई १९४२ तक 'भूगोल' का वार्षिक मूल्य ३) भेजने वाले ग्राहकों को यह अंक उनके चन्दे में मिलेगा।

संक्षिप्त सूची नीचे दी जा रही है:—

१—पोलैंड-विच्छेद २—डेन्मार्क ३—नार्वेविजय ४—हालैंड और बेल्जियम की चढ़ाई ५—फ्रांस का पतन ६—यूगोस्लैविया का घेरा ७—यूनान और इटली-युद्ध ८—यूनान और जर्मन युद्ध ९—क्रीट पर हवाई धावा १०—रूमानिया में विदेशी हथकंडे ११—रूस और फिनलैंड १२—रूस और बाल्टिक देश १३—रूस और रूमनिया १४—रूसी-जर्मन युद्ध-१ १५—रूसी-जर्मन युद्ध-२ १६—मरमन्स्क १७—लेनिनग्रेड का घेरा १८—मास्को क्षेत्र १९—कीव २०—दक्षिणी युद्ध-क्षेत्र २१—रूसी-जर्मन-युद्ध की प्रधान तूफानी लहर २२—रूसी-जर्मन-युद्ध में शीत काल की सहायता (सभी क्षेत्रों में रूसी सेना का पुनःसंगठन और जर्मनी का पीछे हटाया जाना) २३—१९४२ का ग्रीष्म काल और दक्षिणी क्षेत्र में जर्मन सेना का जमघट २४—काकेशस के तैल-प्रदेश के पहरेदार कर्च पर जर्मन धावा। २५—खारकोव का घमासान युद्ध २६—इराक़ में जर्मन सहानुभूति और रशीद अली का विद्रोह २७—विद्रोह का दमन और सिरिया पर ब्रिटिश अधिकार २८—ईरानी राजा रिज़ाशाह का धुरी-शक्तियों की ओर झुकाव और ईरान पर रूसी-ब्रिटिश सेनाओं का अधिकार २९—दिल्ली में ब्रिटिश साम्राज्य का युद्ध सम्बन्धी नया दरबार ३०—चीन के विधाता च्यांग काई शेक का आगमन ३१—क्रिप्स योजना ३२—अफ्रीका में इटली का साम्राज्य ३३—सुमालीलैंड में इटली की विजय ३४—मिस्र और भारत में निराशा ३५—एबीसीनिया में इटेलियन साम्राज्य का अन्त और हेल सलासी का पुनः राज्याभिषेक ३६—इटेलियन सेना में गड़बड़ी और पूर्वी अफ्रीका में इटेलियन साम्राज्य का अन्त ३७—मरक्को का महत्व ३८-४२ लिबिया में इटेलियन जर्मन और ब्रिटिश युद्ध की रस्साकशी ४३—भूमध्य-सागर के मार्ग ४४—माल्टा की गोलाबारी ४५—जिब्राल्टर की किलेबन्द पहाड़ी ४६—टर्की (मारमोरा सागर) के जल द्वार ४७—स्वेज़ का मार्ग ४८—ओरन में विची (फ्रांस) की जल सेना ४९—इटेलियन बड़े पर ब्रिटिश आक्रमण ५०—डाकर की स्थिति ५१—फ्रान्सीसी विषुवत रेखा प्रदेश पर स्वाधीन फ्रान्स का अधिकार ५२—अटलांटिक महासागर का युद्ध ५३—आयरलैंड की स्थिति ५४—दक्षिणी अटलांटिक में जर्मन आक्रमणकारी जहाज ५५—ग्रीनलैंड पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका का अधिकार ५६—आयसलैंड में ब्रिटिश सेना का अड्डा ५७—ब्रिटिश चेनल की पहरेदारी और फ्रान्स तट से जर्मन जहाजों का भाग निकलना ५८—रूसी रसद का मार्ग ५९—ब्रिटिश हवाई हमले ६०—जर्मन हवाई हमले ६१—प्रशान्त महासागर का युद्ध ६२—फ्रेन्सीसी इण्डोचीन पर जापानी अधिकार ६३—थाइ (स्याम) देश की सन्धि ६४—मलय विजय ६५—हाँगकाँग की विजय ६६—फिलीपाइन द्वीपसमूह पर जापानी चढ़ाई ६७—पर्ल बन्दरगाह, (हवाईद्वीप) का विध्वंस ६८—ब्रिटिश बोर्नियो पर चढ़ाई। ६९—सिंगापुर का पतन ७०—डच द्वीप समूह का आक्रमण ७१—रंगून पर गोलाबारी ७२-७४—बरमा युद्ध ७५—लंका पर जापानी हवाई हमले ७६—भारतीय तट पर जापान का डर ७७—मेडेगास्कर द्वीप पर ब्रिटिश सेना का अधिकार ७८—बरमा रोड से चीन पर जापान का धावा ७९—चीन में विदेशी रसद पहुँचने की कठिनाई ८०—चाँगशा में चीन की जीत ८१—चीन के यूनान प्रान्त का जापानी युद्ध क्षेत्र ८२—किन्हें में जापानी घेरा ८३—रूस-जापान-युद्ध की सम्भावना ८४—न्यू गिनी की चढ़ाई ८५—आस्ट्रेलिया पर जापानी हवाई हमले, इत्यादि-इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, Kakrhaghat, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

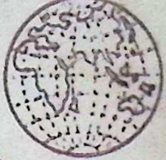

अक्टूबर-नवम्बर, १९४०

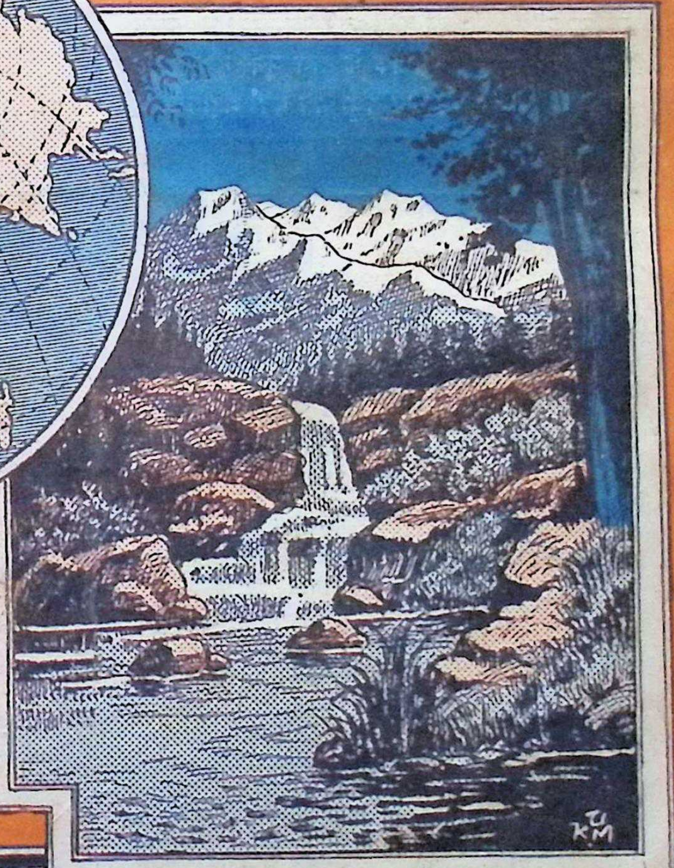

प्रकाशक—
'भूगोल'-कार्यालय
इलाहाबाद

सम्पादक—
पं० रामनारायण मिश्र
बी.ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल के उन्नीसवें वर्ष का विशेषाङ्क

पर

अन्य प्रतिष्ठित पत्रों की संक्षिप्त सम्मतियाँ

'भारत' इलाहाबाद—

द्वितीय महासमर-परिचय—श्री रामनारायण मिश्र के संपादकत्व में प्रयाग से प्रकाशित होने वाली 'भूगोल' नामक मासिक पत्रिका का हिन्दी पत्र-जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान है। द्वितीय महासमर परिचय उसी का विशेषांक है। इस विशेषांक के साथ भूगोल अपने जीवन के १९ वें वर्ष में पदार्पण करता है। १९४० ई० में यह पत्र अपना महासमर अंक तथा गत वर्ष महासमर एटलस अंक प्रकाशित कर चुका है। विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले

[शेष कवर के तीसरे पृष्ठ पर देखिये]

विषय-सूची

(अक्तूबर १९४२)

विषय	पृष्ठ
१—मिश्र	१
२—टर्की	३
३—न्यूयार्क का बड़ा बन्दरगाह	५
(नवम्बर १९४२)	
१—हमारी पृथ्वी की आन्तरिक बनावट	१
२—अफ्रीका का भैंसा	३
३—ब्रिटेन की मध्य पूर्वी युद्ध कौशल नीति	४
४—नाचता हुआ भेड़ का बच्चा	७
५—भारतीय चाय का व्यापार	८
६—विर्ची	१०
७—सलोनिका	११
८—रूस की पूर्वी सीमा	१२

भूल सुधार

नवम्बर १९४२ के पृष्ठ ९ पर जो चाय के आंकड़े दिये गये हैं उनमें ऊपर वाले भाग के सिरे पर १०० एकड़ के स्थान पर १००० एकड़ पढ़ें और काम करने वालों की संख्या भी १०० के स्थान पर १००० पढ़ें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १९] आश्विन सं० १९९९, अक्टूबर १९४२ [सं० ६

मिस्र

मिस्र की पश्चिमी सीमा पर बार बार जो आक्रमण की बाढ़ आती और लौट जाती है उससे संसार को बड़ा विस्मय सा हो जाता है परन्तु इसका मुख्य कारण यह है कि बल्कान, ईजियन सागर, क्रीट, सीरिया, इराक़, एबीसीनिया, ईरान आदि देशों में जो घटनाएँ घटीं उनका घनिष्ट सम्बन्ध मिस्र देश से रहा है इसी कारण मिस्र सीमा पर समय समय पर आक्रमण और प्रत्याक्रमण होते रहे।

जून १९४० ई० में जब इटली युद्ध क्षेत्र में उतरा तो वह समय मिश्र के लिये बड़ा भयंकर था। फ्रान्स के पतन पर सीरिया में फ्रान्सीसी सेना से ब्रिटेन को आशा न रही। इसी से इटली ने मिस्र पर आक्रमण करने का अच्छा अवसर देखा। मिस्र पर पश्चिम में लीबिया और दक्षिण में सूडान की ओर से इटली आक्रमण कर सकता था। इटली की सेना सीदी बरानी की ओर चतुरता पूर्वक बढ़ी और उसने सूडान की सीमा पर कसाला और गल्लाबात पर अधिकार जमा लिया। उसी समय ब्रिटिश आक्रमण उत्तरी अफ्रीका पर हुआ। मिस्र में स्थित ब्रिटिश सेना दो महीने के भीतर साइरेनीका के मध्य होकर बढ़ी और उसने बेंगाज़ी पर अधिकार प्राप्त कर लिया। बेंगाज़ी-देर्ना तोब्रुक और बर्दिया आदि स्थानों पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया। इन स्थानों पर बहुत सी सैनिक सामग्री भी ब्रिटिश सेना को मिली। उत्तरी-अफ्रीका की आधी से अधिक इटेलियन सेना पकड़ ली गई। यह विजय हवाई, समुद्री और स्थली सामूहिक शक्ति के कारण प्राप्त हुई थी। इस विजय से शत्रु के अकस्मात् आक्रमण की सम्भावना जाती रही।

उसके बाद बल्कान में नवीन स्थिति उत्पन्न हुई इटली की सहायता को जर्मन सेनाएँ पहुँचीं और यूनान पर आक्रमण करने के लिये बढ़ीं। ब्रिटेन ने यूनान की सहायता के लिये हाथ बढ़ाया। साइरेनीका से टैंक तथा सेनाएँ हटा कर यूनान भेजी गईं। एबीसीनिया और कीन्या पर भी ब्रिटिश सेना का आक्रमण हो गया था। इसलिये वहाँ एक बड़ी ब्रिटिश सेना लगी थी। यह अवसर शत्रु के लिये बड़ा ही सुगम था। सिसली और अफ्रीका के तंग मार्ग से होकर जर्मन टैंक उत्तरी अफ्रीका में उतर गये। साइरेनीका में ब्रिटिश हवाई सेना निर्बल कर दी गई और अचानक जर्मन टैंकों ने एल० अघीला पर धावा किया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश सेना को परास्त करके उस पर अधिकार कर लिया। उसके बाद जर्मन सेनाओं ने आगे पग उठाये और बंगाजी तथा उसके समीपवर्ती हवाई अड्डे, देर्ना, मेकीली पर अधिकार कर लिया और तोब्रुक पर आक्रमण किया। तोब्रुक की रक्षा ब्रिटिश सेना ने बड़ी बहादुरी से की इसलिये उसे छोड़ जर्मन सेना आगे बढ़ी और बार्दिया, कपूज़ो, सोलम और हेल फाएर दर्रे पर अधिकार कर लिया और तीन ब्रिटिश जनरलों को गिरफ़्तार कर लिया। मिस्र पर पुनः आक्रमण का भय छा गया।

दूसरा ब्रिटिश आक्रमण

अप्रैल मास के अंत में यूनान में शत्रु सेना की विजय हुई और वहां से ब्रिटिश तथा यूनानी सेना को पीछे हटना पड़ा। इन सेनाओं का कुछ भाग क्रीट में भेज दिया गया और कुछ मिस्र की पश्चिमी सीमा पर पहुँचा। अबीसीनिया से जो ब्रिटिश सेना खाली हुई थी वह भी मिस्र पहुँच गई। मई के आरम्भ में इराक में जर्मन सहायक लोगों ने बलवा कर दिया। जिसे दबाने के लिये कुछ ब्रिटिश हवाई सेना भेजी गई। जर्मनी ने इराक़ को हवाई सहायता देने की कोशिश की परन्तु काफी मात्रा में सहायता न पहुँचने के कारण बृटिश सेना को सफलता प्राप्त हुई। इसी बीच जर्मन सेनाएँ क्रीट पर आक्रमण करने के लिये यूनान के हवाई अड्डों को ठीक करने में लगी थीं। इससे तोब्रुक और पश्चिमी मरुस्थल में ब्रिटिश सेना को अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। मई के मध्य में सीमावर्ती प्रदेश में भारतीय और इम्पीरियल सेना ने आक्रमण आरम्भ किया। सोलम, मुसैद और हेल फाएर दर्रों पर फिर अधिकार प्राप्त कर लिया।

पुनः जर्मन प्रत्याक्रमण

इस विजय के पश्चात् शीघ्र ही क्रीट पर जर्मनी का विचित्र हवाई आक्रमण हुआ जिसमें उसे सफलता प्राप्त हुई। उसी समय जब कि क्रीट को सामान पहुँचाने और फिर सेना को हटाने में ब्रिटिश जल सेना के जहाज लगे थे शत्रु ने समुद्री मार्ग से उत्तरी अफ्रीका को फिर सहायता भेज दी और उसके बाद ही तोब्रुक पर भीषण शत्रु टैंक आक्रमण हुआ और सोलम, कपूज़ो और हेल-फाएर दर्रे पर शत्रु का अधिकार हो गया। जब क्रीट से ब्रिटिश जहाज खाली हुये तो सिसली और ट्रिपली के बीच का घेरा (ब्लाकेड) और कड़ा कर दिया गया।

इस प्रकार लिबिया की लड़ाई पर एबीसीनिया, यूनान, इराक़, क्रीट और बाद में सीरिया और इरान की घटनाओं का प्रभाव पड़ा। मोसूल के तेल के कुओं और साइप्रस द्वीप की रक्षा करनी आवश्यक थी। इसी कारण सीरिया पर ब्रिटिश सेना को अपना अधिकार जमाना पड़ा। जब सीरिया में बीरट और दमश्क पर बृटिश आक्रमण पूर्ण रूप से जारी थे उसी समय पता लगा कि शत्रु पश्चिमी मरुस्थल में फिर अपनी सेना एकत्रित कर रहा है। इस समाचार के पाते ही बृटिश सेना ने अचानक आक्रमण कर दिया और कपूज़ो सोलम तथा हेल-फाएर-दर्रे पर फिर अधिकार प्राप्त कर लिया। कुछ समय के पश्चात् शत्रु ने इन स्थानों को फिर बृटिश हाथों से छीन लिया फिर भी जनरल वेवेल ने तोब्रुक लेने वाली शत्रु—शक्ति को नष्ट कर दिया। लीबिया के युद्ध में मित्र सेना के संरक्षक जनरल वेवेल और शत्रु सेना के जनरल रोमेल थे।

प्रशान्त महासागर में जापानी आक्रमण का सामना करने के लिये जनरल वेवेल उस ओर के सेनापति बना दिये गये। भूमध्य सागर में माल्टा की शक्ति कम करने के लिये धुरी राज्यों ने वहां विकराल हवाई गोला बारी की। इसी आक्रमण की आड़ में इटली और जर्मनी ने अपने जनरल रोमेल की सहायता के लिये नई सेना और टैंक आदि सैनिक सामग्री भेज दी। जनरल रोमेल की प्रगति इसी सहायता का परिणाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टर्की

आटोमन साम्राज्य पराक्रमी सुलेमान के समय में डैन्यूब घाटी तक फैला हुआ था। १५५६ ई० में आटोमन सम्राट के निर्बल होने पर आटोमन साम्राज्य के बँटवारे और डार्डनलीस तथा वास्फोरस प्रणालियों का प्रश्न उत्पन्न हो गया। अठारहवीं सदी में रूस कालासागर होकर समुद्री मार्ग चाहता था। उन्नीसवीं सदी में बल्कान में राष्ट्रीय आन्दोलन हुये जिससे १८२६ में सर्व, १८३० ई० में यूनानी, १८६६ ई० में रूमानी, १८७९ ई० में बल्गर जातियों ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। उसके बाद १८०२ और १८२९ ई० में रूस ने कान्स्टैण्टीनोपुल पर अधिकार करना चाहा। इङ्गलैण्ड ने टर्की का साथ दिया। १८६९ ई० में स्वेज नहर तयार की गई जिससे भूमध्यसागर होकर पूर्व का व्यापार होने लगा। इन तमाम प्रश्नों के उत्पन्न होने से टर्की और डार्डनलीस तथा बास्फोरस प्रणालियों की महत्ता बढ़ गई।

डार्डनलीस के सम्बन्ध में तीन प्रकार के झगड़े हैं (१) व्यापारिक जहाजों के लिये स्वतन्त्र मार्ग (२) लड़ाका जहाजों के लिये स्वतन्त्र मार्ग (३) अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदारी। १७७४ ई० तक प्रणालियों में होकर विदेशी जहाज़ नहीं जा सकते थे। उसके पश्चात धीरे-धीरे समस्त राष्ट्रों के व्यापारी जहाजों को जाने की आज्ञा मिल गई। १८५६ ई० में व्यापारिक जहाजों के प्रवेश करने का अधिकार पेरिस की सन्धि में स्वीकार किया गया परन्तु प्रणालियों को तटस्थ बना कर लड़ाका जहाजों को वहां जाने से रोक लगा दी गई। रूस ने इसका विरोध किया। १८७८ ई० में बर्लिन की सन्धि हुई जिसमें सुल्तान को शक्ति प्रदान की गई कि जिस राष्ट्र के लड़ाका जहाज को यह मार्ग देना चाहे अपनी ज़िम्मेदारी पर प्रदान कर सकता है। उसके पश्चात् भी रोक लगी रही। जिससे १८७९ ई० में ब्रिटेन को और १९०४ ई० में रूस को कठिनाइयां उठानी पड़ीं।

१९१५ ई० में रूस ने फ्रांस और इंगलैण्ड से गुप्त सन्धि की जिसमें रूस को जल संयोजक तथा गाली-पोली प्रायद्वीप युद्ध के बाद देने को कहा गया। अनातूलिया इटली को, आर्मेनिया रूस को, सीरियन तट फ्रांस को और मेसोपोटामिया इंगलैण्ड को मिलने थे। सोवियत रूस की नीति बदल जाने से उपरोक्त प्रान्त यूनान को मिले।

१० अगस्त १९२० ई० की सेवरेस की सन्धि के अनुसार कुस्तुनतुनिया और समीपवर्ती प्रदेश टर्की के पास रहा, आर्मेनिया स्वतन्त्र हो गया और थ्रेस प्रान्त यूनान को दे दिया गया। जल संयोजक अन्तर्राष्ट्रीय अधिकार में निःशस्त्र कर दी गई। १९२१ ई० में आर्मेनिया के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया और अनातूलिया में यूनानियों को परास्त किया।

जुलाई १९२३ ई० में लौसेने की सन्धि हुई जिसमें टर्की को यूनान और आर्मेनिया के निकले प्रान्त पुनः प्राप्त हो गये और जल संयोजक सभी लड़ाका जहाजों के लिये बन्द कर दिये गये। कमाल अतातुर्क ने टर्की की अच्छी उन्नति की। १९३४ ई० में रूमानिया, यूगोस्लाविया और यूनान को मिला कर अतातुर्क ने बल्कान इंटेंटे का निर्माण किया। १९३६ ई० तक टर्की निर्भय बना रहा परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब एबीसीनिया पर इटली ने युद्ध छेड़ा और उस पर जो रोक लगाई गई वह निष्फल हुई तो कमाल अतातुर्क ने प्रणालियों पर पुनः सेना रखने और किलाबन्दी करने का आन्दोलन किया। जून १९३६ ई० की मोण्ट्रो (Montreux) की सन्धि के अनुसार जलसंयोजकों को सशस्त्र बनाने की आज्ञा प्रदान कर दी गई। जब इटली ने अल्बेनिया पर १९३९ ई० में अधिकार जमाया और बल्गेरिया को इटैलियन सहायता मिलने की सम्भावना हुई तो बल्कान में स्थिति डाँवाडोल हो गई। इंगलैण्ड ने टर्की को सहायता देने का वचन दिया। जून १९४० ई० में टर्की ने संजक पर भी अधिकार प्राप्त कर लिया और फ्रांस से उसका झगड़ा मिट गया। प्रणालियों का झगड़ा अब भी उन्नीसवीं सदी की भाँति बना है। कोई भी राष्ट्र टर्की के अतिरिक्त किसी दूसरे राष्ट्र का अधिकार उन पर नहीं देख सकता है। टर्की सभी राष्ट्रों का मित्र बना है। वहाँ की सरकार संगठित है। आधुनिक महासमर के थपेड़ों से वह अब तक सकुशल बचता चला जा रहा है। टर्की इंगलैंड का मित्र है लेकिन उसने जर्मनी से भी कई करोड़ मार्क (रुपयों) को सहायता ली है।

यूनान की विजय से एजियन द्वीपों पर जर्मनी का अधिकार हो गया। इससे टर्की को भी भय उत्पन्न हो गया। डार्डनलीस प्रणाली के मार्ग से टर्की को युद्ध सामग्री नहीं जा सकती है। एक प्रकार से टर्की चारों ओर से घिर गया है। फारस की खाड़ी होकर और सीरिया के मार्ग से वह प्रजातंत्र राज्यों से सम्बन्ध रख सकता है टर्की की योरुपीय सीमा पर जर्मन सेनाएँ पड़ी हैं। टर्की धुरी राष्ट्रों से स्वतंत्रता पूर्वक बातचीत भी नहीं कर सकता है। जर्मनी उस पर राजनैतिक, सैनिक और आर्थिक प्रभुत्व डाल रहा है परन्तु वह बृटेन का पक्का साथी प्रतीत होता है यह बात ठीक तौर पर नहीं कही जा सकती कि वह जर्मन दबाव का सामना कहां तक सहन कर सकेगा। टर्की को ईरान होकर काकेशिया पर और सीरिया होकर स्वेज़ पर आक्रमण करने के लिये भी जर्मनी ने भड़काया था परन्तु अब तक टर्की तटस्थ है और उसने जर्मनी या मित्र राष्ट्रों को सहायता नहीं की है। वह शायद युद्ध से अलग रहना चाहता है परन्तु उसकी स्थिति ऐसी है कि अंत तक उसे तटस्थ रहना भी बहुत कठिन होगा। दक्षिण की ओर सीरिया, इराक और ईरान पर बृटिश सेना ने अधिकार कर लिया है। उत्तर-पूर्व की ओर रूसी सेना का जमघट है तथा रूस-जर्मन युद्ध चल रहा है। उत्तर और पश्चिम की ओर जर्मनी ने घेर रक्खा है।

यदि जर्मनी का टर्की पर आक्रमण होगा तो वह स्मर्ना के मार्ग से ही होना अधिक सम्भव प्रतीत होता है। वहां चिआसे और मिटीलेने द्वीपों में जर्मनी अपने हवाई तथा सामुद्रिक अड्डे बना रहा है। स्मरना पर जर्मन आक्रमण सफल होने की पूर्ण सम्भावना भी है। डार्डनलीस के मार्ग होकर हवाई आक्रमण होना कठिन नहीं है और टर्की की सेना जर्मन सेना से कम संगठित तथा शस्त्रों से लैस है अतः उसे परास्त होना पड़ेगा। पर अब तक टर्की अपनी तटस्थता जटिल परिस्थितियों के उत्पन्न होते हुये भी पूर्ण रूप से निभा रहा है। जनरल वान पेपेन जर्मन राजदूत टर्की में रहता है। वह टर्की पर जर्मन प्रभुत्व डालता रहता है और आक्रमण करने के लिये भड़कता रहता है। बृटिश सरकार तथा अमरीका ने भी टर्की को अपनी ओर मिलाने के लिये सैनिक तथा राजनैतिक प्रभाव डाला परन्तु अब तक किसी को सफलता नहीं हुई। टर्की का प्रधान हसन इमानू है। वह गत महायुद्ध में टर्की की सेना का नायक होकर लड़ चुका है उसको राजनैतिक तथा सैनिक अनुभव भली-भांति प्राप्त हैं वह जल्दी से किसी के धोके में नहीं पड़ सकता है जब तक कि उसके देश की मर्यादा तथा स्वतंत्रता संकट में न पड़ जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूयार्क का बड़ा बन्दरगाह

न्यूयार्क नगर महाद्वीप उत्तरी अमरीका की कुञ्जी का काम करता है। न्यूयार्क नगर बहुत बड़ा है। इसकी विशालता को देख कर विदेशी लोग परेशान हो जाते हैं। वे इसकी स्थानीय विशेषता (जो दूसरे बन्दरगाहों में नहीं पाई जाती) देख कर घबड़ा जाते हैं।

न्यूयार्क की प्रबन्धकारिणी समिति के अधिकार वाली भूमि की सीमा न्यूयार्क नगर और उसके पास पड़ोस से कहीं अधिक है। इसमें न्यूयार्क और न्यूजरसी दोनों राज्यों के भाग शामिल हैं। इस बन्दरगाह के अन्दर रहने वालों की संख्या एक करोड़ दस लाख से अधिक है। १९३० की जनसंख्या की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या १ करोड़ से अधिक थी जिसमें लगभग ७५ लाख न्यूयार्क स्टेट में रहते थे और २५ लाख से ऊपर जरसी स्टेट में रहते थे। इससे मालूम होता है, कि न्यूयार्क की जनसंख्या लन्दन से अधिक है। कुछ लोगों का ख्याल है कि ग्रेटर लन्दन की जनसंख्या ग्रेटर न्यूयार्क से अधिक है, जो न्यूयार्क बन्दरगाह का केवल एक भाग है।

न्यूयार्क बहुत ही ऊँचा तथा गगन स्पर्शी नगर है यह वह चुम्बक पत्थर है जो दुनिया के कोने कोने से बड़े बड़े जहाजी बेड़ों को खींच लाता है। इस बन्दरगाह के लिये सभी बड़े तथा छोटे जहाज एक समान हैं। बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा जहाज भी यहाँ के बन्दगाह में आ सकता है। दुनिया के बड़े से बड़े सवारी जहाज यहाँ बनाये जाते हैं जिनकी चाल भी बहुत तेज होती है। योरुप के जहाजों को उत्तरी अमरीका जाने के लिये न्यूयार्क होकर सबसे सुगम तथा छोटा मार्ग है। साउथ हैम्पटम, लिवरपूल, ग्लास्गो, हालरे, हैम्बर्ग, राटरडम या रूम सागर के बन्दरगाहों से उत्तरी अमरीका आने वाले जहाजों को न्यूयार्क आना आवश्यक होता है। भाड़े के ख्याल से उत्तरी अटलान्टिक सागर के बन्दरगाहों में न्यूयार्क सबसे अधिक सुगम है।

न्यूयार्क के मनहाटन द्वीप पर स्थित है। यह संयुक्तराष्ट्र की आर्थिक, व्यापारिक तथा जहाजी राजधानी है। अलबानी नगर हडसन नदी के ऊपर बसा है। यह न्यूयार्क स्टेट की राजधानी है। मनहाटन न्यूयार्क नगर के ५ बरों (जिलों) में से है। वाशिंगटन संयुक्तराष्ट्र की राजनैतिक राजधानी है। ब्रोन्क्स ब्रुकलीन, क्वीन्स, रिचमान्ड न्ययार्क नगर के दूसरे चार बरो हैं। यह पाँचो न्यूयार्क स्टेट में हैं। न्यूयार्क स्टेट को हडसन नदी जरसी स्टेट और हुबोकेन से अलग करती है। जरसी नगर और दूसरे नगर जो नदी के किनारे बसे हैं, न्यूयार्क के राजनैतिक भाग नहीं हैं, यद्यपि वे न्यूयार्क के बन्दरगाह की सीमा के भीतर हैं।

प्राकृतिक सुविधाओं के कारण न्यूयार्क के बन्दरगाह की गणना संसार के सर्वोत्तम बन्दरगाहों में है। हडसन नदी की ओर इस बन्दरगाह का प्राकृतिक भू-बाँध है। खाड़ी में वर्तमान जहाजों के लिये काफी पानी है, जब भविष्य में और बड़े जहाज बनाये जावेंगे तो इस खाड़ी को और गहरा बनाने की आवश्यकता होगी।

आरम्भकाल से हो न्यूयार्क बन्दरगाह में ब्रेकवाटर बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी है। बन्दरगाह के बचाव के लिये सभी सुविधाएँ प्रकृति की ओर से प्राप्त हैं। इस बन्दरगाह की इतनी उन्नति होते हुये भी यहाँ अभी और अधिक उन्नति का समावेश हो सकता है।

न्यूयार्क बन्दरगाह के सामने के पानी की कुल लम्बाई ७७० मील है। ३५० मील लम्बाई में अभी काम हो रहा है। इस बन्दरगाह के क्षेत्रफल का अर्द्धव्यास मनहाटन के द्वीप से लगभग २० मील का है। यहाँ से संयुक्तराष्ट्र के बड़े बन्दरगाह बोस्टन और फिलाडेलफिया समीप ही है। बोस्टन की दूरी जलमार्ग से ३३० मील और फिलाडेलफिया की २६५ मील है। भीतर की ओर न्यूयार्क का बन्दरगाह हडसन नदी तथा न्यूयार्क बार्ज केनाल सिस्टम से यहाँ की बड़ी झीलों से मिला है। यह सेंट लारेन्स नदी से भी हडसन नदी, चैम्लेन की झील रेशल्यू नदी और चैम्बली नहर द्वारा मिला हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देलावारे और रारीतन नहर में होकर फिलाडलफिया को छोटे जहाज तथा स्टोमर बोट जाते हैं।

न्यूयार्क नगर से संयुक्तराष्ट्र के भिन्न भिन्न केन्द्रों को ४०,००० मील रेलवे की सड़कें जाती हैं। न्यूयार्क के मुख्य बन्दरगाह को अम्ब्रोसे नहर होकर बड़े बड़े

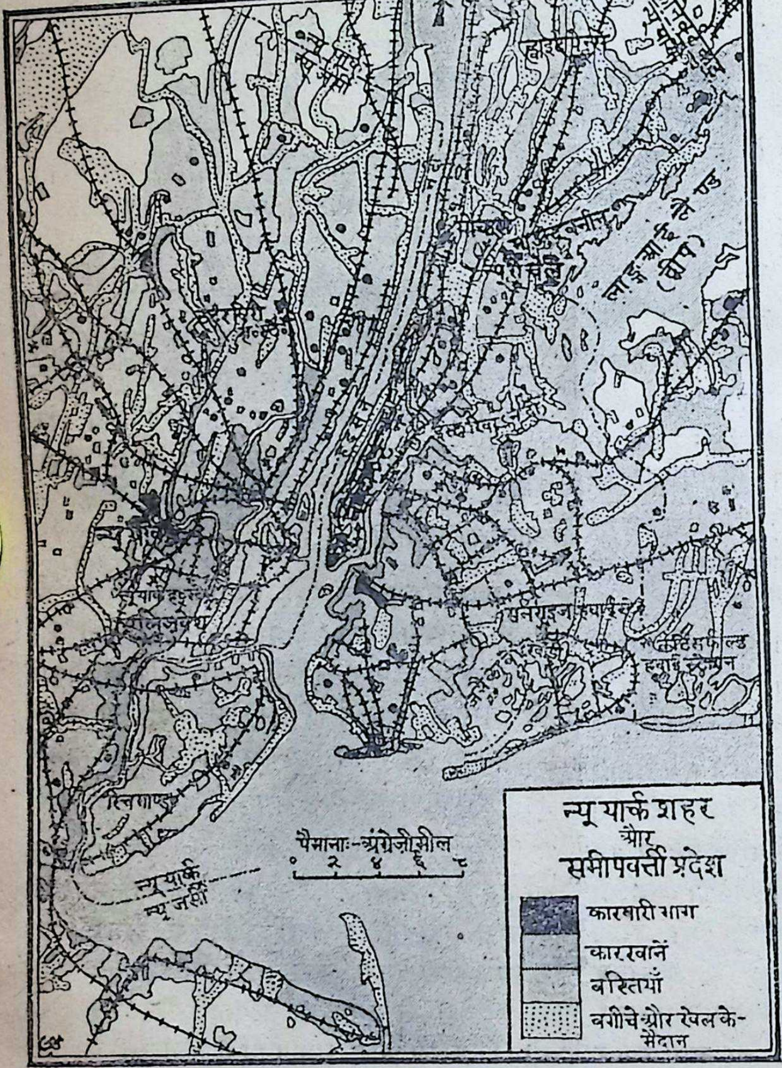

जहाज आते हैं। यह गहरे से छिछले स्थान तक साढ़े सात मील लम्बी है। छिछला पानी ४० फुट लम्बा तथा २००० फुट चौड़ा है। इस भाग में होकर योरुप से आने वाले जहाज आते जाते हैं। अम्ब्रोसे के दक्षिण की ओर और दूसरी खाड़ियाँ हैं। जिनमें मेनशिप, बेसाइड, गेडनी की नहरें प्रसिद्ध हैं। गिडनी की खाड़ी १,००० फुट चौड़ी और ३० फुट गहरी है। इस खाड़ी में चपटे पेंदे वाली नावें चला करती हैं जो न्यूयार्क का रद्दी सामान लेजाकर दूसरे स्थानों पर सस्ते भाव पर बेचती हैं। अम्बाके लाइट स्थान अटलान्टिक सागर का प्रथम या अन्तिम स्थान है, जहाँ जहाजों के चलाने वाले चढ़ाये या उतारे जाते हैं।

न्यूयार्क में लोअरबे (निचली खाड़ी) होकर जहाज पहुँचते हैं। इस खाड़ी का क्षेत्रफल ८८ बर्ग मील है। अपर बे (ऊपरी खड़ी) का क्षेत्रफल १४ बर्गमील है। इन दानों खाड़ियों को नैरोज जल संयोजक (एक मील चौड़ी) मिलाती है। यह लाँग आइलैण्ड और स्टेटेन आइलैण्ड के बीच स्थित है। सैंडी हुकबार दक्षिण की ओर है।

नैरोज के जलडमरूमध्य से भीतर की ओर जाते समय बेडलोज या लिबर्टी के द्वीप में लिबर्टी मूर्ति (स्वतन्त्रता की देवी की मूर्ति) दिखाई पड़ती है। यह गवरनर आइलैण्ड के दूसरी ओर है। इसके पश्चात् एलिस का द्वीप है जहाँ पर भीतर आने वाले लोगों की परीक्षा होती है। उसके बाद न्यूयार्क नगर के आकाश स्पर्शी भवन आरम्भ हो जाते हैं। योरुप से आने वाले समुद्री जहाज हडसन नदी पर, मनहाटन के पश्चिमी किनारे पर ठहरते हैं।

मनहाटन न्ययार्क का केन्द्र है। इस द्वीप के मकान आकाश से बातचीत करने वाले बनाये गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। स्थान की कमी के कारण अधिक फैलाव नहीं हो पाया इस लिये ऊपर अधिक ऊँचा बनाना पड़ा है। इन्हीं ऊँचे मकानों के कारण न्यूयार्क एक प्रभावशाली तथा भव्य नगर है, किन्तु इस नगर के आने जाने के साधन बड़े दुर्गम हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो मनहाटन जाने अथवा आने वाला है उसे पानी को पार करना पड़ता है। इस जल को पार करने के लिये पुल, सुरँग तथा बोट हैं। हडसन नदी मनहाटन को न्यूजरसी से अलग करती है। हरलेम की पतली नदी मनहाटन को न्यूयार्क राज्य से और ईस्ट रीवर (पूर्वी नदी) लाँग आइलैण्ड से अलग करती है। मनहाटन का द्वीप १३½ मील लम्बा और १⅗ मील चौड़ा है। यहाँ केवल एक बड़ी न्यूयार्क सेन्ट्रल रेलवे है। दूसरी बड़ी रेलवे लाइनें न्यूजरसी और लाँग आइलैण्ड में हैं। इन रेलवे लाइनों का सामान जलमार्ग को पार करके मनहाटन को भेजा जाता है।

मनहाटन, हडसन, ईस्टरीवर, न्यूजरसी, स्टेटेन आइलैण्ड और लाँग आइलैण्ड के तटों पर घाट हैं। १९३० ई० में रेलवे और मोटर कार द्वारा आये हुये सामान छोड़ कर जल मार्ग से १२०,४००,००० टन (३,०१०,०००,००० मन) सामान का व्यापार हुआ जिसका मूल्य ३०,०००,०००,००० रुपया था। यह संयुक्तराष्ट्र में आने जाने वाले सामान का २६ और मूल्य का ५६ प्रतिशत था। उस साल १३८ स्टीमशिप लाइनें थीं। उनमें १०३ विदेशी व्यापार करती थीं, १२ लाइनें अन्तरतटीय और २३ लाइनें तटीय मार्ग में काम कर रही थीं। इसके अलावा ३० और स्थानीय देश के भीतर जाने वाली लाइनें थीं। इनमें से १७ न्यूयार्क स्टेट बार्ज नहर में काम कर रही थीं। जहाजी घाटों की संख्या ८०० से अधिक थी। लाँग आइलैण्ड प्रधान नगर लाँग आइलैण्ड साउन्ड द्वारा और मनहाटन से पूर्वी नदी द्वारा अलग है। इसकी लम्बाई ११८ मील और चौड़ाई १३ से २३ मील तक है।

न्यूयार्क का इतिहास १६०९ से आरम्भ होता है। उस साल हेनरी हडसन नामक अँग्रेज जो डच ईस्टइण्डिया कम्पनी में नौकर था, हाफमून नामक ८० टन का जहाज लेकर हडसन खाड़ी तथा नदी में पहुँचा। हडसन के पहले भी योरुप के लोग आ चुके थे। १५२४ ई० में फ्लोरेन्टाइन और वेराज़ानी न्यूयार्क का पता लगाये थे और उनके एक साल बाद स्टेबन गोमेज आया था।

हडसन उत्तरो-पूर्वी मार्ग की खोज कर रहा था। वह बीस आदमियों के साथ ऐम्सटर्डम से आया था और १५० मील तक हाफ मून (हडसन नदी) में गया। उसके बाद जहाज नहीं जा सका इसलिये २० मील और आगे तक एक बोट भेजा। उसको विश्वास हो चला था कि भारत का मार्ग हडसन नदी होकर नहीं है। लौटती वार हडसन के ऊपर इण्डियन लोगों ने आक्रमण किया। हडसन ने आक्रमणकारियों को मार भगाया और बहुतों को मार डाला। मनहाटन में हडसन ने छोटी मोटी वस्तुओं का व्यापार कर के साथ किया और इण्डियन को फायर वाटर (आग का पानी) पिलाया और डारमाउथ में लौट कर ठहरा। अपने डच मालिकों को कहला भेजा कि फर का व्यापार भलीभांति इन्डियन लोगों के साथ किया जा सकता है। अँग्रेज अधिकारियों ने हडसन को उसके जहाज से उतार लिया क्योंकि उनका कहना था, कि जिस चीज का हडसन अँग्रेज ने अपने डच मालिकों के लिये पता लगाया था, उसका पता कैबट ने अँग्रेजों के लिये लगाया है।

निदरलैण्ड्स के व्यापारी ने हडसन की रिपोर्ट के अनुसार हाफ मून (हडसन नदी) द्वारा व्यापार करने के लिये तयार हुये और उन्होंने मनहाटन आइलैण्ड के किनारे और फोर्ट आरेंज (अल्बानी) तक अपने अपने व्यापारिक स्थान बना दिये। ऐडरियन ब्लाक जो हडसन के पीछे गया था, उसका जहाज अग्नि में जल कर समाप्त हो गया। उसने अपने साथियों की सहायता से जङ्गली बृक्षों को काट कर ४५ फुट का एक जहाज बनाया जिसका नाम उन्होंने रेस्टलिस रक्खा। यह पहला जहाज था जो संयुक्तराष्ट्र के पानी में उतारा गया था।

डच लोगों ने मनहाटन जजीरे में न्यूऐम्सटरडम नामक नई बस्ती बसाई। इसकी नींव १६१७ ई० में डाली गई थी। इसके ८ साल पश्चात् डच वेस्ट इन्डिया कम्पनी को चार्टर मिला और नया निदरलैण्ड्स उन्हें दिया गया। १६२४ ई० में पिटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिन्यूट इस नई बस्ती का गवर्नर वहाँ पहुँचा। एक साल बाद रेशमी फीते, माले और कपड़े आदि जिनका मूल्य ५ पौंड से कम था, इण्डियन लोगों को दे कर डच लोगों ने मनहाटन का द्वीप मोल ले लिया। मिन्यूट के बाद दूसरा गवर्नर गया और उसने ३०० पौण्ड (४५०० रू०) व्यय करके एक चर्च तथा क़िला बनाया। यह हाल देख कर स्वीडन निवासियों का भी जी ललचाया और वे लोग भी अमरीका पहुँचे और देलवारे नदी पर बस्तियाँ बसाईं किन्तु डच लोगों ने इन्हें छीन लिया। इसी बीच अँग्रेजों की नई बस्तियाँ न्यू इंगलैंड तथा वरजीनिया में काफी उन्नति कर गईं तो डच लोगों ने अँग्रेजों के भय के कारण एक बड़ी दीवार बनाई जो अब वाल स्ट्रीट के नाम से प्रसिद्ध है।

यह डच व्यापारी बड़े चतुर व्यापारी थे, किन्तु कृषक न थे, वे फर का मूल्य भलीभांति समझते थे। अँग्रेज लोग कृषक होने के कारण वहां बस गये और उनकी नींव अधिक पक्की हो गई। अँग्रेजों का कहना था कि डच लोगों का अमरीका की भूमि पर बिलकुल अधिकार नहीं है क्योंकि कैबट ने उसका पता लगाया है। चार्ल्स द्वितीय ने अपने भाई जेम्स को जो पार्क मा ड्यूक था, अमरीका की डच भूमि दी। इसके लिये डच और अँग्रेजों में तनातनी हो गई। १६६४ ई० में जब अँग्रेजों का एक जहाजी बेड़ा वहाँ पहुँचा तो डच लोगों ने हथियार रख दिये और अँग्रेजों की बात मानने पर राजी हो गये।

न्यूऐम्सटर्डम न्यूयार्क और फोर्ट आरेञ्ज बाद को अल्बानी कहलाया। इस समय मनहाटन पर केवल एक ह्यूप्ट नामक घाट था। अफ्रीका के गुलाम इन घाटों के बनाने का काम करते थे। सभी अन्दर आने वाले जहाजों को मनहाटन के कोने पर पहुँचते ही रुकना पड़ता था और उनकी काग़जी जाँच पड़ताल होती थी। एम्सटर्डम को जाने के लिये जहाज जितनी जल्दी मुमकिन हो सकता था जाने आने लगे। जहाज वेस्ट इण्डीज़, अमरीका की नवीन आबादियों और हडसन नदी में अल्बानी तक जाने आने लगे और व्यापार होने लगा। न्यूज़रसी, स्टेटेन आइलैण्ड और लाँग आइलैण्ड के साथ भी व्यापार होने लगा।

१६७३ ई० में एक डच जहाजी जंगी बेड़ा न्यूयार्क पहुँचा और उसने न्यूयार्क अँग्रेजों से छीन लिया, उसी साल वेस्ट मिनिस्टर की सन्धि के अनुसार वह फिर अँग्रेजों को वापस मिल गया। इस प्रकार हम देखते हैं, कि न्यूयार्क जो दुनियाँ के बड़े अँग्रेजी भाषा प्रयोग करने वाले केन्द्रों में से है, अँग्रेजों द्वारा उसकी नींव नहीं डाली गई थी।

ह्यूजोनाट, वाल्रून्स, जर्मन, अँग्रेज़ और डच सभी लोगों ने अपने अपने मकान न्यूयार्क में बनाये थे। कुछ अँग्रेज़ निवासी न्यूइंगलैण्ड और वर्जीनिया से भाग कर आये थे। वहाँ यह लोग या तो जबरदस्ती लाये गये थे या कर्ज़ के बदले काम करने के लिये लाये गये थे। इस लिये न्यूयार्क आरम्भ से ही अपने पड़ोसियों से अलग था और उसी प्रकार सदैव रहा है।

जब तक न्यूयार्क अँग्रेजों के झंडे के नीचे रहा, उसे सदैव कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। जब १६८८ ई० में जेम्स द्वितीय के भाग जाने की चर्चा न्यूयार्क में पहुँची तो नगर में बलवा हो गया और दो दिन तक जारी रहा। न्यूयार्क निवासियों में दो पार्टियाँ हो गई थीं। एक का कहना था कि बादशाह के अधिकार का अन्त हो गया है इसलिये न्यूयार्क निवासियों को अपने अफसरों को चुन लेना चाहिये। दूसरी पार्टी का कहना था कि जो लोग अफ़सरी का काम कर रहे हैं वे काम करते रहें जब तक बादशाह विलियम उनके स्थानों पर दूसरे लोगों की नियुक्ति न कर दें। उस समय न्यूयार्क में खूब मारपीट तथा हत्याकाण्ड हुये।

इसके पश्चात् न्यूयार्क ने एक नया रूप धारण किया। बहादुर, मज़बूत तथा जोशीले मल्लाहों ने समुद्री डाकुओं का काम करना आरम्भ किया। न्यूयार्क नगर के निवासी बारूद गोलियाँ और दूसरी समुद्री डाकुओं के काम की वस्तुएँ उनके हाथ बेचने लगे और यह लोग मज़बूत जहाजों को लेकर डाका डालने लगे। जिस काल में अँग्रेज़ों और फ्रांसीसियों से युद्ध हो रहा था उस समय यह लोग कनैडा की फ्रांसीसी बस्तियों में डाका डालते थे। यह लोग समुद्र के अन्दर आने वाले जहाजों को लूट लेते थे, जो भी जहाज पूर्व की ओर से आता था इनसे बच कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं जा सकता था। दक्षिण के रहने वालों के साथ यह लोग अच्छा व्यापार करते थे। न्यूयार्क से यह लोग २ शिलिंग प्रति गैलन के भाव से शराब खरीद कर ले जाते थे और मेडेगास्कर में ले जाकर ३ पौंड प्रति गैलन के भाव से बेंचते थे। इन समुद्री डाकुओं के धन से न्यूयाक के गवर्नर आदि का भी हिस्सा मिलता था।

लुटेरे जहाज अँग्रेजों के दुशमन वाले जहाजों की खोज में जाते थे, यदि उन्हें कोई ऐसा जहाज न मिलता तो उसका कप्तान समुद्री डाकू बन जाता था और पाए गये जहाज के सभी लोगों को मार डालता था, पहचान करने वाली सभी वस्तुओं का नाश करके सामान लूटने के पश्चात् लुटेरे जहाज की भाँति वापस आ जाता था। इनमें से बहुत से जहाज गुलाम लोगों के थे। न्यूयार्क में उस समय कारखानें बिलकुल नहीं थे और समुद्री व्यापार पर ही न्यूयार्क का जीवन चलता था। सारा समुद्री तट लुटेरे जहाजों तथा समुद्री डाकुओं से भरा था। यह लोग आये हुये जहाज का किनारे किनारे पीछा करते थे। वह तटीय निवासियों को भी अपना साथी बना लेते थे और मौका पाकर जहाज लूट लेते थे।

धीरे धीरे यह बातें अँग्रेज़ सरकार के कानों तक पहुँचीं। एक गवर्नर जिसकी स्त्री के पास समुद्री डाकुओं के दिये हुये सामान थे, वह वापस बुला लिया गया और उसके स्थान पर एक नया गवर्नर इन बुराइयों को दबाने के लिये नियुक्त किया गया। एक जहाज जो मेडेगास्कर गया था वह ३०,००० पौण्ड (४५०,००० रुपया) लेकर वापस आया। उसके प्रत्येक सहकारी को १६० पौंड मिला और बहुत सा सामान भी प्राप्त हुआ। उस जहाज के कप्तान ने लोगों का निमन्त्रण बड़े हावभाव के साथ किया।

वार आफ इन्डिपेन्डेन्टस (स्वतन्त्रता संग्राम) में ७ साल तक न्यूयार्क अँग्रेज़ों के आधीन रहा। क्रान्ति के पहले न्यूयार्क के समुद्री मल्लाहों तथा अँग्रेज़ों के बीच झगड़ा रहता था। समुद्री लोगों को अँग्रेज़ जंगी जहाज के लोग पकड़ ले जाते थे, इसलिये वे लोग खुल कर जहाँ कहीं मौक़ा होता था अँग्रेज़ो जंगी जहाज का मुक़ाबिला करते थे ऐसी लड़ाइयों में बहुत सी जानें मारी गईं। क्रान्ति के पश्चात कुछ समय तक न्यूयार्क प्रजातन्त्र राज्य की राजधानी रहा।

जब अँग्रेज़ लोगों ने १७८३ ई० में इसे छोड़ा तो उस समय २३,००० लोग न्यूयार्क बन्दरगाह में आबाद थे। इनमें बहुत से निग्रो गुलाम थे। १८१० ई० में यहाँ की जनसंख्या बढ़ कर ९५,००० हो गई।

सन् १८१२ ई० में इङ्गलैण्ड के साथ युद्ध छिड़ा। एक अँग्रेज़ जहाजी बेड़ा पहुँचा और उसने न्यूयार्क के व्यापार को रोक दिया और इस प्रकार वहाँ के व्यापार को बिलकुल कुचल डाला।

वर्तमान न्यूयार्क की उन्नति स्टीम बोट (भापकश) नहर और रेल के कारण हुई है।

१८०७ ई० में राबर्ट फुल्टन का क्लेरमोन्ट जहाज १५० मील तक वायु और हडसन नदी की धार के विरुद्ध अल्बानी तक ३२ घन्टे में गया। उसके २ साल बाद स्टीम बोट बराबर आने जाने लगे। १८१८ में लाँग आइलैण्ड साउन्ड में जहाज आने जाने लगे और १८३० ई० तक न्यूयाक बन्दरगाह में ८६ स्टीम बोट हो गये। उत्साही लोग यूयार्क में आ बसे। जान जैकब एस्टर न्यूयार्क में फर का व्यापार करने के लिये आकर टिके। यह कनैडा से फर खरीद कर चीन में बेंचते थे। इन्होंने एक जहाज तयार किया और उसे हार्न अन्तरीप का चक्कर लगाने के लिये भेजा और एक व्यापारिक केन्द्र अस्टोरिया नामक खोला। यह स्थान प्रशान्त तट पर कोलम्बिया नदी के मुहाने पर है। एस्टर अपने अन्तिम काल में समुद्री जीवन से हटकर मनहाटन में जाकर भूमि ले ली। यह एक जर्मन था।

कार्नीलियस वान्डरबिल्ट न्यूएम्सटर्डम के डच निवासियों का बँशज था। यह जवानी की दशा में स्टेटेन आइलैण्ड से न्यूयार्क बोट पर आया और उस समय इसने रुपया इकट्ठा करना तथा भाप से चलने वाले बोट बनाना आरम्भ किया। यह और दूसरे लोगों की अपेक्षा यात्रियों तथा व्यापारियों से किराया भी कम लेता था इस प्रकार इसने पर्याप्त धन इकट्ठा कर लिया। इसने भाप से चलने वाले जहाजों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लाइन हावें तक स्थापित की उसके बाद समुद्री जीवन से अलग होकर अपना धन रेलवे की ओर लगाया।

इसी बीच में न्यूयार्क के रहने वाले जहाजों की चाल की वृद्धि के बारे में प्रयोग कर रहे थे। कुछ लोगों ने मिलकर ब्लैक बाल लाइन खोली। यह लाइन न्यूयार्क और लिवरपूल के बीच खोली गई थी। इसके जहाज और दूसरे जहाजों से अधिक तेज़ चलते थे। यह लाइन १८१६ में खोली गई थी। समुद्र के अन्दर काम करने वालों और मल्लाहों ने जब देखा कि इस धीमी चाल से लाभ नहीं है तो उन्होंने इस बात का ख्याल किया कि समुद्र के अन्दर पाल से चलने वाले जहाजों की चाल भी ५ नाट से अधिक हो सकती है।

१८५० ई० के लगभग न्यूयार्क अमरीकी पनसुई नावों का केन्द्र हो गया। तेज चलने वाले जहाजों ने न्यूयार्क को योरुप से मिला दिया और सैन्फ्रान्सिस्को तथा चीन को जाने आने लगे। स्टीमर भी पनामा को जाने लगे। यहाँ लोग भू-मार्ग से पनामा जाते थे और दूसरे स्टीमरों को कैलफोर्निया की सोने की खानों को ले जाते थे। अमरीकन क्रान्ति और भाप से चलने वाले जहाजों ने अमरीकन पनसुई नावों को बड़ा धक्का पहुँचाया। बहुत दिनों तक अमरीका को वैदेशिक व्यापार में लाभ नहीं हुआ क्योंकि न्यूयार्क के बड़े जहाज विदेशी झंडे वाले ही थे।

न्यूयार्क में चतुर लोग काम कर रहे थे और उनकी आँखें देश के भीतर तथा समुद्र दोनों ओर लगी हुई थीं। यह एक प्रमाणिक बात है कि आने जाने का सबसे सस्ता साधन जल होकर है। मान्ट्रियाल और क्यूबेक के बन्दरगाह कनैडा में सेन्ट लारेन्स नदी पर स्थित हैं। जाड़े के दिनों में सेन्ट लारेन्स की खाड़ी बरफ से जम जाती है। न्यूयार्क का बन्दरगाह, मान्ट्रियाल और क्यूबेक के दक्षिण की ओर स्थित है। उत्तरी अमरीका की बड़ी झीलों का प्रयोग करके एरी नहर द्वारा उत्तरी अमरीका के मध्यवर्ती भाग तक जाने का काम न्यूयार्क निवासियों ने उठाया। बफ़ालो एरी झील के पूर्वी किनारे पर न्याग्राह नदी के मुहाने पर है। एरी नहर न्यूयार्क को मोहाक की घाटी तथा हडसन नदी द्वारा बफ़ालो से मिलती है।

इस नहर होकर न्यूयार्क को सदैव जहाज आते जाते रहते हैं। यह मार्ग १८२५ ई० में खुला था। उस समय के लिये इस मार्ग का प्रयोग करना एक बहुत बड़ी बात थी। जैसे ही एरी झील का पानी एरी नहर में प्रवेश करता था, न्यूयार्क को तोपों की गरज द्वारा संकेत पहुँचाया जाता था। यह तोपें थोड़ी थोड़ी दूर पर एरी नहर तथा हडसन नदी पर लगा दी गई थीं।

जब रेलवे की उन्नति होने लगी तो उस समय तक न्यूयार्क की जनसंख्या काफी हो गई थी और यह काफी उन्नति भी कर गया था, क्योंकि पूर्व की ओर से आने वाले जहाजों तथा पश्चिम की ओर से आने वाली रेलों का न्यूयार्क केन्द्र था। न्यूयार्क नगर दिन प्रति दिन बढ़ता तथा फैलता ही गया। १८८० ई० से इस नगर में प्रति वर्ष ४,००,००० आदमी विदेशों से आते थे और बहुत से लोग यहीं के निवासी बन जाते थे। जैसे जैसे भूमि का मूल्य बढ़ता गया वैसे वैसे मध्यम श्रेणी के लोग मनहाटन छोड़ने लगे किन्तु काम करने के लिये उन्हें रोज़ाना शहर में आना पड़ता था। धनी लोगों ने नगर में अपने भव्य महल बना लिये और ग़रीब लोग मैले कुचैले महल्लों में जा बसे। बाहर के आने वालों में मध्य तथा दक्षिणी योरुपीय लोग अधिक थे। वे अपनी भाषा छोड़ कर दूसरी भाषा बिलकुल नहीं जानते थे। इसलिये नगर में भाषा के कारण एक जटिल समस्या उत्पन्न हो गई थी।

बन्दरगाह में आने जाने की समस्या भी बड़ी जटिल हो गई। केवल एक प्रधान रेलवे को ही अपने सामान तथा माल रखने के स्थान मनहाटन में बनाने का अधिकार मिला। ७ और दूसरी रेलवे लाइनें न्यूजरसी में आकर मिलती थीं। एक ब्रान्क्स में, एक लाँग आइलैण्ड में और एक स्टेटिन आइलैण्ड में आकर मिलती थी। इन रेलवे लाइनों ने अपने सामान उतारने तथा रखने के स्थान समुद्र के किनारे बनाये थे, और मनहाटन को सामान कारबोट, टग और दूसरे छोटे जहाजों द्वारा भेजते तथा मँगाते थे। बन्दरगाह में इन जहाजों की बड़ी भीड़ लगी रहती है और रेलवे के प्लैटफार्मों ने बन्दरगाह का अधिकांश स्थान घेर लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलवे हो जाने से न्यूयार्क के समीप के प्रान्तों में काफ़ी उन्नति हो गई और रेलवे वालों को भूमि महँगी हो जाने के कारण अधिक बढ़ाने का मौका न मिल सका। बन्दरगाह की प्रबन्धकारिणी समिति ने एक योजना द्वारा आने जाने के साधनों को आसान बनाने का इरादा किया है।

पानी की गहराई काफी होने के कारण बड़े डाकों तथा ब्रेक वाटरों के बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी, केवल खम्भों या पानी के भीतर बढ़े हुये घाटों के बनाने की आवश्यकता पड़ी। इन घाटों की संख्या ८०० है, जिनकी लम्बाई १८०० फुट से २०० फुट तक और चौड़ाई २०० फुट से ८० फुट तक है। अटलांटिक सागर में आने वाले बड़े जहाज मनहाटन में हडसन के किनारे पर जाकर अपने कम्पनी के घाटों पर सीधे खड़े हो जाते हैं। ईस्ट (पूर्वी) नदी की चौड़ाई अधिक न होने के कारण उसमें लम्बे घाट नहीं बनाये जा सकते। ईस्ट रीवर (पूर्वी नदी) के घाटों में योरुप, वेस्ट इण्डीज़ और संयुक्त राष्ट्र के तट तथा खाड़ियों से व्यापार करने वाले जहाजों के खड़े होने के स्थान हैं।

हडसन नदी के कारण न्यूयार्क पश्चिम की ओर नहीं फैल सका। इस नदी का पश्चिमी तट दूसरे राज्य में है। स्टेटेन आइलैंड जो न्यूजरसी से किलवान कुल द्वारा अलग है, न्यूयार्क में शामिल है। किल-वान-कुल न्यूयार्क की खाड़ी का द्वार है। स्टेटेन आइलैंड नैरोज़ द्वारा लाँग आइलैंड से अलग हैं। पूर्वी नदी मनहाटन और लाँग आइलैंड के बीच में हैं। इस जल संयोजक की लम्बाई १६ मील और चौड़ाई ४,००० फुट से ६०० फुट तक हैं। इसमें ज्वार भाटा बहुधा आया करते हैं। ब्रूकलीन, न्यूयार्क नगर का एक भाग है और मनहाटन के केन्द्रीय भाग के दूसरी ओर स्थित है। ब्रूकलीन और क्वीन्स पुलों तथा सुरंगों द्वारा मनहाटन से मिले हुये हैं। यह सुरंग तथा पुल पूर्वी नदी को पार करके बनाये गये हैं सबसे पहला पुल ब्रूकलीन का बना जो १८२३ ई० में खोला गया था, इसकी लम्बाई ५९८९ फुट है।

हडसन नदी पर जार्ज वाशिंगटन का पुल १७८ स्ट्रीट मनहाटन और न्यूजरसी के फोर्ट-ली के बीच में है। यह पुल अक्तूबर १९२१ ई० में बनना आरम्भ हुआ और इसका काम अक्तूबर सन् १९३२ ई० में समाप्त हुआ।

बुश टरमिनल दक्षिणी ब्रूकलीन में है। यह बहुत प्रसिद्ध स्थान है। यह अपर की खाड़ी पर स्थित है। यहां पर जहाजों के ठहरने के लिये घाट, बड़े बड़े कारखाने और सभी प्रकार के जहाज हैं।

न्यूयार्क के कारखानों का बना हुआ सामान घाटों और बांधों पर आता है। अटलांटिक बाल्टिक टरमिनल, संयुक्त राष्ट्र का सैनिक समुद्री अड्डा और जे स्ट्रीट टरमिनल ब्रूकनील किनारे पर स्थित हैं। स्टेटेन आइलैंड की ओर अमरीकन डाक और पाउच टरमिनल हैं। हडसन नदी के न्यूजरसी के किनारे की ओर रेलवे कम्पनियों के घाट हैं और बहुत से ऐसे घाट हैं जहां पर योरुप तथा दूसरे देशों को बड़ी बड़ी कम्पनियों के जाने वाले बड़े तथा छोटे छोटे जहाज ठहरा करते हैं।

किसी समय में तेज धारा के कारण पूर्वी नदी में जहाजों का चलना कठिन था। हारलेम नदी और पूर्वी नदी के समीप हेल गेट पर धारा की गति बड़ी तीव्र थी और बहुत से जहाज टूट जाते थे। अब उस स्थान के पत्थर के रोड़े तथा चट्टानें निकाल दी गई हैं, किन्तु पानी का वेग अब भी तीव्र है। हेल-द्वार (नरक-द्वार) के बाद जल-संयोजक की चौड़ाई अधिक हो जाती है। हरलेम नदी मनहाटन को न्यूयार्क से अलग करती है। हरलेम नदी में बहुत से पुल हैं। यह नदी स्पुईटन डुईविल छोटी नदी द्वारा हडसन नदी से मिली है। इसमें ४०० फुट लम्बी तथा १५ फुट चौड़ी एक चैनल है।

बड़े जहाजों की अधिकता और बहुत सी जहाजी लाइनों के हो जाने से न्यूयार्क के बन्दरगाह में बहुत से सुधार हो गये हैं। किसी समय में हडसन नदी के मनहाटन तटीय जहाजी घाटों की लम्बाई ९०० फुट से अधिक नहीं हो सकती थी, किन्तु अब यह रोक उठा ली गई है। हडसन नदी पर न्यूट्रान्स अटलांटिक टरमिनल में क्वीन मैरी तथा नारमंडी आदि बड़े जहाजों के ठहरने के लिये ११०० फुट लम्बे तथा १२५ फुट चौड़े घाट हैं। न्यूयार्क और न्यूजरसी तटों के प्रधान घाटों के बीच ३५०० से २८०० फुट तक का चौड़ा मार्ग छोड़ दिया गया है। यहां पर

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदी कम चौड़ी है। डीप वाटर चैनल को और अधिक गहरा तथा चौड़ा बना दिया गया है।

ऊपर खाड़ी का क्षेत्रफल ३००० एकड़ है। यहां पर अधिकांश विदेशी जहाज आकर ठहरते हैं। इस खाड़ी के पूर्वी भाग में २००० फुट की चौड़ाई तक में जहाज आराम करने के लिये ठहरते हैं, किन्तु बिना आज्ञा लिये ७२ घंटे से अधिक नहीं ठहर सकते। इसका क्षेत्रफल १३५ एकड़ और इस भाग के पानी की गहराई १५ फुट से ५१ फुट तक है।

न्यूयार्क के बन्दरगाह में समुद्री जहाजों के लिये २१४ घाट हैं। इन घाटों में १००० टन वाले जहाज जो ऊपर की ओर २० फुट रहते हैं, ठहरा करते हैं। कुल लम्बाई जिसमें जहाज ठहरते हैं, वह ३०८,९२६ फुट है। न्यू जरसी और स्टेटेन आइलैंड के किनारे जहाजों के ठहरने का स्थान १०५,९६९ फुट हडसन नदी तथा मनहाटन के ७२,६४८ फुट, ईस्ट रीवर तथा मनहाटन के घाट १८९३२ फुट ईस्टरीवर, लॉंग आइलैंड और अपर खाड़ी के घाट १११,३७७ फुट हैं।

हडसन नदी के मनहाटन तट की ओर १२१ घाट हैं, जिनकी गहराई ४२ फुट है। इन घाटों में अधिकतर सवारी वाले जहाज ठहरते हैं। ईस्ट नदी में मनहाटन के तट पर १०८ घाट हैं। इनमें वेस्ट इण्डीज और खाड़ियों के जहाज रहते हैं। ईस्ट नदी के दूसरी ओर किनारे पर १०१ घाट जहाजों के लिये हैं। इनके सिवा बांध, तैरने वाले पुल और नावों के घाट हैं।

इन घाटों के किनारे पानी की गहराई ४० फुट है। स्टेटेन द्वीप के तट पर क्वारैनटाइन स्टेशन, संयुक्त राष्ट्र कोस्टगार्ड स्टेशन और १३ स्टेपलटन घाट हैं। यह घाट न्यूयार्क नगर के अधिकार में हैं और लोगों को किराये पर उठा दिये जाते हैं। ये १००० फुट से अधिक लम्बे तथा १२५ फुट से २०० फुट तक चौड़े हैं। घाटों पर पानी की गहराई ३० फुट है।

न्यू जरसी के हडसन तट पर अधिकतर रेलों के अड्डे और जहाजों के घाट हैं। व्योन्ती में पिट्रौल का बड़ा कारखाना है। एलिजबेथ, कोम्प्यूनीपा और अम्बाएस के बन्दरगाहों पर कोयले तथा दूसरे सामानों के उतारने चढ़ाने के अड्डे हैं।

मनहाटन तथा दूसरे स्थानों के बहुत से घाट न्यूयार्क म्युनिसिपैलिटी के अधिकार में हैं।

न्यूयार्क को जाने वाले लोग अधिकतर उसके ऊँचे शानदार महलों को देखकर अचम्भित होते हैं किन्तु सच्ची बात तो यह है कि यहां का बन्दरगाह दुनिया की आश्चर्य जनक वस्तुओं में से है। यहां के घरों पर समुद्री बोटों, स्टीमरों और जहाजों द्वारा नागरिक लोग इतनी अधिक संख्या में घूमते तथा वार करते दिखाई पड़ते हैं कि उनकी भीड़ देख कर बड़ा विस्मय होता है। इस नगर में सात समुद्रों के जहाज तथा निवासी बर्तमान रहते हैं।

न्यूयार्क पोर्ट नई दुनिया का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। इसके पीछे संसार का सबसे बड़ा अँग्रेजी भाषा का प्रयोग करने वाला संसार स्थित है। यह नगर पहाड़ी चट्टान पर स्थित है। इसलिये यहां के निवासियों की प्रकृति कुछ सख्त है, पर यह स्वयम् एक कहानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १९] कार्तिक सं० १९९९, नवम्बर १९४२ [सं० ७

हमारी पृथ्वी की आन्तरिक बनावट

[ले० निरंजनलाल शर्मा एम० एस-सी० (बनारस), एफ० ए० एस-सी० लेक्चरर-डिमोंस्ट्रेटर, ज्योलाजी डिपार्टमेन्ट, इण्डियन स्कूल आव् माइन्स, धानबाद]

पृथ्वी जैसी धरातल पर ठंडी है वैसी भीतर नहीं है। *पृथ्वी के भीतर गर्मी है।* इसको नीचे की बातें सिद्ध करती हैं:—

(१) गहरी खानों तथा बोरिंग इत्यादि से पता चलता है कि पृथ्वी के भीतर प्रत्येक ६० फोट उतरने पर १ डिग्री फारेनहाइट तापमान बढ़ता है।

(२) गरम सोते और गरम पानी व भाफ के फुव्वारे (geysers) इस बात के प्रमाण हैं कि पृथ्वीतल के नीचे गर्मी है।

(३) ज्वालामुखीय पर्वतों के मुँह से गलते हुए शिला-पदार्थों का निकलना भी यही बताता है कि पृथ्वी भीतर गरम है।

(४) अन्य ग्रहों की दशायें तथा पृथ्वी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जो सिद्धान्त हैं उनसे भी यही अनुमान निकलता है कि पृथ्वी के भीतर गर्मी अवश्य होगी।

पृथ्वी का भीतरी भाग उसकी बाहर की पपड़ी (crust) से भिन्न प्रकार का है यह निम्नलिखित बातों से सिद्ध होता है:—

(१) पृथ्वी की पपड़ी का आपेक्षिक घनत्व २·७ है जब कि समस्त पृथ्वी का घनत्व ५·५२ है। इससे सिद्ध होता है कि पृथ्वी का अन्तस्तल भारी वस्तुओं से बना है।

(२) भौगर्भिक पैमाइशों, लम्बत्व (plumb line) के प्रयोगों और भूआकर्षण के मिलान से यह सिद्ध हुआ है कि गहरे महासागरों के पेंदों का घनत्व पृथ्वी की पपड़ी से अधिक है।

(३) भूकम्प की प्रलम्ब धाराएँ (long waves) जो धरातल के ठीक नीचे बहा करती हैं, गहरे महासागरों के नीचे अधिक वेग से बहती हैं और महाद्वीपों पर कम वेग से। इससे भी सिद्धि होता है कि समुद्रीय तलों की चट्टानें महाद्वीपों की 'ग्रेनाइट' नामक चट्टानों की अपेक्षा अधिक भारी हैं।

(४) महाद्वीपों के चट्टानों में 'ग्रेनाइट' का बाहुल्य है और ग्रेनाइट में रेडियम वाली खनिजों का अंश अन्य पत्थरों की अपेक्षा अधिक होता है। यह अनुमान करना ठीक है कि इस प्रकार के पत्थर की सीमा धरातल से कुछ ही नीचे तक होगी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो इसकी रेडियम की खनिजों से निकली हुई गर्मी से पत्थरों को सदैव के लिये पिघली हुई दशा बनी रहती। इसलिये पृथ्वी के भीतर की चट्टानें 'ग्रेनाइट' से भिन्न होंगी।

(५) भूकम्पों की धाराओं के अध्ययन से पता चलता है कि पृथ्वी की बाहरी ग्रेनाइट की तह १० मील से ४० मील तक मोटी होगी और वह किसी भारी तह के ऊपर है।

पृथ्वी का भीतरी भाग भिन्न भिन्न घनत्वों के पदार्थों, के कटिबन्धों (zones) में बना हुआ है यह बात भूकम्पों के 'प्रारम्भिक कम्पन' के गुणों से सिद्ध होती है। 'प्रारम्भिक कम्पन' भूकम्पों की मुख्य कम्पन के पहले चलने वाली छोटी किन्तु अत्यन्त वेगवती कम्पन की धारायें हैं जो पृथ्वी के भीतर ही भीतर भूकम्प के केन्द्र से कम्पन-लेखक स्थान की ओर त्रिज्या (chord) की दिशा में चलती हैं।

(१) प्रारम्भ में होने वाले कम्पनों को जिनमें दबाव की गति हुआ करती है 'प्रारम्भिक प्रथम लहरें' कहते हैं। बाद में आने वाले प्रारम्भिक कम्पनों को जिनमें विकृत गति होती है 'प्रारम्भिक द्वितीय लहरें' कहते हैं। ये दोनों प्रकार की लहरें १८०० मील की गहराई तक पृथ्वी के नीचे जितनी ही अधिक गहराई में जाती हैं उतनी ही वेगवती होती जाती हैं। परन्तु ७५० मील की गहराई पर इन दोनों लहरों की गति-बृद्धि में यकायक कमी पड़ जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रायः ७५० मील की गहराई तक की पृथ्वी की बनावट उसके नीचे के अंशों की बनावट से भिन्न है।

(२) प्रायः १८०० मील की गहराई पर प्रारम्भिक लहरों की दशा यकायक बदल जाती है। प्रथम लहरों की गति ८ मील प्रति घंटे से पांच मील प्रति घंटा रह जाती है और द्वितीय लहरें बिल्कुल धीमी पड़ जाती हैं। इसके अतिरिक्त प्रथम लहरें अधिक गहराई पर जाते समय उसी प्रकार झुक जाती हैं जिस प्रकार प्रकाश की किरणें हवा से पानी में जाते समय झुक जाती हैं। इससे यह स्पष्ट है कि पृथ्वी के अन्तरंग का भाग १८०० मील से नीचे (प्रायः ४००० मील के व्यास से अधिक) का भाग उससे चारों ओर बाहर वाले भाग से बनावट और दशा में बिल्कुल भिन्न है।

(३) प्रारम्भिक द्वितीय लहरें तरल पदार्थों में अच्छी तरह नहीं चल पातीं। ये लहरें १८०० मील तक पृथ्वी में ठीक प्रकार चलती हैं इसलिये कम से कम १८०० मील की गहराई तक पृथ्वी का भीतरी भाग ठोस है। उसके नीचे ये लहरें बहुत मन्द पड़ जाती हैं परन्तु इससे यह अनुमान लगाना ठीक नहीं कि उस गहराई पर पृथ्वी तरल पदार्थों से बनी है। यदि ऐसा होता तो पृथ्वी में भी समुद्र की तरह सूर्य और चन्द्र के आकर्षण से बड़े बड़े ज्वार भाटे उत्पन्न होते। इसलिये पृथ्वी का अन्तरंग भाग तरल पदार्थ से नहीं, वरना ठोस इस्पात के समान पदार्थ से बना है।

पृथ्वी की आन्तरिक बनावट—इस प्रकार की मानी जाती है:—

(१) *बाह्य भूपटल*—इसका अधिकांश एल्यूमीनम, पोटेशियम और सोडियम के सिलीकेट से बना हुआ है। इसका निर्माण 'ग्रेनाइट' पत्थर के समान है। घनत्व प्रायः ५.७५ से २.९० तक है। गहराई महाद्वीपों के नीचे प्रायः ४० मील, अटलांटिक महासागर के नीचे प्रायः १२ मील और प्रशान्त महासागर के नीचे कुछ भी नहीं के समान है।

(२) *अन्तरीय वरण*—इसमें मैग्नेशियम और केल्शियम के ही सिलीकेट प्रधान हैं। इसका निर्माण 'वैशाल्ट' नामक पत्थर के समान है। घनत्व ४० मील की गहराई पर ३.१ से लेकर ७५० मील की गहराई पर ४.७५ तक है। यह कटिबन्ध ऊपर के कटिबन्ध के नीचे भूतल से ७५० मील की गहराई तक है। प्रशान्त महासागर के तो पेंदे से ही यह प्रारम्भ हो जाता है।

(३) *मध्य कटिबन्ध*—इसमें मैग्नेशियम और कैल्शियम के सिलीकेट के साथ ही लोहे और निकिल की धातुएँ भी सम्मिश्रित हो गई हैं। इस प्रकार का निर्माण हम कुछ उल्काओं में पाते हैं। घनत्व ४.७५ से ५.० तक है। यह कटिबन्ध ७५० मील की गहराई से १८०० मील की गहराई तक है।

(४) *केन्द्रीय नाभि*—इसमें केवल लोहे और निकिल धातुएँ हैं। इसका घनत्व ११.० है। यह कटिबन्ध १८०० मील की गहराई से केन्द्र तक, अर्थात ३८६० मील की गहराई तक है। इस प्रकार का निर्माण हमको कुछ उल्काओं में मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ़्रीका का भैंसा

शेर, चीता, हाथी और गैंडे आदि जानवरों को अफ्रीका के बनों में देखकर लोग भयभीत हो जाते हैं परन्तु बहुधा वे लोग भैंसों को घरेलू पालतू पशु समझते हैं और उन्हें ख़तरनाक न समझ कर उनके समीप जाने का साहस करते हैं परन्तु जो लोग अफ्रीका के जंगली पशुओं का ज्ञान रखते हैं यदि उनसे पूछा जाय तो वह अवश्य ही बतलावेंगे कि भैंसा अफ्रीका के सबसे ज्यादा खतरनाक पशुओं में से है।

जिस प्रकार हाथी की प्राकृतिक कोमलता का सर्वनाश हो गया है शायद उसी प्रकार मनुष्य के भय के कारण भैंसे की प्रकृति भी बदल गई है। वह मारे जाने के भय से मनुष्य जाति का बैरी हो गया है और उसे भी अपना शत्रु समझने लगा है। भैंसे की प्रकृति है कि वह जिस वस्तु को अजनबी समझता है उसे समीप आकर देखने का साहस करता है, परन्तु यदि उस पर गोली चलाई गई तो वह गुस्से के कारण अपना बदला लेने के लिये पागल हो जाता है।

घायल हो जाने पर भैंसा या तो शीघ्र ही आक्रमण करता है या वह झाड़ियों के बीच चला जाता है। भैंसे की आदत से जानकारी न रखने वाला मनुष्य उसका पीछा करता झाड़ियों के अन्दर चला जाता है और एकाएक उसे प्रतीत होता है कि भैंसा एक चक्कर बनाकर उसके पीछे आ गया है और उस पर आक्रमण करने के लिये तत्पर है।

ऐसी दशा में यदि वह फिर गोली नहीं मार सकता तो वृक्ष पर चढ़ कर अपनी जान बचाने का प्रयत्न करता है। भैंसा अपने शत्रु को वृक्ष पर चढ़ जाने के बाद छोड़ कर चला नहीं जाता है वरन् वृक्ष के चारों ओर चक्कर लगाता रहता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य या तो भूक-प्यास के कारण मर जाता है या रात में वृक्ष से उतर कर भागने का साहस करता है। जब वह रात में वृक्ष से नीचे आता है तो देखता है कि उसका बैरी भैंसा फिर भी खड़ा उसकी बाट जोहता रहता है। इस प्रकार दोबारा फिर मनुष्य का बचकर निकल जाना असम्भव सा हो जाता है।

भैंसे मनुष्य को देख कर उन पर आक्रमण कर देते हैं। गत महायुद्ध के समय एक बार जब कि एक अँग्रेजी सेना अफ्रीका के बनों में होकर आ रही थी, सहसा उससे मार्ग में भैंसों के एक समूह से भेंट हो गई। समूह ने सेना पर धावा मार दिया और घमासान युद्ध होने पर भी कई एक सैनिकों को मार डाला तथा घायल कर दिया।

भैंसे दिन में नहीं चरते हैं वह दिन में घने बन में छिपे रहते हैं और रात के समय चरते हैं। जहां कहीं भी भैंसों पर हमला किया गया है वह स्थान को त्याग कर बन की ओर चले गये हैं परन्तु प्राकृतिक रूप से वह मनुष्य के निवास स्थान के समीप रहना अधिक उपयोगी समझते हैं।

भैंसा दलदल, नम भूमि में रहना अधिक पसंद करता है। वह उस स्थान को जहां पर २ या तीन फुट गहरा पानी और नीचे कीचड़ होती है बहुत पसंद करता है। वह गरमी सहन नहीं कर सकता नहाना उसे बहुत अच्छा लगता है। वह घंटों पानी तथा कीचड़ में रहता है। तैरने में भैंसा बड़ा तेज़ होता है। वह चार पाँच मील तक विक्टोरिया झील के अन्दर तैरता पाया गया है।

चूंकि भैंसा पानी बहुत पसंद करता है इस कारण जब अधिक गरमी पड़ने लगती है तो पानी न पड़ने पर अपने स्थानों को छोड़ घने बनों में एकान्त स्थानों पर चला जाता है। वह रात के समय ही चलता है क्योंकि जानता है कि मनुष्य उसका बैरी है।

जब कभी भी शेर भैंसों के बच्चों को चुरा ले जाते हैं, भैंसे शेर को अपना बैरी समझने लगते हैं। वह शेर का सामना मजबूती के साथ करते हैं। शेर के लिये उन पर आक्रमण करना कोई सरल काम नहीं होता है।

अफ्रीका के बनों में भैंसा के तीन बड़े शत्रु हैं। सबसे बड़ा शत्रु मनुष्य उसके बाद शेर है। भैंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का तीसरा बड़ा बैरी एक प्रकार का चर्म रोग है जो उन्हें बहुधा होता है। जब भैंसे इस रोग से पीड़ित होते हैं तो वह अपना जंगलीपन भूल जाते हैं और मनुष्य उनके समीप तक जा सकता है और चुपचाप बैठे अथवा खड़े मनुष्य की ओर लालायित दृष्टि से देखते रहते हैं। हमारे लिये यह कितने वेदना की बात है कि मनुष्य ने पालतू जानवरों को भी किस प्रकार अपना बैरी बना लिया है।

★ ★ ★

ब्रिटेन की मध्यपूर्वी युद्ध-कौशल नीति

जर्मनी का ध्येय है कि वह ब्रिटिश साम्राज्य को नष्ट कर दे। १९४१ ई० के रूस के भीषण युद्ध के पश्चात् भी आज यही बात फिर भी सत्य है। ब्रिटिश द्वीप समूहों को नष्ट करने के पहले सोवियत रूस को परास्त करना भी आवश्यक था। रूस अब तक पराजित नहीं हुआ है परन्तु धीरे धीरे युद्ध समस्त संसार में फैल गया है।

ब्रिटिश द्वीप समूह को छोड़ कर मिस्र के नहरों का प्रदेश ब्रिटिश साम्राज्य का एक प्रधान क्षेत्र है। साम्राज्य के आने जाने वाले मार्गों पर अधिकार प्राप्त करने के लिये जर्मनी इच्छुक है कि वह इस प्रदेश पर अधिकार करे परन्तु समुद्रीयशक्ति की न्यूनता के कारण अब तक उसे सफलता नहीं प्राप्त हुई है। रूम सागर के समुद्रीय मार्गों पर अधिकार प्राप्त न होने के कारण धुरी-राष्ट्र मिस्र पर कोई बड़ा सामुद्रिक जहाजों का आक्रमण करने में असमर्थ हैं। इटली के कारण ब्रिटेन के सामान पहुँचाने वाले पथ रक्षक जहाजी सेना को मध्य पूर्वी प्रदेश को सामान पहुँचाने के लिये गुडहोप अंतरीप का चक्कर लगा कर जाना पड़ता है। इस बड़े चक्कर से ब्रिटिश जहाजी बेड़े पर एक प्रधान भार पड़ गया है। बहुत ही आवश्यक कार्य की पूर्ति के लिये भूमध्य सागर होकर बड़ी ब्रिटिश पथ रक्षक सेना पूर्व की ओर जाती है। गुड-होप अंतरीप होकर जाने में तिगुना समय तथा जहाजों का काम पड़ता है। यदि यही जहाज अट-लांटिक सागर के युद्ध में लगा दिये जाते तो शायद युद्ध का निपटारा हो जाता और ब्रिटिश सेना योरुप के पश्चिमी देशों में अपने पैर (यदि आवश्यकता पड़ती तो) जमा सकती।

कुछ समय तक भूमध्य सागर में इटली के जहाज की अधिकता रही परन्तु फिर ब्रिटिश जवांमर्द जल सैनिकों की वीरता और साहस के कारण वहां ब्रिटिश जल सेना का प्रभुत्व हो गया है

स्थल में भी इटली को भी पराजित होना पड़ा है और गोंडोर के पतन होने से समस्त एबीसीनिया उनके पंजे से निकल गया है। ग्रेजियानी ने मिस्र पर जो आक्रमण किया था उसमें भी उसे भीषण हानि उठानी पड़ी है। यूनान की सहायता, क्रीट की रक्षा और डंकिर्क की सैनिक हानि के कारण जनरल वेविल ने बंगाजी पर जो विजय प्राप्त की थी उसका संगठन करना असम्भव हो गया और मिस्र की पश्चिमी सीमा का भय फिर भी बना रहा फिर भी ब्रिटिश समुद्री शक्ति ने पश्चिमी भाग पर अधिकार जमाये रखने में शत्रु को बहुत बड़ी हानि पहुँचाई।

मिस्र को उत्तर-पूर्व और पश्चिम की ओर से भय बना है। मिस्र पर ब्रिटिश अस्तित्व स्थापित रखने के लिये इराक, ईरान और सीरिया की स्थिति भी ठीक रखना अनिवार्य था। इसी कारण इन तीनों प्रदेशों पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। अधिकार जमाने में ब्रिटेन को बड़ी भारी युद्ध-कौश-लिक विजय प्राप्त हुई है। भीतरी आने जाने वाले साधनों के कारण जर्मनी को बड़ा लाभ है और वह शीघ्रातिशीघ्र अपनी सेना तथा सामान पहुँचा सकता है।

जर्मन हाईकमांड रूसी सेना को टुकड़े टुकड़े कर देने में बुरी तरह असफल हुआ है इसलिये रूसी सीमा में उसके दो दृष्टि कोण हैं। १—ईरान होकर अमरीका तथा इँगलैंड से जो युद्ध-सामग्री रूस पहुँचती है उसे वह रोकना चाहता है। २—अधिक से अधिक रूसी कारखानों को वह रूसी अधिकार से अलग करना चाहता है। जर्मनी का विश्वास है कि यदि डोनेज बेसिन, काकेशिया के तेल के कुएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मित्र राष्ट्रों की सहायता से रूस अलग कर दिया जावे तो वह योरुप के जर्मन अधिकृत देशों की सहायता से रूस को विजय करने में सफलता होगी।

उपर्युक्त जर्मन विचारों से सिद्ध होता है कि मास्को और काल सागर के मध्य में जो जर्मन आक्रमण हुये उनमें शत्रु को विमानों तथा टैंकों की बड़ी हानि हुई है। ईरान और ईराक से काकेशिया को रेलवे लाइनें जाती हैं। तिफलिस उनका एक बड़ा केन्द्र है। कर्च पर शत्रु ने जो अधिकार किया है। उससे प्रतीत होता है कि रोस्टोव सामना करने में सफल होता है तो फिर अजव सागर पर हवाई आक्रमण अवश्य होगा। इस आक्रमण से डोन नदी की लाइन नष्ट की जावेगी और टूला से स्टेलिनग्राड की ओर जर्मन शत्रु पिंसर सेना बढ़ेगी। इस प्रकार शत्रु सेना अस्तराखान नगर पर अधिकार प्राप्त करने के लिये अग्रसर होगी। इसके अतिरिक्त यदि अजव सागर के पूर्व कोई जर्मन सेना पहुँच जाती हैं तो उससे रूस के कालासागरीय जहाजी अड्डे नोवोरोसिस्क को भय उत्पन्न हो जाता है। सेवस्तोपोल और नोवोरोसिस्क के चले जाने से रूसी जहाजी बेड़ा भीषण संकट में पड़ जावेगा। उसके लिये केवल बातूम का उथला बन्दरगाह शेष रह जावेगा। इसी बीच जर्मनी रूमानी तथा बल्गेरियन बन्दरगाहों पर अपने छोटे छोटे जहाजों का बेड़ा इकट्ठा कर रहा था उनकी सहायता के लिये बड़े लड़ाका जहाज की आवश्यकता है इसलिये हो सकता है कि जर्मनो टर्की पर डार्डनलीस का मार्ग खोलने के लिये दबाव डाले जर्मनी ने शायद इसी दृष्टि से टर्की को एक भारी रकम फौजी काम के लिये उधार दी है। यदि टर्की जर्मनी की बात टाल देगा तो फिर योरुपीय टर्की पर इस आवश्यक समुद्री द्वार पर अधिकार प्राप्त करने के लिये आक्रमण होगा। यदि इस मार्ग में ब्रिटिश जहाजी बेड़ा किञ्चित् मात्र भी रोक डालेगा तो फिर क्रीट डांडेकेनीस और एजियन सागर के द्वीपों में उतरी हुई छतरी शत्रु सेना का प्रयोग होगा। साथ ही साथ इटली का बचा हुआ जहाजी बेड़ा भी काला सागर में पहुँचेगा और फिर काकेशिया पर जल तथा स्थल दोनों ओर से आक्रमण होगा।

जर्मनी को मिट्टी के तेल की बड़ी आवश्यकता है। रूसी युद्ध में उसके तेल के भंडार का एक बड़ा भाग व्यय हो चुका है। योरुपीय राष्ट्रों और इटली को भी तेल की बहुत ज़रूरत है। मिट्टी के तेल की कमी के कारण आने जाने के साधनों में शत्रु को बड़ी कठिनाई पड़ रही है। इसलिये काकेशिया का तेल जर्मनी के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही साथ डार्डेलीस के खुल जाने से धुरी राष्ट्रों के तटीय जहाजों का चलना आरम्भ हो जावेगा जिससे जर्मनी की रेलों का भार कम हो जावेगा। सलोनीका और ट्रीस्ट में काकेशिया का तेल एकत्रित करके पश्चिमी देशों को वितरित किया जावेगा।

सम्भव है कि काकेशिया पर अधिकार जमाने के लिये जर्मनी को किसी प्रकार के समुद्री आक्रमण की आवश्यकता न होगी। स्थली आक्रमण (होफमैन योजना) द्वारा काकेशिया पर अधिकार प्राप्त करना सम्भव नहीं है। रोस्टोव और अस्तराखान पर शत्रु अधिकार होने के बाद काकेशिया के तेल के प्रदेश को मार्ग खुल जावेगा। वहां से एक खराब तटीय सड़क जोवारोसिस्क, टौप्से और पोही होकर बातूम जाती है। दूसरी जार्जियन सैनिक सड़क स्टाव्रोपोल आडंजोनीकिडज्ञ होकर तिफिलिस जाती है। यह सड़क अच्छी है परन्तु चढ़ाव-उतार ऐसे हैं कि सरलता पूर्वक बन्द की जा सकती है। तीसरी सड़क अस्तराखान से बाकू को जाती है यह समतल है। इस तीसरे मार्ग होकर जर्मन सेना काकेशियन पर्वतीय श्रेणी को घेर सकती है और रूस को उसके मित्र राष्ट्रों से अलग कर सकती हैं। जर्मन सेना तेल के प्रदेश पर अधिकार जमाकर ईरान (फारस की खाड़ी और तेल के प्रदेश) ईराक और सिरिया के लिये भय का कारण बन जावेगी और फिर टर्की पर जर्मनी का प्रभुत्व भी जम जावेगा।

रूसी लोग वीरता के साथ जर्मन सेना का सामना कर रहे हैं। ईरान, ईराक और सिरिया में ब्रिटिश सेनाएँ पड़ी हैं। लिविया के मैदान में यदि ब्रिटिश सेना शत्रु सेना को परास्त कर दे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीका के बाहर निकाल दे तो फिर काकेशिया में ब्रिटिश सेना का शीघ्र से शीघ्र एकत्रित होना सरल हो जावेगा। यदि रूसी सेना जर्मन सेना को फँसा लेती है तो फिर ब्रिटिश सेना इटली पर धावा मारेगी।

इस प्रकार मित्र सेना टयूनिस तक लिबिया में अधिकार प्राप्त करके विची सरकार की चाल को कसौटी पर कसेगी। यदि विची सरकार जर्मनी की ओर झुकेगी तो उत्तरी अफ्रीका पर सिरिया और मेडेगास्कर की भांति ब्रिटिश सेनाएँ अधिकार कर सकती हैं। डाकर जाने वाले शत्रु जहाजों पर रोक लग सकती है। उत्तरी अफ्रीकन तट पर अधिकार प्राप्त कर लेने से हवाई और जहाजी अड्डों पर कब्जा हो जावेगा और भूमध्य सागरीय मार्ग खुल जावेगा इस जल-मार्ग के खुलने से वहां के खाली हुये जहाज अटलांटिक सागरीय तथा अन्य दूसरे सामुद्रिक युद्धों में भाग लेकर विजय प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार आशा की जाती है कि १९४२-४३ ई० में युद्ध का कुछ न कुछ निपटारा अवश्य हो जावेगा।

★ ★ ★

समालोचना

देशी राज्य शासन—रचयिता श्री० भगवान दास जी केला, प्रकाशक भारतीय ग्रन्थ माला, वृन्द्रावन, पृष्ठ संख्या ५६०, मूल्य ३॥)। यह पुस्तक दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में अँग्रेज़ों के आने के पूर्व से आधुनिक काल तक की देशी राज्यों की राजनैतिक स्थिति पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला गया है। दूसरे भाग में बड़े बड़े राज्यों तथा संक्षिप्त सामूहिक रूप में छोटे राज्यों तथा शासकों का वर्णन है। इस पुस्तक को लिखकर केला जी ने हिन्दी संसार की एक बड़ी भारी कमी की पूर्ति कर दी है। इस पुस्तक के पढ़ने से पाठकों को देशी राज्यों की राजनैतिक समस्याओं, शासन पद्धति-और नागरिक स्थिति का आवश्यक ज्ञान सरलतापूर्वक प्राप्त हो सकता है। पुस्तक में भारतवर्ष के प्रत्येक भाग के देशी राज्यों की शासनप्रणाली, नये सुधार, प्रजा की सार्वजनिक और राजनैतिक हलचलों आदि के सम्बन्ध में पाठकों के लिये अमूल्य सामग्री भरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाचता हुआ भेड़ का बच्चा

एक ग़रीब आदमी के एक लड़का था। जब लड़का १५ साल का हो गया तो उस आदमी ने लड़के को नौकरी ढूँढ़ने के लिये भेजा। कुछ दिनों के बाद वह एक गड़रिये के यहाँ नौकर हो गया।

गड़रिये के यहाँ वह भेड़ें चराया करता था। वह भेड़ों को चराने खेत तथा मैदान में जाता था। गड़रिये ने उसे अपनी बांसुरी भी दे दी। लड़का खुशी खुशी भेड़ों को चराता था। वह दिन भर सुख के साथ बांसुरी भी बजाया करता था।

भेड़ों के समूह में एक भेड़ का बच्चा था। उसके बाल सोने के थे। वह भेड़ का बच्चा नाचता था। जब कभी भी चरवाहा बाँसुरी बजाता था। वह नाचा करता था। चरवाहे को उस भेड़ के बच्चे से बड़ा प्रेम हो गया। जब गड़रिये ने चरवाहे से तन्खाह लेने को कहा तो उसने उसी बच्चे को माँगा।

चरवाहे ने साल भर गड़रिये के यहाँ नौकरी की। उसे साल भर के वेतन के बदले वह भेड़ का बच्चा मिला।

वह लड़का उसे ले नौकरी की खोज में चला। जब रात हो गई तो वह मार्ग के बगल में एक झोंपड़े में ठहर गया।

उस झोंपड़े में एक लड़की थी। वह उस बच्चे के सुनहरे बाल देखकर मोहित हो गई। वह उसे चुराना चाहती थी। वह आधी रात को उठी और बच्चे को पकड़ा किन्तु उसका हाथ बालों में चिपक गया। उसने छुड़ाने की कोशिश की किन्तु हाथ नहीं छूटा।

चरवाहे ने भी छुड़ाने का प्रयत्न किया; लेकिन हाथ नहीं छूटा। इसलिये चरवाहे ने दोनों को अपने साथ ले लिया। जब वह बाँसुरी बजाता था तो भेड़ का बच्चा तथा लड़की दोनों साथ साथ नाचते थे।

एक बार जब वे नाच रहे थे तो एक वृद्धा स्त्री ने देखा। उस स्त्री ने कहा इस प्रकार अपना समय बेकार खराब न करो। लड़की ने नाचना बन्द नहीं किया। स्त्री ने एक पिन लेकर लड़की के चुभो दिया। पिन लड़की के शरीर में चिपक गई। वह वृद्धा स्त्री भी उस पिन से चिपक गई। जब चरवाहे ने बांसुरी बजाई तो भेड़ का बच्चा, लड़की और स्त्री सभी नाचने लगे।

थोड़ी देर पश्चात् उसी ओर से एक पादड़ी साहब आये। उन्हें नाचता देखकर पादड़ी साहब बहुत नाराज़ हुए। उन्हें वृद्धा स्त्री पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने एक लाठी स्त्री की पीठ पर मारी।

लाठी का लगना था कि लाठी स्त्री से चिपक गई। पादड़ी साहब भी लाठी से चिपक गये। बांसुरी के बजते ही भेड़ का बच्चा, लड़की, स्त्री और पादड़ी सभी नाचने लगे।

वहीं समीप ही एक राजा था। उसके एक लड़की थी। लड़की बहुत बीमार थी। बहुत से वैद्य, डाक्टर आये किन्तु वह अच्छी न हुई। एक डाक्टर ने सलाह दी, यदि लड़की हँसने लगे तो अच्छी हो जाय।

राजा ने हँसाने वाले को बहुत सा इनाम देने को कहा। बहुतों ने कोशिश की किन्तु वह न हँसी। राजा ने कहा जो उसे हँसा देगा उसी के साथ राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी की शादी होगी। इतने पर भी उसे कोई हँसा न सका।

राह चलने वालों ने यह समाचार चरवाहे से कहा। चरवाहा राजा के पास जाने के लिये तैयार हो गया।

जब वह राजा के पास गया तो राजकुमारी महल के द्वार पर बड़े कमरे में खड़ी हो गई। चरवाहे ने बाँसुरी बजाना आरम्भ किया। बाँसुरी का बजना था कि भेड़ का बच्चा, लड़की, वृद्धा स्त्री और पादड़ी साहब सबके सब नाचने लगे। सभों ने बहुत अच्छा नाच दिखाया। नाच इतना सुन्दर तथा हास्यप्रद था कि राजकुमारी खिलखिला कर हँसने लगी।

राजकुमारी के हँसते ही भेड़ के बच्चे ने अपना शरीर हिलाया। जैसे ही उसका शरीर हिला, लड़की, स्त्री और पादड़ी सब अलग अलग हो गये। अलग होने पर भी वे नाचते रहे क्योंकि राजकुमारी हँस रही थी।

चरवाहे की शादी राजकुमारी के साथ हो गई। शादी का समारोह ७ दिन तक जारी रहा। कंजर सारङ्गी वालों की मंडली आई और गाना बजाना हुआ।

★ ★ ★

भारतीय चाय का व्यापार

भारत के गवरनर जनरल लार्ड विलियम बैंटिंग ने भारत के अन्दर चाय की उपज की ओर ध्यान दिया और जनवरी १८३४ ई० में चाय सम्बन्धी एक समिति की स्थापना किया। आसाम में चाय के पौदे का पता लगा। इस बात का पता लगाने वाला सबसे पहला व्यक्ति ब्रूम था। समिति ने चीनी चाय के सामने आसाम की चाय को पसंद नहीं किया और १८३४-४० के मध्य तक कई एक वाटिकाओं तथा स्थानों पर चाय लगाई गई। १८३८ ई० में सबसे पहली भारतीय चाय लन्दन भेजी गई।

१८७० ई० के पश्चात् चाय का रोजगार दिन प्रतिदिन उन्नति करता चला आ रहा है। वर्तमान समय में भारत में लगभग ८२५,००० एकड़ भूमि में चाय की खेती होती है और वार्षिक उत्पत्ति ४५ करोड़ पौंड की है। चाय के रोजगार की उन्नति तभी होती है जब कि अधिक से अधिक चाय अच्छे भाव पर बाहर भेजी जा सके। जब चाय के रोजगार पर संकट पड़ा तो भारतीय सरकार ने तो १९३३ ई० में भारतीय चाय कौंसिल एक्ट पास किया जो १९३८ ई० तक लागू रहा उसके बाद कानून का समय फिर ५ साल के लिये बढ़ा दिया गया। भारतीय चाय को समुद्री मार्ग द्वारा भेजने में कुछ कड़ापन किया गया। सरकार की इस रोक द्वारा चाय का व्यापारिक संकट हट गया, रोजगार में व्यापार फिर होने लगा, इसी बीच वर्तमान महासमर का आरम्भ हो गया। जिससे रोजगार के लिये नई नई समस्याएँ उपस्थित हो गईं। चाय का मूल्य कुछ बढ़ गया है परन्तु विदेशी मांग में कमी हो रही है जिससे सम्भव है कि मूल्य फिर घट जावे।

दक्षिणी भारत के यूनाइटेड प्लांटर्स संघ के चाय की उपज के सभापति मिस्टर पी० ए० नेलोर ने प्रत्येक भाग में ५ प्रतिशत की घटती बतलाते हुये कहा कि इस कमी को स्वीकार करना कठिन है क्योंकि सरकार ने ४०० लाख पौंड डच पूर्वी द्वीप समूह की चाय को खरीदने का निश्चय किया है। सरकार के सामने दो प्रश्न थे १—देशी खपत किस प्रकार कम की जावे दूसरे यह कि डच चाय उगाने वाले जो बार बार शिकायत (लंका और भारत के मध्य जो प्रबन्ध हुआ था) कर रहे थे उसकी पूर्ति किस प्रकार करें। डच चाय उगाने वालों का कहना था कि भारत और लंका के मध्य जो समझौता हुआ है उससे उनकी चाय का बिकना बिलकुल असम्भव हो गया है। डच पूर्वी द्वीप समूह में १६२०००००० पौंड चाय पैदा होती है जिसमें से हालैण्ड ने केवल २९०००००० पौंड चाय लिया था शेष चाय अमरीका और आस्ट्रेलिया भेजी गई थी जिसका प्रभाव इङ्गलैंड के पुनः निर्यात पर अवश्य पड़ा होगा।

१९३८-३९ ई० में भारत के अन्दर ९६० लाख पौंड चाय की और १९३९-४० ई० में १०२ लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौंड की खपत भारत में हुई। इस ६० लाख पौंड की अधिक खपत का मुख्य कारण चाय का भारतीय नगरों में तथा गांवों के अन्दर प्रचार था। मिस्टर पी० जी० गिरीफिथ्स का कहना है कि भारत के अन्दर चाय की अधिक से अधिक स्थाई खपत हो सकती है। वह भारतीय स्कूलों के अन्दर भी चाय को चलाना चाहते हैं। १९४० ई० में चाय उगाने वालों को इस समस्या पर भी ध्यान देना पड़ा था। कि विदेश से जो खाद आई थी उसका मूल्य कहीं अधिक बढ़ा था।

चाय के रोजगार की स्थिति बताने के लिये नीचे तालिका दी जाती है।

चाय की उपज, काम करने वालों की संख्या और प्रति एकड़ की उपज

वर्ष	आसाम की चाय भूमि १०० एकड़ में	चाय भूमि का कुल जोड़ १०० एकड़ में	आसाम को उपज एक हजार पौंड में	कुल उपज का जोड़ एक हजार पौंड में	औसत से प्रति दिन काम करने वालों की संख्या १०० में	प्रति एकड़ की उपज
१९३४	४३६	८२६	२,३२,८३५	३,९९,२५१	९०४	५२२
१९३५	४३७	८३२	२,२६,४१७	३,९४,४२९	८९९	५१३
१९३६	४३९	८३४	२,२३,३२५	३,९५,१८०	८७४	५१८
१९३७	४४०	८३४	२,४१,५२७	४,३०,२५०	८७७	५६२
११३८	४३९	८३३	२,६१,०३७	४,५१,८६१	८९६	५८३
१९३९			२,०२,०००	४,६२,०००		

चाय का आयात, निर्यात और पुनः निर्यात

वर्ष	विदेशी चाय का भारत में आयात १००० पौंड में	निर्यात समुद्री मार्ग से १००० पौंड में	स्थली मार्ग से १००० पौंड में	पुनः निर्यात का जोड़ (१००० पौंड में	भारत में खपत १० लाख पौंड में
१९३४-३५	३,०७५	२२५,०७०	२२,१७७	११	७०
१९३५-३६	५,१२६	३१३,२६२	१५,८३८	६	८३
१९३६-३७	४,०८७	३०२,८२८	१५,७८६	१०	८१
१९३७-३८	३,६३९	३३५,०११	१३,९५५	१७	९१
१९३८-३९	४,०८२	३४८,९६२	१२,६९९	२२	९६
१९३९-४०	२,९८७	३१८,१५५			१०२

रजिस्टर्ड कम्पनियों की संख्या जो मिश्रधन चुका चुकी हैं।

वर्ष	कम्पनियां जो भारत में रजिस्टर्ड हुई हैं		कम्पनियाँ जो इंगलैंड और दूसरे देशों की रजिस्टर्ड हैं उनकी संख्या	
	संख्या	चुकाया हुआ मिश्रधन	संख्या	चुकाया हुआ मिश्रधन
१९३४-३५	४९०	१४,२२,४२,०००	१८२	२,६५,२९,०००
१९३५-३६	४८८	१४,१९,३८,०००	१८३	२,८४,९८,०००
१९३६-३७	४८६	१३,९८,६८,०००	१८६	२,८४,९४,०००
१९३७-३८	४३२	१२,८०,१९,०००	१९०	२,८७,९०,०००
१९३८-३९	४३८	१३,०२,८३,०००	१९२	२,७६,३८,०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त राष्ट्र इंगलैण्ड से भारतीय चाय का आयात तथा पुनः निर्यात

वर्ष	संयुक्त राष्ट्र इंगलैंड में आयात (१००० पौंड में	संयुक्त राष्ट्र इंगलैंड से पुनः निर्यात (१००० पौंड में)
१९३४	२,७५,२७७	३०,०३८
१९३५	२,७०,१०२	३२,६५४
१९३६	२,६८,७१०	३४,७०५
१९३७	२,७५,६७८	३४,९४९
१९३८	२,९२,५२४	३५,७९९

संयुक्त राष्ट्र तथा योरुप की भारतीय चाय निर्यात संख्या सैकड़े में है

	१९३७-३८ प्रति सैकड़ा	१९३८-३९ प्रति सैकड़ा
संयुक्त राष्ट्र इंगलैंड को	८६.१	८७.३
योरुप को	१.५	१.६
एशिया को	४.६	३.४
अमरीका को	६.५	६.९
आस्ट्रेलिया को	०.३	०.५
अफ्रीका को	०.३	०.३
	१००.०	१००.०

★ ★ ★

विची

बाइस जून सन् १९४० ई० को फ्रान्स तथा नाज़ी जर्मनी के मध्य जो क्षणिक संधि हुई है उसके अनुसार फ्रान्स का केवल ⅔ भाग स्वतंत्र रह गया है। जिस दिन क्षणिक संधि हुई उस दिन फ्रान्स की सरकार बोर्डे में थी। उसके पश्चात् कुछ समय तक क्लेमोंट फ्रांड में रही और फिर विची नगर में २९ जून को उठकर चली गई।

आठ दिन पश्चात् विची में फ्रान्सीसी सेनेट के सदस्यों तथा चैम्बर के प्रतिनिधियों में एक सम्मेलन हुआ और फ्रान्स के प्रजातंत्र राज्य का अंत कर दिया गया। उसके स्थान पर फ्रान्स का राज्य स्थापित किया गया जिसका मार्शल हेनरीफिलिप पेतां प्रधान बनाया गया।

विची नगर की जन संख्या फ्रान्सीसी सरकार के पहुँचने पर १७,००० थी। इस नगर की ओर समस्त संसार की दृष्टि लगी हुई है। इसी नगर में फ्रान्स के राजनीतिज्ञ अपने देश की स्वतंत्रता बेंच कर फ्रान्स के शासक होने का भूठा बहाना बनाये बैठे हैं।

विची में वृद्ध मार्शल पेतां को लोग आदर की दृष्टि से देखते हैं। फ्रान्स में पेतां का उसके भूतपूर्व सैनिक विजयों के कारण अब भी आदर होता है। इसी कारण उसके आधुनिक राजनैतिक असफलता की ओर भी फ्रान्स ने अपनी आंखें बन्द कर ली हैं। परन्तु पीरे लैवल विची का पर राष्ट्र मन्त्री ही सर्वशक्तिशाली है। लैवल अँग्रेजों से घृणा करता है और नाज़ी लोगों का सहायक है। इसी कारण वह अब फ्रांन्स का प्रधान बना दिया गया है। नाजी मास्टर उसमें सहायक हैं। फ्रान्स का अधिकांश भाग फ्रांस के शत्रु जर्मनी के पैरों के नीचे कुचला जा रहा है परन्तु विची सरकार उसकी चिंता न कर के अपने हितों के साधन में व्यस्त है। सेदान के मैदान में फ्रांस को कितने ही बार पराजय हो चुकी है परन्तु विची स्थान पर उसका सम्मान आदर धूल में मिला दिया गया।

जनरल हंटजिगर इस समय विची फ्रान्स का रक्षा मंत्री बनाया गया है। क्षणिक संधि के समय हंटजिगर मुख्य मध्यस्थ का काम कर रहा था। विची नगर के अधिकांश होटल सरकारी दफ़्तर बना दिये गये हैं। विची सरकार के न्याय मंत्री राफेल अलीबर्ट का दफ़्तर कार्टलोन होटल में बनाया गया है। पाल बाडोविन फ्रांस का भूतपूर्व परराष्ट्र मंत्री है वह भी विची सरकार में रक्खा गया है। जीन बोरोट्रा विची सरकार का एक सदस्य है वह फ्रांस के बच्चों को खेलने के लिये अधिक मैदान बनाने की योजना कर रहा है।

विची में पेट्रोल की कमी के कारण मोटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड़ियों का प्रयोग कम कर दिया गया है। साधारण प्रजा अब मोटर के स्थान पर बाइसिकिल का प्रयोग करती है। विची नगर में युद्ध से घायल हुये व्यक्तियों की संख्या कम नहीं है। वे सभी बेचारे किसी प्रकार अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। क्षणिक संधि के समाप्त हो जाने पर फ्रांस के जो लोग उत्तर की ओर से दक्षिण की ओर भाग आये थे उन्होंने विची सरकार से आज्ञा लेकर अपने निजी स्थानों, घरों और नगरों को पुनः लौट गये। एक बार में केवल ५० मोटरों को अधिकृत फ्रांस में प्रवेश करने की आज्ञा प्रदान की गई थी।

विची सरकार पर जर्मन सरकार ने बड़े बड़े प्रतिबन्ध लगाये हैं उनमें से एक यह भी है कि वहां बिना जर्मन सरकार की अनुमति के कोई वायुयान उड़ नहीं सकता है। सैनिक सेवा से छुट्टी पाकर फ्रांसीसी सैनिक खेती बारी तथा टूटे नष्ट स्थानों की मरम्मत के काम में लगा दिये गये हैं। १९४० ई० के ग्रीष्मकाल में फलों की अच्छी उपज हुई परन्तु फिर भी वहां चीनी की बड़ी कमी रही।

भोजन सामग्री का उत्पादन जो कुछ भी होता है उसका एक बड़ा भाग नाजी जर्मनी को दे दिया जाता है। विची कारखाने नाजी सेना को अस्त्र-शस्त्र बना कर देते हैं। विची सरकार नाजी सरकार के हाथों की कठपुतली है और उसे किसी प्रकार की भी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। इसी कारण क्षणिक संधि के विरुद्ध जर्मन सरकार की कई शर्तें विची सरकार को माननी पड़ी हैं।

★ ★ ★

सलोनिका

सलोनिका यूनानी मैसडोनिया प्रान्त की राजधानी है। यह नगर दक्षिणी-पूर्वी योरुप का मुख्य बन्दरगाह है। मसोलनी की आंखें इस नगर की ओर बहुत दिनों से लगी हुई थीं।

मैसडोनिया प्रान्त में खनिज सम्पत्ति बहुत है। चोमे (रंग तयार करने की धातु) मैंगनीज़, जस्ता, आंजन, लोहा, सीसा और इगनाइट धातुएँ वहां पाई जाती हैं। इस प्रान्त में नाज, चावल, लोबिया और रुई की उपज अच्छी होती है। लकड़ी और साधारण वस्तुओं का व्यापार होता है।

सलोनिका के बन्दरगाह से चारों ओर जहाजों द्वारा सामान भेजा जाता है। यह बाल्कन प्रायद्वीप का प्रधान बन्दरगाह है। मैसडोनिया प्रान्त के आयात का यह केन्द्र है। यहां चार बड़ी रेलों का अंत होता है।

इस बन्दरगाह पर अधिक सेना जमाकर मसोलनी अपना जहाजी अड्डा बनाना चाहता था जिससे उसके सबमेरीन (पनडुब्बी नावें) ब्रिटिश रूम सागरीय जहाजी बेड़े पर धावा कर सकें और टर्की तथा सिरिया पर दबाव डाल सकें।

ब्रिटिश सरकार भी एजियन सागरीय द्वीपों तथा सलोनिका में अपने अड्डे इसलिये बनाना चाहती थी कि वह वहां से यूनान और टर्की को सहायता पहुँचा सकेगी और धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध आक्रमण कर सकेगी।

सलोनिका एक प्राचीन नगर है। यहां पर वर्दर कलमरा द्वार के मध्य एक मेहराब मार्ग है। यह मेहराब गालेरियस राजा के समय में ३०५ और ३११ ई० के मध्य बना था। इस मेहराब मार्ग होकर पूर्व से पश्चिम की ओर प्रसिद्ध सड़क मार्ग है। सलोनिका का सफेद दुर्ग एक प्रसिद्ध स्थान है। इसी स्थान पर १९१४ ई० की बड़ी लड़ाई में ब्रिटिश सेना उतारी गई थी।

आधुनिक महासमर में जब इटली और जर्मनी की सेनाओं ने यूनान पर धावा मारा तो वह सलोनिका नगर पर अधिकार करने के पश्चात् इसे अपना केन्द्र बना दक्षिण की ओर बढ़ी थीं। यह एक प्रसिद्ध सामरिक स्थान है। यहां पर जहाजी तथा हवाई अड्डा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस की पूर्वी सीमा

रूस की पूर्वी सीमा पर युद्ध के सम्बन्ध में कोई बात निश्चय पूर्वक नहीं कही जा सकती। जापान की इच्छा है कि रूस और जर्मनी में संधि हो जावे। यदि जर्मनी हारने लगा तो जापान को अपने मित्र की सहायता के लिये साइबेरिया पर हमला करना पड़ेगा लेकिन जापान यह भी नहीं चाहता है कि जर्मनी की पूर्ण विजय हो।

यदि रूस और जापान में युद्ध छिड़ा तो जापान कोरिया और मंचूरिया में स्थित जापानी सेना से सहायता लेगा। कुछ सेना जापान से भी आवेगी। मंचूरिया की सेना मंचूरिया में रक्षा करने का काम करेगी और मंगोलिया की सीमा पर पहरा देगी। जापानी सेना मंचूरिया की बर्तमान राजधानी सिंकिंग में ठहरी हुई है। यह जापान की घरेलू सेना से पृथक है। इसके प्रधान सेनापति और दूसरे सेनापति अलग हैं। पहले कोरिया में केवल ४०,००० जापानी सिपाही थे। हाल में यह संख्या बहुत कुछ गढ़ गई है। युद्ध की दशा में यह जापान की रक्षित सेना होगी। छोटी छोटी टोलियों में आवश्यकता पड़ने पर यह सेना रूस पर आक्रमण करने के लिये भेजी जायगी। यहीं (हुंचुन) से दो डिवीजन (५०,००० सिपाही) ब्लाडीवास्टक पर आक्रमण करने के लिये जायँगे। आरम्भ में जापान प्रधान से सेना मँगाने की आवश्यकता न पड़ेगी। यदि आवश्यकता पड़ी तो आना-जाना सुगम है। जापानी बन्दरगाह शिमोनोसेंकी से कोरिया के बन्दरगाह फूसन तक पहुँचने में जहाज़ को केवल ८ घंटे लगते हैं। डेरियन तक पहुँचने में तीन दिन लगते हैं। साइबेरिया के तटीय प्रान्त पर शाखालिन द्वीप से आक्रमण किया जा सकता है। उस आक्रमण के लिये जापानी सेना साखालिन से टारटारी प्रणाली को पार करके आवेगी। सिंकिंग सिउल और तटीय बन्दरगाहों से भीतर के लिये सुन्दर सड़कें और रेलें गई हैं। जापानी सेना ब्लाडीवोस्टक के रेलवे लाइन काटने में लगेगी अथवा बैकाल झील से पूर्वी साइबेरिया मार्ग रोक देगी। हार्बिन और अन्य भीतरी जापानी सेना केन्द्रों के अतिरिक्त जापान ने उत्तरी पूर्वी कोरिया में सेइशील और रशीन के सुन्दर सुन्दर बन्दरगाह बना लिये हैं। १८ वर्ष पहले रशीन एक छोटा गांव था। यह रूसी सीमा के ठीक दक्षिण में ब्लाडीवोस्टक से केवल १०० मील दूर है। पड़ोसी पहाड़ियों की मिट्टी और चट्टानों से रशीन के दलदल पाट दिये गये। सुन्दर जहाज़ी घाटों और सड़कों के बन जाने से यह एक बड़ा उपयोगी बन्दरगाह बन गया है। यहाँ के हवाई स्टेशन से ब्लाडीवोस्टक पर हवाई आक्रमण करने के लिये हवाई जहाज़ भेजे जा सकते हैं। मंचूरिया में इस समय ५ लाख सिपाही और १००० हवाई जहाज़ हैं।

★ ★ ★

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

युद्ध के कारण इलाहाबाद में क़ागज़ का अकाल सा पड़ रहा है। कई महीनों से लगातार प्रयत्न करने पर भी आवश्यक कागज़ नहीं मिला, इधर 'भूगोल' पिछड़ भी गया था। अतः वाध्य होकर अक्तूबर और नवम्बर का 'भूगोल' पृष्ठ संख्या कम करके एक साथ प्रकाशित किया जा रहा है। भविष्य में कागज़ की सुविधानुसार 'भूगोल' की पृष्ठ संख्या रहेगी। आशा है सहृदय पाठक इस क्षणिक असुविधा को सहन करके 'भूगोल' को पूर्ववत अपनाने की कृपा करते रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्धों को ठीक से समझने के लिये गत विशेषांकों की भांति प्रस्तुत 'महासमर परिचय' भी बड़ा ही सहायक सिद्ध होगा। आजकल युद्ध सम्बन्धी समाचारों को पढ़ने तथा युद्ध की स्थिति को समझने के लिए प्रायः सभी उत्सुक रहते हैं। उनके लिए यह विशेषांक बड़ा महत्वपूर्ण प्रमाणित होगा। इसमें युद्ध के प्रारम्भ से लेकर जून १९४२ तक की युद्ध-सम्बन्धी सभी मुख्य मुख्य घटनाओं का समावेश कर दिया गया है। यह अंक सब तरह से पठनीय तथा संग्रहणीय है। लगभग १५० पृष्ठ के इस अंक में व्यक्तियों और युद्ध-क्षेत्रों के सैकड़ों चित्र हैं। भूगोल सदैव सामयिक उपयोगी तथा ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्रस्तुत करता रहा है और हिन्दी में एक बड़े अभाव की पूर्ति इसके द्वारा हो रही है। अतः हिन्दी-संसार से इसको सब प्रकार से पूर्ण प्रोत्साहन मिलना चाहिए। मूल्य १।।) रु० है।

'शिक्षक' अलीगढ़—

द्वितीय महासमर परिचय—संपादक पं० रामनारायण मिश्र बी० ए०। प्रकाशक—भूगोल कार्यालय, प्रयाग। मूल्य १।।) प्रस्तुत अंक हिन्दी संसार-चिर-परिचित मासिक 'भूगोल' का जुलाई विशेषांक है। इससे पूर्व भी सहयोगी ने एक महासमर अंक प्रकाशित किया था और यह अब उसका दूसरा प्रयास है। यह निर्विवाद है कि भूगोल के विद्वान संपादक प० रामनारायण जी का जीवन प्रयास भूगोल तथा इतिहास मंथन में ही रहता है और इस सम्बन्ध में आप ने प्रामाणिकता भी प्राप्त कर ली है। यही कारण है कि भूगोल के सभी विशेषांक सामयिक होने के साथ ही सामग्री में ठोस तथा प्रामाणिक होते हैं। प्रस्तुत विशेषांक में वर्तमान महायुद्ध की घटनाओं को बहुत ही मनोरंजक किन्तु सरल शैली में जनता के सम्मुख पेश किया गया है। इस अंक को पढ़ने से उन लोगों को भी जो महायुद्ध की घटनाओं का साथ साथ समाचार पत्रों द्वारा अध्ययन नहीं करते रहे हैं, सभी बातों की पूर्ण जानकारी हो जायगी। संपादक ने नक्शों को सम्मिलित कर अंक की उपादेयता और भी बढ़ा दी है। हमारी राय में प्रस्तुत अंक हिन्दी साहित्य की स्थाई निधि है। इस कड़े समय में भी इस प्रकार का अधिकांश सुन्दर तथा उपयोगी अंक निकलना 'भूगोल' जैसे कम मासिक पत्रों का ही काम है।

'जैन-संदेश' मथुरा—

भूगोल का द्वितीय महासमर परिचय—(संपादक पं० रामनारायण मिश्र बी० ए०) पृष्ठ संख्या १५५। भूगोल का यह विशेषांक हमारे सामने है। इसमें वर्तमान युद्ध के आरम्भ से ३० जून सन् ४२ तक की युद्ध सम्बन्धी सभी घटनाओं और पहलुओं पर लगभग १०० लेखों द्वारा प्रकाश डाला गया है। युद्ध सम्बन्धी घटनाओं को आसानी से समझने के लिये इसको पांच भागों पश्चिमी योरुप, रूसी युद्ध क्षेत्र, अफ्रीका का युद्ध क्षेत्र, प्रशान्त महासागर युद्ध क्षेत्र और चीनी युद्ध क्षेत्र में बांट दिया गया है। साथ ही लगभग १०० नकशे और चित्र दिये गये हैं जिनसे संसार का युद्ध क्षेत्र आंखों के सामने मानों मूर्त-रूप में दिखाई देने लगता है। वास्तव में यह विशेषांक युद्ध का एक सजीव इतिहास हो गया है और प्रयत्न करने पर भी युद्ध की सभी घटनाओं का ऐसा एकत्र संकलन हम अन्यत्र नहीं पा सकते। वर्तमान युद्ध की जानकारी रखने के लिये इस अंक की एक प्रति तो अवश्य ही रखनी चाहिये। लेखों नकशों और चित्रों के चयन और संकलन में जिस असाधारण परिश्रम, योग्यता और उदारता से काम लिया गया है। उसके विद्वान सम्पादक बधाई के पात्र हैं। इस अंक का मूल्य १।।) है, किन्तु 'भूगोल' (ककरहाघाट, इलाहाबाद) के ३) में ग्राहक बन जाने पर यह अंक उसी मूल्य में मिल जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

KAKRAHAGHAT, ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, Kakrhaghat, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

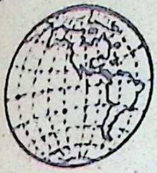

भूगोल

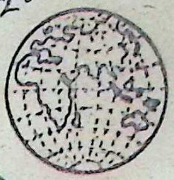

दिसम्बर, १९४२

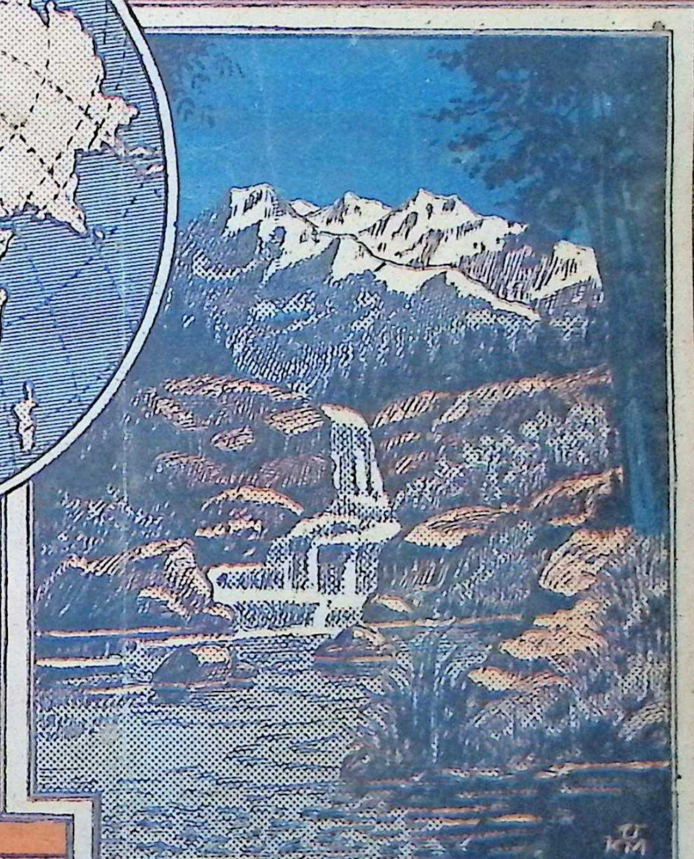

प्रकाशक –
'भूगोल'-कार्यालय
इलाहाबाद

सम्पादक –
पं० रामनारायण मिश्र
बी.ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भूगोल के उन्नीसवें वर्ष का विशेषाङ्क

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर

अन्य प्रतिष्ठित पत्रों की संक्षिप्त सम्मतियाँ

'ग्र मसुधार' इन्दौर—

१—**भूगोल मासिक पत्र का 'द्वितीय महासमर-परिचय'** :—नामक विशेषांक मूल्य १॥); किन्तु स्थायी वा नवीन वार्षिक ग्राहकों को वार्षिक मूल्य ३) भेजने पर वैसे ही मिलेगा। यह विशेषांक भूगोल के १९ वें वर्षारम्भ की १ से ३ तक की संयुक्त संख्या है जो मई १९४२ से जुलाई १९४२ तक के तीन महीनों के लिये जुलाई १९४२ के नाम पर प्रकाशित हुआ है। भूगोल पत्र तथा इस संयुक्तांक के भी सम्पादक भूगोल-संसार के ख्यातनामा पं० रामनारायणजी मिश्र बी० ए० हैं। प्रकाशक (मिलने का पता) भूगोल कार्यालय प्रयाग (इलाहाबाद)। वैसे तो 'भूगोल' का परिचय ग्राम-सुधार भाग २ संख्या २ (मई ४१ की संख्या) में दिया जा चुका है। फिर भी इस 'द्वितीय महासमर-परिचय' का परिचय दिये बिना रहा न गया। सन् १९४० में भी भूगोल 'महासमरांक' नामक विशेषांक निकाल चुका है; तत्सम्बन्धी नक्शों आदि का सुभीता कर देने के हेतु जनवरी १९४१ में 'महासमर परिशिष्टांक' नाम का एक परिचयात्मक एटलस स्वरूप अंक भी प्रकाशित किया जा चुका है। किंतु तब रूस जर्मन भिड़न्त हुई न थी, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका भी युद्ध से दूर था, जापान युद्ध क्षेत्र में कूदा न था; अस्तु, आज तो परिस्थिति ही भीषण हो चुकी है उस समय का योरुपीय युद्ध आज आस्ट्रेलिया-अफ्रिका आदि के भी समावेश से वास्तविक विश्व युद्ध बन गया है। अतः 'द्वितीय महासमर परिचयांक' की पूरी आवश्यकता थी परन्तु कागज की इस विकट महँगाई के काल में, देश को आन्तरिक क्रांतिमयी विप्लवी परिस्थिति में लगभग १०० विशेष नक्शे और १०० सचित्र व्याख्या पूर्ण चुने हुए लेखों का सम्पादन कर 'ग्राम-सुधार' के आकार प्रकार के लगभग १६० पृष्ठों का पोथा

[शेष कवर के तीसरे पृष्ठ पर देखिये]

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ	विषय		पृष्ठ
१—हमारी पृथ्वी की उत्पत्ति	...	१	८—बड़े तथा छोटे बन्दर	...	१७
२—दक्षिणी अफ्रीका	..	५	९—भारतवर्ष की पूर्वी सीमा	...	१७
३—स्टोनीहंजे	...	८	१०—बॉल्डर डैम (Boulder Dam)	...	१८
४—न्याग्रा प्रपात का जलमार्ग	...	९	११—गुफा की सेना	...	१९
५—काकेशिया—भारत का मार्ग	...	११	१२—जेरूसलेम	...	२०
६—विना तेल युद्ध की गाड़ी का चलना असम्भव है		१३	१३—मध्यवर्ती पूर्वी सामरिम क्षेत्र	...	२२
७—भारतीय जूट के कारखाने तथा राजागार		१४	१४—शिंपाजी (Chimpanzee)	...	२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १९] अगहन सं० १९९९, दिसम्बर १९४२ [सं० ८

हमारी पृथ्वी की उत्पत्ति*

[ले० निरंजनलाल शर्मा एम० एस-सी० (बनारस), एफ० ए० एस-सी० लेक्चरर-डिमोंस्ट्रेटर, ज्योलाजी डिपार्टमेन्ट, इण्डियन स्कूल आव् माइन्स, धानबाद]

सूर्य मण्डल में पृथ्वी का स्थान—ब्रह्मांड के अंगणित गोलक समूहों में से पृथ्वी भी एक है। इन गोलकों में कतिपय समूह जो सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते रहते हैं और जो औरों की अपेक्षा अधिक रूप में जाने जा चुके हैं सूर्य मण्डल के नाम से विख्यात हैं। सूर्य मण्डल में आने वाले गोलकों में तीन प्रधान प्रकार के होते हैं। १—केन्द्र स्थित सूर्य, २—ग्रह और ३—उपग्रह। मात्रा में सूर्य पृथ्वी की अपेक्षा ३,३२,००० गुणा बड़ा है और ग्रहों की मात्रायें गिनने पर भी, मण्डल की प्रायः सभी मात्रा सूर्य में ही सन्निहित है जो इस कारण से मण्डल में जिनकी संख्या अरबों में गिनी जाती है, सूर्य छोटा सा एक है। इस मण्डल से पार अत्यन्त दूरी पर हमारे विश्व से परे—चन्द्राकार नीहारिकायें हैं जो अपने परिमाण और तारिकाओं की संख्या में हमारे नक्षत्र मण्डल की तुलना में विशालकाय सिद्ध हो चुकी हैं। इनमें से कुछ तो इतनी दूर हैं कि प्रकाश की किरणों को उनके यहां से हमारे यहां तक आने में प्रायः दस करोड़ वर्ष से अधिक समय लग जाता है। उनमें से जो दिगन्त की व्यापकता में एक दूसरे से विलग विलग बिखरे हुये हैं प्रत्येक एक द्वीपाकार विश्व हैं।

सूर्य मण्डल के सदस्यों में समान रूपता—

(१) आठ ग्रहों (बुध, शुक्र, पृथ्वी, मङ्गल, वृहस्पति, शनि, वरुण और वारुणी) में से प्रत्येक गोलाकार है और प्रत्येक अपने मध्य भाग में उभरा हुआ होने के कारण 'तिर्यक गोल प्राय' (oblate spheroid) सा है।

(२) सभी अपनी झुकी हुई धुरी पर घूमते हुये केन्द्रीय सूर्य के चारों ओर चक्कर देते हैं यद्यपि सभी ग्रहों की धुरी का झुकाव और उनकी गति भिन्न भिन्न हैं।

(३) वे सभी केन्द्रीय सूर्य के चतुर्दिक एक ही समतल में, जो सूर्य की मध्य रेखा से कुछ झुका हुआ है, परिक्रमण करते हैं। वे एक अंडाकार मार्ग-कक्षा

---

*इस लेख को हिन्दी में लिखने को अपने विद्यार्थी-मित्र श्री सागर सिंह जी से बहुत सहायता मिली है जिसके लिये उनको धन्यवाद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर चलते हैं यद्यपि उपग्रह इसके अतिरिक्त अपने अपने ग्रहों के चारों ओर भी परिक्रमा करते हैं।

(४) वे सभी केन्द्रीय सूर्य से ही प्रकाश और गर्मी पाते हैं, यद्यपि इनका परिमाण दूरी के अनुसार भिन्न भिन्न है।

(५) अधिक सम्भव है कि प्रायः ये सभी गोलक प्रधानतः एक ही प्रकार के पदार्थों से बने हुए हैं।

सूर्य-मण्डल में वैषम्य—

(१) परिमाण में इन गोलकों में बहुत वैषम्य है—सूर्य के ८,६०,००० मील के व्यास से लेकर पृथ्वी के व्यास ७९०० मील और उपग्रहों के व्यास ३ हज़ार मील से कम तक। (चन्द्र व्यास प्रायः २१५० मील है)।

(२) सूर्य से उनकी दूरी भी भिन्न है जिसके कारण उनकी कक्षाओं का विस्तार और उनके परिक्रमण के समय में भी अन्तर है। इस परिक्रमण के लिये बुद्ध (जो सूर्य से निकटतम ३,६०,००,००० मील है) ८८ दिन, पृथ्वी ९,२७,५०,००० मील होने से ३६५ दिन से कुछ अधिक और वरुण सबसे अधिक दूर (२,७७,५०,००,००० मील) होने से प्रायः १६५ वर्ष लेते हैं। (चन्द्रमा पृथ्वी से २,४०,००० मील है)।

(३) उनके परिभ्रमण (rotation) के भी भिन्न भिन्न समय हैं। पृथ्वी के लिये २४ घंटे, सूर्य के लिये २५ दिन, चन्द्रमा के २७$\frac{1}{3}$ दिन, बृहस्पति के ९ घन्टा २५ मिनट इत्यादि।

(४) भिन्न ग्रहों के गोलकों की दशा भी विभिन्न है। कुछ ग्रहों जैसे पृथ्वी और मङ्गल के इर्द गिर्द वायुमण्डल है। औरों के जैसे चन्द्रमा के ऊपर किसी प्रकार का वातावरण नहीं है। अत्यन्त तप्त सूर्य से लेकर शीत पूर्ण चन्द्रमा तक तापमान के घटने का एक क्रम सा प्रतीत होता है। बीच में बृहस्पति बहुत गरम है यद्यपि दहकता नहीं और पृथ्वी यद्यपि धरातल पर ठंडी है तथापि भीतर से बहुत गरम है।

पृथ्वी की उत्पत्ति—पृथ्वी की उत्पत्ति के विषय में मुख्यतः चार सिद्धान्त हैं—

(१) लापलेस का नीहारिका वाद—

इस सिद्धान्त के अनुसार ग्रहों की उत्पत्ति उन गैसीय गोलकों से हुई जो सूर्य-मंडल के सुदूरस्थ ग्रहों तक फैली हुई, हल्के, अपितु अत्यन्त प्रज्वलित और प्रतप्त नीहारिका (nebuld)। के समूह से निकली हुई, प्रतुलाकार गैसों के समन्वय से बने थे। यह विशाल नीहारिका राशि जिसके केन्द्र में उसका अधिक घनीभूत रूप सूर्य था, अपने अक्ष पर परिभ्रमण करती थी। जैसे जैसे यह राशि ठंडी होती गई यह अपनी केन्द्रीय दिशा में सिकुड़ती गई और इससे इसके परिभ्रमण की गति बढ़ती गई। वह समय भी आया जब इस राशि के बहिर्भाग के केन्द्रयराङ्मुख शक्ति (Centrifugel force) इसकी केन्द्रीय आकर्षण शक्ति (Centripetal force) से अधिक हो गई। परिणामतः इसका बहिर्भाग अंगूठी के आकार में बाहर की ओर छूट गया। इसके भीतर का अंश फिर भी सिकुड़ता गया और उसी क्रम के द्वारा एक दूसरा अंश भी अंगूठी के रूप में अलग हो गया। प्रारम्भिक नीहारिका इस प्रकार अनेक प्रतुलाकार अंशों में विभक्त हो गई जो सब की सब एक केन्द्र स्थित नीहारिका राशि—जिसे हम आज सूर्य कहते हैं—के चारों ओर एक ही दिशा में परिभ्रमण करते थे। प्रत्येक अंश के पदार्थ फिर ठंडे हुए और सिकुड़ गये। सिकुड़ते समय ये प्रतुलाकार अंश अपने कमजोर स्थानों पर टूट गये और उसी परिभ्रमण के द्वारा गोलक रूप में संग्रहीत हो गये जो तब भी गरम और गैसीय थे। इन गोलकों के पदार्थ तरल अवस्था में जाने पर ग्रहों के रूप में परिणित हो गये। इसी प्रकार की क्रमान्तरिक प्रणाली से उन्हीं गोलकों से उप गोलकों का प्रादुर्भाव हुआ जो उपग्रह कहे जाते हैं।

इस सिद्धान्त को स्वीकार करने में जो *प्रधान आपत्तियाँ* हैं वे ये हैं:—

(१) नीहारिका के मध्य स्थित अंश के प्रतुलाकार (अंगूठी के आकार में) विभाजन होने की अपेक्षा उसके कणकण के रूप में विभक्त होने की सम्भावना अधिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) उन विभक्त और विमुक्त अंगूठी के आकार के खंडों के हल्के अंशों के कणकण के रूप में—गोलकों की अपेक्षा ठंडे होने की अधिक सम्भावना है।

(३) उन खंडों के तल पर प्रचंड वेग के कारण हाइड्रोजन और हीलियम जैसे हल्के तत्वों का उन खंडों से सदा के लिये उड़ जाने की अधिक सम्भावना है परन्तु इसके विपरीत यह तत्व उन (ग्रहों और उपग्रहों) में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

(४) ग्रहों को अपने उपग्रहों के विमुक्त हो जाने पर पहले की अपेक्षा अधिक वेग से परिभ्रमण करना चाहिये क्योंकि ठंडे होने पर परिभ्रमण की गति बढ़ जाती है। परन्तु मङ्गल का अन्तस्थित उपग्रह फोबस (Phobos) तथा शनि की भीतरी चूड़ी के भीतरी किनारे के छोटे छोटे उपग्रह खंड अपने अपने ग्रहों की अपेक्षा अधिक वेग से परिभ्रमण करते हैं।

(५) शनि का नया ६ नवम्बर का उपग्रह शनि और उसके अन्य भीतरी उपग्रहों की प्रतिकूल दिशा में परिभ्रमण करता है।

(२) डार्विन और लाकेयर का उल्कावाद—

इस सिद्धान्त के अनुसार गैसीय नीहारिका छोटी छोटी बिखरी हुई उल्काओं (Meteorites) के रूप में जमती गई जो फिर से एकत्रित होकर ग्रहों के रूप में हो गई। उल्कावाद और नीहारिकावाद में प्रधान अन्तर केवल इतना ही है कि नीहारिकावाद में गैसों का ठंडा होने के पूर्व अँगूठी के आकार में होकर और टूटकर ग्रहों और उपग्रहों के बनने की कल्पना की गई है और उल्कावाद में गैस पहले छोटी छोटी बिखरी हुई ठोस उल्काओं के रूप में परिणित हुई, न कि अंगूठी के आकार के खंडों में और उन्हीं उल्काओं के समन्वय से ग्रह-उपग्रह बने। उल्काओं को हम किसी साफ, बादलविहीन रात्रि में समय समय पर आकाश में टूटते हुए तारों के रूप में चमकती हुई देख सकते हैं। उल्कापात के समय प्रचंड वेग के कारण आपस के संघर्ष और रगड़ से उल्काएँ गरम हो उठती हैं और उनसे निरन्तर प्रतप्त भाफ निकलने लगती है जिसके कारण वे इतनी प्रज्वलित दीख पड़ती हैं।

उल्कावाद के सिद्धान्त को स्वीकार करने में मुख्य आपत्तियाँ ये हैं:—

(१) इस सिद्धान्त के द्वारा यह पता नहीं चलता कि उल्काओं के रूप में बिखरे हुए नीहारिका अंश आपस में किस प्रकार फिर मिल गये जिनसे ग्रहों की उत्पत्ति हुई।

(२) उल्काओं के पारस्परिक संघर्ष के कारण जो गर्मी पैदा हुई होगी उसके कारण उनके फिर गैस के रूप में परिणित हो जाने की अधिक सम्भावना है।

(३) आजकल की नीहारिकाओं की किरणों के विश्लेषण से पता चला है कि नीहारिकाओं की बनावट उल्काओं से भिन्न है।

(३) चैम्बरलेन और मोल्टन का ग्रहाणुवाद—

इस सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी की उत्पत्ति उल्काओं के संघर्ष से न होकर, सूर्य मंडल की आदि-नीहारिका से हुई। यह नीहारिका पेचाकार (shiral) थी और असंख्य अति सूक्ष्म ठोस (या तरल) कणों से जिन्हें ग्रहाणु (hlanetesimals) कह सकते हैं—बनी हुई थी, जो एक केन्द्रस्थित नीहारिका के चतुर्दिक परिक्रमण करते थे। ये ग्रहाणु उन पदार्थों के जमने से बने हुए थे जो कभी किसी नक्षत्र के पास ठगने के कारण उनके आकर्षण से आदि नीहारिका के गुरुताकर्षण के प्रतिकूल उसी से ही फूट निकले थे और जिनके कारण उसकी परिधि से पदार्थों के फूट निकलने की क्रिया (जो अब भी साधारणतः सूर्य में चिन्हित होती है) और भी बलशील हो चुकी थी, इन फूटे हुए पदार्थों में कुछ अक्रिय और विभाजित भुजाओं के रूप में एकत्रित हो गये। नीहारिका-ग्रन्थिओं पर फिर ग्रहाणुओं के थोड़ी किन्तु बड़ी बड़ी राशियों में एकत्रित हो जाने ही से सूर्य-मंडल का विकास हुआ है या यों कहें कि ग्रहाणुओं के ग्रहों के रूप में प्रत्यावर्तन ही से सूर्य-मंडल का जन्म हुआ। इस सिद्धान्त के अनुसार नीहारिका की स्थिति के उपरान्त उसको गति-विधि में किसी प्रकार के उथल-पुथल की कल्पना नहीं की गई है बल्कि बिखरे हुए कणों के एकत्रीकरण से ही सूर्य-मंडल की उत्पत्ति मान ली गई है। नीहारिका से ग्रहाणुओं के फूट निकलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जो बात कही गई है उसका कारण था उसका अपनी कक्षा पर परिक्रमण अथवा परिक्रमण के कारण उत्पन्न हुई केन्द्र पराङ्मुख गत्यन्तर (Centrifugal accelaration) ग्रन्थिओं के चारों ओर ग्रहाणुओं के एकत्रित होने का कारण था उनकी अपनी अंडाकार कक्षाओं को स्थान परिवर्तन के कारण स्वयं काटना।

इस सिद्धान्त में सूर्यमंडल के विकास में, ग्रहाणुओं की दशा प्राप्त हो जाने के बाद, गैसों की क्रियाओं को उतना महत्व नहीं दिया गया है जितना कि पहले दो सिद्धान्तों में। इस सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी ठंडी थी और उसकी गर्मी ग्रहाणुओं के आन्तरिक दबाव के कारण ही है जो केन्द्र से परिधि की ओर ग्रहाणुओं की तह पर तह जमते जाने के कारण केन्द्र की ओर अधिक और परिधि की ओर कम होती गई है।

इस सिद्धान्त पर भी कुछ *आपत्तियाँ* की जाती हैं वे ये हैं:—

(१) यह अधिक सम्भव है कि गैसों की धारा (फूटी हुई) सूर्य के वातावरण के पार जाकर अन्तरिक्ष में बिखर जाती और ठोस ग्रहाणुओं के रूप में न जम पाती।

(२) इस सिद्धान्त से इसका कारण नहीं बताया जा सकता कि शनि और बृपस्पति के उपग्रह-मंडल मुख्य ग्रह-मंडल से क्यों मिलते जुलते हैं और ये उपग्रह मंडल बने ही क्यों हैं।

(४) जीन्स और जेफ्रेज का ज्वार-वाद— इस सिद्धान्त के अनुसार यह माना गया है कि आदि-नीहारिका के पास किसी विशालकाय नक्षत्र के आजाने के कारण अत्याधिक आकर्षण से उसका कुछ अंश ज्वार (tide) के रूप में बढ़ चला और इस प्रकार गैस की धारा उभर कर ग्रहों के रूप में परिवर्तित हो गई। प्रत्येक बृहदाकार वस्तु, जैसे सूर्य के चतुर्दिक एक सीमा होती है जिसके भीतर आ जाने से साधारण आकार की कोई वस्तु टूट कर कण कण हो जाने से बच नहीं सकती। इस सीमा की दूरी को निपुण दूरी (Critical distance) कह सकते हैं। शनि की चूड़ियाँ इसी प्रकार टूट कर उसके अंशों से बनी हैं जो पहले शनि का उपग्रह था। यदि दो वस्तुएँ एक दूसरे के निकट निपुण दूरी के भीतर आजायें तो ऊपर कहे हुए ज्वार की रूप रेखा ही बदल जाती है और गैसों की निकलती हुई धारा पर्वताकार फूट निकलती है और दूसरी वस्तु की ओर लपकती हुई भुजा के रूप में फैल जाती है और कभी कभी उससे सम्पर्क भी कर लेती है। यह दो वस्तुएँ आपस में ऐसे ही मिल जा सकती हैं जिस प्रकार कसरत करने के 'डमरू' के दोनों गोलक बीच के हेन्डिल से मिले होते हैं। अन्य दशा में आपस में सम्पर्क नहीं होता और गैस की धारा एक में से दूसरी वस्तु की ओर आकाश में लपकती हुई ही रह जाती है, गैस की ये धाराएँ अपने ही कणों के पारस्परिक आकर्षण के कारण जम कर पृथक पृथक ठोस वस्तुओं से रूप में हो गई होंगी जिससे ग्रह बन गये। इन ग्रहों की वृत्ताकार कक्षाएँ प्रारम्भिक कक्षाओं से ही आकाश के आवर्त में उनके अरब खरब वर्षों तक घूमते रहने के कारण ही बन गई हैं। परन्तु इन ग्रहों की गति का धरातल वही होगा जो उस नक्षत्र का था जो आदि-नीहारिका के निकट होकर गुजरा था। नीहारिका के पुनः उन्हीं ग्रहों पर इसी प्रकार की क्रिया सूर्य के कारण होने से उपग्रहों का जन्म हुआ। यह अनुमान किया जाता है कि निकट से होकर गुज़रने वाला नक्षत्र वास्तव में आदि-सूर्य को छूता हुआ चला गया था जिसके कारण आज भी सूर्य अपनी धुरी पर परिभ्रमण करता हुआ पाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी अफ्रीका

दक्षिणी अफ्रीका की ओर संसार का ध्यान इस समय से आकर्षित हुआ जब कि वहां अँग्रेज़ों और बोअर लोगों में युद्ध हुआ। उस समय महारानी विक्टोरिया के समय में यह ऐसी घटना घटी जिसके लिये अँग्रेज़ों की सराहना नहीं की जा सकती। अँग्रेज सेना सुसज्जित तथा अस्त्र-शस्त्र से लैस थी। बोअर लोग केवल किसान थे। उनके पास लड़ने के साधन न थे फिर भी वह बहादुर तथा देश भक्त थे अंत में अँग्रेज़ों की विजय हुई और दक्षिणी अफ्रीका पर ब्रिटिश शासन हो गया परन्तु बाद को ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने अपनी गलती का आभास किया और जिन स्थानों को बोअर लोगों से छीना था वापस कर दिया। उसी समय से दक्षिणी अफ्रीका का यूनियन उन्नति की ओर अग्रसर हुआ। बोअर युद्ध से और चाहे जो भी हानि हुई हो परन्तु सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि उसी के कारण वहां जनरल स्मट्स और जनरल हर्टज़ोग दो प्रसिद्ध नेताओं का जन्म हुआ। यह दोनों नेता १८९९ ई० से १९०२ ई० तक अँग्रेजों के विरुद्ध बोअर युद्ध में लड़ते रहे।

युद्ध की घटना इन दोनों व्यक्तियों के लिये भूल जानी कठिन है फिर भी जनरल स्मट्स बड़े ही चतुर सिद्ध हुये। उनका प्रभाव इतना गहरा था कि राजनैतिक समझौते के द्वारा ही उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका की स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। अब वह अपने देश को संसार का एक प्रधान अंग बनाना चाहते हैं। संसार में एक प्रधान स्थान प्राप्त करने के साथ ही साथ वह अपने देश को ब्रिटिश साम्राज्य की मैत्री से भी अलग नहीं करना चाहते हैं। इसका एक प्रधान कारण यह है कि इँगलैंड से उन्हें व्यापारिक लाभ है और उन्हें अपने देश पर किसी दूसरे देश के आक्रमण का भय नहीं है।

डाक्टर मलान भी दक्षिणी अफ्रीका के एक प्रधान नेता हैं। वह अपने देश को संसार के स्वतंत्र देशों की भांति अलग करके स्वतंत्र बनाने के इच्छुक हैं। वह दक्षिणी अफ्रीका में उन लोगों को संगठित करना चाहते हैं जो वहां की भाषा का प्रयोग करने वाले हैं।

जनरल हर्टज़ोग दक्षिणी अफ्रीका के अफ्रीकन तथा ब्रिटिश निवासियों को संगठित करना चाहते थे और अपने देश को सैनिक रूप से स्वतंत्र बनाना चाहते हैं। हर्टज़ोग और मलान दोनों व्यक्ति बड़े देश भक्त, सच्चे, सख्त और अपने विचार के पक्के हैं।

जनरल हर्टज़ोग संसार का कम भ्रमण किये हैं। वह अन्तरराष्ट्रीय विचार के नहीं वरन् पक्के राष्ट्रवादी हैं। वह बड़े देश-प्रेमी, देश-भक्त, ईमानदार, सच्चे और दृढ़वादी हैं। उन्हें योरुपीय देशों के सम्बन्ध में अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं है। उन्हें हिटलर की सुदूर कूटनीति का भी ज्ञान नहीं है। इसी कारण जब पोलैंड पर जर्मनी ने आक्रमण किया और इँगलैंड तथा फ्रान्स ने जर्मनी पर युद्ध घोषणा की तो उन्होंने जर्मनी के ऊपर युद्ध घोषणा करने का विरोध किया था। वह अब भी शायद अपने देश को आधुनिक युद्ध से अलग रखना चाहते हैं। उनके शरीर में जर्मन रक्त है। वह जर्मन किसानों के रिश्तेदार हैं। उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका में कृषि की जो उन्नति की है वह सराहनीय है। शायद इसी कारण वह जर्मनी के मित्र बने हैं। वह दक्षिणी अफ्रीका के डच तथा अँग्रेज़ी भाषा के प्रयोग करने वालों के मध्य किसी प्रकार का अन्तर नहीं मानते हैं। वह नैटाल और ट्रांसवाल के अँग्रेजों को भी अपना देशवासी समझकर अपने साथ संगठित रखना चाहते हैं। परन्तु यह विचारणीय बात है कि क्या जर्मनी दक्षिणी अफ्रीका के अपने गत महायुद्ध में खोये स्थानों पर पुनः अधिकार प्राप्त करना नहीं चाहेगा। इसका उदाहरण १९३४ ई० में मिल चुका है जब कि नये जर्मनों के पहुँचने पर वहां झगड़ा उत्पन्न हो गया था यद्यपि उसके पूर्व वहां के सभी जर्मन यूनियन के साथ थे और उससे अलग नहीं होना चाहते थे।

जनरल स्मट्स को समस्त संसार की राजनीति का ज्ञान है वे अन्तराष्ट्रवादी विचार के पुरुष हैं। वह दक्षिणी और पश्चिमी अफ्रीका को मिलाकर रखना चाहते हैं। वह ब्रिटिश साम्राज्य से भी अलग होकर अपना कार्य नहीं करना चाहते। उनका विचार है कि इँगलैंड से अलग होकर वह अपने देश को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक सैनिक और आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं बना सकते। वह बार बार कह चुके हैं "कि यदि हम इँगलैंड को इस समय अकेला छोड़ देते हैं तो इँगलैंड को भी पूर्ण अधिकार होगा कि वह हमें भी संकट के समय छोड़ दे"।

जनरल स्मट्स संसार के अधिकांश देशों का भ्रमण कर चुके हैं। वह इँगलैंड में भी रह चुके हैं। वह १९१४ से १९१८ ई० तक गत महायुद्ध में भी लड़ चुके हैं। वह बोअर सेना के सेनापति भी रह चुके हैं। उन्हें ब्रिटेन से प्रेम है। वह एक साधारण किसान की भांति अपना जीवन व्यतीत करते हैं यद्यपि उनकी धर्मपत्नी साधारण जीवन की विरोधी हैं। वह बड़े ही अग्रसर और उत्साही हैं। अग्रसर होने में वह तनिक भी भयभीत नहीं होते और मारने तथा मारे जाने से वह कदापि नहीं डरते। वह अपने देश के बड़े भक्त हैं और उसकी स्वतंत्रता तथा भलाई के लिये सदैव अपनी जान निछावर करने के लिये तयार रहते हैं।

इस समय उनकी स्थिति बड़ी ही शोचनीय है। दक्षिणी अफ्रीका की समस्या हल करना कोई आसान कार्य नहीं है यह जनरल स्मट्स का ही दिमाग़ है जो वह अपनी नीति में सफल हो रहे हैं। गत महायुद्ध के समय भी आज की भांति ही जटिल समस्यायें थीं। उस समय भी विदेशी युद्ध में भाग लेने के कारण दक्षिणी अफ्रीका में बलवा हो गया था। उसे पूर्वी तथा पश्चिमी अफ्रीका में शत्रुओं का सामना करना पड़ा था।

आज भी वही दशा है। बहुतेरे लोग युद्ध में भाग लेने के विरोधी हैं। इसलिये ग्रहयुद्ध की सम्भावना है। जनरल स्मट्स और उनके दल ने (जो दिन प्रतिदिन शक्तिशाली होता जा रहा है) समस्त ब्रिटिश दक्षिणी तथा पूर्वी अफ्रीका की रक्षा का भार उठाया है। वह पुर्तगाली अफ्रीका को भी सहायता देने के लिये तयार है और आवश्यकता पड़ने पर उत्तरी अफ्रीका की ओर भी सेना भेजने के सहमत है।

इसके अतिरिक्त दक्षिणी और पश्चिमी मैंडेटेड स्थानों पर भी शान्ति स्थापित रखने का भार जनरल स्मटस पर है क्योंकि वहाँ नाज़ी दल भांति भांति के उपद्रव उत्पन्न कर रहे हैं।

दक्षिणी अफ्रीका यूनियन के ऊपर दूसरे प्रसिद्ध इम्पीरिल समुद्री मार्ग की रक्षा का भार है। साइमन्स टाऊन की रक्षा का भार भी जनरल स्मट्स पर है। यह ब्रिटिश साम्राज्य का जहाजी अड्डा है और आस्ट्रेलिया तथा पूर्व जाने वाले केप मार्ग की रक्षा करता है। टेबुल बे बन्दरगाह की भी दक्षिणी अफ्रीका ने किलेबन्दी कर ली है क्योंकि उसे १९१४ ई० की भांति इस समय भी जर्मन जेबी समुद्री युद्ध-पोतों का भय है।

कनैडा, न्यूज़ीलैण्ड और आस्ट्रेलिया की अपेक्षा दक्षिणी अफ्रीका की स्थिति अधिक संकटमय है क्योंकि वहां योरुपीय निवासी हैं। दक्षिणी अफ्रीका में ६५ लाख काले (काफिर) और २० लाख गोरे लोगों की आबादी है। काले लोग आधुनिक विचार के नहीं हैं। प्रशान्त महासागर में जापान की प्रगति के कारण पूर्व की ओर से भी दक्षिणी अफ्रीका को भय उत्पन्न हो गया है इसी कारण ब्रिटिश सेना को मेडेगास्कर पर अधिकार जमाना पड़ा है।

दक्षिणी अफ्रीका ने सोने की खूब उत्पत्ति की है उसने ब्रिटिश सेना के लिये प्रत्येक युद्ध सामग्री पैदा करके पहुँचाने का परिश्रम उठाया है पर इस पर भी उसे संतोष नहीं है। वह ब्रिटिश सेना के लिये हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर के मध्य मार्ग साफ रखना चाहता है। समुद्र, वायु और धरती पर शान्ति स्थापित रखने के लिये ही उसने वायु, जल और स्थल सेना के सैनिक तयार किये हैं। दक्षिणी अफ्रीका ने अपनी रक्षा के लिये १९३४ ई० में ही सेना को बढ़ाना आरम्भ किया था। १९३६ और १९३८ ई० में सैनिक कार्य को और अधिक प्रोत्साहन दिया गया। १९३९ ई० में युद्ध छिड़ने के पश्चात् से तो समस्त दक्षिणी अफ्रीका युद्ध कार्य में लग गया है इसी कारण आज वह पूर्ण रूप से युद्ध के लिये तयार बैठा है।

दक्षिणी अफ्रीका में बहुत अधिक उड़ाकों को शिक्षा प्रदान की जा चुकी है। इच्छुक भरती होने वाले सैनिक नवीन मशीन वाली बरघेर कमांडोस में सम्मिलित हो रहे हैं। नगर की रक्षा के लिये नागरिक लोगों के भिन्न भिन्न दल तयार किये गये हैं और किये जा रहे हैं। वहां की स्त्रियों ने भी सैनिक सेवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिये अपने को स्वयं सेवकों में भरती करा लिया है। उनकी अलग ही एक सेना बना ली गई है।

फर्स्ट एड, घर तथा सैनिक क्षेत्र में दवा देने तथा पट्टी बाँधने आदि का काम, मुंशीगीरी और टेलीफोन का काम, मोटर चलाने तथा उन्हें मरम्मत करने का काम, स्पताल में सामान पहुँचाने का काम, हवाई स्टेशनों पर स्थली चौकीदारी तथा ट्राम चलाने और पुलीस आदि आदि भिन्न कार्यों में काम करने के लिये स्त्रियाँ आगे बढ़ चुकी हैं।

१९१४ से १९१८ तक दक्षिणी अफ्रीका ही केवल डोमिनियन राष्ट्रों में ऐसा था जिसे अकेले दो सीमा पर युद्ध करना पड़ा था इसी कारण उसने अपनी रक्षा के लिये अबकी बार पहले से ही तयारी कर ली है।

जब जनरल स्मट्स ने ब्रिटिश साम्राज्य की युद्ध में सहायता के लिये सम्मेलन किया तो कर्नल डेनीस रीज़ इङ्गलैण्ड दक्षिणी अफ्रीकन यूनियन के प्रतिनिधि बना कर भेजे गये।

कर्नल रीज़ जनरल स्मट्स के बोअर कमांडो में १७ वर्ष की आयु में युद्ध कर चुका है। जब बोअर लोगों को पराजय हुई तो कर्नल रीज ने पराधीनता की अपेक्षा देश छोड़ कर विदेश में रहना अधिक अच्छा समझा इस लिये वह दक्षिणी अफ्रीका से बाहर चला गया। उसके बाद जनरल स्मट्स ने उन्हें बुलाया। उसके बाद वह दक्षिणी अफ्रीकन पार्लियामेंट के सदस्य हुये और पश्चिमी तथा पूर्वी अफ्रीका के युद्ध-क्षेत्र में लड़े। धीरे धीरे वह अंग्रेजी और अफ्रीकन भाषा बोलने वाली जाति को संगठित करके यूनियन का राजभक्त बनाने का कार्य करने लगे।

उसकी देख भाल में दक्षिणी अफ्रीका के सैनिक अच्छे सैनिक बन गये और उन्होंने फ्रांस आदि देशों के युद्ध क्षेत्रों में नाम पैदा किया। आशा है भविष्य में उन्हें और भी अधिक कीर्ति प्राप्त होगी।

जनरल स्मट्स की छत्रछाया में दक्षिणी अफ्रीका ने मित्र राष्ट्रों के साथ होकर स्वतन्त्रता के संग्राम में भाग लेने का निश्चय किया है। वहाँ पूर्ण रूप से युद्ध की तयारी हो रही है। अब तक वहां केवल रक्षा के हेतु ही तयारी हो रही थी परन्तु अब वहाँ शत्रु स्थानों पर आक्रमण की तयारी हो रही है।

अभी हाल में ही फील्ड मार्शल स्मट्स दक्षिणी अफ्रीका के प्रधान मन्त्री इङ्गलैण्ड गये हैं। उन्होंने २१ अक्टूबर १९४२ ई० को पार्लियामेंट के सदस्यों के बीच एक ओजस्वी भाषण दिया।

उन्होंने कहा यह लड़ाई वास्तव में पिछले योरुपीय महायुद्ध के सिलसिले में ही है। नाज़ियों के विरुद्ध हमारी लड़ाई धर्म युद्ध के रूप में है। इसलिये जब तक हम नाज़ीवाद तथा उससे उत्पन्न हुई बातों का इस संसार से नाम-निशान न मिटा देंगे तब तक हम अपनी तलवार म्यान में नहीं रक्खेंगे।

फील्ड मार्शल स्मट्स ने जोर देकर कहा है कि आक्रमण करने का समय आ जाने पर उसे आरम्भ करने में बिलम्ब करना या उसके लिये आवश्यकता से अधिक तयारी करने के लिये ठहरे रहना या अवसर को हाथ से निकल जाने देना एक मूढ़ता की बात सिद्ध होगी। जनरल स्मट्स ने अपने भाषण में यह भी कहा कि मित्रराष्ट्र जो भी सहायता रूस को दे सकते हों वहां शीघ्रातिशीघ्र पूरे पैमाने पर पहुँचावें क्योंकि रूस मित्रराष्ट्रों में अपने भाग से अधिक क्षति तथा हानि उठा चुका है।

जापान के सम्बन्ध में फील्ड मार्शल स्मट्स ने भविष्यवाणी की कि जर्मनी की भांति जापान का भी विनाश निश्चित है। जापान को अब तक जो सफलताएँ प्राप्त हुई हैं वे सब उससे छिन जावेंगी केवल जापान ही जापानियों के हाथ रह जावेगा।

बहुत समय के पश्चात् यह प्रथम अवसर था जब कि ब्रिटिश पार्लियामेंट की दोनों सभाएँ एक स्थान पर एकत्रित हुईं और एक डोमीनियन के प्रधान मन्त्री ने उनके सामने भाषण दिया। दक्षिणी अफ्रीका को फील्ड मार्शल स्मट्स जैसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्ति के पाने का अभिमान है। वह उसकी छत्र-छाया में अवश्य उन्नति की शिखर पर पहुँचेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टोनहिंजे

सैलिसबरी के मैदान, विल्टशायर, इँगलैंड में स्टोहिञ्जे का खँडहर है। यह उस जाति की स्मृति हैं जिसे संसार ने भुला दिया है। यह मध्यकालीन अद्भुत वस्तुओं में गिना जाता है। शायद इसका युग १७०० वर्ष ईसा के पूर्व का है। परन्तु आज वास्तविक रूप से कोई व्यक्ति बतला नहीं सकता कि इसका निर्माणक कौन था और यह किस आशय से बनाया गया था।

स्टोनहिंजे खाई द्वारा बनाये हुये एक वृत्त में स्थित है। इसकी शिलाएँ जिनका अब केवल आधा भाग शेष रह गया है पहले दो एक केन्द्रीय वृत्त में स्थापित की गई थीं। इन वृत्तों के बीच में घोड़े की टाप की रूप-रेखा का एक वृत्त बनाया गया था और उसके भीतर फिर एक अंडेकार गोला बनाया गया था।

प्रथम वृत्त लगभग १०० फुट चौड़ा था, उसमें लगभग ३० सीधी खड़ी शिलायें थीं जो धरती से १३ फुट ऊँची थीं। इन शिलाओं का प्रत्येक जोड़ा लिंटेल (पटाव) से जोड़ दिया गया था। दूसरे वृत्त की चौड़ाई लगभग ७६ फुट थी और उसमें ४० शिलाएँ थीं। इसमें घोड़े की टाप पांच जोड़े शिलाओं से मिल कर बनी थी। यह शिलाएँ पटाव द्वारा मिली थीं। इसमें दो शिलाए, २२ फुट ऊँची थीं। सबसे भीतरी घेरे में १६ फुट की आल्टर शिला है। अब उसमें १२ शिलाएं शेष रह गई हैं।

हो सकता है कि ये चिन्ह मृतक लोगों को स्मृत में बनाये गये हों यह देखा गया है कि आल्टर-शिला और फ्राएर्स हील (फ्राएर की एड़ी) पूर्वी अंतरीप के साथ सीधी रेखा में स्थित हैं। ग्रीष्म काल में सूर्योदय का प्रथम प्रकाश पूर्वी अंतरीप पर पड़ता है। इससे प्रतीत होता है कि स्टोनहिञ्जे के बनाने वाले सूर्य के पुजारी थे। सूर्य-पूजा की दलील को लोग मान गये हैं यद्यपि इसके अतिरिक्त और भी दूसरे अर्थ लगाये जाते हैं।

इस मन्दिर की प्रत्येक शिला भार मेंकई टन है। प्राचीन काल में प्राचीन औज़ारों से लोगों ने ऐसे भारी पत्थर खानों से किस प्रकार काटे होंगे ? उन्हें फिर उन्होंने किस प्रकार एक दूसरे पर उठा कर रक्खा होगा ? इन प्रश्नों के उत्तर के लिये केवल अनुमान मात्र लगाये जा सकते हैं। शायद इन्हें लाने तथा चढ़ाने के लिये लट्ठों के बेलन का प्रयोग किया गया होगा।

वर्षा हवा और ओला तथा पत्थरों के कारण स्टोनहिञ्जे को काफी आघात पहुँचा है। एक बार ब्रिटिश किसान जो इसके ऐतिहासिक मूल्य को नहीं समझते थे वह इसके कितने ही पत्थरों को अपना पुल तयार करने के लिये कई मील उठा ले गये। आजकल इसकी रक्षा प्रत्येक भांति से की जा रही है।

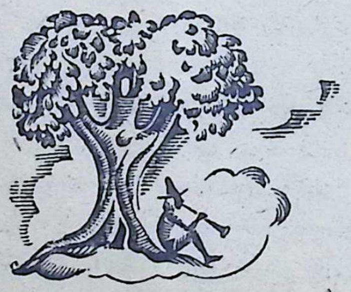

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्याग्रा प्रपात का जलमार्ग

पनामा नहर के बनने के पश्चात् जितनी वैज्ञानिक अद्भुत सफलताएँ मकान बनाने की कला में प्राप्त हुई हैं, उनमें कनैडा की चतुर्थ वेलान्ड शिप नहर सर्व श्रेष्ठ है। यह नहर न्याग्रा प्रपात के १० मील पश्चिम की ओर से जाती है।

यह नहर एरी झील को ओन्टारियो झील से मिलाती है। ओन्टारियो झील के उत्तरी तट पर टोरन्टो नगर स्थित है। यह नगर कनैडा का दूसरा बड़ा नगर और ओन्टारियो प्रान्त की राजधानी है।

संसार भर में न्याग्रा प्रपात का ही मार्ग सबसे कठिन था। इसी के कारण कनैडा की पाँच बड़ी झीलों द्वारा जहाज छठवीं झील में होकर लारेन्स नदी में नहीं जा सकते थे और दूसरे प्रपातों की भाँति रस्सी द्वारा खींच कर या धीरे धीरे ऊपर की ओर उठाकर इस प्रपात में जहाज नहीं ले जाये जा सकते थे, इसलिये सामान स्थल मार्ग होकर घूमकर आता जाता था। ऐसी कठिन समस्या पड़ने के कारण न्याग्रा जिले के लोगों ने एक नहर काट कर तयार करने का दृढ़ संकल्प किया।

नहर बनाने का काम १८२४ ई० में आरम्भ हुआ और प्रथम नहर १८२९ ई० में तयार हुई। इस नहर में ४० लकड़ी के झाल बनाये गये थे। इस नहर को १९३३ ई० में और वृद्धि की गई किन्तु फिर भी आवश्यकता की पूर्ति न हो सकी। इस पर लकड़ी के झालों को कम करके उनके स्थान पर पत्थर के झाल बनाये गये और एक दूसरी नहर और खोदी गई। इस प्रकार द्वितीय वेलान्ड नहर की पूर्ति हुई।

इसके पश्चात् तीसरी नहर बनाई गई। तीसरी नहर में २२५ फुट लम्बे और ४४ फुट के बोम वाले जहाज चलाये जाते थे। यह नहर मोड़ों पर बहुत तंग हो जाती थी इसलिये बड़े बड़े जहाज एरी झील से ओंटारियो झील को नहीं जा सकते थे। इसलिये एक चौथी नहर बनाने का विचार किया गया और वह बनाई गई।। यह नहर ऐसी बनाई गई है कि इसमें बड़े से बड़े जहाज चल सकते हैं और आवश्यकतानुसार भविष्य में इसकी वृद्धि भी की जा सकती है।

वर्तमान समय में आने जाने का समय १६ घंटे से घट कर ७½ घंटे हो गया है और २० झालों से घटा कर अब केवल ८ झाल बनाये गये हैं। एक झील के तट से दूसरे झील के तट तक नहर की लम्बाई २५ मील है। वेल्लेर का बन्दरगाह ओन्टारियो झील पर और कोलबोर्न का बन्दरगाह एरी झील पर बनाया गया है। बन्दरगाहों की लम्बाई मिलाकर नहर की लम्बाई २७०७ मील है। एरी झील का पानी ओन्टारियो झील के पानी से ३२५½ फुट ऊँचा है। इस नहर में पानी की सीढ़ियां बनाई गई हैं, जिनमें होकर १०,००० पौंड के जहाज नीचे ऊपर चढ़ते उतरते रहते हैं।

ऊँची नीची भूमि होने के कारण नहर के झाल बराबर दूरी पर नहीं लगाए जा सके। ओंटारियो झील पर न्याग्रा प्रपात की ओर ७ झाल बनाए गये हैं। आठवाँ बड़ा झाल एरी झील की ओर बनाया गया है। कारखानों और नगरों की सुविधा के लिये नहर में कहीं कहीं डाक (घाट) भी बना दिये गये हैं। नहर के किनारे किनारे बहुत बड़ी संख्या में पेड़ लगाए गये हैं जो एक वन की भांति उपज रहे हैं। इससे प्रचंड वायु से नहर की रक्षा होगी।

तीव्र हवा चलने के कारण एरी झील का पानी उथल पुथल हो जाता है और कभी कभी पानी के धरातल में ११ फुट का अन्तर हो जाता है; किन्तु इस अन्तर के प्रभाव को नम्बर ८ का झाल रोक लेता है और नहर के पानी के धरातल पर नहीं होने देता। नहर के पानी का धरातल ५६० फुट ऊँचा है। कोलबोर्न के भीतरी बन्दरगाह के उत्तर की ओर एक लाक बनाया गया है यह लाक १३८० फुट लम्बा और ८० फुट चौड़ा है। ओंटारियो झील के ७ लाकों में प्रत्येक में ४६½ फुट की लिफ्ट लगी हैं। इन लिफ्टों के कारण एरी और ओंटारियो झीलों का अन्तर समान हो जाता है।

पोर्ट वेल्लेर का टर्मिनस ओन्टारियो झील से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ मील पूर्व की ओर है। यहां बन्दरगाह बनाया गया है। इस झील के सातों झालों में से प्रत्येक लाक की लम्बाई ८५९ फुट और चौड़ाई ८० फुट है। इन लाकों में ३० फुट गहरा पानी रहता है।

वेल्लेर के बन्दरगाह के दक्षिणी किनारे पर पहला लाक (झाल) है दूसरा लाक १$\frac{3}{4}$ मील पहले के आगे और तीसरा दूसरे से २$\frac{3}{4}$ मील की दूरी पर है। न्यागरा प्रपात तक नहर एक सीधी रेखा सी है। इसके बाद नहर पहाड़ के ऊपर चार लाकों द्वारा चलती है। ये चारों लाक ४,५,६ और ७ नम्बर के हैं। पहले तीन लाक नहर को १३९$\frac{1}{2}$ फुट ऊपर उठाते हैं और पहाड़ी के आधार तक नहर को पहुँचाते हैं। पहाड़ी के आधार पर नहर एकाएक १८६ फुट ऊँची जाती है। यहीं पर नहर का सबसे अधिक खड़ा भाग है।

नम्बर ४,५ और ६ लाक दोहरे हैं। जिससे दो जल मार्ग बने हैं। एक मार्ग से जहाज़ नीचे आते हैं इस प्रकार समय की बचत हो जाती है। इन तीनों लाकों के ऊपर नहर का वह भाग है जहां पर जहाज एक दूसरे को पास करते हैं। सातवां लाक नहर को उसकी शिखा पर पहुँचाता है। यह लाक दोहरा नहीं है। यह लाक थारोल्ड में स्थित है। इस लाक के आगे कोलबोर्ने पोर्ट पर नम्बर आठ का लाक है।

नहर की रक्षा के लिये भी अच्छा प्रबन्ध किया गया है। एक रक्षक द्वार तथा $\frac{3}{4}$ मील लम्बा बांध सातवें नम्बर के लाक के ऊपर बनाया गया है। नम्बर ६ और ७ के लाकों में ऊपर और नीचे दोहरे द्वार हैं। रक्षा वाले बांध द्वारा रक्षक द्वार के चारों ओर नहर का पानी पहुँचाया जाता है। बांध में १२ बड़े मुड़ने वाले द्वार लगे हुये हैं जो बिजली द्वारा खुलते और बन्द होते हैं। इन द्वारों को खोलने तथा बन्द करने का काम गार्ड द्वार के कन्ट्रोल रूप से होता है। यह द्वार कुछ ही मिनट में शीघ्र ही बन्द किये जा सकते हैं। रक्षक द्वार और सातवें नम्बर के लाक का द्वार एक साथ नहीं खोले जा सकते। बाढ़ के समय पर सातवें रक्षक द्वार और रक्षक बांध द्वारा पानी निकाल दिया जाता है जिससे नहर के पानी का धरातल भी ठीक रहता है और बाढ़ भी नहीं आने पाती। इन्हीं के द्वार तथा मोड़दार द्वारों की मरम्मत करते समय भी पानी साफ कर दिया जाता है।

लाक द्वारों से टक्कर खाने से जहाज़ों को बचाने के लिये एक फौलाद की ३$\frac{1}{2}$ इञ्च मोटी रस्सी लाक के आर पार लगा दी गई है। द्वारों के उठाने, गिराने आदि का काम बिजली द्वारा होता है।

जिन महीनों में बरफ पड़ती है और ग्रेट लेक्स (बड़ी झीलों) में जहाज चलना बन्द रहता है, उन्हें छोड़ कर बाकी दिनों में इस नहर में रातों दिन जहाज चला करते हैं। लाक की दीवारों पर १६० फुट के अन्तर पर, लाकों के समीप २०० फुट के अन्तर पर और लाकों से दूर स्थानों में ४५० फुट के अन्तर पर लैंप लगाये गये हैं। स्वयं कार्य करने वाले टेलीफोन भी लगे हैं। पोर्ट कोलबोर्ने के हार्बर का बहुत कुछ सुधार कर दिया गया है और हार्बर की चैनल गहरी बना दी गई है।

चतुर्थ नहर तीसरी नहर को पोर्ट वेल्लेर और थारोल्ड के बीच दो बार काटती है। मार्ग को सीधा बनाने के लिये थारोल्ड और आलनबर्ग के बीच में एक तीसरा कटाव और बनाया गया है। इसलिये आलनबर्ग से राबिनसन बन्दरगाह तक तीसरी नहर का ही मार्ग है। राबिनसन से वेल्लान्ड तीसरी नहर को पूर्व होकर मार्ग है और चिप्पेवा की नदी के किनारे किनारे जाता है। वेलान्ड स्थान पर नहर नदी को पार करती है। गर्मी के दिनों में नदी का पानी नहर के पानी से ६ फुट कम हो जाता है तो नदी का पानी नहर के नीचे होकर बहता है। वेल्लान्ड से रैम्जे बन्द तक नहर गहरी तथा चौड़ी कर दी गई है।

लाकों के द्वार सीधे मजबूत लम्बे गार्डरों की भांति हैं। द्वारों के फ़ौलादी तख़्ते ४८ फुट लम्बे और ५ फुट मोटे हैं।

नहर के ऊपर होकर लगभग २० रेलवे तथा पक्की सड़कों के पुल हैं। ये पुल नहर के पानी के २० फुट ऊपर से बने हैं। इनमें लिफ्टें लगी हुई हैं' जिनका काम बिजली द्वारा होता है। पुल के खोलने और बन्द करने का काम भी बिजली द्वारा होता है और १$\frac{1}{2}$ मिनट के भीतर बड़ी सरलता पूर्वक किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब नहर ऊपर चढ़ती है तो उसके पश्चिमी किनारे पर हाइड्रो एलैक्ट्रिक स्टेशन है। यह स्टेशन सारी नहर पर बिजली पहुँचाता है। बिजली के तार पश्चिमी किनारे पर लगे हैं और बिजली दूसरे छोटे स्टेशनों को ले जाते हैं।

जब तक चतुर्थ नहर बन रही थी, जहाज तीसरी नहर द्वारा आते जाते थे। इसमें २६१ फुट लम्बे ४४ फुट बीम वाले १४ फुट ऊँचे जहाज जा सकते थे, किन्तु अब चतुर्थ नहर से ७०० फुट लम्बे ७५ फुट बीम वाले २३½ फुट डार वाले जहाज जा सकते हैं।

६ अगस्त सन् १९३२ ई० को लेमोयने नामक ग्रेट लेक का कनैडा स्टीमशिप का सबसे बड़ा जहाज गुज़रा था। ३१ मार्च सन् १९३४ ई० तक बेल्लान्ड नहर पर २४,०००,००० पौं० (३६,००,००,००० रु०) खर्च हुआ है। इस नहर के खुलते ही जहाज़ों के आने-जाने की संख्या गढ़ गई। १९३० ई० में तीसरी नहर द्वारा ६१,००,००० टन सामान गया था, १९३४ में वेलान्ड नहर द्वारा ६,२८०,४५२ टन सामान गया। १९३५ में इस नहर द्वारा २२९३ जहाज समुद्र की ओर और २२७९ जहाज ऊपर की ओर गये थे।

वेल्लेर से टोरन्टो २६ मील है। यह कनैडा का दूसरा बड़ा नगर है। यहां की जन-संख्या ६३,१०,२७ है। मान्ट्रयाल नगर की जन संख्या ८५०,००० है। टोरन्टो नगर झील के तट पर बसा हुआ है और उसका हार्बर बलुहे द्वीप द्वारा घिरा हुआ है। इस द्वीप के पूर्व तथा पश्चिम की ओर जहाजों के लिये चैनल बनाई गई है। यह हार्बर दो मील लम्बा, एक मील चौड़ा है और चारों ओर की हवाओं से सुरक्षित है।

इस बन्दरगाह में पानी काफी गहरा है और बड़े से बड़ा झीलों वाला जहाज ठहर सकता है।

सेन्ट लारेन्स तथा वेल्लान्ड नहर के बन्द होने तथा खुलने वाली तारीखें घोषित कर दी जाती हैं। अप्रैल के आरम्भ से दिसम्बर के मध्य तक नहर खुली रहती है।

टोरन्टो नगर मान्ट्रयाल और कनैडा तथा संयुक्त-राष्ट्र की झीलों के किनारे वाले नगरों से जहाजी लाइनों द्वारा मिला हुआ है। १९३५ ई० में इस नगर में २८९३ जहाज आए गये, इनमें से कोई भी समुद्री जहाज न था। इन जहाजों द्वारा ३४,४६,४२३ टन (९,३४,९९,८४४ मन) सामान आया और गया था। टोरन्टो नगर मान्ट्रयाल से ३०० मील की दूरी पर है और मान्ट्रयाल समुद्र से १००० मील की दूरी पर है।

* * *

काकेशिया—भारत का मार्ग

रूस में जो घमासान युद्ध हो रहा है उसका भीषण प्रभाव भारत की राजनैतिक स्थिति पर अवश्य ही पड़ेगा। हिटलर की सेनायें डान तथा वाल्गा नदियों के मोड़ पर अपना अंतिम युद्ध कर रही हैं। काकेशिया की पर्वतीय श्रेणी भारत से चाहे जितनी दूर हो पर यह वास्तव में भारतवर्ष के मार्ग में एक विशाल रोक का कार्य कर रही है। यदि हिटलर काकेशिया में विजयी होता है तो उसको मालूम होना चाहिये कि उसकी प्रतीक्षा कैसे देश तथा कैसे लोग कर रहे हैं?

यदि हम रोस्टोव से आगे बढ़ें तो हम डान नदी तथा कूबान (कोसक) के नाज-प्रदेश से होकर गुज़रेंगे। यहाँ गेहूँ की खेती सोवियत् ढंग से की जाती है और बड़े बड़े गेहूँ के मैदान एक विशाल पीले समुद्र की भांति लहलहाते दिखाई पड़ते हैं। पहले यहां किसान व्यक्तिगत रूप से खेती करते थे। अब यहां स्टैलिनग्राड से ट्रेक्टर और रोस्टसेलमाश से हारवेस्टर औज़ार लाकर कृषि में प्रयोग किये जाते हैं जिससे यहां की खेती कलों द्वारा होने लगी है। यदि रूसी लोगों से यह प्रदेश तथा खेती वाली कल छिन जाती हैं तो इससे रूसियों को बड़ी भारी हानि होगी। कलों के कारण ही इस प्रदेश की उपज सर्वोच्च शिखर पर पहुँच चुकी है।

खनिज सम्पत्ति—मिट्टी का तेल सेना तथा खेती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों के लिये आवश्यक है। मिट्टी के तेल के कुएँ बाकू में खास तौर पर पाये जाते हैं। बाकू पहाड़ियों के सिरे पर काश्पियन सागर के किनारे स्थित है। ग्राज्नी में भी मिट्टी के तेल के कुएँ बहुत हैं। यह स्थान उत्तरी काकेशिया में स्थित है। तेल के अतिरिक्त काकेशिया में और दूसरे खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। आर्डजोनिकिडज़े में अभी हाल ही में दो बड़े कारखाने तथा एक खनिज सम्बन्धी विश्वविद्यालय स्थापित किये गये हैं।

काकेशिया का क्षेत्रफल १ लाख ८० हज़ार वर्ग मील है। यह चार मुख्य भागों में विभाजित है। १—उत्तरी काकेशिया २—दागिस्तान ३—आर्मेनिया ४—अजरबैजान।

काकेशस प्रदेश उपजाऊ है और वहां फलों की उपज अच्छी होती है। कालासागरीय तट के अब्खाजिया और अदजारिया स्थान अपनी चाय के लिये प्रसिद्ध हैं। अंगूर से अंगूरी शराब तयार की जाती है। एक कारखाने से १० लाख बोतल अंगूरी शराब तयार की जाती है।

काकेशस की पर्वतीय श्रेणियों के आगे योरुपीय रूस छोड़ने पर जार्जिया, आरमेनिया और अजरबैजान के एशियाई प्रजातंत्र राज्य स्थित हैं। यह प्रदेश पहले ज़ार के उपनिवेश थे। इन देशों के आगे ईरान की सीमा आरम्भ हो जाती है। ईरानी सीमा के पीछे ब्रिटिश, भारतीय तथा रूसी सेना डटी हुई है। ईरान के आगे आने पर भारतवर्ष की ऊँची पहाड़ी—सीमा है परन्तु हिटलर के लिये सबसे कठिन रोक काकेशिया का प्रदेश है।

काला सागर से कास्पियन सागर तक काकेशस पर्वतीय पहाड़ी लगातार ६०० मील लम्बी फैली है। इस प्रणाली में योरुप की सबसे ऊँची चोटी अल्बुर्ज़ (१८,५६० फुट) स्थित है इस लम्बी पर्वतीय श्रेणी के दोनों सिरों पर निचले मैदान हैं। इस ६०० मील के एक मात्र पहाड़ी प्रदेश में कोई प्रधान दर्रा नहीं है। इस भाग में केवल जार्जिया और ओसेसियन सैनिक मार्ग वर्तमान हैं।

आर्डजोनिकिडजे से पर्वतीय प्रदेश आरम्भ होता है। यहां टेरेक नदी पहाड़ी मार्ग होकर बहती है। यहीं रेलवे लाइन का अंत होता है और जार्जिया की १३० मील लम्बी सैनिक सड़क आरम्भ होती है। जो त्बीलिसी या तिफ को जाती है। यह सड़क इंजीनियरिंग कला का एक अद्‌भुत उदाहरण है। क्रेस्टोवायागोरा दर्रे पर यह सड़क ८,५०० फुट की ऊँचाई पर होकर जाती है यह सड़क १८०८-१८ ई० में तयार की गई थी। इसे ज़ार ने अपनी उस सेना के लिये तयार किया था जो सीमावर्ती प्रदेश में रहने वाली बाग़ी जातियों को परास्त करने के लिये भेजी जाती थी। यह जातियां भारतवर्ष की उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती जातियों से मिलती जुलती हैं।

तिफलिस वाली सड़क २,००० फुट गहरी पहाड़ी कंदराओं से होकर जाती है। मार्ग ठोस चट्टानों को काट कर बनाया गया है। यह मार्ग पहाड़ी नदियों को पार करता हुआ जाता है। इसके मार्ग में हिमागार है जहां से बरफ फिसला करती है और बरफ के पहाड़ों के गिरने का भय रहता है। सड़क कितने ही हिमागारों के नीचे होकर जाती है। सूर्य को भांति यह सड़क मोड़ खाती है और एक मील में कितनी ही बार अपने मार्गों पर दोहरी होती है। जर्मन सेना के लिये यह प्रदेश स्वास्थ्यप्रद नहीं है। यहां मुट्ठी भर लड़ाकू जवांमर्द एक बड़ी जर्मन सेना का सामना कर सकते हैं।

जार्जिया आर्मेनिया और अजरबैजान के प्रजातंत्र राज्य सोवियत रूस के साथी १९२३ ई० में मिले। पहले यह मार्ग यात्रियों के लिये बड़ा ही खतरनाक था और आपसी झगड़े तथा डाकों और हत्याओं के कारण वहां की भूमि रंग गई थी। १९३८ ई० से मार्ग का भय जाता रहा और जब यात्री मार्ग होकर निकलता है तो वहां के बच्चे यात्रियों को फल-फूल तथा पेय पदार्थ देते हैं। मार्ग में कितने ही खनिज-पदार्थ मिश्रित धारायें हैं जिनका पानी पीने को मिलता है।

सोवियत् रूस के अधिकार में आकर पहाड़ी जातियों ने डाका, हत्या, चोरी तथा बदमाशी करना छोड़ दिया है। उनके रहन-सहन में भी बहुत अन्तर आ गया है। अब उनमें अच्छी सभ्यता आ गई है। स्त्रियों को अब घर के भीतर पर्दे में नहीं रहना पड़ता उन्हें बाहर भी पर्दा रखने की आवश्यकता नहीं है। परदा उनके लिये अब पुरानी वस्तु हो गई है। स्कूलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा औषधालयों के बन जाने से लोगों की बुद्धि प्रकाशित हो गई है। एक साथ कृषि होने तथा खनिज पदार्थ का उपयोग होने से लोग धनी हो गये हैं।

उनकी राष्ट्रीयता की पूर्ति उन्हें सामाजिक उन्नति तथा प्रत्येक जाति के लिये वेतन देकर की गई है। उनकी भाषा और कला को प्रोत्साहन दिया गया है। यह प्रोत्साहन सोवियत नीति के अंग हैं। इसलिये हिटलर को वहां कोई भी क्वीस्लिंग (गद्दार, राष्ट्र को धोका देने वाला) नहीं प्राप्त हो सकता है। वहां हिटलर के दूत बेकार ही अपना प्रचार कर रहे हैं। प्रजा की ओर से उन दूतों को किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल रही है।

स्टैलिन जार्जिया का निवासी है। तिफलिस के समीप गोरी स्थान में उसका जन्म हुआ था। लाव्रेंतीबेरिया नामक व्यक्ति त्रिफलिस (तिफलिस) का डिप्टी है। वह सुप्रीम सोवियत् का सदस्य तथा स्टैलिन का विश्वासपात्र लैफ्टिनेंट है।

इसी कारण सोवियत रूस को ज़ार की भूतपूर्व आधीन प्रजा की सहायता मिल रही है। जार्जियन आरमेनियन, कुर्द, तातार, कज़ाक और किर्गीज सभी सोवियत् लाल सेना के सैनिक हैं और आज वे रण स्थल में लड़ रहे हैं। इससे साफ प्रगट है कि जर्मन सत्ता कभी भी सोवियत् सत्ता का सर्वनाश नहीं कर सकती इसके विपरीत उसे ही मुंहकी खानी पड़ेगी।

★ ★ ★

बिना तेल युद्ध की गाड़ी का चलना असम्भव है

यदि यह कथन सत्य है कि बिना तेल के सभ्यता नहीं रह सकती तो यह बात और भी अधिक सत्य है कि बिना तेल के बीसवीं सदी के युद्ध का चलना भी असम्भव है। वायुयान, जहाज़, टैंक, आर्मर्ड कार, मशीनों का चलना सभी मिट्टी का तेल और पिट्रौल पर निर्भर हैं। १६३२ ई० में संसार में २७,००,००,००० टन से अधिक कच्चा पिट्रौल भूमि से निकाला गया था।

पिट्रौल की बाट में प्रकृति ने प्रजातांत्रिक राष्ट्रों के प्रति अच्छी सहानुभूति दिखलाई है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में समस्त संसार से अधिक पिट्रौल निकलता है। समस्त संसार की मांग का ६० प्रतिशत पिट्रौल संयुक्त राष्ट्र से आता है। १९३८ ई० में जर्मनी और आस्ट्रिया ने ६,१५;००० टन, इटली ने १,४०,००० टन (१२७,००० अल्बानिया से), पौलैण्ड ने ५,०७,००० टन और जापान ने ३,५६,००० टन मिट्टी का तेल निकाला। १९३२ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने १६,४०,००,००० टन और कनाडा ने ९४०००० टन पिट्रौल निकाला।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पश्चात मिट्टी के तेल में सोवियट रूस का नम्बर है। १९१३ ई० में रूस से ९०,००,००० टन के ऊपर १९२० में ३०,००,००० टन, १९९५ ई० में ८०,००,००० टन और १९३८ ई० में २,९०,००,००० टन मिट्टी का तेल प्राप्त हुआ। वर्तमान समय में रूस के तेल साफ करने वाली मशीनें अपने देश से तेल को साफ करने में सफल हुई हैं परन्तु उनमें से बहुत सी मशीनें अधिक पुरानी हो गई हैं और काम देने योग्य नहीं हैं। रूस के कारखाने उसके आवश्यकतानुसार तेल तयार कर रहे हैं। रूस में तेल बहुत है। यदि वह अपने देश के समस्त तेल-क्षेत्रों की खोज करे और अपना तेल का निर्यात बढ़ावे तो वह ऐसा कर सकता है परन्तु इस में काफी समय की आवश्यकता है। रूस के आवागमन के साधन बड़े खराब हैं जिससे निर्यात में बड़ी कठिनाई है।

रूस से कुछ हो कम वेनेज्वेला के तेल की उपज है १९६८ ई० में वेनेज्वेला में २,८०,००,००० टन तेल निकाला गया था।

वेनेज्वेला के बाद ईरान का नम्बर तेल की उपज में आता है। ११३८ ई० में ईरान में १,००,००,००० टन कच्चा पिट्रौल निकाला गया था। ईरान के तेल निकालने का काम ऐंग्लो-ईरानियन आयल कम्पनी के हाथ में है। आबादान नगर में संसार के बड़े साफ करने वाले कारखानों में से तीन कारखाने हैं। इनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० लाख टन पिट्रौल रक्खा जा सकता है। पूर्व के ब्रिटिश जहाजी बेड़े के तेल लेने का मुख्य स्थान आबादान नगर में है।

दूसरे प्रमुख तेल निकालने वाले देशों में मुख्य नीदरलैंड, पूर्वी द्वीप समूह हैं। १९३८ ई० में डच पूर्वी द्वीपसमूह में ७०,००,००० टन तेल निकाला गया था। रूमानिया में ६,६०,००,००० टन मैक्सिको में ४८,००,००० टन, इराक में ४२,५०,००० टन, पश्चिमी ब्रिटिश द्वीप समूहों में २४,७०,००० टन, अर्जेन्टाइना में २३,७०,००० टन, पीरू में २१,००,००० टन और ब्रिटिश बर्मा में १०,६०,००० टन तेल १९३८ ई० में निकाला गया था।

वर्तमान समय में जर्मनी रूमानिया और रूस से पिट्रौल पाने की आशा रखता है। १९३८ ई० में जर्मन रायच ने ५०,००,००० टन पिट्रौल आयात किया था। वर्तमान युद्ध में उसकी आवश्यकतायें उससे कहीं अधिक होंगी। रूमानिया में १९३८ ई० में केवल ७०,०२,००० टन पिट्रौल निकला था। रूस-जर्मन युद्ध छिड़ जाने से रूसी पेट्रौल जर्मनी को नहीं मिल सकता है। उसके तेल के नल कालासागर और कास्पियन सागर की ओर ही लगे हैं।

जर्मनी ने यह विश्वास दिलाने के लिये भरसक प्रयत्न किया है कि वह तेल अपनी आवश्यकता के लिये अपने यहाँ तयार कर सकता है। उसने अपनी खानों से अधिक पेट्रौल निकालने और मोटर में जलने वाली लकड़ी के तयार करने में भरसक परिश्रम किया है। पेट्रौल की उपज जर्मनी में भरसक परिश्रम करने पर भी अच्छी नहीं हुई है। मालूम होता है कि यदि आस्ट्रिया को भी मिला दिया जावे तो भी जर्मनी में ७,००,००० टन से अधिक मिट्टी का तेल नहीं पैदा हो सकता है। मोटर में जलने वाले पदार्थ को भी जर्मनी ३०,००,००० टन सालाना से अधिक पेट्रौल और तेल गैस तयार नहीं कर सकता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जर्मनी को यदि बाहर से मिट्टी का तेल और पेट्रौल न मिला तो उसका युद्ध जारी रखना कठिन हो जावेगा।

★ ★ ★

भारतीय जूट के कारखाने तथा रोज़गार

भारत में १८५५ ई० में प्रथम जूट का कारखाना रिशरा में खोला गया। इस कारखाने में टाट बनता था और वह बाहर भेजा जाता था। अग्नि कांड द्वारा कारखाना नष्ट हुआ और उसके स्थान पर विलिङ्गडन जूट मिल की स्थापना हुई। १८५९ ई० में सबसे पहले बोर्नगोरे में बिजली द्वारा चलने वाले करघों का कारखाना बोरन्यू कम्पनी द्वारा खोला गया जार्ज हेरण्डर्सन और कम्पनी उसके एजेण्ट थे। तब से जूट का रोज़गार बराबर उन्नति कर रहा है। १९३६-३७ ई० में जूट-पाट के कारखानों तथा रोजगार को प्रोत्साहन मिला परन्तु कारखानों के मध्य इतनी लाग थी कि बना हुआ सामान कम मूल्य पर बेचा गया। दूसरे साल जूट-पाट के बने सामान की मांग कम हो गई और जूट-पाट के बने सामान का स्टाक बढ़ गया जिससे मूल्य बहुत घट गया। कारखाने के बीच सामान तयार करने की कमी अथवा खर्च की कमी के सम्बन्ध में किसी प्रकार का समझौता १९३८-३९ में नहीं हो सका। सितम्बर महीने तक काम के समय का कोई ध्यान न देते हुये असोसियेशन मिल छोड़ कर सभी कारखाने काम करते रहे। असोसियेशन मिल में हफ्ते के अन्दर ५४ घंटे काम होता था और दूसरे कारखानों में इससे दुगुने तथा तिगुने समय तक काम होता रहा। इस कारण बने हुये सामान का इतना अधिक स्टाक बढ़ गया कि मूल्य बहुत घट गया और कारखाने को हानि होने लगी। कारखानों के सामने आर्थिक संकट आ गया था। ऐसी स्थिति में बंगाल सरकार ने दखल दिया और आर्डिनेन्स (घोषणा) द्वारा सरकार ने जूट कारखानों के काम करने का समय ५५ घंटे प्रति सप्ताह नियत कर दिया।

घोषणा के पश्चात् भारतीय कारखानों के जूट संघ ने भारत के सभी कारखानों के बीच काम के समय को घटाने का संगठन किया और भारत में एक कारखाने को छोड़ कर सभी जूट पाट के कार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने संघ के सदस्य हो गये और उन्होंने समय घटाने का भी समझौता कर लिया। यह बात जनवरी १९३८ ई० में तय हुई। आर्डिनेन्स के कारण जूट के तयार सामान का मूल्य बढ़ा और स्टाक में कमी हो गई। परन्तु शीघ्र ही दशा फिर खराब हो गई और दिसम्बर १९३८ ई० तक फिर बने हुये सामान का स्टाक अधिक एकत्रित हो गया पुनः आर्थिक संकट आ गया इसी बीच ब्रिटिश सरकार ने ? हज़ार लाख बालू के बोरों तथा २ लाख झोलों का आर्डर देकर जूट मीलों को आर्थिक संकट से बचा लिया। फिर मीलों का कार्य नहीं चल सका और बंगाल सरकार के ज़ोर देने पर भारतीय कारखानों के जूट संघ ने काम करने के समय को घटा कर ४० घंटे प्रति सप्ताह कर दिया परन्तु यह समझौता अधिक समय तक न चल सका। ३१ जुलाई १९३९ ई० में बर्तमान योरुपीय युद्ध का आरम्भ हो गया जिससे जूट के बने हुये प्रत्येक भांति के सामानों की माँग हुई। बालू के बोरे का और अधिक आर्डर मिला। सभी करघे ताने-बाने खोल दिये गये और काम करने का समय बढ़ा कर ४५ घंटे प्रति सप्ताह कर दिया गया। इसके बाद और अधिक बालू के बोरों की मांग हुई। नवम्बर १९३९ ई० में ५० करोड़ बालू के बोरों की मांग की गई।

अधिक आर्डर आने तथा साधारण फुटकर मांग होने के कारण सामान अधिक तयार करने की आवश्यकता प्रतीत हुई इसलिये काम करने के समय को बढ़ा कर ५४ घंटे प्रति सप्ताह कर दिया गया। जूट-पाट की मांग भी बढ़ गई।

१९३९ ई० में जूट-पाट की उपज पिछले सालों से अच्छी हुई इसलिये जब बाजार में वह बिकने आया तो उसका मूल्य कुछ घट गया। जूट पाट की मांग विदेशों से भी थी। कारखानों ने मूल्य ठीक रखने के लिये सामान तयार करने में कुछ कमी कर दिया। जब व्यापार करने के लिये जूट-पाट की खरीद आरम्भ हुई तो बंगाल की सरकार ने आर्डिनेन्स निकाला कि भविष्य में बाजार के अन्दर ३६ रु० प्रति बंडल के भाव से जूट बेचा जावे। भारतीय जूट मिल्स संघ ने अपनी अनुमति दे दी कि वह कुछ नियत भाव से नीचे जूट की खरीद न करेगा। यह समझौता शीघ्र ही तोड़ दिया गया और जूट का भाव बढ़ गया। कारख़ाने इस बात पर राज़ी हो गये कि वह कुछ समय तक खरीद न करेंगे क्योंकि सरकार कम से कम मूल्य नियत करने का इरादा कर रही थी। संसार के व्यापार तथा राजनीति का प्रभाव जूट के कच्चे तथा बने माल पर पड़ रहा था। संसार के बहुत से देशों में जूट के स्थान पर दूसरे वस्तु के प्रयोग करने की खोज हो रही थी। १९३७ ई० में जूट के बने सामान के अधिक व्यापार बढ़ जाने के कारण जूट के कारखानों पर प्रभाव पड़ा और जूट के तयार सामान का निर्यात कम हो गया।

१९३८-३९ ई० में कच्चे जूट की खपत पिछले दो वर्षों से कम हुई। १९३६-३८ ई० तक भारतीय जूट के कारखाने प्रयत्न करते रहे कि वह विदेशी जूट के कारखानों का सामना करें। १९३८-३९ ई० में जूट की खपत सरकारी घोषणा तथा काम के समझौते के कारण कम हुई। १९३६-३७ के स्टाक की ऋतु के अंत में असोसियेशन मिल्स के अन्दर ३५ लाख, १९३७-३८ के अंत में २८ लाख और १९३८-३९ के अंत में १९ लाख गट्ठरों का स्टाक रहा।

समस्त भारतीय जूट मीलों के अन्दर स्टाक की ऋतु के १९३७-३८ के अन्त में २९½ लाख, १९३८-३९ के अन्त में २१⅓ लाख और १९३९-४० के अंत में २० लाख जूट के गट्ठर रहे।

१९३९-४० ई० में पहले ६० घंटे प्रति सप्ताह फिर ५४ घंटे प्रति सप्ताह काम होने पर मिलों के अन्दर ७१ लाख गट्ठरों की खपत हुई। १९४० ई० में बालू के बोरों की माँग कम हो जाने के कारण काम करने का समय ५४ घंटे प्रति सप्ताह कर दिया गया और प्रति मास एक सप्ताह की छुट्टी दी जाने लगी। यह अनुमान लगाया जाता है कि बर्तमान साल में जूट की खपत और अधिक कम होकर लगभग ६० लाख गट्ठर हो जावेगी।

१९३८-३९ के आरम्भ काल में जो बाढ़ आई उसके कारण २५ प्रतिशत जूट की खेती खराब हो गई इस कारण जूट की खेती करने वाले दुखी हो गये। जूट का मूल्य भी घटा रहा और अन्त समय में जब दाम बढ़ा तो किसानों के पास बहुत कम जूट रह गया था। मूल्य के बढ़ जाने से जूट के व्यापारियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लाभ हुआ। प्रजा के सौभाग्य से १९३९ ई० में जब जूट का दाम बढ़ा तो अधिकांश जूट किसानों के हाथ में ही था। इसी कारण जूट की खेती करने वाले किसान पिछले वर्षों की अपेक्षा अधिक लाभ उठा सके और खुशी हो गये।

इसी बीच बंगाल की सरकार ने घोषणा किया कि जूट की मांग और खपत का ब्यौरा ठीक करने के लिये वह जूट की खेती के लिये सरकारी नियम बना कर प्रबन्ध करेगी। सरकार की नियत थी कि वह भूमि का कुछ भाग जूट की खेती के लिये छोड़ देगी और जूट की खेती सरकारी आज्ञा द्वारा हो सकेगी।

जब कि प्रजा को यह बतलाया जा रहा था कि जूट का मूल्य बढ़ने वाला है उसी समय सरकार लोगों को अनिवार्य रूप से जूट की खेती को रोक रही थी। उसके पश्चात् सरकार ने अपनी अनिवार्य रोक की आज्ञा उठा लिया और प्रचार करती रही कि जूट का मूल्य बढ़ जावे। इसका फल यह हुआ कि १९३९-४० ई० में १३० लाख गट्ठरों से अधिक जूट की उपज हुई। अन्तरराष्ट्रीय कारणों के उपस्थित हो जाने से सरकार की योजना में बाधा पड़ गई। युद्ध की भीषणता के कारण दो तिहाई कच्चा जूट और तयार सामान का बहुत सा भाग युद्ध के लिये अलग कर दिया गया। जहाज मिलने तथा उनके सरलता पूर्वक आवागमन न होने के कारण जिन देशों के साथ भारत का व्यापार खुला है उनके साथ भी व्यापार नहीं हो रहा है। इन सभी असुविधाओं के होने के कारण सरकार ने कच्चे तथा तयार जूट के मूल्य को अपने अधिकार में रखने का असफल प्रयत्न किया। जहाजी कठिनाई होने के सिवा विदेशी व्यापारी अधिक जूट अथवा जूट का सामान खरीदने को तयार नहीं क्योंकि कच्चे जूट तथा उसके बने सामान की मांग तो कम है परन्तु भरती कहीं अधिक है बंगाल सरकार ने अपनी घोषणा द्वारा जो सबसे कम जूट का मूल्य नियत किया उससे उसकी मंशा यह थी कि वह जूट के व्यापार को एकाएक बन्द कर दे और सचमुच ही व्यापार कुछ समय के के लिये रुक गया। : सरकार ने पुराने जूट को मूल्य बढ़ाकर खरीदना आरम्भ किया परन्तु इसका बाज़ार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और जूट भी कम होती रही इसलिये बंगाल सरकार को १० लाख रुपये का घाटा उठाना पड़ा। जूट का मूल्य निथत कर देने के कारण उसका प्रभाव दिन प्रति दिन मालूम हो रहा है और किसी न किसी समय शीघ्र भविष्य में संकट आ जावेगा। मूल्य की कमी ने कलकत्ता के अन्दर व्यापार रोक दिया है शीघ्र ही ज़िलों के व्यापारी भी जूट की खरीद बन्द कर देंगे और जो नया जूट तयार होगा उसके लिये फिर बाज़ार में स्थान न रह जावेगा।

जूट की खेती बढ़ जाने के कारण चावल की खेती में कमी हो गई है। चावल की उपज कम होने के कारण उसका मूल्य बढ़ गया है। इसलिये जूट के किसानों का अधिकांश जूट उनके पास रह जावेगा और उन्हें अपने भोजन के लिये अधिक व्यय करना पड़ेगा।

जूट के किसानों को १९३८-३९ ई० में जूट से २२ करोड़ और १९३९-४० में १२ करोड़ की आय हुई। इस प्रकार जूट की उपज करने वाले ज़िलों की आय में १० करोड़ रुपये की कमी हुई है उसी हिसाब से उनकी आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है।

पिछले कई वर्षों से मज़दूरों की दशा बहुत खराब थी परन्तु योरुपीय युद्ध के आरम्भ हो जाने के कारण भारतीय जूट मिल्स संघ ने मज़दूरों का १० प्रतिशत वेतन बढ़ाने का निश्चय किया। तब से जूट के कारखानों में किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं उपस्थित हुई।

भारतीय केन्द्रीय जूट कमेटी और भारतीय जूट की मीलों का संघ जूट के रोज़गार के सम्बन्ध में नवीन खोज कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े तथा छोटे बन्दर

बनमानुस (Gorila) यह अफ्रीका के पश्चिमी तथा मध्यवर्ती गर्म देशों के पर्वतों के बनों में निवास करता है। चूंकि मनुष्य के सामने यह बहुत कम आता है इस कारण इसके स्वभाव का पता लगाना बहुत कठिन है। क्योंकि जीवित बनमानुस का देखना कठिन है इसलिये मरे हुये बनमानुसों का अध्ययन किया गया है जिससे पता लगा है कि यह ६ या ७ फुट ऊँचा होता है। इसका सीना ६० इंच का होता है। इनके दोनों बाँह फैलाकर नापने में इसकी लम्बाई ७½ फुट होती है।

यह अपने विशाल डील-डौल, शक्ति, भयानक शरीर और क्रोध के कारण बदनाम कर दिया गया है। इसके रहने का मुख्य स्थान मध्यवर्ती अफ्रीका में है। जब इसके कुटुम्ब के जीवन में बाधा डाली जाती है या इस पर आक्रमण किया जाता है तो यह बड़ा भयानक तथा क्रोधित हो जाता है। बन्दर जाति का यह सबसे बड़ा पशु है। चूंकि शिकारी लोग इसका बहुत ज्यादा शिकार करते थे इस कारण इसके शिकार करने की मनाही कर दी गई है। अब केवल उन्हीं लोगों को इसके शिकार करने की आज्ञा दी जाती है जो इसका शिकार वैज्ञानिक खोज की दृष्टि से करते हैं।

यह बात निःसंदेह सत्य है कि यह बड़ा ही सीधा तथा शान्तप्रिय पशु है यद्यपि देखने में यह भयानक प्रतीत होता है। इसका शरीर आधा पशु का और आधा मनुष्य का होता है। इसी कारण इसे बनमानुस अथवा वन का मनुष्य कहते हैं।

जब तक इस पर हमला नहीं किया जाता यह मनुष्य पर आक्रमण कदापि नहीं करता है। यद्यपि यह शेर को भी मार सकता है तो भी यह अपना जीवन अनमूदा और गाजर पर व्यतीत करता है तभी इसका शब्द भयानक प्रतीत होता है नहीं तो इसकी आवाज सदैव कोमल होती है। कभी भी कोई कहानी इसके क्रोध में होने की सुनने में नहीं आई है।

बनमानुस की शक्ति के सम्बन्ध में भी ठीक ठीक पता लगाना कठिन हो गया है अधिक उदाहरण उसकी शक्ति के अनुमान लगाने के अभी तक प्राप्त नहीं हुये हैं। उसकी शक्ति का अनुमान लगाने का केवल एक मात्र उदाहरण यह मिला है कि जब उसकी मादा के बच्चा होने को होता है तो वह उसके रहने के लिये बड़ी बड़ी डालों तथा टहनियों को सरलतापूर्वक तोड़कर घर बनाता है।

★ ★ ★

भारतवर्ष की पूर्वी सीमा

भारतवर्ष की पूर्वी सीमा दक्षिण में बंगाल की खाड़ी से उत्तर में हिमालय पर्वत तक फैली हुई है। इस सीमावर्ती रेखा का सबसे दक्षिणी भाग अक्याब के उत्तर एक संकरी खाड़ी से आरम्भ होता है। अक्याब एक प्रसिद्ध बन्दरगाह तथा हवाई अड्डा है। इस पर आजकल जापान का अधिकार है। अक्याब से एक सड़क आरम्भ होती है और कोक्स बाजार के पूर्व भारत-बरमा सीमा को पार करती हुई चिटगांव पहुँचती है।

अराकान के पहाड़ी जिले में पेलत्वा के ठीक पश्चिम सीमावर्ती लाइन उत्तर की ओर मोड़ खाती है उसके पश्चात् यह लाइन चिटगांव पहाड़ियों की ओर मुड़ती है और फिर कुछ दूर पहाड़ी प्रदेश में गुज़रने के पश्चात् पूर्व की ओर मोड़ खाती है और खम्भात के समीप मनीपुर नदी को पार करती है। इसी स्थान से सीमावर्ती लाइन उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है और टाम्मू होकर जाती है। टाम्मू स्थान इम्फाल (मनीपुर) सित्तौंग सड़क पर ऊपर चिंडविन नदी पर स्थित है। उसके बाद सीमावर्ती लाइन उत्तर को नागा प्रदेश में १२००० फुट ऊँचे पर्वतों से होकर पटकोई पहाड़ियों को जाती है। उसके बाद पूर्व की ओर मुड़कर चानकान दर्रे को जाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर वहाँ से उत्तर की ओर बरफ से ढकी हिमालय श्रेणी को चली जाती है।

इस प्रदेश में कोई रेलवे लाइन नहीं है यहां केवल एक सड़क है। यह सड़क दीनापुर से चलकर कोहिया होती हुई मनीपुर राज्य की राजधानी इम्फाल को जाती है। दीनापुर में मांडले रोड रेलवे स्टेशन है। फोर्ट ट्रेगियर से रंगमाती और लुङ्गलेह से सिल्चर को मार्ग जाता है। बिशेनपुर-इम्फाल को एक कच्ची सड़क है जो सीमावर्ती लाइन होकर चिंदविन तक जाती है। कोहिमा से एक सड़क मार्ग उत्तर की ओर गोज़ा घाट रेलवे को जाता है।

इस पर्वतीय प्रदेश का मध्यवर्ती भाग चिटगांव पहाड़ी प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध है। उसके बाद लुशाई की पहाड़ियां हैं।

पहाड़ी प्रदेश के नीचे कुछ रेलवे लाइनें हैं जहां होकर युद्ध सामग्री जा सकती है। रेलवे का सबसे दक्षिणी स्टेशन चिटगाँव ज़िले में है। वहां से रेलवे लाइन उत्तर-पश्चिम नौखाली होकर उत्तर की ओर ब्राह्मण बारिया को जाती है। ब्राह्मण बारिया से नवीन किंगजार्ज चतुर्थ नामक पुल होकर एक शाखा लाइन पश्चिम की ओर जाती है। उत्तर की ओर रेलवे लाइन शाखा लाइनों द्वारा सिलहट और सिल्चर से मिली है और फिर वह दीनापुर जाने वाली बंगाल-आसाम प्रधान रेलवे लाइन से मिल मिल जाती है जो डिब्रूगढ़ और सदिया को जाती है। डिब्रूगढ़ और सदिया से नवीन आसाम-चीन सड़क होकर युद्ध सामग्री चीन भेजी जा सकती है।

रेलवे लाइनों के साथ सड़कें भी चलती हैं। शिलांग नगर जैंतिया पहाड़ियों में स्थित है। शिलाँग जाने के लिये सड़क-मार्ग भी जाता है।

★ ★ ★

बोल्डर डैम (Boulder Dam)

कोलोरोडो नदी में बसंत ऋतु में बाढ़ आती है। यह बाढ़ राकी पर्वतों की हिम के कारण आती है। ह्वांगहू नदी की भांति इस नदी की बाढ़ से भी प्रजा की बड़ी भारी हानि होती थी। यह नदी केलीफोर्निया की खाड़ी में गिरती है। इम्पीरियल घाटी में पहुँच कर यह नदी बाढ़ के कारण बांधों को तोड़ देती थी या ऊपर होकर बहने लगती थी और खेतों तथा नगरों को डुबा देती थी।

अब नदी पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया गया है। ब्लैक कन्योन में कोलोरोडो नदी का संसार का सबसे ऊँचा बांध बनाया गया है। इस स्थान पर नदी के पानी तथा पानी की शक्ति मानव जाति के फायदे के लिये प्रयोग करने का प्रयत्न किया गया है।

यह बांध पहिली मार्च १९३६ई० में बन कर तयार हुआ। इसके बनाने में २१ करोड़ ७१ लाख रुपये खर्च हुये हैं। यह ५ वर्ष में बन कर तयार हुआ है। यह आधुनिक विज्ञान-शास्त्र का एक अद्भुत उदाहरण है। यह बांध भयानक बाढ़ को रोकता है और सूखे समय में समीपवर्ती मैदानों के खेतों को सिंचाई का काम देता है। इसी बांध पर एक बिजली घर बनाया गया है जहां इस बाँध के पानी से १८ लाख ३५ हजार अश्व-शक्ति की बिजली तयार होती है। यह बिजली इस बांध के पानी की भांति हजारों लोगों के प्रयोग में आती है। लास ऐंजलीस नगर को इसी से बिजली मिलती है।

इस बांध की लम्बाई ११८० फुट, ऊँचाई ७२७ फुट और सिरे पर मोटाई ४५ फुट तथा तली में ६५० फुट है। इसके तयार करने में ४५ लाख घन गज़ कंक्रीट वस्तु प्रयोग की गई है जो कैलीफोर्निया से फ्लोरीडा तक के लिये एक दीवार बनाने को काफी थी।

इस बांध को बनने से मेड (Mead) नामक झील बन गई है। झील की लम्बाई ११५ फुट और क्षेत्रफल २२७ वर्ग मील है। यह संसार की सबसे बड़ी बनावटी झील है। इस झील से सिंचाई करके दक्षिण-पश्चिम के किसानों ने १० लाख एकड़ भूमि को खेती के योग्य बना लिया है।

बोल्डरडैम की भांति ही वाशिंगटन में कोलम्बिया नदी का ग्रैण्ड कौली डैम (Grand Coulie Dam) बन रहा है। इसकी ऊँचाई ५५० फुट है। इसके तयारी में २९ करोड़ ९० लाख रुपया खर्च किया जावेगा। बोल्डर बाँध की भांति ही यह बांध भी पानी रोकने, सिंचाई करने तथा बिजली तयार करने के काम में लाया जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113727
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुफा की सेना

(जर्मन कहानी)

सहस्रों वर्ष बीते एक दिन एक जर्मन किसान की पुत्री अपने घर से अकेली भ्रमण करने के ध्यान से बाहर पहाड़ों तथा बनों की ओर गई। वह कई मीलों तक चली गई और मार्ग में उसे कितनी ही पहाड़ियां तथा घाटियाँ मिलीं।

जब चलते चलते वह थक गई तो एक खोह के द्वार पर पहुँची। वह बड़ी डरपोक थी इसलिये गुफा के द्वार पर खड़े रहने का उसका साहस नहीं हुआ। वह गुफा के भीतर प्रवेश कर गई।

भीतर प्रवेश करने का साहस तो उसने अवश्य किया परन्तु उसका हृदय काँप रहा था। लड़की गुफा के भीतरी भाग देखने के लिये बड़ी इच्छुक थी।

जब वह भीतर की ओर प्रवेश करने लगी तो भय के कारण उसका हृदय काँपने लगा। भीतर पहुँच कर उसने देखा कि वहाँ एक बड़ी हथियार बन्द सेना पड़ी सो रही है। सैनिकों को देख कर पता चलता था कि वे कहीं युद्ध के लिये जा रहे हैं। सैनिकों की बग़ल में नंगी तलवारें और भाले पड़े थे। जब वह भीतर एकाएक पहुँची तो उसे बड़ा अँधेरा लगा परन्तु थोड़ी देर के पश्चात् जब कुछ प्रकाश हुआ तो उसने देखा कि एक सिपाही जाग रहा है और वह सोते हुये सैनिकों की रखवाली कर रहा है। चौकीदार सैनिक देखने से सेना का सेनापति प्रतीत होता था।

चौकीदार सैनिक ने लड़की को देखा कि वह भय से काँप रही थी उसने लड़की से कहा! ओ लड़की डरो नहीं यह सैनिक तुम्हें कोई कष्ट न देंगे और तुम जैसी छोटी लड़की को न मारेंगे। हाँ यह ध्यान रखना कि जब तुम इस गुफा को देख कर बाहर जाओ तो द्वार के बड़े घंटे को मत बजाना।

छोटी लड़की ने सैनिक की बात का ध्यान रक्खा और घंटे नहीं बजाना चाहती थी परन्तु उसके हृदय में कौतूहल उत्पन्न हो गया था कि सैनिक ने घंटा बजाने के लिये क्यों मना किया?

घंटे के शब्द से सेना जाग उठी और सैनिकों ने सेनापति से कहा हुज़ूर समय आ गया! समय आ गया!! अब देश को हमारी पूर्ण आवश्यकता है।

सेनापति ने उत्तर दिया "नहीं समय नहीं आया।" यह बात सुन कर सभी सैनिक एक मिनट में ही प्रसन्न चित्त फिर सो गये।

इतने में बड़े जोरों के साथ भयानक शब्द हुआ। समस्त गुफा हिलने लगी। समस्त पृथ्वी हिल रही थी। भयानक शब्द के साथ ही साथ गुफा का द्वार बन्द हो गया और गुफा, सेना तथा किसान की छोटी लड़की सभी लुप्त हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेरूसलेम

१९१७ ई० के पहले जेरूसलेम पर तुर्कों का शासन था। गत महायुद्ध में तुर्की जर्मनी के साथ था इस कारण अलेनवी मिस्री सेना लेकर जेरूसलेम नगर की ओर बढ़ा। अक्तूबर १९१७ ई० को मित्र सेनाओं और तुर्की सेनाओं में युद्ध आरम्भ हुआ। ९ दिसम्बर को दोपहर के समय तुर्की सेना ने जेरूसलेम नगर का आत्मसमर्पण कर दिया। ११ दिसम्बर को अलेनवी ने जेरूसलेम नगर में प्रवेश किया और एक प्राचीन स्मारक पर जाकर घोषणा की कि जेरूसलेम पर सैनिक नियम लागू है परन्तु शान्तिप्रिय मनुष्यों के कार्यों से सेना की ओर से कोई विघ्न न उत्पन्न किया जावेगा।

उसके पश्चात् अलेनबी ने घोषणा की और जेरूसलेम के नागरिकों को विश्वास दिलाया कि समस्त पवित्र धार्मिक स्थानों का आदर किया जावेगा। इससे पूर्व पैलेस्टाइन में जो भी युद्ध हुये वह सभी धार्मिक थे और सभी विजयताओं ने अपने कोप की शान्ति अपने विरोधी धार्मिक स्थानों को नष्ट करके की थी। जब रोमन जाति ने जेरूसलेम पर अधिकार किया था तो उन्होंने यहूदियों के साल्मन के मन्दिर जला डाला था। सातवीं सदी में अरब लोगों ने ईसाइयों के गिरजाघरों को नष्ट किया था। इन्हीं गिरजाघरों पर अधिकार जमाने के लिये क्रूसेड युद्ध लड़ा गया था। जेरूसलेम ईसाई, मुसलमान और यहूदी तीनों जातियों का धार्मिक नगर है।

इस नगर में निवासी अपने अपने धर्म के कट्टर पुजारी हैं उनमें कौमी भावों का अभाव है। धर्म के सामने सब कुछ बेकार समझा जाता है। इसी कारण जेरूसलेम के मुसलमान निवासी अलेनबी की घोषणा पर विश्वास न कर रहे थे। उन्हें विस्मय था कि यह कैसे हो सकता है कि ईसाई विजयता मुसलमानों पर कर न लगावेगा और उनके पवित्र स्मृतियों को नष्ट नहीं करेगा।

अलेनबी ने घोषणा की थी कि "तुम्हारा नगर मानव जाति के तीन प्रधान वर्गों का धार्मिक नगर है। इस नगर की धरती उन धार्मिक यात्रियों के प्रार्थना द्वारा पवित्र की जा चुकी है जो यहां कई सदियों से आते रहे हैं इसलिये मैं इस बात को बतला देना चाहता हूँ कि प्रत्येक धार्मिक भवन, स्मृति, पवित्र स्थान, प्रार्थना का स्थान, मन्दिर या और दूसरे प्रकार का धार्मिक स्थान आदर की दृष्टि से देखा जावेगा और उसकी रक्षा उसी प्रकार की जावेगी जैसा कि उस पवित्र स्थान के मानने वाले उसकी रक्षा करते हैं।"

इस घोषणा के साथ ही साथ जेरूसलेम पर ब्रिटिश शासन आरम्भ हुआ। ब्रिटिश शासन में नगर की उन्नति हुई है। नगर में एक नया नगर और बस गया है जिसे नवीन जेरूसलेम कहते हैं और जहां जियोनिस्ट के मानने वाले यहूदी रहते हैं। इन यहूदियों ने अपने नगर के भवनों को मध्य योरुपीय कला का रंग दिया है।

फिर भी प्राचीन नगर में किसी प्रकार का भी परिवर्तन नहीं हुआ। नगर की प्राचीन दीवारों के पूव की ओर मुसलमानों का कब्रस्तान है। वहां यदि स्थान भी मिल जाते तो भी सिनेमा घर बनाने के लिये मुसलमानों से युद्ध लेना पड़ेगा परन्तु वहां की भूमि में सिनेमा घर तयार करने के लिये अच्छा स्थान ही नहीं है। नगर की भूमि केडरोन घाटी की ओर खड़ी ढालू है उसके बाद सामने वाली जैतून की पहाड़ी की ओर यकायक ऊँची हो गई है।

प्राचीन नगर की गलियां इतनी सँकरी हैं कि वहां कोई मोटरकार नहीं चल सकता है। गलियों में गधे और ऊँट चला करते हैं और वहां अरब लोग प्राचीन काल की भांति अब भी अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। प्राचीन नगर की प्रधान सड़क किङ्ग डेयिड स्ट्रीट है। यह सड़क पूर्व की ओर ढालू है और कई स्थानों पर सीढ़ियां बनी हैं यह सीढ़ियां उखड़ी हुई हैं, सड़क के ढालू स्थानों पर नगर निवासियों की भीड़ सदैव लगी रहती है।

प्राचीन नगर में भिश्ती लोग अपनी मशक लिये पानी भरते दिखाई पड़ते हैं। मशक बकरी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमड़े की बनी होती है। सोते से पानी भर कर मशक को पीठ पर लाद कर भिश्ती घरों में पानी पहुँचाता है। भिश्ती को पानी भरने में परिश्रम तो अवश्य अधिक पड़ता है पर फिर भी उसे इस कार्य में अधिक लाभ है। नगर में भिश्तियों की भांति लैमनेड और कहवा बेचने वाले भी फेरी लगाते रहते हैं। लैमनेड वाला अपना पीतल का मटका अपनी पीठ पर लादे गिलास और कटोरे लिये चारों ओर घूमता रहता है।

डेविड (दाऊद) सड़क पर दूकानदार और रोजगारी लोग अधिक रहते हैं। कहीं कपड़े की दूकान है तो कहीं खाने की और फिर उसी के बगल में बढ़ई, लोहार या चमार की दूकान है। प्रत्येक रोजगारी अपने अपने कार्य में व्यस्त दिखाई पड़ता है। कहीं कहीं तो चमारों की कई एक दुकानें लगातार एक साथ ही दिखाई पड़ती हैं।

जेरूसलेम में टायर या टीन बेकार नहीं जाता। प्रत्येक का सदुपयोग कर लिया जाता है।

जेरूसलेम में ईस्टर सप्ताह बड़ा ही भयानक होता है। १९ सौ वर्ष पूर्व इसी सप्ताह में नगर में झगड़ा हुआ था। ईस्टर सप्ताह में ईसाई, मुसलमान और यहूदी तीनों धर्म के त्योहार पड़ते हैं। ईस्टर ईसाइयों का पास्सोवर यहूदियों का और मुसलमानों का नबी मूसा का त्योहार एक ही सप्ताह में पड़ता है। तीनों धर्म के धार्मिक-यात्री जेरूसलेम में आते हैं। नगर में अपार भीड़ हो जाती है। धार्मिक यात्रियों के एकत्रित होने और धार्मिक जोश बढ़ने से झगड़े की सम्भावना उत्पन्न हो जाती है। सप्ताह भर पुलिस को चैन नहीं मिलता और जब तक सप्ताह व्यतीत नहीं हो जाता तब तक पुलिस परेशान रहती है।

इस सप्ताह में जो धार्मिक यात्री जेरूसलेम आते हैं वह होली सफेल्चर के गिरजा घर तथा बड़ी मस्जिद को देखने आते हैं। सफेल्चर गिरजा घर ईसा के समाधि के चारों ओर बनी है। बड़ी मस्जिद जिस स्थान पर बनी है वही पहले सालमन का मन्दिर बना था। इस मन्दिर को रोमन लोगों ने नष्ट कर डाला था। इस मस्जिद को राक के लोग की मस्जिद (चट्टी गुम्बद वाली मस्जिद) कहते हैं।

इस बड़ी मस्जिद की बाहरी दीवार के सामने सनातनी यहूदी लोग सालमन के मन्दिर की बर्बादी की स्मृति में विलाप करते हैं। दूसरी ओर मोअज्जिज (अज़ान देने वाला) मीनार पर चढ़कर "अल्लाह" (ईश्वर) को सबसे बड़ा देव होने की घोषणा करता है। इसी बीच ईसाई बस्ती से गिरजाघर के घंटे की आवाज सुनाई देती है और ईसाई लोग प्रार्थना के लिये चर्च में जाते हैं।

पूर्वी ईसाई रेज़रेक्शन को बड़े समारोह के साथ मनाते हैं। पाम संडे के दिन आर्मेनियन और सीरिया के लोग ईसू के दुबारा आने का संस्कार मनाते हैं। सोमवार और बृहस्पतिवार को यूनानी, सिरियन, आर्मेनियन और लैटिन तथा कोप्ट लोग एक अद्भुत संस्कार करते हैं जिसे वाशिंग आफ दि फीट कहते हैं। वाशिंग आफ दि फीट का अर्थ पैर का साफ करना है।

पांव पखारन संस्कार के समय ईसाई घरों तथा गिरजाघरों के प्रधान व्यक्ति १२ विषपों के पांव पखारते हैं। यह १२ विशप ईसू के १२ सदस्य माने जाते हैं। इस अवसर पर पवित्र सेपल्चर गिरजाघर में अपार भीड़ होती है। कितने ही लोग तो रात भर गिरजाघर में पड़े हुये पवित्र धार्मिक गीत गाते हुये इस संस्कार की प्रतीक्षा में रात बिता देते हैं।

यूनानी ईस्टर दिवस संस्कारों में पवित्र अग्नि-संस्कार ही सबसे प्रसिद्ध है। यह संस्कार ईसू के समाधि स्थान पर मनाया जाता है। अपार भीड़ संस्कार की प्रतीक्षा में गाती बजाती अपना समय व्यतीत करती है। निश्चित समय पर ग्रीक (यूनानी) गिरजा घर का बड़ा पादरी अपने सुन्दर मूल्यवान वस्त्र धारण करके गिरजा घर में आता है। अपार भीड़ को पुलिस हटा कर बड़े पादरी के प्रवेश के लिये मार्ग बनाती है। पादरी की कलाई में मलमल के बन्द बंधे रहते हैं।

जैसे ही बड़ा पादरी गिरजाघर में प्रवेश करता है भीड़ में सन्नाटा छा जाता है। यकायक समाधि के दो गोलाकार स्थानों से अग्नि ज्वालाएँ निकलती हैं। इन्हीं को पवित्र अग्नि संस्कार कहते हैं। यह अग्नि बड़ी पवित्र मानी जाती है। प्रत्येक मनुष्य खुशी से पागल सा हो जाता है और अग्नि से अपने को पवित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113722
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का प्रयत्न करता है। लोग अपने शरीर, वस्त्र और घरों को इस पवित्र अग्नि से पवित्र बनाने की कोशिश करते हैं। लोग इसी आग से अपनी अपनी लालटेन जलाते हैं। जब रूस में ईसाई धर्म का प्रचार था तो वहां से इस अग्नि को लेने के लिये एक जहाज़ आकर जाफा बन्दरगाह पर खड़ा रहता था और अग्नि लेकर रूस जाता था। इस संस्कार के सम्बन्ध में एक आश्चर्यजनक बात यह देखी गई है कि अब तक इस अग्नि से किसी भी व्यक्ति का कपड़ा या शरीर जलता हुआ नहीं देखा गया।

इस समय युद्ध हो रहा है। युद्ध का प्रभाव जेरूसलेम और वहां मनाये जाने वाले संस्कारों पर कैसा पड़ा होगा। यह कहा नहीं जा सकता। फिर भी इन संस्कारों के करने में दर्शकों की भीड़ तो अवश्य ही कम हुई होगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जेरूसलेम नगर में वही प्राचीन बातें अब भी प्रचलित हैं। इस समय जबकि प्रत्येक आधुनिक तथा प्राचीन नगरों में नवीनता आ गई है और किसी न किसी प्रकार का सुधार नगरों में अवश्य हो गया है फिर भी जेरूसलेम नगर में किसी भांति भी परिवर्तन नहीं हुआ। आज का जेरूसलेम भी वही है जो प्रथम या चौदहवीं सदी में था।

* * *

मध्यवर्ती पूर्वी सामरिक क्षेत्र

सामरिक दृष्टि से मध्य-पूर्व एक मात्र मित्र राष्ट्रों का युद्ध क्षेत्र है यह क्षेत्र उत्तर की ओर मुरमन्स्क से दक्षिण की ओर साइरेनीका के मरुस्थल तक फैला है। इस क्षेत्र के बढ़े हुये भाग में माल्टा और साइप्रस भी सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त और भी कुछ बढ़ी हुई सीमाएँ हैं। तुर्की तटस्थ है परन्तु इंगलैंड का मित्र है। यह एक महत्वपूर्ण भाग है। डार्डनलीस और बास्फोरस के मार्ग तुर्की ने बन्द कर रक्खा है। शत्रु ने इस मार्ग होकर दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ने का प्रयत्न अब तक नहीं किया है। इन स्थानों से होकर शत्रु सीरिया, पैलेस्टाइन, स्वेज़ नहर, इराक़ और फारस के तेल-क्षेत्रों की ओर बढ़ सकता है।

तुर्की ने मध्य पूर्व की ओर मित्र स्थानों की रक्षा के लिये जो कुछ किया है उसको उसके लिये उचित रूप से मित्र राष्ट्रों ने बदला नहीं चुकाया है। यदि जर्मनी के कथनानुसार रूमानिया और बलगेरिया की भांति तुर्की भी अपनी नीति बदल देता तो फिर अँग्रेज़ों के लिये सीरिया और इराक़ से जर्मन प्रभुत्व का निकालना असम्भव हो जाता। तुर्की के कारण ही मित्र राष्ट्र बिना खटके सीरिया और पैलेस्टाइन में नवम् सेना और फारस में दशम सेना का निर्माण लगातार करते रहे। यदि तुर्की बर्लिन के आदेशानुसार चलता तो भूमध्यसागर के पूर्वी तट की घटनाओं का इतिहास ही कुछ और ही होता।

लाल रूसी सेना ने काकेशिया की ओर बढ़ने से जर्मनों का मार्ग रोक रक्खा है। जर्मन सेनाएँ आगे नहीं बढ़ रही हैं इसी बीच हो सकता है कि सिरिया ट्रान्सजार्डन, फारस, इराक़, पैलेस्टाइन और मिस्र पर शत्रु आक्रमण हो। इन देशों पर तीन ओर से आक्रमण होना सम्भव है। १—उत्तर की ओर टर्की होकर २—दक्षिण की ओर मिस्र होकर ३—पश्चिम की ओर से हवाई तथा समुद्री मार्ग होकर। परन्तु जब तक समुद्री आक्रमण के लिये केवल इटैलियन जहाज़ी बेड़ा है तब तक समुद्री मार्ग से आक्रमण होना सम्भव नहीं है।

कुछ समय व्यतीत हुआ पत्रों द्वारा यह बात सूचित की गई थी कि लैवल फ्रांसीसी जहाजों को जर्मनी के अधिकार में देकर कहीं सिरिया पर विची के नाम से आक्रमण न करा दे। इस प्रकार सिरिया पर जर्मन आक्रमण हो जाय।

जब जर्मनी ने क्रीट पर अधिकार जमाया था तो भूमध्यसागर के पूर्वी तट पर जर्मन आक्रमण की पूर्ण सम्भावना थी। उस समय साइप्रस को अँग्रेज़ माल्टा की भांति सुरक्षित न बना सके थे। यदि उसी समय साइप्रस पर अधिकार करते हुये जर्मन सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरिया पर अधिकार जमा लेती तो टर्की का घेरा समाप्त हो जाता और पूर्वी भूमध्य सागर से मित्र स्थानों का अंत ही हो जाता।

आज सिरिया पर ब्रिटिश अधिकार है। अब साइप्रस पर हवाई आक्रमण होने में शत्रु को बहुत अधिक कठिनाई उठानी पड़ेगी। साइप्रस द्वीप शत्रु हवाई तथा जहाजी अड्डे कास्टेल रोसो से १६० मील और रोडेस से २७० मील की दूरी पर हैं। यदि शत्रु साइप्रस पर हवाई और समुद्री आक्रमण करता है तो वह अपनी आक्रमणकारी सेना से लड़ाका विमान सेना की रक्षा पूर्ण रूप से नहीं कर सकता। इसके विपरीत साइप्रस सिरिया के तट से मिला है। सिरिया के हवाई अड्डों से ब्रिटिश सेना को सहायता मिलेगी और हैफा बन्दरगाह से मित्र युद्ध पोत भी साइप्रस पहुँचाये जा सकेंगे। ब्रिटिश सेना तथा जहाज लड़ाका विमानों की छत्र-छाया में शत्रु सेना का संहार कर डालेंगे। फिर भी जर्मन सेना को बाकू के तेल प्रदेश पहुँचने से जितनी ही अधिक कठिनाई शत्रु को होगी उतनी ही अधिक सम्भावना साइप्रस होकर इराक़ और ईरान पर शत्र आक्रमण होने को है।

सिरिया में जो नवम मित्र सेना रक्खी गई है वह जर्मन आक्रमण का सामना करने के लिये तयार खड़ी है। परन्तु इस सेना का मुख्य कर्तव्य यह है कि वह मित्र राष्ट्रों के मध्य-पूर्व स्थानों की रक्षा अनाटोलिया होकर होने वाले आक्रमण से करे। यदि तुर्की जर्मनी को मार्ग दे देता तो ऐसा आक्रमण कभी का हो चुका होता। इसके विपरीत यदि तुर्की की सहायता को नवम सेना न होती तो जर्मनी उसकी तटस्थता को परवाह न किये होता। आज टर्की पर उत्तर की ओर से आक्रमण रोकने का भार नवम् सेना पर ही है।

नवम् सेना की भांति ही दशम सेना भी फारस में पूर्ण रूप से तयार है। यह सेना कालासागर और कास्पियन सागर के मध्य भाग होकर बढ़ने वाली जर्मन सेना का सामना करने के लिये तयार की गई है। दशम् सेना में उन पोल लोगों की सेना सम्मिलित है जो रूस में कैद थे।

मध्य-पूर्व में संयुक्त राष्ट्रों को भीतरी मार्गों में अधिक सुविधायें प्राप्त हैं। अष्टम और नवम सेना के क्षेत्र साइरेनिका से तुर्की-सिरियन सीमा तक फैले हुये हैं। यह समस्त क्षेत्र रेलों और सड़कों द्वारा पूर्ण रूप से संगठित हैं। रेलों और सड़कों की ओर भी अधिक उन्नति की जा रही है। भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर मित्र जहाज रखवाली कर रहे हैं उनकी रक्षा युद्ध पोत तथा तटीय वायुयान करते हैं। इस प्रकार सेना तथा सैनिक सामग्री आवश्यकतानुसार शीघ्रातिशीघ्र उत्तर तथा दक्षिण की ओर पहुँचाये जा सकते हैं। जर्मन वायुयानों ने माल्टा पर भीषण बम्ब बर्षायें की हैं। शत्रु ने बम्ब बर्षा करके ही माल्टा को तबाह कर डालना चाहा परन्तु अब तक वह उस गढ़ को नष्ट नहीं कर सका है। शत्रु को माल्टा के आक्रमण में भारी हानि उठानी पड़ी है।

लीबिया को जो शत्रु सेना तथा सामान गया है उस पर माल्टा के विमानों तथा युद्ध पोतों ने लगातार आक्रमण किया है और शत्रु सेना को अधिक से अधिक हानि पहुँचाई जा सकती है परन्तु मार्ग रोका नहीं जा सकता। उत्तरी अफ्रीका का तट योरुप से बहुत समीप है और कुछ घंटों में सामान जहाज द्वारा पहुँच सकता है। इसके विपरीत अफ्रीका की अष्टम ब्रिटिश सेना को केप मार्ग से १२,००० मील का चक्कर लगा कर सामान पहुँचाया जाता है। यदि मेडेगास्कर पर अंगरेजों से पूर्व शत्रु पहुँच जाता तो फिर मध्य-पूर्व स्थित ब्रिटिश सेना को युद्ध सामग्री पहुँचाने का प्रश्न बड़ा ही जटिल हो जाता।

मेडेगास्कर पर ब्रिटिश अधिकार होने से तुर्की आदि पूर्वी देशों को बड़ा हर्ष हुआ है क्योंकि व्यापारिक मार्ग युद्ध काल में संकटपूर्ण है और तुर्की को तथा नागरिक सामानों के लिये पूर्वी अफ्रीकन तट के उस मार्ग पर निर्भर करता है जो सिकन्दरिया (हैटे) होकर जाता है और पूर्वी भूमध्य सागरी तटीय मार्ग से जा मिलता है। यदि मेडेगास्कर पर शत्रु का अधिकार हो गया होता और केप मार्ग पर संकट उपस्थित हो जाता तो उसका बुरा प्रभाव समस्त मध्य-पूर्वी राष्ट्रों पर पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिंपाञ्जी (Chimpanzee)

यह गोरिला (बन मानुस) की जाति का उसी भांति का पशु है। यह अफ्रीका के बनों में निवास करता है। यह भूमि पर कहीं रहता है। इसका निवास स्थान घने बनों में वृक्ष के ऊपर होता है। यह वृक्ष के ऊपरी सिरे पर अपना घोंसला बनाता है इस कारण इसका देखना भी दुर्लभ हो जाता है। बनों के भीतर जाने पर इसका शब्द सिर के ऊपर सुनाई पड़ता है परन्तु इसका देखना कठिन हो जाता है। यदि इसका पीछा वृक्ष के ऊपर चढ़ कर भी किया जाता है तो यह एक डाल से दूसरी डाल और एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर छलांगे मारता नज़रों से ओझल हो जाता है।

शिंपाञ्जी अफ्रीका के धूप को सहन नहीं कर सकता है। प्रातःकाल बन में उनकी भयानक आवाज़ चारों ओर सुनाई पड़ती रहती है परन्तु जैसे ही दोपहर का समय होता है वह चुपचाप अपने स्थान पर आराम करने लगता है। दोपहर के समय अफ्रीका के लगभग सभी पशु आराम करते हैं क्योंकि उस समय सूर्य का प्रकाश बहुत प्रबल हो जाता है। संध्या के समय शिंपाञ्जी फिर निकलता है और एक टहनी से दूसरी पर छलांगें भरता हुआ अपने भाइयों के साथ खेलता और बनैले फलों की खोज करता है।

शिंपाञ्जी बन्दरों की भांति मनुष्य की नकल करना बहुत जानते हैं। बहुधा देखा गया है कि यह अफ्रीकन लोगों के सामान उठा ले जाते हैं और उसके प्रयोग की कोशिश करते हैं। एक बार अफ्रीका के बनों में ढोल का अनोखा शब्द सुनाई पड़ा, पता लगाने पर विदित हुआ कि शिंपाञ्जी अफ्रीकन लोगों का ढोल उठा ले गये थे और उसके बजाने का प्रयत्न कर रहे थे।

शिंपाञ्जी का अध्ययन अफ्रीका के बनों में नहीं किया जा सकता है। उसका अध्ययन उसके छोटे बच्चों को पाल कर बड़ा करने से ही हो सकता है। शिंपाञ्जी पशु प्राणी मात्र में सबसे अधिक समझदार, विचारशील होता है।

मनुष्य के कार्य, बातचीत तथा संकेत को वह मनुष्य के साथ रहने पर लगभग बहुत कुछ समझ लेते हैं।

यदि शिंपाञ्जी बालक को पाल कर उसका अध्ययन किया जाय तो पता लगेगा कि वह अपने मालिक के कार्यों और संकेतों को भलीभांति समझ लेता है और बड़ी मित्रता के साथ उसके साथ खेलता कूदता है।

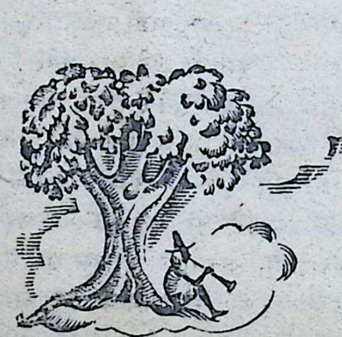

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित कर देना मिश्र जी जैसे साहसी सम्पादक का ही काम है। हिन्दी भाषा का भी यह सौभाग्य है कि अंग्रेजी जैसी जगत की उन्नतिशीला भाषा की भाँति हमारी मातृ-भाषा में भी घटनाओं के साथ-साथ ही उनका सामान्य इतिहास निर्माण होता जाता है। समय की गति-विधि समझने और उसके परिणाम जानने की उत्कंठा मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है अतः वर्तमान विश्वगति को कारण कार्य्य सहित सामने रख देने में यह परिचयांक विशेष सफल हुआ है। विभिन्न युद्ध क्षेत्रों के अनुसार यह अंक पाँच खंडों में विभक्त है; सूची देख कर ही इस महासमर की विश्वव्यापकता का अनुमान किया जा सकता है साथ ही सम्पादक के अध्यवसाय और समय सूचकता का भी। अन्त में प्रस्तुतांक संबंध में हम केवल इतना ही कहेंगे कि—'अवशि देखिये देखन योगू'।

'नाम महात्म्य' वृन्दावनः—

भूगोल (सचित्र मासिक-पत्र) (द्वितीय महासमर परिचय)—प्रयाग से निकलने वाले भूगोल विषयक बहुत प्राचीन सचित्र मासिक पत्र का यह १९वें वर्ष का सचित्र विशेषांक है। वार्षिक मूल्य ३) इस अंक का १॥) है। सम्पादक श्रीरामनारायण मिश्र, बी० ए०, प्रकाशक-'भूगोल' कार्यालय, इलाहाबाद। भूगोल सम्पादक अपने विषय के ख्यातिनामा विद्वान् हैं। इस विशेषाङ्क में पोलैंड विच्छेद से जून १९४२ तक की सभी प्रमुख युद्ध-विषयक घटनाओं पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है। अनेक चित्र और नकशों से अंक की रोचकता बहुत बढ़ गई है। सर्वथा यह अंक पठनीय एवं संग्रहणीय है। विद्यार्थियों को ही नहीं सर्वसाधारण के लिये युद्ध की घटनाओं से जानकारी दिलाने वाले इस वृहद्-अङ्क की हम जोरदार शब्दों में अपील करते हैं कि इसे सभी प्रकार अपनाया जाय। ऐसे समयोचित अङ्क को निकालने के लिये विद्वान सम्पादक बधाई के पात्र हैं। इस भीषण-मँहगी के युग में मूल्य भी बहुत कम है। अङ्क सभी दृष्टियों से संग्रहणीय है।

'कर्मवीर' खण्डवाः—

भूगोल का "द्वितीय महासमर परिचयाङ्क"—हिन्दी में "विविध विषयविभूषित" मासिक पत्र पत्रिकाएँ कई हैं, किन्तु अपने विषय में प्रवीण विद्वान द्वारा योग्यता-पूर्वक संचालित एवं सम्पादित मासिक पत्र गिने-चुने ही हैं। 'भूगोल' एक ऐसा ही मासिक है। सम्पादक प० रामनारायण मिश्र बी० ए० अपने विषय के गहरे विद्वान हैं। भारतीय विद्वानों में एक 'आदत' का अक्सर अभाव पाया जाता है, नवीन गवेषणाओं—अनुसंधानों के साथ समरस रहने एवं निरलस भाव से अपने विषय के 'आज' के ज्ञान को अपने मस्तिष्क की जेब में रखने वाली 'आदत' का। हिन्दी के लिये यह गर्व की बात है कि भूगोल के बर्तमान सम्पादक इस 'आदत' के आदी हैं। अपने विषय के नवीनतम ज्ञान का अर्जन और अपने पाठकों के सामने उसका परिवेशन वे अपने 'कर्तव्य'—राजन की दृष्टि से नहीं; अपना शौक पूरा करने के लिये करते हैं। इसी में उनकी विजय छिपी है।

१९ वें वर्ष की अपनी चढ़ती जवानी में भूगोल बर्तमान 'महासमर' का "परिचयाङ्क" लेकर निकला है। १९ वें वर्ष के प्रारम्भ में "भूगोल" का महासमर-अंक निकला था। "महासमर-एटलस" नामक विशेषांक भी आप निकाल चुके हैं। "महासमर-परिचयाङ्क" में पालैंड पर नाजी-प्रहार (सन् १९३९) से लगाकर सन् १९४२ के जून तक की, युद्ध-सम्बन्धी प्रायः सभी जानने योग्य घटनाएं पढ़ने को मिलेंगी। खूबी यह कि भूगोल जैसे नीरस विषय में ऐतिहासिक ज्ञान का पुट देकर मिश्र जी उसे सरस बना देते हैं। अतः इस अंक को केवल भौगोलिक नहीं ऐतिहासिक दृष्टि से पढ़ने वाले भी टोटे में नहीं रहेंगे। यह मिश्र जी के सम्पादन की विशेषता है।

युद्ध के भिन्न-भिन्न पहलुओं और मोरचों की व्यवस्थित चर्चा के लिये अंक को अलग-अलग विभागों में बांट दिया गया है। सबसे बड़ी बात यह है कि महासमर को सिलसिलेवार जानकारियों के साथ-साथ, भारत में होने वाली समकालीन उथल-पुथल की चर्चा की संपादकीय सावधानी भी इस अंक में ली गई है। इन समस्त महत्वों के कारण यह अंक उपयोगी अतः संग्राह्य निकला है। हिन्दी संसार का पवित्र कर्तव्य है कि वह मिश्रजी की इस श्रम-पूर्ण कृति को स्नेह-सहित अपनावे, सम्मान करे, एवं ऐसे भावी प्रयत्नों के लिये भरपूर प्रोत्साहन दे। हमारी यह हार्दिक कामना है कि 'भूगोल' उत्तरोत्तर तरक्की करे। 'भूगोल' का वार्षिक मूल्य ३) और इस अंक का १॥)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents: Articles are published on varied topics of geographical interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department: The Travel Department of 'Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances: Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

KAKRAHAGHAT, ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, Kakrhaghat, Allahabad.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar